जँ जाइन्हि भावक साम्य सूझि
संस्कृत काव्यक प्रतिबिम्ब बूझि ।
तँ करथु सुधीजन समाधान
भाषा सौन्दर्यक गति न आन ॥[1]

काव्य मैथिलीक हो वा संस्कृतक, उर्दूक हो वा असमियाक, अंग्रेजीक हो वा बंगलाक, हिन्दीक हो वा तमिलक, कन्नड़क हो वा मलयालमक– काव्य काव्ये थिक । एकर स्रष्टा कविये कहबैत छथि– चाहे हुनका पोएट कहियनु वा लेखक किंवा समीक्षक । काव्यक स्फुरण विद्वानेटाकेँ होयतनि सेहो बात नहि, अभ्यासक बल पर निरक्षरो कविक मुहसँ निकलल वाक्य काव्यक रूप धारण कए लैत अछि । मिथिलामे एहन कतोक लोक छथि जे लिखि-पढ़ि नहि सकैत छथि मुदा दू-चारि पाँती कविता जोड़ि लैत छथि । महान् कवि लोकनिक सेहो इतिहास अछि जे ओ लोकनि पूर्वमे मूर्खे छलाह । यथा– कविकुलगुरु कालिदास बाल्यकालमे अपन मूर्खताक हेतु प्रसि□ छलाह किन्तु विद्योत्तमाक प्रेरणा ओ दैवी कृपासँ ओ एक महान् कवि बनि गेलाह । आदिकवि श्रीमद्वाल्मीकि महामूर्ख छलाह किन्तु नारद मुनिक कृपासँ 'मरा-मरा' जपि महान् बनि गेलाह । हुनक मुहसँ अनायासहि एकटा श्लोक निकलि गेलनि–

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः ।
यत्क्रौंचमिथुनादेकमवधीः काममोहितम् ॥[2]

मिथिला सदासँ ज्ञान-विज्ञानक केन्द्र रहल अछि । एतय देशक विभिन्न भागसँ विद्वान् लोकनि ज्ञानोपार्जनक हेतु अबैत छलाह आ किछु दिन धरि मिथिलामे रहि नीति, धर्म, न्याय, दर्शन, ज्योतिष आदि सिखि कए वापस जाइत छलाह । ओ लोकनि सनेसक रूपमे अपन कंठमे विद्यापतिक गीत लए जाइत छलाह ।

परिभाषा :

संस्कृतक आचार्य लोकनिक द्वारा काव्यक प्रसंग जे परिभाषा देल गेल अछि से मैथिलीयो काव्यक हेतु सटीक अछि । यद्यपि काव्यक बीज रूप तऽ वेद, पुराण, उपनिषद् इत्यादिमे सेहो भेटैत अछि किन्तु स्वतन्त्र रूपसँ काव्यक प्रसंग विचार कयनिहार विद्वान् लोकनिमे आचार्य भरतमुनिसँ पण्डितराज जगन्नाथ धरि छथि यद्यपि सभ विद्वान् अपन-अपन मतक स्थापना तथा पूर्ववर्ती आचार्य लोकनिक मतक खण्डनमे विशेष रुचि रखैत छथि– **मुण्डे मुण्डे मतिर्भिन्नाः** चरितार्थ होइछ ।

काव्यशास्त्र एहन विषय अछि जकर अध्ययन कयला सँ लोक ओहिमे तेना भऽकऽ रमि जाइत अछि जे कोनो अन्य शास्त्र ओकरा हेतु ने दुरूहे रहि जाइत छैक आ ने दुर्बोध्ये । भारतीय काव्यशास्त्रक परम्परा अत्यन्त प्राचीन अछि तथा ई स्वयं अपनहि एक

विषय-क्रम

एहि रामायणमे प्रमुख आठ प्रकारक रसक चर्चा सेहो भेटैत अछि–

रसैः शृंगारकरुणहास्यरौद्रभयानकैः ......।[37]

अतः मानए पड़त जे काव्यक उत्पत्ति भाषाक उत्पत्तिक संगहि भेल । ओहिसँ पूर्वक कहब सेहो हमरा उपयुक्त नहि बुझना जाइत अछि । यदि भाषे नहि तऽ काव्य कतय ? आब एकर विकास–क्रम पर यदि विचार करैत छी तऽ देखैत छी जे काव्यशास्त्र पर विचार जहियासँ शुरू भेल होअए मुदा एकर श्रेय तऽ भरतमुनिएँकेँ प्राप्त भेलनि कारण जे यदि अग्निपुराणमे काव्यशास्त्रक प्रचुर सामग्री छैको तऽ हुनक समय विवादास्पद रहबाक कारणेँ हुनका ओ श्रेय प्राप्त नहि भए सकलनि । कतोक विद्वान् भरतसँ पूर्वक हिनका मानैत छथि तऽ अधिकांश विद्वान् भरतक बादक ।[38]

यास्काचार्य प्रथमतः उपमा अलंकारक सोदाहरण विश्लेषण कयलनि–

अथेदानीं येषु लुप्यन्ते उपमाशब्दा इवादयस्तान्यवसरप्राप्तानि लुप्तोपमानानि व्याख्यास्यामः । तानि पुनरिमानि अर्थोपमानानि इत्येवमाचक्षते ।[39]

एतदतिरिक्त हिनका द्वारा उपमान, निदर्शन, आशीः आदि शब्दक प्रयोग सेहो कएल गेल अछि । अवलोकनीय थिक–

अस्त्युपमानस्य संप्रत्यर्थे प्रयोगः ।[40]
निदर्शनामोदाहरिष्यामि ।[41]
इत्याशीः ।[42]

हिनकहि निघण्टुमे हिनक पूर्ववर्त्ती आचार्य गार्ग्यक लक्षण सेहो दृष्टिगत होइछ–

अर्थात् उपमा यत्ततस्तत्सदृशमिति गार्ग्यः ।[43]

भास्कराचार्य उपमाक प्रभेदो कयने छथि । उदाहरणार्थ कर्मोपमाक व्याख्या देखल जाओ–

यथा वातो यथा वनं यथा समुद्रं सजति ।[44]

हिनक पश्चात् महावैयाकरण पाणिनि सेहो अपन अष्टाध्यायीमे विविधा सूत्र एवं वार्तिकमे उपमादि तुलनावाचक किछु पदक व्यवहार कयने छथि ।[45]

हिनक एहि व्याकरणक ग्रंथमे उपमान एवं उपमेय आदि उपमाक अंगक सेहो स्पष्टतः उल्लेख कएल गेल अछि ।[46]

वस्तुतः व्याकरण समस्त विद्याक मूल थिक आ वैयाकरण सर्वश्रेष्ठ विद्वान्–

प्रथमे हि विद्वांसो वैयाकरणाः, व्याकरणमूलत्वात् सर्वविद्यानाम् ॥[47]

मैथिली काव्यमे ज्योतिष

डॉ० रमण झा
डी.लिट्.
विश्वविद्यालय मैथिली विभाग
ल.ना.मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा

सुमन प्रकाशन
हटाढ़ रुपौली, मधुबनी

प्रकाशक : **श्री सुमित आनन्द**
सुमन प्रकाशन
ग्राम+पोस्ट– हटाढ़ रुपौली
भाया– झंझारपुर, जिला– मधुबनी–847404
मो०– 9006496364

प्रथम संस्करण : 2009

प्राप्तिस्थान : l **श्री राम प्रकाश अग्रवाल**
श्री शंकर आभूषणालय
टावर चौक, दरभंगा– 846004
दूरभाष : 06272–252525

l **श्री अमित आनन्द**
ल.ना.मि.वि. टीचर्स क्वार्टर नं. 101
श्यामा मन्दिरसँ उत्तर–पूर्व,दरभंगा– 846004
दूरभाष : 06272–247701
मोबाइल : 9905440436

मुद्रक :

मूल्य : **तीन सय टका**

MAITHILI KĀVYA ME JYOTISH **Rs. 300.00**
Literary Criticism
By **DR. RAMAN JHA**

उपनिषदमे सेहो अलंकारक वर्णन दृष्टिगोचर होइत अछि, किछु उदाहरण एतय अवलोकनार्थ प्रस्तुत अछि–

रूपक–

आत्मानं रथिनं वि□ शरीरं रथमेव च ।
बु□ तु सारथिं वि□ मनःप्रग्रहमेव च ॥[32]

सार–

इन्द्रियेभ्यः परा ह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः ।
मनसस्तु परा बु□र्बु□रात्मा महान् परः ॥[33]

काव्यक बीज भलहि लोक वेद, पुराण, उपनिषद् आदिमे देखथु, एकरा परिभाषित कएनिहार भनहि भरतमुनियेसँ मानल जाय, किन्तु ई निर्विवाद जे श्रीमद्वाल्मीकिक रामायण आदिकाव्य थिक आ काव्यशास्त्रक सभ अंगक विकास ओतहिसँ होइत अछि । श्रीमद्वाल्मीकि महामूर्ख छलाह–जनिका मुहसँ 'श्रीराम' नामो उच्चरित नहि होइत छलनि से महर्षि नारद मुनिक प्रतापेँ आदिकविक उपाधिसँ गौरवान्वित भेलाह । हुनक मुहसँ अनायासहि क्रौ□च पक्षीक निधन पर एकटा श्लोक निकलि पड़लनि जकर चर्चा हम पहिनहि कए चुकल छी–

मा निषाद प्रतिष्ठां ....काममोहितम् ॥[34]

एहि सँ पूर्व कोनो काव्यशास्त्र नहि छल, छन्दशास्त्र नहि छल मुदा आदिकविक एही श्लोकक आधार पर अनुष्टुप् छन्दक लक्षण बनल । हिनक रामायणक एक–एक काण्ड महाकाव्यक लक्षणसँ परिपूर्ण अछि ।

जहिना छन्दक प्रयोग हिनक रामायणमे भेटैत छैक तहिना काव्यशास्त्रक अन्यान्यो अंग पर विचार करबाक हेतु ई आधारग्रंथ थिक, प्रेरक थिक तथा मार्गद्रष्टा थिक–

काव्यस्यात्मा स एवार्थस्तथा चादिकवेः पुरा ।
क्रौ□चद्वन्द्ववियोगोत्थः शोकः श्लोकत्वमागतः ॥[35]

एहि बातकेँ स्वीकार करबामे कतहु आपत्ति नहि जे महाकाव्यक स्वरूप निर्धारणक हेतु यैह आधार थिक कारण जे करुण रसक आदि एवं चरम परिपाकक श्रेय एकरे भेटल छैक–

निषादवि□ाण्डजदर्शनोत्थः
श्लोकत्वमापद्यत यस्य शोकः ॥[36]

एतबे नहि, महाकाव्यमे धीरोदात्त, धीरो□त, धीर ललित आ धीर प्रशान्त नायकक जे भेद से एकरहि आधार मानि कएल गेल अछि ।

वैदिक साहित्यक रचनाकाल 2500 ई० पूर्वसँ 500 ई० पूर्व धरि मानल जाइत अछि, जकर अर्न्तगत चारू वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, वेदाङ्ग अबैत अछि। प्रथमतः 'रस' शब्दक उल्लेख □ग्वेदमे एहि रूपमे दृष्टिगत होइछ–

दधानः कलशे रसम् ।[23]

अपिच– **वायवायाहि दर्शतेमे सोमा अरंकृता ।**[24]

पुनश्च– **ईयुषीणामुपमा शश्वतीनाम् ।**[25]

उपर्युक्त उ□रणमे क्रमशः रस, अरंकृत् (अलंकृत), उपमा आदिक प्रयोग काव्यशास्त्रक बीज रूपकेँ प्रदर्शित करैत अछि। □ग्वेदमे तँ उपमाक अतिरिक्त रूपक, रूपकातिशयोक्ति, पुनरुक्तवदाभास, लाटानुप्रास आदिक उदाहरण दृष्टिगत होइत अछि। एतय किछु उदाहरण उ□रण सदृश प्रस्तुत करब अप्रासंगिक नहि होयत–

उपमा–

अभ्रातेव पुंस एति प्रतीची
गर्त्तारुगिव सनये धनानाम् ।
जायेव पत्युः उशती सुवासा
उषा हस्रेव निरिणीते अप्सः ॥[26]

रूपक–

द्वा सुपर्णा स्रयुजा सखाया
समानं वृक्षं परिषस्वजाते ॥
तेयोरेकः पिप्पलं स्वाद्वत्य–
नश्नन्नन्यो अभिचाकशीति ॥[27]

पुनरुक्तवदाभास–

यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखा इव ।[28]

लाटानुप्रास–

शन्नो देवीरभिष्टये, शन्नो भवन्तु पीतये ।[29]

उदाहरण (अलंकार)–

अहरहरप्रयावं भरन्तोश्वायेव तिष्ठते घासमस्मै ।[30]
रायस्योषेण समिषा मदन्तोग्ने मा ते प्रतिवेशा रिषाम ॥

उपनिषदमे सेहो 'रस'क प्रयोग भटैत अछि–

रसो वै सः ।[31]

समर्पण



श्रीमती प्रेमकला देवी–श्री प्रमोद नाथ झा

जनिक बुधि–बल–तप–विवेकेँ, आइ हम जे किछु सिखल अछि।
अपन दु:ख–सुख कण बुझथि जे, हमर सुख टा काम्य रखलनि ॥
हमर मरु–हृदयस्थलीमे, जे अमृत–अक्षर उगौलनि ।
जे अपन सर्वस्व अर्पण, हमर हित टा मे लगौलनि ॥
ताहि पितु–मातहि चरणमे, अपन मस्तककेँ झुकओने ।
पुष्प ई अर्पण निमित्तक, तनिक कर–कमलहि समर्पण ॥

रमण

प्रादा

''छन्दोब□ भाव गद्यक अपेक्षा अत्यन्त सुगमतासँ रटा जाइछ तथा सर्वदाक हेतु स्मरण रहैछ । अतः बु□क तीव्रताक हेतु सेहो छन्द आवश्यक अछि । साहित्यिक दृष्टिएँ छन्दोब□ रचना जहिना एक दिस सुन्दर एवं चमत्कारपूर्ण होइत अछि तहिना दोसर दिस दीर्घजीवी सेहो होइत अछि । वेदक अमरत्व प्राप्त होयबाक कारण छन्दोब□ते अछि । यैह कारण अछि जे सम्पूर्ण भारतीय साहित्य, धार्मशास्त्र, व्याकरण, कोष, अलंकार, पुराण, महाभारत, रामायण, इतिहास, शिल्पशास्त्र, तन्त्र, आयुर्वेद आदि सभ छन्दोब□ अछि ।''[21]

पंडित गोविन्द झा तऽ एतेक धारि कहि उठैत छथि जे छन्दक सृष्टि भाषाहुक सृष्टिसँ प्राचीन थिक । हुनकहि शब्दमे द्रष्टव्य थिक–

''जखन कोनहुँ शिशुकेँ आनन्दक उद्रेकमे आबि अनर्थक पदावलीसँ गुम्फित छन्दोब□ फकड़ा पढ़ैत देखैत छी, तँ कल्पना जागि उठैत अछि जे सृष्टिक प्रारम्भमे, जहिया मानव भाषाक वरदान नहि पओने छल होयत, जखन–जखन मानव–शिशु भावक आवेशमे अबैत छल होएत तखन–तखन एहिना अर्थश्रृंखलाहीन छन्दोब□ पदावली गाबए लगैत छल होयत । अतः छन्दक सृष्टिकेँ यदि भाषाक सृष्टिअहुसँ प्राचीन कही तँ असम्भव नहि ।''[22]

एहि क्रममे हमरा मोन पड़ैत अछि जे एखनहुँ बूढ़ पुरान स्त्रीगण लोकनि बच्चाकेँ तेल लगाए जाँति–पीचि कए टाँग–हाथ मोड़ैत कहैत छथि–

ईल सन, कील सन, धोबियाक पाट सन,
उठू बौआ चाक सन.... इत्यादि

वस्तुतः ओहि बूढ़ी लोकनिकेँ आखरोक ज्ञान नहि मुदा मुहसँ जे वाक्य निकलैत छनि ताहिमे तुकबन्दी आ छन्द अवश्ये दृष्टिगोचर होइछ ।

ई स्वाभाविक अछि जे पहिने भाषा आ तखन व्याकरण, पहिने काव्य तखन ओकर विभिन्न तत्त्व (छन्द, अलंकार, रस, ध्वनि, रीति, गुण, दोष इत्यादि)– मुदा ई सृष्टिक आदिकालहिसँ चल आबि रहल अछि । मनुष्य सतत विकासक बाट तकैत रहैत अछि आ तेँ ओ काव्य सभसँ ओकर विभिन्न तत्त्व केँ तकलक, ओकरा चिन्हलक, ओकर स्वरूप स्थिर कयलक आ ओकरा परिभाषित कयलक ।

छन्दहि जकाँ काव्यक दोसर अनिवार्य तत्त्व थिक अलंकार । एकरहु प्रयोग आदि कालहिसँ देखबामे अबैत अछि । रसक प्रयोग सेहो तहिना । देवता लोकनि सभ रसक पान करैत छलाह । जेनाकि पूर्वहु चर्चा भए चुकल अछि जे काव्यशास्त्रक प्रथम आचार्य भरत छथि मुदा वैदिक साहित्य, श्रीमद्वाल्मीकि रामायण, अग्निपुराण, भास्कर, पाणिनि, कात्यायन–पतंजलि आदि सुप्रसि□ वैयाकरणलोकनिक रचना सभक अध्ययन–अनुशीलनसँ स्पष्टतः प्रतीत होइत अछि जे वस्तुतः काव्यशास्त्रक बीज एही रचना सभमे विराजमान अछि ।

ननु शब्दार्थौ काव्यम्
तस्मात् तत् कर्त्तव्यं यत्नेन महीयसा रसैर्युक्तम् ।
उद्वेजनमेतेषां शास्त्रवदेवान्यथा हि स्यात् ।।[14]

ध्वनि सम्प्रदायक प्रवर्त्तक आचार्य आनन्दव□न काव्यक आत्मा धवनिकेँ बुझैत छथि–

काव्यस्यात्मा ध्वनिः ।[15]

काव्यक लक्षणक प्रसंग जे आचार्य लोकनि बहुचर्चित रहलाह ओ लोकनि थिकाह काव्यप्रकाशकार मम्मट,[16] चन्द्रालोककार जयदेव[17], साहित्यदर्पणकार विश्वनाथ[18], रसगंगाधरकार पंडितराज जगन्नाथ[19] प्रभृति । ई लोकनि दोसरक मतकेँ खण्डन कए अपन मतक स्थापन पर विशेष जोर देलनि । एतय हमर उद्देश्य हिनका लोकनिक विवादमे पड़बाक नहि अछि । हम तऽ मात्र संक्षेपहिमे काव्यक परिभाषा पर विचार करैत आगाँ बढ़य चाहैत छी । एहि विषय पर तऽ बहुत वाद-विवाद भए चुकल अछि । हिनका लोकनिक सार तत्त्व थिक जे जाहिमे शब्दशक्ति, ध्वनितत्त्व, अलंकारतत्त्व, गुणतत्त्व, रीतितत्त्व एवं छन्दतत्त्व विद्यमान रहय सैह थिक काव्य ।

भारतीय विद्वान् सदृशहि पाश्चात्य विद्वान लोकनि सेहो काव्यक प्रसंग अपन-अपन विचार व्यक्त कयने छथि, जाहिमे प्रमुख छथि-वर्ड्सवर्थ[20], हडसन, जॉनसन, कॉलरीज, सेक्सपीयर, अरस्तू, सिडनी, ड्राइडेन, शेली, मिल्टन, कारलाइल, मैथ्यू आरनॉल्ड इत्यादि ।

उत्पत्ति एवं विस्तार :

काव्यक उत्पत्ति कहिया भेल से क्यो नहि कहि सकैत अछि । सृष्टिक आरम्भहिसँ काव्यक बीज देखबामे अबैत अछि । काव्यक विभिन्न अंग अछि; यथा रस, ध्वनि, गुण, दोष, अलंकार, छन्द इत्यादि जाहिमे प्रायः छन्दक अनुभव मनुष्य सबसँ पहिने कयलक आ तत्पश्चात् रस, अलंकार इत्यादि तत्त्व सभक । वेद, पुराण, उपनिषद् आदिमे छन्दक प्रयोग भेटैत अछि आ वेदक पर्याय तऽ 'छन्दस्' थीके । छन्दोब□ रचना गेय होइत अछि आ तेँ गद्यक अपेक्षा सुगमतासँ स्मरण रहैत छैक । प्राचीन कालमे छपाइक कोनो साधन नहि छल, लोक विद्याकेँ कंठाग्र करैत छलाह । बहुतो विद्वान् एहन छलाह जे हजारक हजार श्लोककेँ कंठाग्र कयने छलाह किन्तु दस-बीसटा गद्यात्मक काव्य मोन रहब कठिन ।

यद्यपि लोक ओहि समयमे छन्दक लक्षण नहि जनैत छल, काव्यांगक परिचय नहि प्राप्त कयने छल, किन्तु जे किछु पद्यात्मक रूपमे प्राप्त भेल से छन्दोब□ । एही रटबाक सुबिधाक कारणेँ समस्त भारतीय वाङ्मय यथा; - वेद, पुराण, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, व्याकरण, कोष इत्यादि सभ किछु छन्दोब□ अछि । एहि प्रसंग डॉ० दिनेश कुमार झाक उक्ति द्रष्टव्य थिक–

भूमिका

ज्योतिष एकटा मनलग्गू विषय थिक । ने जानि किएक हमरा एहि विषयमे छात्रावस्थहिसँ रुचि रहए । हम जखन एम.ए. (मैथिली)क छात्र रही तऽ विश्वविद्यालय पंचांग छपब शुरूहे भेल छलैक । हम बृहस्पतिक रातिक अ□प्रहरा (6,8)[1] देखि चौँकलहुँ । ओहि समयमे संस्कृत विश्वविद्यालयक ज्योतिष विभागाध्यक्ष छलाह डॉ0 ब्रजकिशोर झा । हम हुनका जाकए पुछलियनि जे अपने बृहस्पतिक रातिमे कोन अ□प्रहरा मानैत छिऐक । ओ तुरंत उत्तर देलनि 6, 8 । हम कहलियनि जे हम तऽ 5, 8 बुझैत छिऐक । ब्रजकिशोर बाबू सुनबए लगलाह—

रवौ रसाब्धी हिमगौ हयाब्धी द्वयं महीजे विधुजे शरागौ ।
गुरौ 'रसाष्टौ' भृगुजे तृतीयं शनौ रसाद्यन्तमिति क्षपायाम् ।। इत्यादि

हम कहलियनि जे हम यदि 'शराष्टौ' कहबैक तऽ 5, 8 किऐक ने होएतैक ? ओ बिगड़ि गेलाह जे हम पोथीमे 'रसाष्टौ' छपल देखाए देब । हमहुँ तऽ तैयारे भए गेल छलहुँ । 'शराष्टौ' छपल देखएबाक गप्प कहलियनि । संगहि 'वारस्त्रिघ्नोऽष्टभिस्तष्टः सैकः स्याद□यामकः' सँ दग्धयाम सि□ कए देलियनि आ 'दिवाषट्क्रमेणैव रात्रौ प□चक्रमेण तु' सँ वृहस्पतिक रातिक अ□प्रहरा निकालि देलियनि जे 5, 8 साबित भेल । हुनका मानए पड़लनि आ हमर आग्रहेँ 1979- 80क पंचांगसँ बृहस्पतिक रातिक अ□प्रहरा 5, 8 छपि रहल अछि।[2] ई सम्पूर्ण तथ्य (हुनक नाम छोड़ि) मिथिला मिहिर (1978) मे 'अ□प्रहरा विचार'[3] शीर्षक सँ प्रकाशित भए चुकल अछि ।

अस्तु ज्योतिष विषयमे हमर उत्साह बढ़ैत गेल । पोथी सभ पढ़ैत रहलहुँ स्वान्तः सुखाय । भविष्य बुझबाक जिज्ञासा ककरा नहि होइत छैक ?

हमहुँ ग्रह-नक्षत्रक संबंधमे जिज्ञासु बनलहुँ, पोथी उनटाएब शुरू कएलहुँ । पठन-पाठनसँ जुड़ल रहबाक कारणेँ मैथिली काव्यक अध्ययन करबाक अवसर होइत रहल आ हमरा ओहिमे ज्योतिषक सन्दर्भ भेटैत रहल । पढ़ि कए आह्लादित होइत रहलहुँ । यैह हमर प्रेरक तत्त्व भेल ज्योतिषसँ सम्ब विषयपर शोध-कार्य करबाक ।

एहि शोध-प्रबन्धमे सर्वप्रथम विषय-प्रवेशक अन्तर्गत प्रथमतः मैथिली काव्यक संक्षिप्त परिचय देल गेल अछि, जकर अन्तर्गत परिभाषा, उत्पत्ति एवं विस्तार, वर्गीकरण इत्यादि अबैत अछि तथा मैथिली काव्यकेँ ज्योतिषसँ केहन संबंध छैक ताहि पर प्रकाश देल गेल अछि । एहि अध्यायमे मैथिल कविक ज्योतिषमे पटुतापर प्रकाश देल गेल अछि । प्रथम अध्यायमे ज्योतिष शास्त्रक संक्षिप्त इतिहास अछि जकर अन्तर्गत उत्पत्ति, विस्तार, तिथि, ग्रह, नक्षत्र, इत्यादिक वर्णन कएल गेल अछि । एहि अध्यायमे मानव जीवनपर ग्रह-नक्षत्रक प्रभावक वर्णन सेहो कएल गेल अछि । द्वितीय अध्यायमे मैथिलीक प्रमुख गद्यकारक कृतिमे ज्योतिषक संदर्भ देखाओल गेल अछि, ओकर विश्लेषण कएल गेल अछि । तृतीय अध्यायमे विद्यापति आ हुनक परम्परागत काव्यमे ज्योतिषक संदर्भ देखाओल गेल अछि । विद्यापति तऽ वसन्त वर्णनक क्रममे पटु पुरोहित जकाँ वनस्पतियेसँ नाना प्रकारक विहित उपादानक संकलन कए हुनक विवाह, चुमाओन इत्यादि कराए लोककेँ संकेत दैत छथि जे वस्तुतः विवाह आदिक अवसरपर कोन-कोन प्रकारक सामग्रीक आवश्यकता होइत छैक ।

महाकाव्य साहित्यक प्राण थिक । महाकाव्य लिखनिहारकेँ महाकवि कहल जाइत छनि । एहिमे वर्णनक विशदता रहैत छैक तेँ सबसँ बेसी ज्योतिषक सन्दर्भ महाकाव्यमे भेटैत अछि । वस्तुतः महाकवि लोकनि किछुकेँ छोड़ि पंडिते छथि । हुनका लोकनिक कृतिमे पर्याप्त ज्योतिषक संदर्भ अछि । मुदा हमरा तऽ स्थान आ समय दुनू सीमित छल तेँ हम प्रमुख महाकाव्यहिसँ किछु प्रमुख अंशहिक उल्लेख कए सकलहुँ । जे महाकाव्य, खण्डकाव्य वा मुक्तक काव्यक हम उल्लेख नहि कए सकलहुँ ताहिमे ज्योतिष तत्त्व नहि अछि से गप्प नहि । हम तऽ मात्र किछु-किछु कए उदाहरण देखबैत आगाँ बढ़ैत गेलहुँ । खण्डकाव्योक संख्या दू दर्जनसँ कम नहि अछि । पंचम अध्यायमे हम खण्डकाव्यमेसँ ज्योतिषक संदर्भक उल्लेख कएलहुँ अछि । षष्ठ अध्याय मुक्तक काव्यपर आधारित अछि । मुक्तकोक रचना कएनिहार पटु विद्वानक अभाव

एखनहु काव्यशास्त्रक अधिकांश एहने अछि जकरा हेतु मात्र संस्कृतेटाक पोथीकेँ आधार ग्रंथक रूपमे अपनाओल जाइत अछि ।

काव्यक सर्वोत्तम रूप नाटककेँ मानल जाइत अछि जाहिमे श्रव्य एवं दृश्य दुनू गुण अछि । 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्'क प्रसंग निम्नलिखित श्लोक उपर्युक्त तथ्यकेँ अनुमोदित करैत अछि –

काव्येषुनाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला ।
तत्राऽपि च चतुर्थोऽङ्कः तत्र श्लोकचतुष्टयम् ॥

अर्थात् काव्यमे नाटक नीक ओ ताहिमे शकुन्तला आ पुनः तकरो चतुर्थ अंक आ ततहु चारिटा श्लोक मात्र ।

अतः आचार्य भरतमुनि प्रथम काव्यशास्त्रीय मानल जाइत छथि जे काव्यशास्त्र पर सर्वप्रथम कलम उठौलनि आ से नाटकेकेँ ध्यानमे रखैत । हिनक कथन अछि–

मृदु-ललित-पदार्थं गूढ़शब्दार्थहीनं
जनपद-सुखबोध्यं युक्तमन्नृत्ययोज्यम् ।
बहुकृत-रसमार्गं सन्धिसंधानयुक्तं
स भवति शुभकाव्यं नाटकं प्रेक्षकाणाम् ॥[11]

छठम शताब्दीमे आचार्य भामह तऽ ओहन समस्त शब्दावलीकेँ काव्य मानि लेलनि जकर किछु ने किछु अर्थ होइत छैक । एहि तरहेँ यदि हिनक परिभाषाकेँ आधार मानल जाए तऽ वाणीक समस्त प्रपंच काव्यक कोटिमे परिगणित भए जाएत । हिनक कथन अछि–

शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्[12]

अर्थात् प्रत्येक सार्थक शब्द काव्य थिक जे अनसोहाँत जकाँ बुझि पड़ैछ ।

सातम शताब्दीमे आचार्य दण्डीक कथनानुसार इष्टार्थकेँ द्योतित करएबला पदावली काव्य भेल तथा ई काव्यक सरसता अलङ्कारहिक कारणे मानैत छथि–

तैः शरीरं च काव्यानामलंकाराश्च दर्शिताः ।
शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली ॥
काव्यशोभाकरान्धर्मानलंकारान् प्रचक्षते ।
कामं सर्वोऽप्यलंकारो रसमर्थे निषिचति ॥[13]

आचार्य रुद्रटक समय थिक नवम शताब्दीक पूर्वा । ई भामहेक मतानुयायी छथि । अन्तर एतबे अछि जे भामह अलङ्कारक महत्ताकेँ स्वीकार करैत छथि आ रुद्रट रसक प्राधान्यकेँ । हिनक कथन अछि–

जाए ओतय उल्लेख अलंकार होइत अछि; यथा– (ओहि राजाकेँ) स्त्रीगण कामदेवक रूपमे, याचक कल्पवृक्षक रूपमे तथा शत्रु कालक रूपमे देखलनि ।

तुलनीय –

मैथिली– (उल्लेखालङ्कार)

दृष्टिभेदवश एकहुक बहुल कथन उल्लेख ।
याचक सुरतरु, काल रिपु, धनि हुनि मदन परेख ॥[6]

दृष्टिभेदेँ एक वस्तुक भिन्न-भिन्न प्रकारेँ कथन उल्लेख थिक; यथा– (ओहि राजाकेँ) याचक कल्पवृक्षक रूपमे, काल शत्रुक रूपमे तथा स्त्री कामदेवक रूपमे देखलनि ।

ध्यातव्य थिक जे दूनू पोथीक सूत्र संख्या तथा उदाहरण धारि समाने अछि । छन्दहुक लक्षणक प्रसंग एहने समानता देखबामे अबैत अछि । किछु लक्षण तुलनीय थिक :

संस्कृत– (द्रुतबिलम्बित छन्द)

लक्षण– **द्रुतविलम्बितमाह नभौ भरौ**[7] ।

(द्रुतबिलम्बितमे गणक विन्यास होइछ –न-भ-भ-र)

तुलनीय–

मैथिली–

लक्षण– **द्रुतविलम्बित हो नभभारसँ**[8]

(द्रुतबिलिम्बितमे चारिटा गण होइत अछि–न-भ-भ-र)

अपिच–

संस्कृत– (वसन्ततिलका छन्द)

लक्षण– **ज्ञेयं वसन्ततिलकं तभजा जगौ गः**[9] **।**

(यदि त-भ-ज-ज-गु० एवं गु० होअए तऽ बसन्ततिलका बुझू)

तुलनीय–

मैथिली–

लक्षण—जानू वसन्ततिलका तभजाजगागा[10]

(त-भ-ज-ज-गु-गु केर योगसँ वसन्ततिलका होइछ)

नहि । मुक्तक रचनामे सेहो पर्याप्त ज्योतिष विषयक संकेत भेटैत अछि । हम मात्र किछुए काव्यसँ उ□रण प्रस्तुत कए सकलहुँ ।

सभसँ बेसी महत्त्वक अछि मैथिलीक ज्योतिष काव्य—डाक वचन । डाक जातिक यादव छलाह मुदा कोनो पंडितसँ विशिष्ट स्थान हुनका मिथिलावासी देने छलथिन । ओ जनमानसक भावनाकेँ बुझलनि आ तदनुसार लोकभाषामे ज्योतिषकेँ सर्वग्राही बनाए देलनि जाहिसँ हुनक वचन हरबाह-चरबाह, बच्चा-बूढ़ सभक जिह्वा पर चढ़ि गेल ।

परिशिष्टक अन्तर्गत उपसंहार आ अधीत ग्रन्थसूची अछि । उपसंहारमे हम ज्योतिषसँ संब□ किछु दैनन्दिन उपयोगक वस्तुक विश्लेषण सेहो करबाक प्रयास कएलहुँ अछि जकर उल्लेख पूर्वमे नहि भए सकल अथवा स्पष्ट रूपेँ नहि भए सकल । जहिना ज्योतिष अथाह सागर अछि तहिना मैथिली काव्य सेहो । एहि अथाह सागरसँ हम जे किछु निकालि सकलहुँ से अपने लोकनिक समक्ष प्रस्तुत अछि । हम तऽ मात्र नमूना जकाँ प्रमुख विद्वानहिक काव्यसँ उदाहरण प्रस्तुत कए सकलहुँ मुदा आवश्यकता अछि साहित्यक भिन्न-भिन्न विधापर पृथक् रूपेँ अन्वेषण करबाक जाहिसँ अधिकाधिक काव्यसँ ज्योतिष तत्त्वकेँ निचोड़िकेँ संकलित कएल जाए ।

गुरुदेव डॉ० लक्ष्मण चौधारी 'ललित'क सहयोग, आशीर्वाद आ उत्साहव□नक परिणामस्वरूप ई शोधकार्य सम्पन्न भए सकल । आइ हम जतय धरि पहुँचलहुँ अछि ताहिमे शत-प्रतिशत हुनकहि योगदान छनि । हमरा हेतु ओ कल्पवृक्ष तुल्य थिकाह जनिकर छत्रच्छायामे रहि हमर सभ मनोरथ पूर्ण होइत रहल । तेँ हुनक □णी रहबेमे हमरा सुख भेटैत अछि ।

डॉ० नीता झाक स्नेह आ सहयोग हमरा छात्र जीवनहिसँ प्राप्त होइत रहल । ओ यू.जी.सी. शोधाकर्त्ताक रूपमे हमर सभक वर्ग सेहो लेने छथि जाहि कारणेँ हम हुनका गुरुतुल्य सम्मान दैत छियनि आ ओहो सतत हमर मार्ग प्रशस्त करैत रहैत छथि । एहि शोध कार्यकेँ सम्पन्न करएबामे हुनकहु महत्त्वपूर्ण भूमिका छनि जाहि हेतु हम आभारी छियनि । डॉ० भीमनाथ झाक तऽ प्रत्यक्ष आ परोक्ष दुनू प्रकारक सहयोग भेटैत रहल । परोक्ष तऽ ई जे हुनकहि प्रभागक पुस्तकालयसँ हम अधिकांश पुस्तकक उपयोग कए सकलहुँ आ प्रत्यक्ष रूपेँ हुनक मूल्यवान विचार हमरा ओझराएल कार्यकेँ सुगम बनाए दैत छल । तेँ हुनकहु हम आभारी छियनि । हम विशेष रूपसँ आभारी छियनि व्याकरण विभागाध्यक्ष डॉ० पं० शशिनाथ झाक जे ठाम-ठाम रहि गेल त्रुटि सभक

(विशेष रूपसँ संस्कृत उ□रण प्रसंग) दिगदर्शन एवं संशोधन करैत हमरा उपकृत कयलनि । अपन मसियौत भाइ पं० श्री ललनजी झाकेँ एहिमे प्रयुक्त संस्कृत श्लोकक प्रूफ देखबाक हेतु धन्यवादक संग आशीर्वाद सेहो दैत छियनि जे ओ दिनानुदिन आओरो अधिक यश आ प्रतिष्ठा प्राप्त करथु ।

हमर एहि **डी.लिट्.** उपाधिक हेतु प्रस्तुत शोधकार्यक आरम्भसँ अन्त धारि हमर शिथिलताकेँ अग्निक आहुति जकाँ जगएबाक कार्य कएनिहार विद्वान् छथि हमर पिसियौत भाइ, पूर्व प्रेस व्यवस्थापक, डॉ० इन्द्रनाथ सिंह ठाकुर । ई कहब अतिशयोक्ति नहि होएत जे यदि भाइक बेरि बेरि तगेदा आ सहयोग नहि रहितए तऽ हमर कार्य किन्नहुँ सम्पन्न नहि होइत । ई शोध-ग्रन्थ देखि हमरासँ कनियोँ कम आनन्द हुनका नहि होएतनि । हमर ज्येष्ठ पुत्र चि० अमित अन्य सहयोगक अतिरिक्त कम्प्यूटरपर सम्पूर्ण प्रूफ देखि ओकरा शु□ करबाक कार्य कएलनि आ कनिष्ठ पुत्र चि० सुमित सेहो ओहि कार्यमे यदा-कदा संग देलथिन ।

इत्यलम्

वटसावित्री
24 मइ 2009

संदर्भ :

1. द्रष्टव्य : विश्वविद्यालय पंचांगम् 1978-79
2. तत्रैव, 1979-80
3. मिथिला मिहिर, 10 दिसम्बर 1978

जटिल एवं गम्भीर विषय थिक । ई परम्परा ततेक ने विशाल एवं दुष्कर अछि जे आचार्य भरतसँ लए पंडितराज जगन्नाथ धारि सभ केओ एहि प्रसंग अपन-अपन मतक स्थापना करबाक प्रयास कयलनि । हिनका लोकनिक परिभाषा आ ओकर व्याख्या ततेक ने दीर्घ रूप धारण कए लैत अछि जे कोनो काव्यशास्त्रीकेँ किछु वक्तव्य नहि रहि जाइत छनि । एखनहु धरि मैथिलीकेँ अपन काव्यशास्त्र नहि छैक । पूर्वहुमे चर्चा कए चुकल छी जे संस्कृत समस्त भारतीय आर्यभाषाक जननी मानल जाइत अछि, तेँ कोनहु भारतीय भाषा एवं साहित्य पर विचार करबाक हेतु संस्कृत काव्यशास्त्रक अनुब्रजन करए पड़त । मैथिलीमे काव्यशास्त्रक कोनो-कोनो अंग पर मूल ग्रंथ सेहो छपि चुकल अछि; यथा- पं० सीताराम झाक 'अलंकार-दर्पण,' पं० दामोदर झाक 'अलंकार-कमलाकर', पं० सुरेन्द्र झा 'सुमन'कृत 'अलंकार-मालिका', पं० गोविन्द झा कृत 'मैथिली छन्दः शास्त्र', डॉ० किशोरनाथ झा विरचित 'रस-परिचय' इत्यादि । यद्यपि एहू पोथी सभ पर संस्कृतक पूर्ण प्रभाव अछि करण जे उपर्युक्त सभ लेखक मूलतः संस्कृतेक विद्वान् रहल छथि । संस्कृतक प्रभाव कोन प्रकारक अछि तकर किछु उ□रण एतय प्रस्तुत कएल जा रहल अछि; ध्यातव्य थिक-

संस्कृत- (प्रतीपालङ्कार)

प्रतीपमुपमानस्योपमेयत्व-प्रकल्पनम् ।
त्वल्लोचनसमं पद्मं त्वद्वक्त्रसदृशो विधुः॥[3]

(जतय प्रसि□ उपमानकेँ उपमेय बना देल जाय ओतय प्रतीपालंकार होइछ; यथा- हे सुन्दरि ! कमल अहाँक नेत्रक समान तथा चन्द्रमा मुहक समान छथि ।)

तुलनीय-

मैथिली- (प्रतीपालङ्कार)

थिक 'प्रतीप' विपरीत यदि उपमेये उपमान ।
अहँक नयन सम नलिन पुनि चानो वदन समान ॥[4]

(यदि उपमेयकेँ उपमान एवं उपमानकेँ उपमेय बना देल जाय तऽ प्रतीपालङ्कार होइछ; यथा- हे सुन्दरि ! अहँक आँखिक समान कमल आ मुहक समान चन्द्र छथि ।)

संस्कृत- (उल्लेखालङ्कार)

बहुभिर्बहुधोल्लेखादेकस्योल्लेख इष्यते ।
स्त्रीभिः कामोऽर्थिभिःस्वर्द्रुःकालः शत्रुभिरैक्षि सः ॥[5]

जतय एकहि वस्तुक अनेक व्यक्तिक संबंधमे भिन्न-भिन्न प्रकारेँ वर्णन कएल

जँ जाइन्हि भावक साम्य सूझि
संस्कृत काव्यक प्रतिबिम्ब बूझि ।
तँ करथु सुधीजन समाधान
भाषा सौन्दर्यक गति न आन ॥[1]

काव्य मैथिलीक हो वा संस्कृतक, उर्दूक हो वा असमियाक, अंग्रेजीक हो वा बंगलाक, हिन्दीक हो वा तमिलक, कन्नड़क हो वा मलयालमक– काव्य काव्ये थिक। एकर स्रष्टा कविये कहबैत छथि– चाहे हुनका पोएट कहियनु वा लेखक किंवा समीक्षक। काव्यक स्फुरण विद्वानेटाकेँ होयतनि सेहो बात नहि, अभ्यासक बल पर निरक्षरो कविक मुहसँ निकलल वाक्य काव्यक रूप धारण कए लैत अछि। मिथिलामे एहन कतोक लोक छथि जे लिखि-पढ़ि नहि सकैत छथि मुदा दू-चारि पाँती कविता जोड़ि लैत छथि। महान् कवि लोकनिक सेहो इतिहास अछि जे ओ लोकनि पूर्वमे मूर्खे छलाह। यथा– कविकुलगुरु कालिदास बाल्यकालमे अपन मूर्खताक हेतु प्रसि□ छलाह किन्तु विद्योत्तमाक प्रेरणा ओ दैवी कृपासँ ओ एक महान् कवि बनि गेलाह। आदिकवि श्रीमद्वाल्मीकि महामूर्ख छलाह किन्तु नारद मुनिक कृपासँ 'मरा-मरा' जपि महान् बनि गेलाह। हुनक मुहसँ अनायासहि एकटा श्लोक निकलि गेलनि–

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः ।
यत्क्रौंचमिथुनादेकमवधीः काममोहितम् ॥[2]

मिथिला सदासँ ज्ञान-विज्ञानक केन्द्र रहल अछि। एतय देशक विभिन्न भागसँ विद्वान् लोकनि ज्ञानोपार्जनक हेतु अबैत छलाह आ किछु दिन धरि मिथिलामे रहि नीति, धर्म, न्याय, दर्शन, ज्योतिष आदि सिखि कए वापस जाइत छलाह। ओ लोकनि सनेसक रूपमे अपन कंठमे विद्यापतिक गीत लए जाइत छलाह।

परिभाषा :

संस्कृतक आचार्य लोकनिक द्वारा काव्यक प्रसंग जे परिभाषा देल गेल अछि से मैथिलीयो काव्यक हेतु सटीक अछि। यद्यपि काव्यक बीज रूप तऽ वेद, पुराण, उपनिषद् इत्यादिमे सेहो भेटैत अछि किन्तु स्वतन्त्र रूपसँ काव्यक प्रसंग विचार कयनिहार विद्वान् लोकनिमे आचार्य भरतमुनिसँ पण्डितराज जगन्नाथ धरि छथि यद्यपि सभ विद्वान् अपन-अपन मतक स्थापना तथा पूर्ववर्ती आचार्य लोकनिक मतक खण्डनमे विशेष रुचि रखैत छथि– **मुण्डे मुण्डे मतिर्भिन्नाः** चरितार्थ होइछ।

काव्यशास्त्र एहन विषय अछि जकर अध्ययन कयला सँ लोक ओहिमे तेना भऽकऽ रमि जाइत अछि जे कोनो अन्य शास्त्र ओकरा हेतु ने दुरूहे रहि जाइत छैक आ ने दुर्बोध्ये। भारतीय काव्यशास्त्रक परम्परा अत्यन्त प्राचीन अछि तथा ई स्वयं अपनहि एक

विषय-क्रम

प्रादा

विषय प्रवेश

मैथिली काव्य : परिभाषा, उत्पत्ति एवं विस्तार, वर्गीकरण, ज्योतिषसँ संबंध

मैथिली काव्य :

काव्य कविक कृति थिक । कवि अपन चारूभाग जे किछु देखैत छथि, सुनैत छथि, अनुभव करैत छथि, अपन दिव्यचक्षुसँ अवलोकन करैत छथि, अपन प्रखर बु□सँ विश्लेषण करैत छथि तकरा समाजक समक्ष अपन कवित्व शक्ति द्वारा प्रभावोत्पादक ढंगसँ उपस्थापित करैत छथि जाहिसँ मानवक मनसँ ईर्ष्या, द्वेष, विकृति इत्यादि हटि जाइत अछि ।

यद्यपि कवि जे किछु करैत छथि से स्वान्तःसुखाय किन्तु उद्देश्य रहैत छनि बहुजनहिताय । ओ जे किछु चिंतन करैत छथि तकरा पद आ वाक्य रचना द्वारा उपस्थापित करैत छथि, जकर विश्लेषण करबामे स्वयंकेँ असमर्थ सेहो बुझैत छथि, ठीक ओहिना जेना कन्याक जन्मदाता पिता ओकर रूप सौन्दर्यक मूल्यांकन स्वयं नहि कए पबैत छथि अपितु ओकर पतिये पर छोड़ि दैत छथि...

कविः करोतु काव्यानि रसं जानन्ति पण्डिताः ।
दुहितुः रूपलावण्यं पतिर्जानाति नो पिता ॥

काव्य शब्दक व्याख्या एहि रूपेँ कएल जा सकैत अछि— 'कवयतीति कविः तस्य कर्मं काव्यम्'। स्पष्ट अछि जे काव्य कविक कर्म थिक । काव्य शब्दक व्याख्या संस्कृतक विद्वान लोकनि तऽ कयनहि छथि, पाश्चात्यो विद्वान लोकनि अपन अपन ढंगेँ विश्लेषित कयलनि अछि । संस्कृत समस्त भारतीय आर्यभाषाक जननी थिक । एकर प्रभाव समस्त भारतीय आर्यभाषा पर पड़ल अछि । मैथिली काव्य पर तऽ संस्कृत साहित्यक तेहन ने छाप छैक जे मिथिलाक अधिकांश संस्कृतक पंडित लोकनि मैथिलीमे काव्यक रचना कयलनि । कविशेखर बदरीनाथ झा तऽ स्पष्ट रूपेँ कहने छथि जे मैथिली काव्यमे संस्कृतक प्रतिबिम्ब भेटबे करत अन्यथा भाषामे सौन्दर्य आनब कठिन ! हुनकहि शब्दमे एकावली परिणयक निम्नांकित अंशकेँ देखल जाय—

उपर्युक्त पद्यमे सुमनजी द्वापरकेर हलधर (बलराम)क तुलना कलियुगक हलधर (किसान) सँ करैत छथि जे हुनक मात्र एकटा प्रिया छथिन रेवती आ सेहो हन्त (स्वर्गीया) आ अहाँकेँ दसटा– आर्द्रासँ स्वाती पर्यन्त । एतय ध्यातव्य थिक जे अनुगामिनी शब्दक प्रयोग कतेक सटीक छैक कारण जे सुमनजी प्रिया कहने छथि तेँ दसोटा स्त्रीसंज्ञक नक्षत्रक नामोल्लेख कयलनि अछि । संगहि ईहो यथार्थ जे कृषकक हेतु ओहि दसो नक्षत्रक अधिक महत्त्व अछि ।

उत्तरा खण्डकाव्य मध्य सेहो सुमनजी क्रूर ग्रहक कारणेँ दुर्योग आयब तथा ग्रहक शान्ति करब आवश्यक बुझैत छथि । निम्नलिखित पंक्ति द्रष्टव्य थिक–

क्यौ कहइछ ई थिक दैवी उत्पात ।
बजइछ क्यौ कारण किछु आने बात ॥

□□□

बुझि पड़इछ किछु तहिना सन दुर्योग ।
आबि तुलायल एतय क्रूर ग्रहयोग ॥

□□□

ग्रहक शाँति दैवीक उपद्रव हेतु ।
क्यौ कह, सैन्य सुसज्जित रक्षा सेतु ॥[94]

महाकवि लोकनि प्रायः अपन काव्यक समाप्ति पर ओकर समाप्ति–तिथिक घोषणा करैत छथि जे पाठकक हेतु दुरूह भए जाइत अछि कारण जे ओकर अर्थक संगति बैसएबाक हेतु ज्योतिषक अंक बैसएबाक सूत्र 'अंकस्य वामागतिः' केर अनुपालन करय पड़ैत छैक । एतय प्रस्तुत अछि प्रो० तन्त्रनाथ झाक कृष्णचरित महाकाव्यक समाप्तिक ई पद्य–

नग-निधि-वसु-शशि-शक समा, ज्येष्ठ असित अहि जीव ।
अरपल ई कृष्णाक चरण प्रणत 'मुकुन्द' अतीव ॥[95]

उपर्युक्त पद्यमे नग–7, निधि–9, वसु–8, शशि–1, अंकस्य वामा गतिः सँ 1897 शक संवत् भेल । पुनः ज्येष्ठ असित (कृष्णपक्ष) अहि (सर्प)–5, जीव–1। अर्थात् ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या भए जाइत अछि । अमरकोषमे तिथिक स्वामी पड़ीब सँ प□चदशी धरि कहल गेल अछि, क्रमशः – अग्नि, ब्रह्मा, गौरी, गणेश, सर्प, कार्तिकेय, रवि, शिव, दुर्गा, यमराज, विश्वेदेव, हरि, कामदेव, शिव, राशि–

तिथीशा वह्नि-कौ गौरी गणेशोऽहिर्गुहो रविः ।
शिवो दुर्गान्तको विश्वे हरिः कामः शिवः शशी ॥[96]

ज्योतिषी लोकनि ग्रहक स्थिति, गति, संक्रमण, क्रूरता, बलवत्ता, शुभाशुभ,

आब जाहि विद्वानक हम चर्चा करए जा रहल छी से काव्यशास्त्रक क्षेत्रमे सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण छथि आ हिनक चर्चा पूर्वहुमे कतोक स्थल पर कएल जा चुकल अछि । ओ थिकाह भरतमुनि । यद्यपि हिनकहु प्रसंग विद्वान् लोकनिमे मतैक्य नहि अछि– मुण्डे मुण्डे, मतिर्भिन्नाः । मुदा अधिकांश विद्वान् हिनका ईसा पूर्व 300–200 वर्ष मानैत छथि ।

एक शताब्दी ईसापूर्वमे कालिदास अपन नाटक 'विक्रमोर्वशीयम्' मे भरतमुनिक नामक संकेत देने छथि–

मुनिना भरतेन यः प्रयोगो भवतीष्वष्टरसाश्रयो नियुक्तः[48]

आचार्य भरतक नाट्यशास्त्रकेँ पंचम वेद कहल गेल जे सभक हेतु पाठ्य ओ ग्राह्य बनल । एहिसँ पूर्व चारू वेदक अध्ययनक प्रसंग परहेज छलैक–

न स्त्रीशूद्रौ वेदमधीयाताम्

मुदा आचार्य भरतक नाट्यशास्त्रमे कोनो एहन परहेज नहि, तेँ एकरा पाँचम वेद सेहो कहल गेल–

न वेदव्यवहारोऽयं संश्राव्यः शूद्रजातिषु ।
तस्मात् सृज परं वेदं प□चमं सार्वर्णिकम् ॥[49]

काव्यक अनेक विधा मध्य सभसँ लोकप्रिय नाटक थिक, कारण जे एहिमे श्रव्य एवं दृश्य दुनू गुण विद्यमान रहैत अछि ।

काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला ।
तत्राऽपि च चतुर्थो ऽङ्कः तत्र श्लोकचतुष्टयम् ॥

ई उक्ति प्रख्यात अछि आ तेँ प्रायः नाटकेकेँ ध्यानमे राखि आचार्य भरत काव्यक लक्षण प्रस्तुत कयलनि । हिनक ओ काव्यलक्षण जे हिनका काव्यशास्त्रीक श्रेणीमे सर्वोच्च आसन पर आसीन कयने छनि, एतय प्रस्तुत अछि–

मृदुललित-पदार्थं गूढ़शब्दार्थहीनम्
जनपदसुखबोध्यं युक्तमन्नृत्ययोज्यम् ।
बहुकृतरसमार्गं सन्धिसन्धानयुक्तम्
स भवति शुभकाव्यं नाटकं प्रेक्षकाणाम् ॥[50]

काव्यशास्त्रक एकटा प्रमुख अंग थिक रस आ एकरहु आविष्कारक वा अन्वेष्टा किंवा स्रष्टा भरते छथि । रसनिष्पत्तिक प्रसंग प्रयुक्त सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सूत्र 'विभावानुभावव्यभिचारि संयोगाद्रसनिष्पतिः' हिनक नाट्यशास्त्रक उपज थिक । ई आठ प्रकारक रसक स्थितिकेँ स्वीकार कयने छथि; जे थिक–

श्रृंगार हास्य करुण रौद्र वीर भयानका: ।
बीभत्साद्भुतसंज्ञौ चेत्यष्टौ काव्ये रसा: स्मृता: ॥[51]

आचार्य भरत अलंकारक प्रसंग सेहो विचार करैत मात्र चारि गोट अलंकारकेँ स्वीकार कयलनि अछि–

उपमा रूपकं चैव दीपकं यमकं तथा ।
अलंकारास्तु विज्ञेयाश्चत्वारो नाट्यकाव्ययो: ॥[52]

पूर्वहु चर्चा कए चुकल छी जे काव्यांगक प्रयोग वेद, पुराण, उपनिषद् इत्यादि महान ग्रंथहुमे अछि आ ओहिसँ पूर्वहु, जहियासँ मनुष्य भाषाक ज्ञान पओलक । अत: अलंकारक प्रयोग वेदमे कोना अछि से द्रष्टव्य थिक :

1. **उत त्व: पश्यन्न ददर्श वाचमुत त्व: शृण्वन्न शृणोत्येनाम् ।**
उतो त्वस्मै तन्वं विसस्रे जायेव पत्या उशती सुवासा: ॥[53]

अर्थात् एहि वाणीकेँ क्यो नहि देखैत अछि, क्यो सुनितो नहि अछि एवं दोसर विद्वानक सामने ओ अपन शरीर पसारि दैत अछि ।

2. **द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते ।**
तयोरन्य: पिप्पलं स्वाद्वत्ति अनश्नन्यो अभिचाकशीति ॥[54]

अर्थात् दूटा सुन्दर पाँखिबलाक संग रहयबला मित्ररूप पक्षी एकहि वृक्ष पर स्थित अछि जाहिमेसँ एकटा पीपर खाइत अछि आ दोसर नहि खाइत अपन प्रकाश दैत अछि ।

व्याकरणोकेँ वेदेक अंग मानल जाइत अछि– 'मुखं व्याकरणं स्मृतम्' । हमरालोकनिक बीच प्रामाणिक व्याकरणक ग्रंथ अछि पाणिनिक अष्टाध्यायी । यद्यपि एकर अवलोकनसँ स्पष्टत: प्रतीत होइत अछि जे एहिसँ पूर्वहु व्याकरणक उत्तम ग्रंथ रहल होयत मुदा आइ ओ उपलब्ध नहि अछि । महावैयाकरण उपमाक चारि तत्त्वक उल्लेख कयने छथि–

उपमेय, उपमान, वाचक एवं साधर्म्य –जे उपमाक मूल तत्त्व थिक–

1. **तुल्यार्थैरतुलोपमाभ्यां तृतीयान्यतरस्याम् ।**[55]
2. **उपमानानि सामान्यवचनै: ।**[56]
3. **उपमितं व्याघ्रादिभि: सामान्याप्रयोगे ।**[57]

एतदतिरिक्त उपमाक श्रौती आर्थी भेद व्याकरणेक आधाार पर कयल गेल ।

महावैयाकरण पाणिनिक पश्चात् पत□जलि एवं कात्यायन सेहो महाभाष्यमे

अनावृष्टि अतिवृष्टि वा, पाथर वृष्टि अकाल ।
जलचर सब थल पर चढ़ै, तौँ जानी भूचाल ॥
शान्त जन्तुमे क्रूरता, क्रूर जन्तु हो शान्त ।
तजै मूसगन बिअरि जौ, तौँ भूकम्प नितान्त ॥[91]

मैथिली साहित्यक आधर-स्तम्भ प्रो० सुरेन्द्रझा 'सुमन'क ज्योतिष शास्त्रमे केहन पहुँच छनि से ककरहुसँ चोराओल नहि अछि । हुनक 'मिथिला प□चाङ्ग'सँ के परिचित नहि छी ? स्वाभाविक थिक एहन कविक काव्यमे ज्योतिष तत्त्वक बाहुल्य । 'दत्त-वती' महाकाव्यक निम्नलिखित पंक्तिक अवलोकन कयल जाय जाहिमे गुरु कोन प्रकारेँ अन्य शास्त्रहि जकाँ ज्योतिषक ज्ञान सेहो अपन शिष्यकेँ करबैत छथि–

गणित फलित नक्षत्र राशि दिन लग्न करण तिथि योग ।
ग्रह उपग्रहक गति अनुगति ग्रहणहु ज्योतिष उपयोग ॥

पुन: सुमनजी कहैत छथि जे क्रूर ग्रहक निवारण मात्र शान्ति पाठ नहि थिक, टीपनि मात्र टिपने ग्रह नहि कटैछ, शनैश्चर सन पाप ग्रहक संक्रमणसँ घोर विपत्ति अयबे करत । निम्नांकित पंक्तिक अवलोकन अप्रासङ्गिक नहि होयत–

विग्रहकेँ ग्रह क्रूर मानि कय दान ।
शान्तिपाठ करबे की उचित निदान ?
शनैश्चरक संक्रमण काल विकराल ।
टीपनि टिपने की टरइछ ग्रह-जाल ?[92]

सुमनजीक लिखल प्रत्येक रचनामे प्राय: ज्योतिषक प्रभाव दृष्टिगत होइत अछि । प्रतिपदाक निम्नांकित पद्यक अवलोकन कयल जाय–

हुनक रेवती प्रिया हन्त !
भदवा धरि बारलि एक ।
आर्द्रासँ स्वाती धरि
अनुगामिनी अहाँक अनेक ॥[93]

उपर्युक्त पद्य सुमनजीक सूक्ष्म एवं संतुलित ज्योतिष ज्ञानक द्योतक थिक कारण जे आर्द्रासँ स्वाती धरि दसटा नक्षत्र अछि (आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वफल्गुनी, उत्तर फल्गुनी, हस्त, चित्रा एवं स्वाती) जे स्त्रीसंज्ञक थीक, पुन: विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा एवं मूल नपुंसक आ शेष सभ पुरुष संज्ञक । पंचांगमे एकटा दैनिक नक्षत्र होइत अछि आ दोसर लगभग तेरह दिन पर बदलैत अछि । कारण जे बारह मासमे सत्ताइसटा नक्षत्रक संचार होइत छैक । पंडित लोकनि नक्षत्रक स्त्री-पुरुष संयोग देखि वर्षाक भविष्यवाणी करैत छथि । स्त्री-नपुंसक योगमे वा पुरुष-नपुंसक योगमे किंवा पुरुष-पुरुष अथवा स्त्री-स्त्री योगमे वर्षा नहि होइत अछि ।

उपर्युक्त श्लोक ज्योतिषसँ कोना प्रभावित अछि से द्रष्टव्य थिक–

अग्रे धेनुः सवत्सा वृषगजतुरगा दक्षिणावर्त्तवह्निः
दिव्यस्त्री पूर्णकुम्भो द्विजवर-गणिका श्वेतमाला-पताकाः ।
मत्स्यो मांसं घृतं वा दधि मधु रजतं कांचनं शुक्लवस्त्रं
दृष्ट्वा स्पृष्ट्वा पठित्वा फलमिह लभते मानवो गन्तुकामः ॥

मिथिलामे बच्चाक जन्म होइतहि ओकर टीपनि बनाओल जाइत छैक, जाहि आधार पर जातकक भविष्यक संकेत भेटैत छैक । राजा तुर्वसु सेहो एकवीरक टीपनि बनबाए ओकर फलादेश व्यग्रतापूर्वक सुनलनि । एकावली परिणयक निम्नांकित पंक्ति पर दृष्टिपात कयल जाय–

शिशु लखि गणना करइत जे
रहलाह राति भरि जगले ।
टीपनि बनाए से शुभ फल
दैवज्ञ सुनाओल लगले ॥
बुझि सुतक ग्रहस्थिति उत्तम
नृप गणक गणहि परितोषल ।
वितरण प्रभावसँ मानू
कल्पद्रुमहुक मद सोखल ॥[88]

कविवर सीताराम झा तऽ ज्योतिषीये छलाह । हुनक 'अम्बचरित' महाकाव्य एवं अन्यान्यो रचना सभमे ज्योतिष तत्त्वक प्रधानता अछि । मिथिलावासीक मान्यता छनि जे कोनो प्रकारक विपत्ति ग्रहक क्रूरता, वक्रता, युति, गति, उच्च, नीच, मार्गी, वक्री, शुभाशुभ दृष्ट, अंशबल इत्यादिक कारणेँ अबैत अछि । सीताराम झा भूकम्पक लक्षण दैत कहैत छथि–

जखन कुगर्भक विकृत वह्नि जल वायु बढ़ै अछि ।
रविक राशि पुनि जखन पाँच ग्रह आबि चढ़ै अछि ॥
यदि वा रविशशिविम्ब निकट पृथ्वीक रहै अछि ।
भूगर्भस्थ विकार तखन बहराए चहै अछि ॥[89]

पुनश्च–

□तु परिवर्त्तन समयमे, भूकम्पक अछि लेख ।
मकर-मेष-कर्कट- तुला-संक्रम निकट विशेख ॥[90]

ज्योतिषी कविवर सीताराम झा भूकम्पक अन्यायो लक्षण सभक उल्लेख कयलनि अछि । अवलोकनीय थिक–

उपमावाचक शब्दक चर्चा कयने छथि । मुदा अलंकारक विकासक जे वास्तविक क्रम अछि से भरतमुनिक चारि गोट अलंकारसँ आरम्भ भए आइ लगभग 125 मूल अलंकारकेँ मान्यता प्राप्त छैक । एतबे नहि, एक–एक अलंकारक 25–25 टा भेद कएल गेल अछि । भरतक पश्चात् अलंकारक जे विकास भेल तकर मात्र चर्चेटा कएकेँ हम संतोष करब कारण एहिमे ओझराएब तऽ अपन उद्देश्यसँ भटकि जायब । भरतक पश्चात् भामह 38 गोट अलंकारक उल्लेख कयलनि अछि । भामहक पश्चात् दण्डी 35 गोट अंलकारकेँ स्वीकार कयलनि । तहिना उद्भट 41 अलंकार, वामन 31 अलंकार, रुद्रट 63 अलंकार, मम्मट 68 अलंकार आ जयदेव 108 गोट अलंकारक वर्णन कयने छथि जे सर्वाधिक थिक ।

तहिना छन्दक प्रसंग सेहो, जेना कि पूर्वहुमे चर्चा भए चुकल अछि जे छन्द भाषासँ पूर्वक थिक आ आइ ओकर संख्यामे पर्याप्त विस्तार भए चुकल अछि आ एखनहु ओकर विकास भइये रहल अछि । पं. गोविन्द झा[58], प्रो० उमानाथ झा[59] प्रभृति विद्वान् भाषासँ पूर्वहि छन्दक उत्पत्तिकेँ स्वीकार करैत छथि ।

भारतीय आर्यभाषामे सभसँ पुरान छन्द सभ वेदमे प्रयुक्त भेल अछि । ओहि छन्द सभक आधार पर नव–नव छन्द विकसित भेल । पं० गोविन्द झा वेदमे प्रयुक्त छन्द सभक नामोल्लेख सेहो कयलनि अछि । हुनकहि शब्दमे अवलोकनीय थिक–

''भारतीय आर्यभाषामे सभसँ पुरान छन्द सभ वेदमे भेटैत अछि । वेदहिक छन्द सभसँ, सम्भव जे, अधिकांश मैथिलीक छन्द सभ विकसित भेल हो । वेदमे सात गोट मूल छन्द पाओल जाइत अछि गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, वृहती, पंक्ति, त्रिष्टुप् ओ जगती जे 8, 10, 11 व 12 वर्णक चरण सभसँ बनल अछि । ओहि समयमे मात्रिक छन्द नहि छल ।[60]

उपर्युक्त कथनक सम्पुष्टिक हेतु किछु छन्दक उदाहरणक अवलोकन कयल जाय–

8 वर्ण छन्द :

यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु ।
शन्नः कुरु प्रजाभ्यो ऽभयं नः पशुभ्यः ॥[61]

—8 वर्ण /चरण

अपिच–

विश्वानि देव सवितर् ॥
दुरतानि परासुव ॥
यद्भद्रं तन्न आसुव ॥[62]

–8 वर्ण/चरण

11 वर्णक छन्द :

यज् जाग्रतो दूरमुदैति दैवं
तदु सुप्तस्यि तथेवैति ।
दूरं गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं
तन् मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥[63]

–वर्ण/चरण

छन्दोम□जरीक भूमिका लिखैत डॉ० ब्रह्मानन्द त्रिपाठी सेहो 'सप्तछन्दांसि'क चर्चा करैत कहैत छथि जे एहि छन्दमे चारि–चारिक क्रममे अक्षरक संख्या बढ़ैत अछि। हुनकहि शब्दमे द्रष्टव्य थिक–

गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पंक्ति, त्रिष्टुप् तथा जगती– ये सप्तछन्दांसि नामसे निर्दिष्ट हैं। इन छन्दों के अक्षर संख्या क्रमसे चार चार बढ़ती जाती है।[64]

छन्दशास्त्रक प्राचीन नाम छन्दोविचिति थिक तथा शास्त्रभेदेँ एकरा छन्दोऽनुशासन, छन्दोवृत्ति, छन्दोमान आदि नामसँ सेहो अभिहित कयल गेल।[65]

पाणिनीय शिक्षामे छन्दकेँ वेदपुरुषक पादस्थानीय मानल गेल अछि– *"छन्दः पादौ तु वेदस्य"* जेना पयर द्वारा मनुष्य गतिशील होइत अछि ओकर अभावमे पंगु, तहिना वेदक हेतु छन्द तद्वत् थीक। यैह कारण अछि जे वेदकेँ 'छन्दस्' सेहो कहल जाइत अछि।[66]

पूर्वकथित 'सप्तछन्दांसि' वेदमे प्रयुक्त होइत अछि तेँ ओ छन्द सभ वैदिक छन्द थिक। लौकिक छन्दक प्रादुर्भाव आदिकवि श्रीमद्वाल्मीकिक मुहसँ अनायासहि स्फुटित श्लोकसँ भेल। क्रौंच–क्रौंचीक मैथुनरत जोड़ामे सँ ब्याधा द्वारा क्रौंचक हत्या पर आदिकविक हृदय द्रवीभूत भए गेल आ अनायासहि मुहसँ उच्चरित भेल जकर उल्लेख पूर्वहि कयल जा चुकल अछि।

आदिकविक आदिश्लोक अनुष्टुप छन्दमे छल जकरा 'नूतन छन्दावतार' कहल गेल।[67] एतहिसँ लौकिक छन्दक श्रीगणेश भेल। वेदमे जेना सातहिटा मात्र छन्दक प्रयोग भेल अछि तहिना लौकिक छन्दक संख्या निरन्तर बढ़ितहि रहल।[68]

छन्दक विकासक हेतु ध्यातव्य थिक जे लौकिक छन्दक प्रथम प्रयोक्ता श्रीमद्वाल्मीकि छलाह जे अपन रामायणमे 13 गोट छन्दक प्रयोग कयने छथि। तत्पश्चात् महाभारतमे 18 छन्द, श्रीमद्भागवतमे 25 गोट छन्दक प्रयोग कयल गेल। तत्पश्चात् काव्यमे छन्दक संख्या 50 धारि पहुँचि गेल। छन्दोमंजरीक भूमिकाक एहि अंश पर दृष्टिपात कयल जाय–

मिथिलामे ज्योतिष विद्याक बड़ विशिष्ट महत्त्व अछि कारण जे लोककेँ एकर प्रमाणिकता पर विश्वास भए गेल छैक। प□चांगमे जाहि प्रकारेँ गणना कएल गेल रहैत छैक तहिना फलीभूतो होइत छैक। पतरासँ उदय एवं अस्तक समय देखि लियऽ आ ओहिमे घड़ीक अनुसार देशान्तर आ वेलान्तर संस्कार कए आकाश दिस ताकू, सूर्य उगैत आ डुबैत देखि पड़ताह। तहिना सूर्य ग्रहण, चन्द्र ग्रहण, दिन, तिथि, नक्षत्र इत्यादिक जे मान छैक तकर प्रमाणिकता पर ककरहु संदेह नहि छैक। मिथिलाक कवि लोकनि ज्योतिष शास्त्रमे पटु रहलाह अछि आ एहि पर विश्वासो ततेक छनि जे ओ लोकनि अपन काव्यहुमे यथास्थान ओकर समावेश कयने छथि आ से स्वाभाविको थिक। काव्यक कारणमे कहले गेल अछि जे कविकेँ प्रतिभा, व्युत्पत्ति आ अभ्यास तीनू रहब आवश्यक। व्युत्पत्ति भेल विभिन्न शास्त्रक गंभीर अध्ययन आ तेँ हुनका द्वारा रचल गेल काव्यमे ओकर छाप रहबे करतैक। आधुनिक मैथिली साहित्यक अधिष्ठाता कवीश्वर चन्दा झा श्री रामचन्द्रक जन्म समयक विशिष्ट ग्रहयोगक जे संकेत दैत छथि से सहजहि मनकेँ विमुग्ध करत–

शुक्ल पक्ष नवमी शुभ कर्क उदित हित।
मध्यदिवस नक्षत्र पुनर्वसु अभिजित॥
प□चग्रह उच्चस्थ मेषमे दिनकर।
सृष्टि त्रिगुण उत्पत्ति शक्तिकर जनिकर॥[85]

मिथिलावासीकेँ सकुन अपसकुन पर सेहो बड़ विश्वास छैक। रामसीताक विवाहक पश्चात् दशरथ अयोध्या आबि रहल छलाह। बीचहिमे हुनका अपसकुन आ सकुन देखयलनि। कवीश्वरेक शब्दमे द्रष्टव्य थिक–

कयल वशिष्ठक नृपति प्रणाम।
घोर निमित्त देखि तहि ठाम॥
असकुन गुनि मन चिन्ता आब।
कहु गुरु शान्ति अनिष्ट प्रभाव॥
अछि किछु भयक योग तत्काल।
अचिरहि हो सुख हे महिपाल॥
हरिण अनेक प्रदक्षिण जाय।
एहिसँ संकट विकट मेटाय॥[86]

कविशेखर बदरीनाथ झा अपन एकावली परिणयमे यात्रा–समयमे जाहि वस्तु सभकेँ शुभ मानैत छथि तकरहु आधार ज्योतिषे थिक–

पूर्ण कलश दधि मीन द्विज, गणिका निरखि नरेश।
वनिता–सुत–अनुचर सहित, कएलन्हि भवन प्रवेश॥[87]

हरिवासर, जितिया, छठि इत्यादि कारण आब तऽ चन्द्रायण, तारायण (पन्द्रह दिन आ मास दिनक) व्रत कयनिहारक दर्शन दुर्लभ अछि । ततबे नहि एकदिना व्रत सभमे तऽ आब लोक व्रतक अर्थे बिगाड़ि देलक अछि । चाह आ सर्बतक तऽ कथे कोन जे लोक सेव, सन्तोला आ ड्राइफ्रुट्स भरि पेट दकरि लेत आ कहत जे हम व्रतमे छी । निराहार व्रत प्राय: एखनहु शतप्रतिशत छठि, हरिवासर आ हरितालिका कयनिहारि वा कयनिहारे करैत छथि ।

मिथिलामे रहनिहार विद्वान् चाहे धर्मशास्त्र पढ़ने होथि वा व्याकरण, दर्शन पढ़ने होथि वा न्याय, वेद पढ़ने होथि वा साहित्य—ज्योतिष शास्त्रक ज्ञान हुनका रहिते छनि । यैह कारण थिक जे मिथिलामे रचल गेल साहित्य पर ज्योतिषक प्रभाव पूर्णरूपेण भेटैत अछि, कारण जे लेखकक विविध शास्त्रक ज्ञान हुनक साहित्यमे सन्निहित रहब स्वाभाविक थिक ।

एतय लोक बिनु दिन गुणओने कोनो शुभ कार्य तऽ नहियेँ करैत अछि अपितु सामान्यो यात्रा धरिमे, सामान्यो बुझनिहार लोक दिनक विचार कऽ लैत अछि, यैह कहैत जे ''नहि किछु जानी तऽ दिग्बल धऽ तानी ।''[82] एहिसँ स्पष्ट अछि जे दिग्बल, दिग्विरोध, दग्धयाम, अ□प्रहरा, तिथि, नक्षत्र इत्यादिक ज्ञान मिथिलाक निरक्षरो नर नारी केँ रहैत छैक । यैह कारण थिक जे मैथिली काव्यमे ज्योतिषक ज्ञान भरल पड़ल अछि ।

मैथिलीक हास्यव्यंग्य सम्राट प्रो० हरिमोहन झा अपन 'खट्टर ककाक तरंग' मे तेना ने ज्योतिषीजीकेँ खट्टर ककासँ भिड़न्त करा दैत छथि जे एक दोसराक मतक खण्डनमे लागि जाइत छथि । ओ खण्डन-मण्डन ततेक ने रोचक, प्रचलित तथा सर्वग्राही अछि जे सामान्यो पाठक आकृष्ट भऽ जाइत छथि । कारण जे एतय सभकेँ एतबा ज्ञान छैक जे- **शनौचन्द्रे त्यजेत् पूर्वां.... मेष सिंह धनु पूवे चन्दा... तथा हरति सकल दोषाः चन्द्रमा....।** प्रो० हरिमोहन झा उपर्युक्त पुस्तकक 'ज्योतिष' शीर्षकमे खट्टर कका द्वारा पर्याप्त वाद-विवादसँ पाठककेँ आनन्दक संग कतोक गूढ़ तत्त्वक सेहो संकेत दैत छथि ।[83] तहिना 'प्रणम्य देवता'क 'ज्योतिषाचार्य' शीर्षकमे दूटा ज्योतिषीकेँ एक दोसरासँ लड़ाए दैत छथि, जाहिसँ पाठकक मनोरंजन तऽ होइतहि छनि संगहि ज्योतिषक कतोक गुत्थी सेहो सोझरा जाइत अछि ।[84]

मैथिलीमे काव्य रचनिहार प्राचीन कालमे पंडिते (संस्कृतक विद्वान्) रहैत छलाह किन्तु बीसमो शताब्दीमे जे पण्डित वर्ग द्वारा मैथिलीमे काव्यक सृजन भए चुकल अछि, ताहिमे पर्याप्त ज्योतिषक प्रभाव देखबामे अबैत अछि; यथा—कविशेखर बदरीनाथ झाक 'एकावली-परिणय, कविचूड़ामणि 'मधुप'क 'राधा-विरह', कविवर सीताराम झाक 'अम्बचरित', प्रो० तन्त्रनाथ झाक 'कृष्णचरित', प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन'क 'दत्तवती', 'उत्तरा', 'प्रतिपदा', पं० जीवनाथ झाक 'रावण-वध' इत्यादि ।

यद्यपि छन्दशास्त्रमे वार्णिक एवं मातृक भेद से अनेक छन्दों का उल्लेख हुआ है किन्तु उनमे से बहुत से छन्द अछूते रह गये हैं। वाल्मीकि रामायणमें 13 छन्दों का, महाभारतमें 18 छन्दों का श्रीमद्भागवत में 25 छन्दो का प्रयोग हुआ है । इनके परवर्ती काव्यों में यह संख्या पचास तक पहुँची है ।[69]

आइ-काल्हि तऽ वार्णिक एवं मात्रिक छन्द मिलाय शताधिक संख्या भए गेल अछि । एकटा समय छल जे कवि बनबासँ पूर्व विद्वान् लोकनिकेँ पहिने छन्दशास्त्रक अभ्यास करए पड़ैत छलनि आ तखन काव्य-सृजन ।

आजुक युगमे छन्दक बन्धन शिथिल भए गेल अछि । एकरा विकास कहियौक वा ह्रास—परिवर्त्तन तऽ थीके । क्यो विद्वान् छन्दरहित कविताकेँ छन्दसँ मुक्ति पयबामे विकास बुझैत छथि तऽ रूढ़िवादी संस्कृत पंडित लोकनि एकरा ह्रास बुझैत छथि ।

काव्यक उत्पत्ति आ विस्तारक प्रसंग विचार कयने एकर जाही तत्त्वकेँ देखब सैह अति प्रचीन कालक प्रतीत होयत । जहिना छन्द, तहिना अलंकार, तहिना रस, ध्वनि, गुण, दोष इत्यादि । 'रस' अत्यन्त प्राचीन कालसँ भारतीय वाङ्मयक अंग बनल अछि । चारू वेद, ऐतरेय ब्राह्मण, शतपथ ब्राह्मण, कठोपनिषद्, प्रश्नोपनिषद्, मुण्डकोपनिषद्, तैत्तिरीयोपनिषद्, वृहदारण्यकोपनिषद्, पाणिनीय अष्टाध्यायी, निरुक्त, रामायण, महाभारत, रसेश्वर दर्शन, चरक संहिता, भावप्रकाश आदि समस्त प्राचीन ग्रंथमे रस शब्दक प्रचुर प्रयोग भेल अछि । एकर संक्षिप्त चर्चा पूर्वहु कयल गेल अछि ।

वस्तुत: काव्यशास्त्रीय ढंगसँ परिभाषित कयनिहार प्रथम आचार्यक रूपमे एहू क्षेत्रमे भरतहिक नाम शीर्ष पर अछि । ओ प्रथमत: आठ प्रकरक रसक चर्चा अपन नाट्यशास्त्रमे कयलनि जे आइयो अकाट्य अछि ।

शृंगारहास्य करुण रौद्र वीर भयानकाः ।
बीभत्साद्भुतसंज्ञौ चेत्यष्टौ काव्ये रसाः स्मृताः ॥[70]

रसनिष्पत्तिक प्रथम सूत्र देनिहार सेहो भरते छथि- 'विभावनुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रस निष्पत्तिः' जकरा बादमे चलि कए अभिनवगुप्त पल्लवित कयलनि ।

प्रत्येक काव्यशास्त्री काव्यक अंग-प्रत्यंग पर अपन पूर्ववर्ती आचार्यक मतक खंडन करैत देखि पड़ैत छथि । विभिन्न विद्वान् काव्यक भिन्न-भिन्न तत्त्वकेँ ओकर अनिवार्य अंग मानैत छथि । ई भिन्न गप्प जे क्यो अलंकारक महत्त्व दैत ओकरहि विशद विवेचन करैत छथि तऽ क्यो छन्दक बिना कविताकेँ अपूर्ण बुझैत छथि, क्यो रसकेँ काव्यक आत्मा बुझैत छथि तऽ क्यो घ्वनिकेँ । तात्पर्य जे आदिकालहिसँ काव्यक बीज विद्यमान अछि जे भरतमुनिसँ गतिशील भेल आ अर्वाचीनहु कालमे ओ गतिशील दृष्टिगोचर होइछ ।

वर्गीकरण :

काव्यक अधययनक क्षेत्र जेना-जेना विस्तृत होइत गेल तेना-तेना एकर वर्गीकरणक आवश्यकता प्रतीत होइत गेल । जाहि दिन मात्र 'सप्तछन्दांसि'येटा छल (मात्र सातहिटा छन्द), मात्र चारियेटा अलंकारक प्रयोग भेटैत छल (उपमा रूपकं चैव दीपकं यमकं तथा), 'दधाानः कलशे रसम्' मात्र लोक बुझैत छल, तहिया काव्यक वर्गीकरणक कोन प्रयोजन छलैक ? किन्तु जेना-जेना काव्यशास्त्रक असार-पसार बढ़य लागल, विद्वान् लोकनि एकर विभिन्न पक्ष पर दृष्टिपात करए लगलाह, एकर वर्गीकरण करब आवश्यक बुझि पड़लनि । आचार्य लोकनि एकरा वर्गीकृत करबाक आधार देखय लगलाह, किन्तु 'मुण्डे-मुण्डे मतिर्भिन्ना:' चरितार्थ भेल । हुनका लोकनिक काव्यक जे वर्गीकरण कयल गेल तकर निम्नलिखित आधार अछि-

(1) भाषाक आधार पर

(2) रमणीयताक आधार पर, एवं

(3) स्वरूपक आधार पर ।

1. **भाषाक आधार पर**- भाषाक आधार पर काव्यकेँ वर्गीकृत कयनिहार आचार्य छलाह भामह एवं रुद्रट । भामह काव्यकेँ तीन वर्गमे विभक्त कयलनि- संस्कृत काव्य, प्राकृत काव्य एवं अपभ्रंश काव्य । रुद्रट हिनक वर्गीकरणकेँ स्वीकार करैत ओहिमे तीन प्रकार जोड़ि देलनि जे थिक—मागध काव्य, पैशाच काव्य एवं शौरसेन काव्य । बुझि पड़ैछ जेना ई भाषाक अतिरिक्त स्थानकेँ सेहो ध्यानमे रखने होथि ।

भाषाक भेदक आधार पर काव्यक वर्गीकरणक कटु आलोचना परवर्त्ती आचार्यक द्वारा भेल । हुनका लोकनिक कथन छलनि जे भाषा अनन्त अछि आ एहन परिस्थितिमे ओकर पृथक्-पृथक् निर्देश असम्भव आ व्यर्थ होयत । हुनका लोकनिक द्वारा उठाओल गेल आपत्ति वस्तुतः समीचीन बुझना जाइछ कारण जे एकहिटा भाषाक अनेक उपभाषा होइत अछि आ तखन काव्यक संख्या कतेक होयत से स्वतः अनुमान्य थिक ।

2. **रमणीयताक आधार पर**- रमणीयताक आधार पर आचार्य लोकनि काव्यकेँ तीन भागमे विभक्त कयलनि-

(i) ध्वनिकाव्य वा उत्तम काव्य,

(ii) गुणीभूत व्यंग्यकाव्य वा मध्यम काव्य तथा

(iii) चित्रकाव्य वा अधम काव्य ।

गद्य साहित्य दिनानुदिन बढ़ल जा रहल अछि । आब एम्हर अभिनन्दन आ भेँटवार्ता जोर पकड़ने जा रहल अछि ।

ज्योतिषसँ संबंध :

मैथिली काव्यक निर्माता मैथिले थिकाह, चाहे ओ नेपालमे रहथु वा आसाममे, बंगालमे रहथु वा झाड़खण्डमे । मैथिली काव्यकेँ ज्योतिषसँ अत्यन्त निकट संबंध अछि । ज्योतिष एक शास्त्र थिक जेना वेद, न्याय, दर्शन, धर्मशास्त्र, व्याकरण इत्यादि । देशक विभिन्न भागसँ विद्वान् लोकनि एहि विद्या सभकेँ सिखबाक हेतु मिथिला अबैत छलाह । मिथिला प्राचीन कालहिसँ विद्याक केन्द्र रहल अछि आ खास कए धर्मशास्त्र एवं ज्योतिष विषयमे तऽ एतय केर निर्णय अकाट्य अछि-

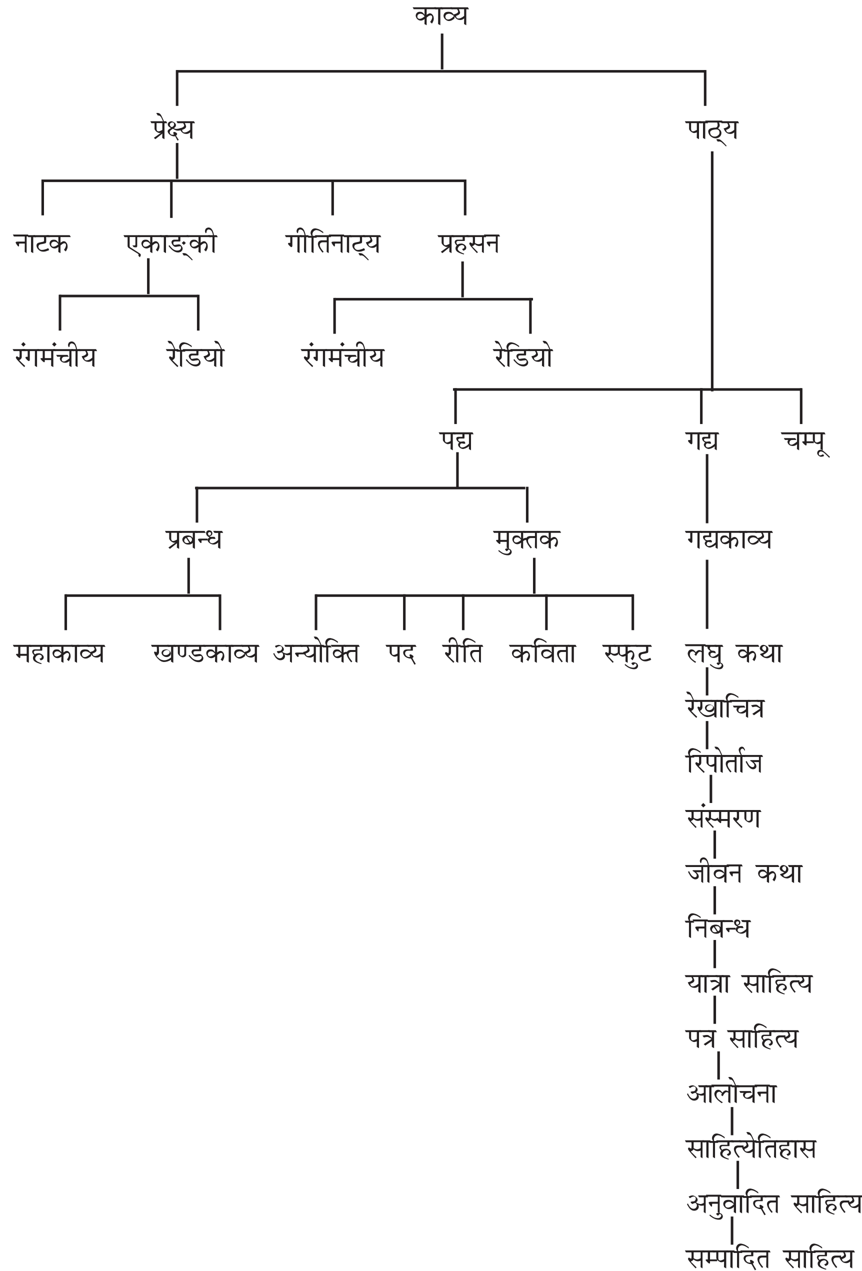
धर्मस्य निर्णयो ज्ञेयो मिथिलाव्यवहारतः[81]

कोनहु शास्त्रक अध्ययनक हेतु भाषाक प्रयोजन होइत अछि । पहिने भाषा तखन काव्य आ काव्यक पश्चाते कोनहु शास्त्र । कारण जे कोनहुँ शास्त्रकेँ बुझबाक हेतु काव्यक प्रयोजन होइछ ओ चाहे पद्य काव्य होअए अथवा गद्य काव्य । एतय केर लोक सदासँ धार्मिक प्रवृत्तिक रहल अछि आ धर्मशास्त्रक निर्णयक हेतु ज्योतिष अभिन्न अंग रहल अछि । जतेक प्रकारक व्रतक प्रचलन एतय अछि से कतहु अन्यत्र दुर्लभ । एतय नाना प्रकारक देवी देवताक पूजा होइत अछि; यथा- दुर्गापूजा, कालीपूजा, विश्वकर्मापूजा, इन्द्रपूजा, सरस्वतीपूजा, अनन्तपूजा, गणेशपूजा, सत्यनारायणपूजा, रामनवमी, कृष्णाष्टमी इत्यादि । एतदतिरिक्त सूर्य, चन्द्र, नाग इत्यादि दृष्ट देवताक पूजा सेहो कम महत्त्वक नहि अछि । नागप□चमी दिन तऽ लोक धानक लाबा लए केँ पढ़ैत अछि-

खेलो खेलो रे सर्प्पा
जहाँ खेले आरू बारू
जहाँ खेले बीछ निरारू
पशु पक्षी करे घाव
नाग कुण्ड फाटि मरे
दोहाइ ईश्वर महादेव, गौरा पार्वती के ।

ई मन्त्र पढ़ि लोक धानक लाबा अपन आलयमे छीटि दैत अछि जाहिसँ नाग देवता प्रसन्न होइत छथि । एतबे नहि नवग्रहक पूजा, बटसावित्री, मधुश्रावणी एवं कतोक एहन पूजाक प्रचलन मिथिलामे अछि तकर ठेकान नहि । ग्रहक नाम पर तऽ लोक सोमवारी, मङ्गलवारीसँ लऽ कऽ रवि पर्यन्तक व्रत करैत अछि । एतय केर प्रसि□ व्रत थिक- शिवरात्रि, नरकनिवारण, हरितालिका, हरिवासर, जितिया, रामनवमी, कृष्णाष्टमी, महाष्टमी (दुर्गापूजा), देवोत्थान एकादशी इत्यादि । आजुक समयमे कठिन व्रत अछि

मुदा एहूसँ समीचीन वर्गीकरण डॉ० दिनेश कुमर झा अपन पोथी मैथिली काव्यशास्त्रमे कयने छथि । द्रष्टव्य थिक–



(i) **ध्वनिकाव्य वा उत्तम काव्य –**

आचार्य मम्मटक अनुसार ध्वनिकाव्य वा उत्तम काव्य ओ थिक जाहिमे वाक्यार्थक अपेक्षा व्यंग्यार्थ विशेष सुन्दर एवं चमत्कारक होइत अछि–

इदमुत्तममतिशयिनि व्यंग्ये वाच्याद्ध्वनिर्बुधैः कथितः ।[71]

कतोक विद्वान् कविता एवं वनितामे समानता देखैत छथि– **कविते वनिता थिकी वनिते कविता थिकी** । जहिना वनिता कोमलङ्गी तहिना कविता कोमलकान्त शब्दावली युक्त, जहिना वनिता स्वाभाविक आकर्षक तहिना कविता सेहो श्रवण सुखद, वनिता यदि लोकसृष्टिकर्त्ता विधाताक रचना थिक तऽ कविता ग्रन्थसृष्टिकर्त्ता कविक । एही तरहक विद्वान् वनिताक तीन रूपक संग कविताक तीन रूप (उत्तम, मध्यम, अधम) मे सादृश्य सि□ करबाक प्रयास कयने छथि ।

सरस–उच्च–कुल–संभूत स्वकीया नायिका सभमे रस प्रकाशनक भाव अभिव्यंजनापूर्ण होइत अछि । लज्जाक अवगुंठनमे भावगोपन करबाक कला हिनक उत्तम गुण—उत्तम मर्यादा अछि । ई अपन आशयकेँ शब्दक माध्यमे नहि, अपन चेष्टासँ व्यंजित–ध्वनित करैत छथि । ध्वनिकाव्यमे सेहो ठीक यैह गुण देखल जाइत अछि । एहन काव्यक शब्दार्थ अंतरंग भाव सभकेँ निर्लज्ज वाराङ्गना सदृश साक्षात् स्पष्ट नहि करैछ, ओहि पर ध्वनिक मधुर आवरण पड़ल रहैत छैक । ध्वनिसँ आच्छादित एहन भाव सभक रसास्वादन सर्वसाधारण व्यक्तिक कोन कथा, गंभीर विद्वान् लोकनि सेहो सायासहिँ करैत छथि, मात्र सहृदय व्यक्तिये ओकर वास्ताविक रसास्वादन करैत छथि ।

(ii) **गुणीभूत व्यंग्यकाव्य वा मध्यम काव्य–**

गुणीभूत व्यंग्यकाव्यकेँ मम्मटाचार्य मध्यम काव्य कहैत छथि तथा एकरा परिभाषित करैत कहैत छथि जे जाहिमे वाच्यार्थक अपेक्षा व्यंग्यार्थ विशेष चमत्कारक नहि रहैत अछि तकरा गुणीभूत व्यंग्यकाव्य बुझबाक चाही । ई ध्वनिकाव्यक परिष्कृत रूप होइत अछि तथा सहृदयक हेतु हृदयाह्लादक सेहो । हुनकहि शब्दमे द्रष्टव्य थिक–

आतादृशि गुणीभूतव्यङ्ग्यं व्यंग्ये तु मध्यमम् ।[72]

एकर गुणक विवेचन करैत आनन्दव□न कहने छथि– **ध्वनिनिष्पन्दरूपो द्वितीयोऽयं महाकविविषयोऽतिरमणीयो–लक्षणीयः सहृदयैः ।**[73]

गुणीभूत व्यंग्यकाव्य परकीया नायिका सदृश होइत अछि । जेना परकीया नायिका अपन आराध्य पतिदेव सँ भिन्न पुरुषमे संलिप्त भए जाइत अछि तहिना गुणीभूत व्यंग्य काव्य अपन साध्य प्रधान भाव ध्वनिसँ च्युत भए अप्रधान भए जाइत अछि । तथापि एहि दुनूमे नागरिकता वा व्यंग्ययुक्तताक कारणेँ निर्लज्जता वा भावनग्नता नहि आबि पबैछ, चमत्कार बनले रहैत अछि ।

(iii) **चित्रकाव्य व अधम काव्य** -

चित्र काव्य वा अधम काव्यमे व्यंग्यक सर्वथा अभाव तथा अलंकारत्व वा चमत्कारक प्रधानता रहैछ । अलंकारक प्रधानता रहने अर्थचित्र एवं शब्दालङ्कारक प्रधानता रहने शब्दचित्र कहल जाइत अछि । एहन काव्यमे व्यंग्यार्थ रहनहुँ स्पष्ट रूपसँ ओकर प्रतीति नहि होइत अछि । कविक मूल उद्देश्य मात्र अलंकारक चमत्कारपूर्ण प्रदर्शन रहैछ ।

ध्वनि एवं गुणीभूत व्यंग्यसँ रिक्त मात्र अर्थगत अलंकारयुक्त काव्य सामान्य नायिका सदृश होइत अछि जकर भाव-प्रकाशन आवरणहीन एवं व्यंग्यशून्य होइत अछि ।

एकटा आओरो प्रकार अछि जकरा चतुर्थ कोटि मध्य राखल जा सकैछ । एकर तुलना ओहि वारांगनाक संग कयल जा सकैछ जे कलाविद् तथा गानविद्यामे निपुण तथा अपन भाव-भंगिमासँ अत्यन्त कुत्सित ढंगसँ व्यवहार करैत अछि तथा जकरा हेतु शारीरिक बाह्य आकर्षणे सभ किछु थिकैक ।

3. **स्वरूपक आधार पर**- स्वरूपक आधार पर मुख्यतया काव्यक दू भेद होइत अछि- श्रव्य एवं दृश्य । श्रव्यकाव्य ओ थिक जकरा श्रोता सुनि कए अनुभव करय तथा दृश्यकाव्यमे सुनबाक संग-संग देखबाक गुण सेहो रहैत अछि । श्रव्यकाव्यक मुख्य तीनि टा भेद होइत अछि- गद्य, पद्य एवं चम्पू । गद्य एवं पद्यक अंतरकेँ एहि तरहेँ स्पष्ट कएल जा सकैछ-

पद्य—

§ पद्य 'पद्' धातुसँ बनल अछि तेँ एहिमे नृत्य सदृश गति रहैत अछि ।

§ पद्यमे एकटा विशेष प्रकारक रागात्मक स्तरीयता भेटैत अछि ।

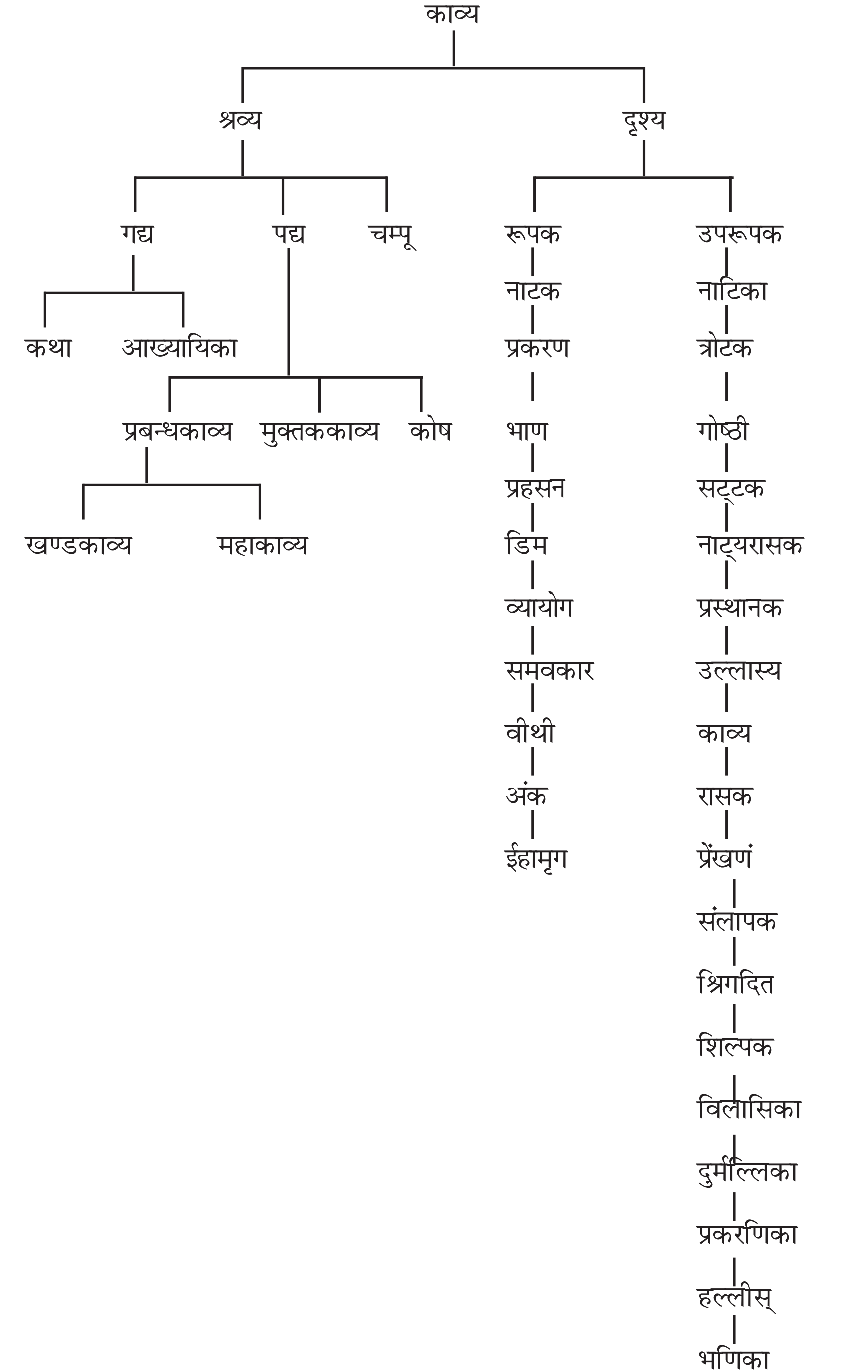
§ पद्य छन्दोब□ होइत अछि- कम सऽ कम ओकरा लयक अनिवार्य बन्धनक निर्वाह करए पड़ैत छैक । एतबे नहि, एहिमे यति, अन्त्यानुप्रास केर सेहो बन्धन रहैत छैक ।

§ पद्यक प्रयोग अपन यथार्थ रूपमे जीवनक ओहन सूक्ष्म, सघन एवं संश्लिष्ट अनुभूति सभकेँ रागात्मक अभिव्यक्ति प्रदान करबाक हेतु होइत अछि ।

§ पद्यक संबंध जीवनक रागात्मक एवं भावात्मक पक्षसँ विशेष रूपसँ रहैत अछि ।

§ छन्दोब□ रहबाक कारणे एहिमे गेयधर्मिता रहैत अछि । मुक्तक छन्दमे सेहो गेयधर्मिता भेटैत छैक ।

§ पद्यमे अभिव्यक्ति अपेक्षाकृत तीव्र एवं सामाजिक रहैत अछि ।



(i) संभ्रान्त कविता (Poetry of aristocracy)

(ii) साधारण कविता (Poetry of democracy)

संभ्रान्त कवितामे राजा, वीर, यो□ा, राजपुत्र, यु□ आदिक वर्णन रहैत अछि तथा साधारण कवितामे विषय एवं घटनाक वर्णन रहैछ ।

काव्यक अन्य दू प्रकार सेहो द्रष्टव्य थिक–

(i) प्राकृत (Realistic)

(ii) आदर्शात्मक(Idealistic)

प्रथममे यथार्थ विषयक तथा दोसरमे आदर्श चरित्रक वर्णन रहैत अछि । ओ लोकनि काव्यक उपदेशात्मक एवं सौन्दर्यचित्रणात्मक भेद सेहो कएने छथि । पहिल प्रकारक काव्यमे उपदेश एवं नीतिक प्रधानता रहैत अछि एवं दोसरमे बाह्य तथा अभ्यन्तर सौन्दर्यक स्वाभाविक वर्णन ।

काव्यक एतेक प्रकारक प्रभेद आ वर्गीकरणकेँ देखितहु कोनहुँ एकटाकेँ पूर्ण नहि मानल जा सकैत अछि । आधुनिक समयमे प्राचीन कालक काव्यगत धारणामे पर्याप्त पार्थक्य भए गेल अछि । आजुक समयमे 'काव्य' कविताक अर्थमे रूढ़ बनि गेल अछि । काव्य पाठ अर्थात् कविता पाठ । गद्य एवं पद्यक स्वरूपमे सेहो पर्याप्त भिन्नता दृष्टिगोचर होइछ । रेडियो नाटक श्रव्यकाव्य थिक जखन कि नाटक दृश्यकाव्य । तहिना, रूपक उपरूपकक आइ कोनो अपेक्षा नहि अछि ।

स्वरूपक आधार पर वर्गीकरण द्रष्टव्य थिक –

गद्य–

§ गद्यक विकास 'गद्' धातुसँ भेल अछि जकर अर्थ होइत अछि 'बाजब' ।

§ गद्यमे सामान्य बोलचालक स्वाभाविकता रहैत छैक ।

§ गद्यमे एहि तरहक कोनो बन्धन नहि रहैत छैक ।

§ गद्यमे अभिव्यक्त करबाक हेतु ओकर सौन्दर्य एवं रागमयता विनष्ट भए जएबाक सम्भावना रहैत छैक । गद्यक प्रयोग प्रमुखतया जीवन संघर्षक विश्लेषण हेतु कएल जाइत अछि ।

§ गद्यक संबंध बौ□क पक्षसँ विशेष रूपेँ रहैत अछि । तेँ आलोचनादिक तारतम्य निर्वाह जतबा सफलतापूर्वक गद्यमे भए सकैत अछि ततबा पद्यमे नहि ।

§ गद्यमे गेयधर्मिता नहि रहैत अछि ।

चम्पूकाव्य गद्य एवं पद्यक मिश्रणकेँ कहल जाइत छैक । एहिमे लेखक स्वेच्छया गद्य तथा पद्यक आवश्यकतानुसार प्रयोग करैत छथि ।

एतए प्रथमतः पद्यक भेदोपभेदक विवेचन प्रस्तुत कएल जाइत अछि । पद्यकेँ तीनि भागमे बाँटल गेल अछि– प्रबन्धकाव्य, मुक्तककाव्य एवं कोश । प्रबन्धकाव्यक पुनः दू भेद कएल गेल अछि–महाकाव्य एवं खण्डकाव्य । ऐतिहासिक वा पौराणिक कथा पर आधारित कोनो देवता वा राजाक चरित्रक बखान सर्गब□ रूपेँ जतए कएल जाइछ से महाकाव्य थिक । एहिमे **शृंगारवीरशान्तानामेकोङ्गी रस इष्यते**[74] तथा **अष्टसर्गात् न तुर्न्यूनम् त्रिंशत्सर्गाच्च नाधिकम्** केर अनुसरण कएल जाइत अछि। **नगरार्णवशैलर्तुचन्द्रः सूर्यादिवर्णनैः**[75] इत्यादिक सेहो पालन कएल जाइत अछि । एतबे नहि, अगिला सर्गक कथावस्तुक आभास पहिनहि भए जाइत अछि– **सर्गान्ते भाविसर्गस्य कथायाः सूचनम् भवेत्**[76] संगहि प्रकृति वर्णन, सूर्य–चन्द्रक वर्णन, आनुषंगिक कथावस्तु इत्यादि अनिवार्य रूपसँ रहैत अछि ।

खण्डकाव्य ओ थिक जे एक तरहेँ कही तऽ महाकाव्यक खण्डित रूप भेल । ईहो सर्गमे निब□ रहैत अछि किन्तु आठ सर्गसँ कम । एहिमे जीवनक सम्पूर्ण इतिवृत्ति नहि रहैत अछि अपितु कोनहु खास समय वा परिस्थितिक चित्रण भेटैत अछि ।

मुक्तककाव्यक पाँच भेद कएल गेल अछि– मुक्तक, युग्मक, संदानितक, कलापक एवं कुलक । एहिमे मुक्तकक अन्योनाश्रय संबंध निरपेक्ष रहैत अछि । प्रत्येक मुक्तकमे एकटा केन्द्रीय भाव रहैत अछि ।

गद्यकेँ कविक कसौटी कहल गेल अछि— 'गद्यंकवीनां निकषं वदन्ति' । ई

छन्दक बन्धनसँ मुक्त रहैत अछि । एहिमे व्याकरणक दृष्टिएँ शु□ाशुि□क विचार कएल जाइत अछि । आचार्य लोकनिक मान्यता छनि जे यावत् धरि एहिमे रमणीयता एवं चमत्कार नहि रहत ता धरि ई काव्य कहएबाक अधिकारी नहि । कोनहु एक दू वाक्य वा वाक्यखण्ड मात्र केँ सुन्दर देखि ओकरा गद्यकाव्य नहि कहबैक । तेँ ने पण्डित लोकनिक ई कसौटी भेल । एहि गद्यकाव्यक सेहो कतोक तरहक रूप देखबामे अबैत अछि– संस्मरण, यात्रा साहित्य, निबन्ध, आलोचना, पत्र, कथा, उपन्यास, भेँटवार्ता, अभिनन्दन, जीवनी, लघुकथा इत्यादि ।

क्यो क्यो चम्पूक सेहो दू प्रभेदक वर्णन कयलनि अछि– विरुद एवं करम्भक । जतए कोनो राजाक गद्य–पद्यमय प्रशस्ति गान होअए से भेल विरुद तथा जाहिमे विभिन्न भाषाक आश्रय लए केँ राजस्तुति कएल गेल रहैत अछि, से भेल करम्भक ।

आब काव्यक जाहि भेदपर हमरालोकनि दृष्टि निक्षेप करब, से थिक दृश्य काव्य । एहिमे श्रव्यगुण तऽ रहिते अछि, संगहि देखबाक गुण रहब आवश्यक । विद्वान् लोकनिक मान्यता अछि जे अभिनय द्वारा जकरा देखाओल जा सकए सएह भेल दृश्य काव्य । दृश्यकाव्यकेँ प्रथमतः दू भागमे बाँटल जाइत अछि– रूपक एवं उपरूपक । पुनः रूपक केर दस भेद होइत अछि– (1) नाटक (2) प्रकरण (3) भान (4) प्रहसन (5) डिम (6) व्यायोग (7) समवकार (8) वीथी (9) अंक एवं (10) ईहामृग । तहिना उपरूपक केर सेहो 18 गोट प्रभेद कएल गेल अछि– (1) नाटिका (2) त्रोटक (3) गोष्ठी (4) सट्टक (5) नाट्यरासक (6) प्रस्थानक (7) उल्लाप्य (8) काव्य (9) रासक (10) प्रेंखन (11) संलापक (12) श्रृगदित (13) शिल्पक (14) विलासिका (15) दुर्मल्लिका (16) प्रकरणिका (17) हल्लीस् एवं (18) भणिका ।

काव्यभेदक प्रसंग पाश्चात्य विद्वानलोकनि सेहो अपन विचार व्यक्त कएलनि अछि। ओ लोकनि काव्यक दूटा भेद मानैत छथि– (1) विषयगत (Objective Poetry) (2) विषयीगत (Subjective Potery) । विषयगत काव्य ओ थिक जाहिमे कलाकारक दृष्टि अन्तर्मुखी नहि रहि बहिर्मुखी भए जाइत अछि ।

कवि अपन विषय–सामग्री समाजसँ ग्रहण कए तत्कालीन समाजक समस्याक समाधान प्रस्तुत करैत काव्यरचना करैत छथि । एहिमे भावक प्रधानता नहि रहैछ, एकर विशेषता अछि प्रबन्धात्मकता । जेँ हेतु एहिमे विषयक प्रधानता रहैत अछि, एकरा विषयगत कहल जाइत छैक । 'हडसन'क अनुसार विषयगत काव्यक दू[77] भेद होइत अछि–

(1) वर्णनात्मक काव्य (Narrative Poetry),

(2) अभिनयात्मक काव्य (Dramatic Poetry)

पुनः हडसन महोदय वर्णनात्मक काव्यक चारि[78] भेद कयलनि अछि–

(i) वीरगीत (Ballad)

(ii) महाकाव्य (Epic)

(iii) छन्दब□ रोमा□चकारी कथा (Materical Romance)

(iv) यथार्थवादी कविता (Realistic Poetry)

तहिना नाटकीय काव्य (Dramatic Poetry) केर सेहो तीनि[79] भेद कयलनि अछि–

(i) नाट्यगीत (Dramatic Lyric)

(ii) नाट्यकथा (Dramatic Story)

(iii) नाट्यस्वगत (Dramatic Monologue)

पुनः विषयीगत काव्य ओकरा कहल जाइत अछि जाहिमे कलाकारक दृष्टि अन्तर्मुखी रहैछ । एहिमे कवि अपन भावकेँ व्यक्त करैत अछि, अपन सुख–दुख, अपन आशा–निराशाक चर्चा करैत अछि । एहि तरहक काव्यमे कविक व्यक्तित्वक प्रधानता रहैत अछि । विषयीक (कविक) प्राधान्यक कारणे एकरा विषयीगत काव्य कहल जाइत अछि । हडसन[80] एकरहु निम्नलिखित भेद कएलनि अछि–

(i) दार्शनिक एवं विचारात्मक गीत (Meditative & Philosophical lyrics)

(ii) सम्बोधन गीत (Ode)

(iii) दुःखात्मक गीत (Elegy)

(iv) पत्र गीत (Epistle)

(v) व्यंग्य गीत (Satire) तथा

(vi) वर्णनात्मक गीत (Discriptive Poetry)

एतदतिरिक्त पाश्चात्य विद्वान् लोकनि काव्यक अन्यान्य भेद सेहो कएलनि अछि–

(i) शक्तिकाव्य (Poetry as energy)

(ii) कलाकाव्य (Poetry as an art)

शक्तिकाव्यमे लोकप्रवृत्तिकेँ परिचालित करबाक प्रभाव रहैछ तथा कला काव्यमे मात्र मनोरंजन करब तथा लौकिक आनन्द प्रदान करब एकमात्र उद्देश्य रहैत अछि । पाश्चात्य विद्वानक मतानुसार काव्यक निम्नलिखित दू प्रकार सेहो मान्य अछि–

आदिकालमे ज्योतिष साहित्य केवल ग्रह-नक्षत्रहि धरि सीमित नहि छल, प्रत्युत धार्मिक, राजनीतिक एवं सामाजिक विषय सेहो एहि शास्त्रक आलोच्य विषय बनि गेल छल । संगहि उदयकालमे विशृंखलित रूपसँ प्रचलित ज्योतिष मान्यताक संकलन वेदांग ज्योतिषक रूपमे आरम्भ भए गेल छल ।

4. **पूर्व-मध्य काल (501 ई० सँ 1000 ई० धरि)**- एहि समयमे ज्योतिष शास्त्रक पूर्ण विकास भेल । वराहमिहिर सन झुंडक झुंड ज्योतिर्विद् भेलाह जे एहि शास्त्रकेँ क्रमब□ कएलनि आ अपन अलौकिक प्रतिभा द्वारा एहिमे अनेक नव विषयक समावेश कयलनि । एहि युगक प्रारंभिक आचार्य वराहमिहिर केँ कहल गेलनि जे अपन पूर्वकालीन प्रचलित सि□ांतक पंचसि□ान्तिकामे संग्रह कयलनि । एहि कालमे ज्योतिष सि□ान्त, संहिता आ होरा तीनि भेदक उद्‌भव भेल ।

5. **उत्तर-मध्य काल (1001 ई० सँ 1600 ई० धरि)**- एहि समयमे ज्योतिष विषयक अनेक ग्रंथ लिखल गेल । भाष्कराचार्य अपन पूर्ववर्ती आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त, लल्ल आदिक सि□ान्तक आलोचना कएलनि तथा आकाश निरीक्षण द्वारा ग्रहमाणक स्थूलता ज्ञात कए ओकरा दूर करबाक हेतु बीज संस्कारक व्यवस्था कयलनि । बारहम शताब्दीमे खगोल विषयक गणितक प्रचार पर्याप्त भेल आ एकर गणितसँ अनभिज्ञ ज्योतिषी मूर्ख मानल जाए लगलाह ।

उत्तर-मध्य कालमे पृथ्वीकेँ स्थिर एवं सूर्यकेँ गतिशील स्वीकार कएल गेल । भाष्कराचार्यक अनुसार जेना आगिमे उष्णता, जलमे शीतलता, चन्द्रमे मृदुता स्वाभाविक अछि तहिना पृथ्वीमे स्वभावत: स्थिरता अछि । पृथ्वीक आकर्षण शक्तिक चर्चा सेहो एहि युगक ज्योतिष शास्त्रमे होमय लागल । एहि युगक ज्योतिष शास्त्रमे आकर्षण शक्तिक क्रियाकेँ स्पष्ट कएल गेल जे पृथ्वीमे आकर्षण शक्ति छै आ तेँ कोनहुँ वस्तुकेँ ऊपरसँ खसओला पर पृथ्वी पर आयब निश्चित छैक । केन्द्राभिकर्षिणी आ केन्द्रापसारिणी ई दूनू शक्ति प्रत्येक वस्तुमे मानल गेल आ संगहि ईहो स्वीकार कएल गेल जे प्रत्येक वस्तुमे आकर्षण शक्तिक कारणहिँ उपर्युक्त दूनू प्रकारक क्रियात्मक शक्ति अपन कार्यकेँ सुचारु रूपसँ करैत अछि ।

6. **आधुनिक (अर्वाचीन) काल (1601 ई० सँ अद्यपर्यन्त)**- उत्तर-मध्य कालहिमे ज्योतिषी लोकनि आकाशक अवलोकन छोड़ि पुस्तककेँ पकड़ि लेलनि आ पुस्तकीय ज्ञानहिकेँ ज्योतिष मानल जाय लागल । एहि समयमे शकुन, प्रश्न, मुहूर्त, जन्मपत्र एवं वर्षपत्रक साहित्यक अवश्य वृ□ भेल । कमलाकर भट्ट सूर्य सि□ान्तक प्रचार करबाक हेतु **सि□ान्त तत्त्व विवेक** नामक गणित ज्योतिषक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ रचलनि ।

एहि समयमे अंग्रेजी सभ्यताक संपर्कसँ भारतमे अंग्रेजी भाषाक प्रचार भेल । एहि

इत्यादिक आधार पर भविष्यक संकेत दैत छथि, किन्तु एतदतिरिक्त यात्रा, खेती, अकाल, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, भूकम्प आदिक लक्षण तथा शकुन-अशकुनक विचार समाजमे होइत अछि जकर मैथिली काव्यमे पूर्ण प्रभाव देखबामे अबैत अछि ।

मिथिलामे पंडितक कथे कोन जे सामान्यो पढ़ल-लिखल, एतेक धरि जे निरक्षरो लोक ज्योतिषमे विश्वास रखैत अछि, ओकरा बुझैत अछि आ ओकर अनुसरण करैत अछि । जेनाकि पूर्वहु चर्चा कए चुकल छी जे मिथिलाक विद्वान् लोकनि ज्योतिषाचार्य नहियोँ रहने ज्योतिषमे पूर्ण दक्षता रखैत छथि, ओकर मंथन करैत छथि आ ओहि पर कलम सेहो उठबैत छथि । 1988क भूकम्पक वर्णन डॉ० भीमनाथ झाक शब्दमे द्रष्टव्य थिक-

फाड़ै छल झुण्ड-झुण्ड कारकौआ कान, कत्ता दिन सँ ।
छल कनैत बेर-बेर गाम भरिक श्वान, कत्ता दिनसँ ॥
बीहरिसँ निकलि मूस मारय छरपान, कत्ता दिन सँ ।
भऽकऽ बदरंग अरे ! ऊगै छल चान, कत्ता दिन सँ ॥[97]

मिथिलामे ज्योतिष पर लोककेँ अद्‌भुत विश्वास छैक, फलीभूतो होइत छैक, लोक एकर अध्ययनो करैत अछि, शास्त्रार्थो करैत अछि तथा विद्वान् लोकनि अपन काव्यमध्य एकरा स्थानो दैत छथि । परम्परागत संस्कृतक विद्वानक कथे कोन जे सामन्यो कोटिक विद्वानक काव्यमे ज्योतिष तत्त्वक प्रचुर प्रयोग भेटैत अछि जकर अध्ययन कए ओकर संगति बुझबाक हेतु मिथिला□चलक समान्यो पाठक सक्षम रहैत अछि । यैह कारण थिक जे मैथिलीक महाकाव्य, खण्डकाव्य तथा मुक्तक रचनामे सेहो ज्योतिष तत्त्वक वर्णन दृष्टिगत होइत अछि ।

मैथिली काव्य मध्य तऽ छिट-पुट ज्योतिषक प्रभाव देखबामे अबिते अछि अपितु ज्योतिषे विषयटा पर 'डाकवचन संग्रह' तीन भागमे प्रकाशित अछि जाहिमे ततेक सोझ भाषामे ज्योतिषक सूत्र सभक व्याख्या कयल गेल अछि जे अनपढ़ो लोकक कंठमे समाएल अछि । निरक्षरो लोकक मुहसँ सुनब-

केरा रोपी सोचि बिचारि । शीमी भादो भदवा बारि[98]

एतय 'शी' भेल एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी एवं प□चदशी (पूर्णिमा वा अमावस्या) तथा 'मी' भेल पंचमी, सप्तमी, अष्टमी नवमी तथा दशमी । अर्थात् केरा रोपबाक तिथि भेल परीब, द्वितीया, तृतीया, चौठ आ षष्ठी । संगहि भादव मास आ भदवामे नहि रोपी । पंचांगमे दैनिक नक्षत्र होइत छैक जाहिमे श्रवणाक बाद धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वभाद्र, उत्तरभाद्र एवं रेवती - ई पाँचोटा नक्षत्र भदवा कहबैत छैक । भदवामे मिथिलावासी लोकनि बहुतो कार्यकेँ निषि□ बुझैत छथि- खास कए गृहनिर्माण कार्य सर्वथा वर्जित अछि । तहिना यात्रक संबंधमे डाकक वचन बहुचर्चित अछि । द्रष्टव्य

थिक–

रविके पान सोमके दर्पण
मंगल किछु किछु धानिया चर्वन ।
बुधके गुड़, वृहस्पति राई
शुक्र कहे जे दही सोहाई ॥
शनि कहए मोहे अदरख भाव
सकल काजकेँ जीति घर आब ।
ने गुनी भदवा ने दिक्शूल
कहथि 'डाक' ई अमृत समतूल ॥[99]

एहिना, यात्राक समय मे अथवा कोनो शुभ कार्यक समयमे छीकक विचार छनि । सामान्यतया लोक यात्राक समयमे छीक सुनितहि सहमि जाइत अछि, घबड़ा जाइत अछि । अपशकुनक संदेह करए लगैत अछि, किन्तु ध्यातव्य थिक जे छीकक शुभ फल सेहो होइत छैक । बहुत कमे स्थलमे एकर अधलाह फल कहल गेलैक अछि । छिकनिहार कोन दिशामे छिकलक अछि से महत्त्वपूर्ण अछि । एहि प्रसंग डाकक वचन सामान्यो जनक कंठसँ निकलि पड़ैत अछि–

दक्षिण छीकै धन लै छीजै ।
नै□त कोन सिंहासन दीजै ॥
पश्चिम छीकै मीठ भोजना ।
गेलो पलटय बायब कोना ॥
उत्तर छिक्का मान समान ।
सर्व सि□ लै कोन इशान ॥
पूरब छिक्का मृत्यु हकार ।
अग्निकोणमे दुःखक भार ॥
सभ केर छिक्का कहि गेल डाक ।
अपने छिक्का नहि करु काज ॥
आकाशक छिक्के नर जाय ।
पलटि अन्न मन्दिर नहि खाय ॥[100]

डाकवचन संग्रह तऽ शु□ मैथिलीये काव्य थिक जाहि माध्यमसँ एतेक प्रौढ़ ज्योतिष विषयक ग्रंथ लिखल गेल । डाक जनमानसकेँ चिन्हलनि आ बुझलनि जे संस्कृतमे लिखल ज्योतिष ग्रंथ सभक अनुशीलन सामान्य पाठक वृन्द नहि कए सकत । ओकरा पण्डित पर आश्रित होमए पड़तैक आ प्रायः तेँ 'डाक' अपन संग्रहमे मैथिली काव्यक माधयमे सामान्य जनक उपकार कयलनि । मिथिलामे ज्योतिषक ततेक ने महत्त्वपूर्ण स्थान अछि जे छोटसँ पैघ कार्य लोक बिनु दिन, तिथि, नक्षत्र, अ□प्रहरा,

1. अंधकार काल (ई० पू० 10000 वर्षसँ पूर्व)
2. उदय काल (ई० पू० 1001सँ ई० पू० 500 तक)
3. आदिकाल (ई० पू० 501 सँ 500 ई० धरि)
4. पूर्व–मध्य काल (501 ई० सँ 1000 ई० धरि)
5. उत्तर–मध्य काल (1001ई० सँ 1600 ई० धरि))
6. आधुनिक (अर्वाचीन) काल (1601 ई०सँ अद्यपर्यन्त ।)[35]

1. **अंधकार काल (ई० पू० 10000 वर्षसँ पूर्व)**– पूर्वहि कहल गेल अछि जे ज्योतिषशास्त्रक उद्भवक निश्चित समयक पता लागायब कठिन अछि । एकरा मानव सृष्टिक समान अनादि कहल गेल अछि । ज्योतिष सि□ान्तक अनुसार एक कल्पकालमे 4320000000 वर्ष होइत अछि । सृष्टि प्रारम्भ होइतहि सभ ग्रह अपन–अपन कक्षामे अपन–अपन गतिक अनुसार भ्रमण करए लगैत अछि । अंधकार युगक मनुष्यकेँ कोनो भाषा नहि छलैक आ तेँ ओहि समयक साहित्य सेहो उपलब्ध नहि अछि । हँ, एतबा अवश्य मानए पड़त जे ओहू दिनमे मनुष्य दिन, राति, पक्ष, मास, अयन, वर्ष इत्यादिसँ पूर्ण परिचित छल । संगहि ओहि समयकेँ प्रगट कएनिहार चन्द्र–सूर्यक ज्ञान सेहो हुनका लोकनिकेँ छलनि । लिखित प्रमाणक अभावमे एहि युगमे आकाशमण्डलक ज्योतिपिण्डसँ ओ लोकनि परोक्ष छलाह, कहब कठिन अछि । एहि पृथ्वी पर जन्म ग्रहण करितहि ओ लोकनि आकाशक रहस्यकेँ अवश्य बुझबाक प्रयास कएने होएताह । अंधकार कालक ज्योतिष विषयक मान्यताक ज्ञान उदयकाल आ आदिकालक साहित्यसँ सेहो भए जाइत अछि ।
2. **उदय काल (ई० पू० 1001सँ ई० पू० 500 तक)**– उदय कालक ज्योतिष परम्परामे स्वतंत्र रूपसँ एहि समयक रचना नहि भेटैत अछि, किन्तु अन्य विषयक संग जतेक एहि विषयक साहित्य अछि ओकर यदि संकलन कएल जाए तऽ एकटा उपयुक्त पोथी तैयार भए जाएत । ओहि युगमे ज्योतिषक भेद–प्रभेदक आविर्भाव नहि भेल छल, मात्र सामान्य ज्योतिष शब्दसँ एहि शास्त्रक ग्रह–नक्षत्रक गणित आ फलितक गणना होइत छल । ओहि समयमे भाष्यकार लोकनि ग्रह–नक्षत्र आ प्रकीर्ण आ ताराक विभिन्न विषयक ज्ञानक संग ग्रहक सम्यक् स्थितिक ज्ञान प्राप्त कएलनि । अर्थात् ओहि समयमे राशि-चक्र, नक्षत्र–चक्र आ ग्रह–चक्रक प्रचार भेल ।
3. **आदिकाल (ई० पू० 501 सँ 500 ई० धरि)** - एहि युगमे ज्योतिष शास्त्रक विकास स्वतंत्र रूपसँ भेल । यज्ञक तिथि, मुहूर्तादि स्थिर करबामे एहि विद्याक नितान्त आवश्यकता होइत छैक । तेँ एहि विषयक अध्ययन आदिकालमे व्यापक रूपसँ भेल । ई० पू० 100 सँ 200 ई० धरिक साहित्यसँ स्पष्ट होइत अछि जे

भारतीय ज्योतिष शास्त्रक उद्भव स्थान भारते थिक । ई कतहु आन ठामसँ सिखि कए एतय प्रचार नहि कयने अछि । लोकमान्य तिलकक **ओरायन** नामक पुस्तकमे कहल गेल अछि जे भारतक नक्षत्र–ज्ञान जकर कि वेदमे सेहो वर्णन अछि, ईस्वी सनसँ कमसँ कम पाँच हजार वर्ष पूर्वक थिक । भारतवासी लोकनि नक्षत्र विद्यामे अत्यन्त पहुँचल छलाह । अतएव बेबीलोन अथवा यूनान किंवा ग्रीससँ भारतमे ई विद्या नहि आयल । ई० सन् पूर्वक दोसर शताब्दी तक एहि शास्त्रमे कोनो आदान–प्रदान सेहो नहि भेल, किन्तु ई. सन् 2–6 शती तक विदेशीक अत्यधिक सम्पर्कक कारणे पर्याप्त भेल । पाश्चात्य समालोचक लोकनि प्रायः एही समयक आदान–प्रदानकेँ देखि भारतीय ज्योतिषकेँ यूनान अथवा ग्रीससँ आयल कहैत छथि ।

बेबीलोनी भाषाक किछु शब्द तऽ बिना कोनो भिन्नतासँ संस्कृतमे भेटैत अछि, ज्योतिष शास्त्रमे एहन शब्दक प्रयोग देखि किछु समीक्षक लोकनि एकरा बेबीलोनसँ आयल बुझबाक असफल प्रयास कहैत छथि, किन्तु ज्योतिषक मूल तत्त्व आ एतय केर परम्परासँ स्पष्ट होइछ जे ई विज्ञान भारतक उपज थिक । एतबा अवश्य जे जेना अरब आदि देशकेँ एहि विज्ञानक शिक्षा ई लोकनि देलथिन तहिना पुरान सम्पर्कक कारणेँ किछु ग्रहणो कयलनि । एकर ई तात्पर्य नहि जे ओ देश सभ गुरुएक संग गुरुआइ करए ।

हिन्दू **एस्ट्रॉनॉमीमे जी. आर. के.**क कथन एहि प्रकारक अछि– **भारत ने टालमी के ज्योतिष सि□ान्त का उपयोग तो कल ही किया है, परन्तु प्राचीन यूनानी सि□ान्तों की परम्परा का निर्वाह ही बहुत काल तक करता रहा है । इसके मूलभूत सि□ान्त यवनो के सम्पर्क से ही प्रस्फुरित हुए हैं । राशियों की नामावली भी भारतीय नहीं है ।** गम्भीरता पूर्वक विचार कयला सन्ता तथा एहि शास्त्रक इतिहासक अवलोकन कयला पर ई धारणा भ्रान्त सि□ होइत अछि । अतः ईस्वी सन् सँ कमसँ कम दस हजार वर्ष पूर्वहि भारत ज्योतिष विज्ञानक आविष्कार कयने छल ।

वर्गीकरण :

ज्योतिषक उद्भव कालक विषयमे निश्चित रूपसँ समयक ज्ञान कठिन अछि किन्तु उपर्युक्त विवेचनक आधार पर अनुमान लगाओल गेल अछि जे संभवतः 10000 ई० वर्ष पूर्वमे एकर बीज वपन भेल । एतेक लम्बा अवधिमे एकर कतोक चरणमे दिनानुदिन विकास होइत रहल । आब ई ततेक ने विस्तृत भए गेल अछि जे विश्वक सभ देशक खगोलशास्त्री, ज्योतिषशास्त्री टकटकी लगाकऽ दिनानुदिन नव–नव अनुसंधानमे लागल छथि । एतेक लम्बा अवधिकेँ वर्गीकृत कए एकर विश्वासक संबंधमे जानकारी प्राप्त करब श्रेयस्कर होयत ।

एहि शास्त्रक इतिहासकेँ निम्न युगमे विभक्त कएल गेल अछि–

संक्रान्ति–मासान्त, इत्यादिक विचार कयने नहि करैत अछि । विद्वानसँ मूर्ख धरि, अङरेजियासँ पण्डित धरि, राजासँ रंक धरि, सभकेँ एहि गम्भीर शास्त्रक प्रति आस्था छैक आ तदनुसार लोक कार्य करैत अछि ।

संदर्भ–

1. एकावली–परिणय : कविशेखर बदरीनाथ झा, 1–12
2. श्रीमद्वाल्मीकिरामायण
3. कुवलयानन्द : अप्पय दीक्षित, सूत्र –12
4. अलङ्कार–मालिका; 'सुमन', सूत्र – 12
5. कुवलयानन्द; दीक्षित, सूत्र –22
6. अलङ्कार–मालिका; 'सुमन', सूत्र–22
7. वृत्तरत्नाकर : आचार्य बलदेव उपाध्याय –3–49
8. मैथिली छन्दःशास्त्र : पं० गोविन्द झा
9. छन्दोम□जरीः डॉ० ब्रह्मानन्द तिवारी, पृष्ठ–65
10. मैथिली छन्दःशास्त्र : पं० गोविन्द झा
11. नाट्यशास्त्र : आचार्य भरतमुनि, 16–118
12. काव्यालङ्कार : भामह, 1–16
13. काव्यादर्श : दण्डी, 1–10
14. काव्यालङ्कार : रुद्रट
15. ध्वन्यालोक : आनन्दब□न
16. ततदोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनःक्वापि –मम्मट : काव्यप्रकाश ।
17. निर्दोषा लक्षणवती सरीतिर्गुणभूषिता । –सालंकार रसानेक वृत्तिवाक्य काव्यनामभाक्–न्द्रालोक : जयदेव, 1–7
18. वाक्यं रसात्मकं काव्यम् –विश्वनाथ : साहित्यदर्पण, 1–3
19. रमणीयार्थः प्रतिपादकः शब्दः काव्यम् —जगन्नाथ
20. Poetry is the spontaneous overflow of powerful feelings - Wordsworth
21. मैथिली काव्यशास्त्र : डॉ० दिनेश कुमार झा, पृ० –305
22. मैथिली छन्दःशास्त्र : पं० गोविन्द झा, पृ० –1
23. □ग्वेद, 96–3–13
24. तत्रैव, 1–1–2–1

25. तत्रैव, 1-113-15
26. तत्रैव, 1-124-7
27. तत्रैव, 1-194-20
28. शुक्ल यजुर्वेद; 1-48
29. अथर्ववेद
30. यजुर्वेद; 11-75
31. तैत्तिरेयोपनिषद्; 11-7-1
32. कठोपनिषद्; 3-3
33. तत्रैव; 3-10
34. श्रीमद्वाल्मीकि रामायण : बालकाण्ड; 2-9
35. ध्वन्यालोक, 1-5
36. रघुवंश महाकाव्य : कालिदास; 14-27
37. श्रीमद्वाल्मीकि रामायण : बालकाण्ड; 2-9
38. सि□ान्त और अध्ययन : डॉ० गुलाब राय, पृ०-4
39. निघण्टु, यास्काचार्य
40. तत्रैव, 31
41. तत्रैव, 11-2
42. तत्रैव, 10-43
43. तत्रैव
44. तत्रैव, 5-78
45. अष्टाध्यायी : पाणिनि
46. अष्टाध्यायी : पाणिनि; 2-1-55/56
47. ध्वन्यालोक: आनन्दवर्दन, 1-13
48. विक्रमोर्वशीयम् : कालिदास; 2-17
49. नाट्यशास्त्र : भरतमुनि; 1-12
50. तत्रैव, 16-128
51. तत्रैव : 6-15
52. तत्रैव : 17-43
53. □ग्वेद ; 10-71-4
54. तत्रैव : 1-164-20
55. अष्टाध्यायी : पाणिनि; 2-3-72

9. मिस्टर सी. वी. ब्लार्क एफ.जी. एफ केर अनुसार- **अभी बहुत वर्ष पीछे तक हम सुदूर स्थानों के अक्षांश के विषय में निश्चयात्मक रूप से ज्ञान नहीं रखते थे, किन्तु प्राचीन भारतीयों ने ग्रहण-ज्ञान के समय से ही इन्हे जान लिया था । इनकी यह अक्षांश रेखांश वाली प्रणाली वैज्ञानिक ही नहि, अचूक है ।**[27]

10. प्रो० विल्सनक अनुसार- **भारतीय ज्योतिषियों को प्राचीन खलीफों विशेषकर हारूंरंशीद और अलमायन ने भलीभाँति प्रोत्साहित किया । वे वगदाद आमंत्रित किये गये और वहाँ उनके ग्रंथों का अनुवाद हुआ ।**[28]

11. डॉ० रावर्टसनक कथन अछि- **12 राशियो का ज्ञान सबसे पहले भारतवासियों को ही हुआ था । भारत ने प्राचीन काल में ज्येतिर्विद्या में अच्छी उन्नति की थी ।**[29]

12. प्रो० कोलब्रुक आ बेवर साहेबक कथन छथि जे- **भारत को ही सर्वप्रथम चन्द्र नक्षत्रों का ज्ञान था चीन और अरब के ज्योतिष का विकास भारत से ही हुआ है। उनका क्रान्तिमण्डल हिन्दुओं का ही है । निस्सन्देह उन्ही से अरब बालों ने इसे लिया था ।**

13. प्रख्यात चीनी विद्वान लियाँग चियावक कथनानुसार- **वर्त्तमान सभ्य जातियों ने जब हाथ-पैर हिलाना भी प्रारम्भ नहीं किया था, तभी हम दोनो भाइयों ने (चीन और भारत) मानव-संबधी समस्याओं को ज्योतिष जैसे विज्ञान द्वारा सुलझाना आरम्भ कर दिया था ।**[30]

14. प्रो० विल्सन प्लेफसर साहेब किछु पंक्ति उद्धृत कयने छथि जकर अर्थ थिक ज्योतिष ज्ञानक बिना बीजगणितक रचना कठिन अछि- **भारत में ज्योतिष और गणित के तत्वों का आविष्कार अति प्राचीन काल में किया गया था ।**[31]

15. डी मार्गन कथनानुसार- **भारतीयों का गणित और ज्योतिष यूनान के किसी गणित या ज्योतिष के सि□ान्त की अपेक्षा महान है । इसके तत्व प्राचीन और मौलिक हैं ।**[32]

16. डॉ० थीबो पर्याप्त मन्थन कए एहि निष्कर्ष पर पहुँचैत छथि जे— **भारत ही रेखागणित के मूल सि□ान्तों का आविष्कर्त्ता है । इसने नक्षत्र-विद्या में भी पुरातन काल में ही प्रवीणता प्राप्त कर ली थी, यह रेखागणित के सि□ान्तों का उपयोग इस विद्या को जानने के लिये करता था ।**[33]

17. वर्जेस महोदय सूर्यसि□ान्तक अँग्रेजी अनुवादक. परिशिष्टमे अपन मतकेँ उद्धृत करैत कहैत छथि जे भारतक ज्योतिष टालमीक सि□ान्त पर आश्रित नहि अछि अपितु ई ईस्वी सन्क बहुत पहिनहि एहि विषयक पर्याप्त ज्ञान प्राप्त कए लेने छलाह ।[34]

उपर्युक्त विद्वान् लोकनिक मतक अनुशीलन आ विश्लेषणसँ स्पष्ट अछि जे

आवश्यक अछि । एतय किछु प्रमुख पाश्चात्य विद्वान् लोकनिक विचारक दिग्दर्शन करायब हमरा युक्तिसंगत बुझि पड़ैत अछि । द्रष्टव्य थिक–

1. अलवरूनीक कथनानुसार– **ज्योतिष शास्त्र में हिन्दू लोग संसार की सभी जातियों से बढ़कर हैं । मैंने अनेक भाषाओं के अंको के नाम सिखे हैं पर किसी जाति में भी हजार से आगे की संख्या के लिए मुझे कोई नाम नहीं मिला । हिन्दुओं में अठारह अंकों तक की संख्याके लिए नाम हैं, जिनमे अंतिम संख्या का नाम पदा□ बताया गया है ।**[19]

2. मैक्समूलर कहने छथि– **भारतवासी आकाश-मण्डल और नक्षत्र-मण्डल आदि के बारे में अन्य देशों के □णी नहीं है । मूल अविष्कर्त्ता वे ही इन वस्तुओं के हैं ।**[20]

3. फ्रांसीसी पर्यटक फ्राक्वींस वर्नियर सेहो भारतीय ज्योतिष–ज्ञानक प्रशंसा करैत कहैत छथि जे– **भारतीय अपनी गणना द्वारा चन्द्र ग्रहण और सूर्य ग्रहण की बिल्कुल ठीक भविष्यवाणी करते हैं । इनका ज्योतिषज्ञान प्राचीन और मौलिक है ।**[21]

4. फ्रान्सीसी यात्री टखीनियर सेहो भारतीय ज्योतिषक प्राचीनता आ विशालतासँ प्रभावित भए कहने छथि– **भारतीय ज्योतिष ज्ञान में प्राचीन काल से ही अतीव निपुण हैं ।**[22]

5. इनसाइक्लोपीडिया ऑफ ब्रिटेनिकाक अनुसार– **इसमें कोई सन्देह नहीं कि हमारे (अंगरेजी) वर्त्तमान अंक-क्रम की उत्पत्ति भारत से है । सम्भवतः खगोल संबंधी उन सारणियों के साथ जिनको एक भारतीय राजदूत ईसवी सन् 773में बगदाद में लाया इन अंकों का प्रवेश अरब में हुआ फिर ईसवी सन् की 9वीं शती के प्रारम्भिक काल में प्रसि□ अबुजफर मोहम्मद आल खारिज्मी ने अरबी में उक्त क्रम का विवेचन किया । उसी समय से अरबों में उसका प्रचार बढ़ने लगा । यूरोप में सशून्य सहित यह सम्पूर्ण अंक क्रम ईसवी सन् की 12वीं 21वीं मे अरबों से लिया गया और इस क्रमसे बना हुआ अंक गणित 'अलगोरिट्मस' नाम से प्रसि□ हुआ ।**[23]

6. कॉण्ट आर्मस्टर्जनक अुनसार– **बेली द्वारा किये गये गणित से यह प्रतीत होता है कि ईसवी सन् से 3000 वर्ष पूर्व में ही भारतीयों ने ज्योतिषशास्त्र और भूमितिशास्त्र में अच्छी पारदर्शिता प्राप्त कर ली थी।**[24]

7. कर्नल टाड अपन राजस्थान नामक ग्रन्थमे कहने छथि— **हम उन ज्योतिषियों को कहाँ पा सकते हैं, जिनका ग्रहमण्डल- संबंधी ज्ञान अब भी यूरोप में आश्चर्य उत्पन्न कर रहा है ।**[25]

8. मिस्टर मारिया ग्राह्य अपन पोथी Letters On India मे कहने छथि– **समस्त मानवीय परिष्कृत विज्ञानों मे ज्योतिष मनुष्य को ऊँचा दर्जा देता है । ...इसके प्रारम्भिक विकास का इतिहास संसार की मानवता के उत्थान का इतिहास है । भारत में इसके आदिम अस्तित्व के बहुत से प्रमाण मौजूद हैं ।**[26]

56. तत्रैव : 2-1-55
57. तत्रैव : 2-1-55
58. मैथिली छन्दःशास्त्र : पं० गोविन्द झा, पृ० 63
59. मैथिली (विश्वविद्यालय मैथिली विभाग पत्रिका) : प्रो० उमानाथ झा, पृ. 1-23
60. मैथिली छन्दःशास्त्र : पं. गोविन्द झा, पृ० 1-2
61. यजुःसंहिता, 37-22
62. □ग्वेद संहिता, अ०4 मं० 5 सू० 82-5
63. यजुःसंहिता, 3472
64. छन्दोम□जरी : डॉ० ब्रह्मानन्द त्रिपाठी; पृ.7
65. छन्दोम□जरी, पृष्ठ 7, वृत्तरत्नाकर, पृ०-5
66. छन्दोम□जरी, पृ०-7
67. वृत्तरत्नाकर, भूमिका, पृ. -5
68. तत्रैव ।
69. छन्दोम□जरी, पृ०-7
70. नाट्यशास्त्र : भरतमुनि, 6-15
71. काव्यप्रकाश : मम्मट; 1-4
72. काव्यप्रकाश : मम्मट; 1-4
73. ध्वन्यालोक : आनन्दव□न; 3-37
74. काव्यादर्शः दण्डी; 1-19
75. तत्रैव : दण्डी; 1-19
76. तत्रैव : दण्डी; 1-19
77. An introduction to the study of literature; Willium Henry Hudson
78. Do
79. Do
80. Do
81. मिथिला कृत्य मीमांसा : पण्डित वासुदेव झा; पृ०-15
82. डाक वचन : मैथिल डाक
83. खट्टर ककाक तरंगः प्रो० हरिमोहन झा; पृ० 51-57
84. प्रणम्य देवता : प्रो० हरिमोहन झा; पृ० 71-86
85. मिथिलाभाषा रामायण : कवीश्वर चन्दा झा; पृ०-16
86. तत्रैव, पृ० 49

87. एकावली परिणय : कविशेखर बदरीनाथ झा; 2-68

88. तत्रैव ; 3-67,68

89. भूकंप काव्य : सं. श्री मुरलीधर झा, पृ०-7

90. तत्रैव ,

91. दत्त-वती: प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन; 2-19

92. तत्रैव, 4-58

93. प्रतिपदा : सुमन; पृ०-24

94. उत्तरा : सुमन; पृ० -32

95. कृष्णचरित: प्रो० तन्त्रनाथ झा; 12/ 11

96. अमरकोश

97. नाम तँ थिक वैह : डॉ० भीमनाथ झा, पृ० 106

98. डाकवचन संग्रह

99. तत्रैव

100. डाकवचन संग्रह

lll

उपर्युक्त कथन हास्यास्पद बुझि पड़ैछ । अनुकरण जतय कतहु कयल जाइछ से पूर्णतया आ ओकर प्रतिबिम्ब इतिहासमे देखाइत छैक । भारतीय खगोलक इतिहासमे बेबीलोनक खगोलक छाप नहि भेटैत अछि । बेबीलोनमे सूर्यक गतिकेँ ध्यानमे राखि विभाजित कयल गेल अछि आ भारतमे चन्द्रमाकेँ प्रधान मानिकय आकाशक विभाजन 28 नक्षत्रमे कयल गेल अछि ।[14]

पुनश्च मैक्समूलरक कथन द्रष्टव्य थिक-

We must never forget that what is natural in one place is natural in other places also, and ...... no case has been made out in favour of a foreign origin of the elementary astronomical notions of the Hindus and found or presupposed in the Vedic hymns[15]

तात्पर्य ई जे भारतीयकेँ आकाशक रहस्य बुझबाक भावना विदेशीय प्रभाववश उद्भूत नहि भेलनि, अपितु ई हुनका लोकनिक स्वतः स्फूर्त छलनि । अतः स्पष्ट अछि जे भारतीय ज्योतिषक जन्मस्थान भारते थिक तथा पूर्वमध्यकालमे विदेशीय सम्पर्कक कारण किछु प्रभाव अवश्य पड़ल, किन्तु मूलभूत भावना भारतेक थिक । ज्योतिषक मूल तत्त्व एही पुण्यभूमिमे आइसँ हजारो वर्ष पूर्व आविष्कृत भेल छल ।

भारतीय ज्योतिषक रचनाकार डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्रीक अनुसार भारतमे 28000 वर्ष पूर्वहि ज्योतिष विद्याक जन्म भेल छल । द्रष्टव्य थिक-

''ऋग्वेद और शतपथ ब्राह्मण के अध्ययन से पता चलता है कि आज से कम से कम 28000 वर्ष पहले भारतीयों ने खगोल और ज्योतिष शास्त्र का मंथन किया था । वे आकाश में चमकते हुए नक्षत्रपुंज, शशिपुंज, देवतापुंज, अकाशगंगा, नीहारिका आदि के नाम, रूप, रंग आकृति से पूर्णतया परिचित थे।''[16]

कोन-कोन नक्षत्र ज्योतिपूर्ण आछि ? नभमंडलमे ग्रहक संचारसँ आकर्षण कोना होइत छैक ? ग्रहक प्रकाशक पृथ्वी पर स्थित प्राणी पर केहन प्रभाव पड़ैत छैक ? एहि सभक वर्णन वेदमे अछि ।[17]

जैनग्रन्थ, सूर्यप्रज्ञप्ति, गर्गसंहिता, ज्योतिष्करण्डक इत्यादिमे ज्योतिष संबंधी अनेक महत्त्वपूर्ण तथ्यक वर्णन कयल गेल अछि । एहि ग्रंथ सभक अध्ययनसँ स्पष्टतः प्रतीत होइछ जे आरम्भहिमे भारतीय ज्योतिष कतेक तीव्र गतिएँ विकसित भेल । अयन, मलमास, क्षयमास, नक्षत्रक श्रेणी, सौरमास, चन्द्रमास आदिक सूक्ष्म विवेचन ज्योतिष्करण्डकमे विलक्षण ढगेँ भारतीय ज्योतिषक प्राचीनता आ मौलिकता सिद्ध कय रहल अछि ।[18]

भारतीय ज्योतिषक उद्भव आ विकासक संबंधमे मात्र भारतेक विद्वानक मतक अनुसरण करब उचित नहि । एहि प्रसंग पाश्चात्यो विद्वानक मतक अनुशीलन करब

आकाश दिस दृष्टि निक्षेप करितहि सर्वप्रथम राशिक दर्शन होइछ, नक्षत्रक नहि । नक्षत्रक दर्शन राशि–दर्शनक पश्चात् सूक्ष्म निरीक्षणसँ होइछ । अतः राशिक ज्ञानक आभावमे नक्षत्रक ज्ञानक प्रतिपादन संभव नहि । □ग्वेद संहितामे चक्र शब्दक प्रयोग भेल अछि, जे राशिचक्रक बोधक थिक । **द्वादशारं नहि तज्जराय**[11]। एहि मन्त्रमे द्वादशारं शब्द 12 राशिक बोधक अछि । प्रकरणगत विशेषता पर ध्यान देलासँ एहि मन्त्रमे स्पष्टतः द्वादश राशिक उल्लेख अछि । डॉ० सम्पूर्णानन्दजी, [13]द्वादशारं शब्दकेँ द्वादश रशिक बोधक मानबासँ सहमत नहि छथि, अपितु ओ ओकरा द्वादश मास मानब युक्तिसंगत बुझैत छथि । किन्तु हुनक एहन तर्क समीचीन नहि । कारण स्पष्ट अछि जे एहि मन्त्रमे अगिला भागमे 360 दिन वर्ष–12 राशिक मानल गेल अछि । 13 मासक 360 दिन नहि भए सकैछ, कारण जे चन्द्रमा 29.5 दिनसँ अधिक नहि रहैत छथि । एहि तरहेँ वर्षमे 354 दिन होइछ, किन्तु मन्त्रमे 360 दिन कहल अछि, जे द्वादश राशि मानने ठीक बैसैत अछि । प्रत्येक राशिमे 30 अंश तथा प्रत्येक अंशक मध्यम मान एक दिन आ एहि तरहेँ 360 दिन द्वादश राश्यात्मक चक्रमे होइत अछि । जैन ज्योतिषक विद्वान् गर्ग, □षिपुत्र आ कालकाचार्य परम्परागत राशिचक्रक निरूपण कयने छथि ।

एहि प्रसंग भारतीये विद्वान् नहि अपितु पाश्चात्य विद्वान् लोकनि सेहो विचार कयने छथि । ओ लोकनि एकरा बेबीलोनसँ आयल कहैत छथि । हुनका लोकनिक अनुसार भारतीय विद्वान् सभ बेबीलोन गेल छलाह आ ओतयसँ ज्योतिष सिखि कय अयलाह । एतय द्रष्टव्य थिक अंग्रेजी साहित्यक प्रमुख समालोचक मैक्समूलरक कथन–

The twenty seven constellations, which were chosen in India as a kind of lunar zodiac, were supposed to have come from Babylon. Now the Babylonian zodiac was solar and inspite of repeated researches, no trace of lunar zodiac has been found,...... But supposing even that a lunar zodiac had been discovered in Babylon, no one acquainted with Vedic literature and with the ancient Vedic ceremonial would easily allow himself to be persuaded that the Hindus had borrowed that simple division of the sky from the Babylonians. It is well known that most of the Vedic sacrifices depend on the moon, far more than on the sun.[13]

स्पष्टतः प्रतीत होइछ जे भारतीय विद्वान् लोकनि खगोलीय ज्ञान प्राप्त करबाक हेतु बेबीलोन गेलाह आ ओतय केर भाषा सीखि कए खगोल विद्या सिखलनि । ओ लोकनि भारत वापस आबि सूर्यकेँ आधार मानि कए आकाशकेँ विभाजित करबामे कठिनताक अनुभव कयलनि, कारण जे सूर्योदयक पश्चात् नक्षत्र दूर–दर्शन यन्त्रहुसँ नहि दृष्टिगोचर होइछ आ तेँ चन्द्रमाक आधार पर आकाशकेँ 27 नक्षत्रमे बाँटल गेल । चन्द्रमाक विभिन्न कालक अध्ययन कय तदनुसार पक्ष, मास आ वर्ष बनाओल गेल पश्चात् जकरा सौर समयसँ संब□ कयल गेल ।

प्रथम अध्याय

ज्योतिषशास्त्रक उत्पत्ति एवं विस्तार

तिथि, ग्रह, नक्षत्र, दग्धयोग, अ□प्रहरा, योग, मानव जीवनपर एकर प्रभाव

ज्योतिष शास्त्रक उत्पत्ति एवं विस्तार :

परिचय :

ज्योतिष एक एहन शास्त्र थिक जाहिसँ मिथिले किएक विश्वक बच्चा–बच्चा परिचित अछि । ज्योतिष जननिहार, बुझनिहार आ बुझओनिहारकेँ ज्योतिषी कहल जाइत छैक । मानव जीवनमे प्रत्येक संस्कारक अवसर पर तथा पूजा–पाठक अवसर पर ज्योतिषीक प्रयोजन होइत छैक । मिथिला□चलमे सामान्यो लोक बिनु दिन तकओने घरसँ बाहर नहि पयर दैत अछि । दिन, तिथि, नक्षत्र, योग, अ□प्रहरा, दग्धयाम इत्यादिक विचार एतय प्रमुखतासँ होइत अछि ।

मनुष्य सर्वदासँ जिज्ञासु रहल अछि आ ओ अपन आँखिक परोक्षक वस्तुकेँ देखय चाहैत अछि, बुझय चाहैत अछि । आकाशक ज्योतिर्मयी पिण्डक विषयमे सेहो ज्ञान प्राप्त करय चाहैत अछि ।

परिभाषा :

ज्योतिषशास्त्रक परिभाषा भारतमे समयक संग बदलैत रहल अछि । अति प्राचीन कालमे ज्योतिर्मयी पिण्ड यथा ग्रह, नक्षत्र, तारा, सूर्य, चन्द्र आदिक अध्ययन मात्रकेँ ज्योतिषक अन्तर्गत राखल जाइत छल । सै□ान्तिक गणितक बोध एहि शास्त्रसँ नहि होइत छल कारण जे ओहि समयमे मात्र दृष्टि पर्यवेक्षण द्वारा नक्षत्रक अध्ययन करब सैह उद्देश्य छल ।

भारतवासी लोकनि जहिया सर्वप्रथम सूर्य आ चन्द्रकेँ देखलनि तहियासँ भयभीत भए हुनका सभकेँ देवताक रूपमे स्वीकार कय लेने छलाह । वेदमे सेहो कतोक जगह नक्षत्र, सूर्य आ चन्द्रमाक स्तुति पर श्लोक दृष्टिगोचर होइछ । अवश्यमेव आदिकालीन

भारतीय द्रष्टा लोकनि आकाशीय ज्योतिर्मयी पिण्डकेँ देवताक रूपमे स्वीकार कयने छलाह ।

ब्राह्मण आ आरण्यकक समयमे ई परिभाषा आओर विकसित भेल तथा ओहि समयमे नक्षत्रक आकृति, स्वरूप, गुण एवं प्रभावक ज्ञान प्राप्त करबाकेँ ज्योतिष मानल जाय लागल । आदिकाल[1] मे नक्षत्रक शुभाशुभ फलानुसार कार्यक विवेचन तथा □तु, अयन, दिनमान, लग्न आदिक शुभाशुभानुसार कार्यकेँ करबाक ज्ञान प्राप्त करब सेहो एहि शास्त्रक परिभाषाक अन्तर्गत अबैत अछि । सूर्य, प्रज्ञप्ति, ज्योतिष खण्डक वेदांग-ज्योतिष आदि ग्रंथक प्रणयन तक ज्योतिषक गणित आ फलित- भेद स्पष्ट नहि भेल छल । ई परिभाषा एतहि धरि सीमित नहि रहल अपितु ज्ञानव□नक संग-संग विकसित भेल । राशि आ ग्रहक स्वरूप, रंग, दिशा, तत्त्व धातु इत्यादिक विवेचना सेहो एकर अन्तर्गत आबि गेल ।

भारतीय ज्योतिषक परिभाषाक स्कन्धत्रय होरा, सि□ान्त आ संहिता अथवा स्कन्धपंच- होरा, सि□ान्त, संहिता, प्रश्न आ शकुन- ई अंग मानल गेल अछि । यदि विराट् पंचस्कन्धात्मक परिभाषाक विश्लेषण कयल जाय तऽ आजुक मनोविज्ञान, जीवविज्ञान, पदार्थविज्ञान, रसायनविज्ञान, चिकित्साशास्त्र इत्यादि सेहो एकरे अन्तर्गत आबि जायत ।

आदिकालक अंतमे ज्योतिषक तीन भेद स्पष्ट भए गेल छल- गणित, सि□ान्त एवं फलित । ग्रहक गति, स्थिति, अयनांश, पात आदि गणित ज्योतिषक अन्तर्गत तथा शुभाशुभ समयक निर्णय विधायक, यज्ञ यज्ञादि कार्य करबाक समय आ स्थानक निर्धारण फलित ज्योतिषक विषय मानल जाइत रहल । पूर्वमध्यकाल[2]क अन्तिम शताब्दीमे सि□ान्त ज्योतिषक सेहो प्रचलन रहल किन्तु खगोलीय निरीक्षण आ ग्रहबेधक परिपाटीकेँ कम भेने गणितक कल्पनाजालहिसँ ग्रहक स्थानक निश्चय करब सि□ान्त ज्योतिषक अन्तर्गत आबि जाइत अछि । पूर्व मध्यकालक प्रारम्भहिमे ज्योतिषक अर्थ स्कन्धत्रय द्वारा सि□ान्त आ संहिताक रूपमे ग्रहण कयल गेल । किन्तु एहि युगक माध्यमे ई परिभाषा आओर संशोधित भेल आ पुनः पंचरूपात्मक-होरा, गणित वा सि□ान्त, संहिता, प्रश्न आ शकुनक रूपमे विकसित भेल । पंचरूपात्मकक विश्लेषण एतय कयल जा रहल अछि :

(i) **होरा :** ज्योतिषशास्त्रमे होराक महत्त्वपूर्ण स्थान अछि । होराशास्त्रक नामसँ तऽ सम्पूर्ण पोथिए उपलब्ध अछि- **वृहद् पराशर होराशास्त्र** एकर अपर नाम थिक- 'जातकशास्त्र' । 'होरा' 'अहोरात्र' शब्दसँ बनल अछि जाहिमे पूर्वक 'अ' आ अंतक 'त्र' केर लोप भए जाइत अछि । जन्मकालिक ग्रहक स्थितिक अनुसार व्यक्तिक जीवनक फलाफलक निर्णय एहिमे कयल जाइत छैक । एहि शास्त्रमे जन्मकुण्डलीक द्वादश भावक फल ओहिमे स्थित ग्रहक अपेक्षा तथा दृष्टि रखयबला ग्रहक अनुसार विस्तारपूर्वक प्रतिपादित कयल जाइत अछि । मानव जीवनक सुख-दुःख, इष्ट-अनिष्ट, उन्नति-अवनति, भाग्योदय आदि समस्त शुभाशुभक वर्णन एहि शास्त्रमे रहैत अछि ।

उपर्युक्त उदाहरणसँ स्पष्टतः प्रतीत होइछ जे प्राचीन कालहिसँ भारतीय □षि-मुनि लोकनि खगोल आ ज्योतिष शास्त्रसँ परिचित छलाह । किछु विद्वान् लोकनि भारतीय ज्योतिषमे ग्रीक शब्दक मिश्रण रहने तथा प्राचीन भारतीय ज्योतिषमे मेष, वृष, मिथुन... मकर, कुम्भ, मीन आदि 12 राशि तथा मंगल, बुध, गुरु इत्यादि ग्रहक नामक स्पष्ट उल्लेख नहि रहबाक कारणेँ ओकरा ग्रीससँ आयल बुझैत छथि । किन्तु एहन गप्प नहि छैक, कारण जे ओ सभ आगत शब्दक प्रमाणमे होरा (लग्न और राशि-भाग), हिबुक(जन्मकुण्डलीक चारिम भाव), आपोक्लीम, द्रेष्काण (राशिक तृतीयांश), कण्टक (चतुर्थ भाव), फणपर, अनफा, सुनफा, दुरधरा (योगविशेष), तुंग (उच्च स्थान), मुसल्लह (नवमांश), मुन्था (जन्म लग्न स्थित कोनो अभीष्ट वर्षक राशि), इन्दुवार, इत्यशाल, ईसराफ, यमना, मणऊ (योग विशेष) केर नामोल्लेख कयलनि ।[8]

इतिहास साक्षी अछि जे प्राचीन समयमे ग्रीस देशसँ अनेक विद्यार्थी शास्त्रक अध्ययनार्थ भारत अबैत छलाह । ओ लोकनि वर्षक वर्ष एतय रहि भारतीय आचार्य लोकनिसँ विभिन्न शास्त्रक ज्ञान प्राप्त करैत छलाह जाहिसँ हुनकालोकनिक अत्यन्त सामीप्यक कारण किछु शब्द ई० पू० तेरहम शतीमे, किछु ई. छठम शतीमे आ किछु 15म-16म शतीमे ज्योतिषमे भेटल । भारतक कतोक ज्योतिर्विद् 8म एवं 5म शतीमे ग्रीस गेल छलाह, जाहि कारणेँ 5म शतीक अंत आ 6म शतीक आरम्भमे अनेक ग्रीक शब्द भारतीय ज्योतिषमे मिलि गेल ।

नवम शताब्दीमे अरबी विद्वान् भारतसँ ज्योतिष विद्या सिखलनि आ भारतीय ज्योतिष सि□ान्तक **'सिन्द हिन्द'** नामसँ अरबीमे अनुवाद कयलनि । एहि प्रसंग **डब्ल्यू. डब्ल्यू.** हण्टरक कथन द्रष्टव्य थिक-

नवमी शती में अरबी विद्वानों ने भारत से ज्योतिष विद्या सीखी और भारतीय ज्योतिष सि□ान्तों का 'सिन्द हिन्द' नाम से अरबी में अनुवाद किया ।[9]

अरबी भाषामे लिखल गेल *'आइन-उल अम्बाफितल कालूली अतृवा'* नामक पुस्तकमे लिखल गेल निम्नलिखित उक्तिकेँ देखू-

भारतीय विद्वानों ने अरबी के अन्तर्गत बगदाद की राजसभा में जाकर ज्योतिष चिकित्सा आदि शास्त्रों की शिक्षा दी थी । कर्क नाम के एक विद्वान शक संवत् 694 में बादशाह अलमसूर के दरबार में ज्योतिष और चिकित्सा के ज्ञान दान के निमित्त गये थे ।[10]

दोसर युक्ति जे राशि आ ग्रहक स्पष्ट नामोल्लेख नहि भेटबाक रूपमे देल गेल अछि, व्यर्थ अछि । कारण, जखन प्राचीन साहित्यमे सौर जगतक सूक्ष्म अवयव नक्षत्रक चर्चा भेटैत अछि तऽ स्थूल अवयव राशिक ज्ञान कोना ने रहल होयत ?

बुझैत छथि । हँ, एतबा अवश्य बुझि पड़ैत छनि जे जहियेसँ मनुष्यकेँ ज्ञान भेलैक, ओ सभ ओही दिनसँ ज्योतिषक तत्त्वकेँ बुझबाक प्रयास करय लागल । ई भिन्न गप्प जे ओ सभ व्याख्या कएकेँ दोसरकेँ नहि बुझाए सकल । एहि प्रसंग डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्रीक कथन द्रष्टव्य थिक–

मानव प्रकृति की पाठशालामें सदा से इस शास्त्र का अध्ययन करता चला आ रहा है, अतः इस शास्त्र के उद्भव स्थान और काल का निश्चित रूप से पता लगाना जरा टेढ़ी खीर है । चाहे अन्य ज्ञानों के निर्झरिणी के आदि स्रोत का पता लगाना सम्भव हो, प्रकृतिके अनन्यतम अंग इस शास्त्र का ओर-छोर ढूंढ़ना मानव शक्ति से परे की बात है । अथवा दूसरे शब्दो में यह भी कहा जा सकता है कि जिस दिन से मानव ने होश सँभाला, उसी दिन से उसने ज्योषित के आवश्यक तत्वों का अध्ययन शुरू कर दिया । भले ही वह इन तत्वो को अभिव्यक्त करने की योग्यता के अभाव में दूसरो को न बता सका हो, पर उसका जीवन-निर्वाह इन तत्वों के बिना नही हो सकता था; फलतः मानव जीवन के विकास के साथ-साथ ज्येतिष का भी विकास हुआ ।[5]

अन्य शास्त्रहि जकाँ ज्योतिषशास्त्रक आविष्कर्त्ता भारतीये □षि-मुनि लोकनि छलाह, ठीक ओहिना जेना योग विद्याक जड़ि एतहि छल । योगविद्या ज्योतिषक पृष्ठाधार थिक । एतय □षि-मुनि लोकनि योगाभ्यास द्वारा अपन सूक्ष्म प्रज्ञा एवं पर्यवेक्षण शक्ति द्वारा शरीरक भीतरमे सौर-मण्डलक दर्शन कयलनि आ अपन निरीक्षण-परीक्षण द्वारा आकाशक सौर मण्डलकेँ देखय लगलाह । एहि संबंधमे 'मानव जीवन और भारतीय ज्योतिष'क निम्नांकित पंक्ति द्रव्टव्य थिक–

''यहाँ के □षियों ने योगाभ्यास द्वारा अपनी सूक्ष्म प्रज्ञा से शरीरके भीतर ही सौर-मण्डल के दर्शन किये और अपना निरीक्षण कर आकाशीय सौर-मण्डल की व्यवस्था की ।''[6]

भारतवर्ष विद्या आ बु□क क्षेत्रमे सर्वदा अग्रणी रहल अछि । अंकविद्या जे ज्योतिष शास्त्रक प्राण थिक आ ज्योतिषे किऐक, सभटा गणित, फलित, व्यवसाय एही 1 सँ 9 आ शून्य धरिक अंक पर निर्भर अछि । ई अंक भारतेक देन थिक जकर महत्त्व आइ दुनियाँक सभ देशमे अछि । निम्नांकित पंक्तिक अवलोकनसँ स्पष्ट भए जायत जे भारतक अंकविद्याक कतेक महत्त्व अछि –

भारत ने अन्य देशवासियों को जो अनेक बातें सिखायी; उसमें सबसे अधिक महत्त्व अंक विद्या का है। संसार भर में गणित, ज्योतिष, विज्ञान आदि की आज जो उन्नति पायी जाती है, उसका मूल कारण वर्त्तमान अंक-क्रम है, जिसमें 1 से 9 तक के अंक और शून्य, इन 10 चिह्नों से अंक विद्या का सारा काम चल रहा है । यह क्रम भारतवासियों ने ही निकाला और उसे सारे संसार ने अपनाया ।[7]

होरा ग्रन्थमे फल निरूपणक दुइ विधान अछि । एकमे जातकक जन्म नक्षत्रक आधार पर आ दोसरमे जन्म लग्नहि द्वारा द्वादश भावक आधार पर विस्तारपूर्वक विभिन्न दृष्टिकोणसँ फलकथनक प्रणाली बनाओल जाइत अछि । पूर्वहि कहि चुकल छी जे होराशास्त्र पर पृथकसँ अनेक रचना अछि । समयक अन्तरालमे एहिमे कतोक बेरि संशोधन सेहो भेल अछि । एहि शास्त्रक प्रमुख रचयिता लोकनि छथि– वराहमिहिर, नारचन्द्र, सि□सेन, ढुण्ढिराज, केशव आदि । वराहमिहिर एहि शास्त्रमे एक नवीन समन्वयक प्रणाली चलओलनि । नारचन्द्र ग्रह एवं राशिक अनुसार भाव आ दृष्टिक समन्वय तथा कारक, मारक आदि ग्रहक संबंधक अपेक्षासँ फल प्रतिपादनक प्रक्रियाक प्रचलन कयलनि । श्रीपति आ श्रीधर आदि नवम, दशम आ एगारहम शतीक होराशास्त्रकार लोकनि ग्रहबल, ग्रहवर्ग, विंशोत्तरीय आदि महादशाक फलकेँ एहि शास्त्रक अन्तर्गत रखलनि ।

(ii) **गणित आ सि□ान्त :** होराशास्त्रक परिभाषा निरन्तर विकसित होइत जा रहल अछि । एहिमे त्रुटिक कारणेँ कल्पकाल धरिक कालगणना, सौर, चन्द्रमासक प्रतिपादन, ग्रहगतिक निरूपण, व्यक्त-अव्यक्त गणितक प्रयोजन, विविध प्रश्नोत्तर-विधि, ग्रह, नक्षत्रक स्थिति, नाना प्रकारक तुरीय, नलिका इत्यादि यन्त्रक निर्माण विधि, दिक् देश, कालज्ञानक अनन्यतम उपयोगी अंग, अक्षक्षेत्र संबंधी अक्षज्या, लम्बज्या, द्युज्या, कुज्या, तधृति, समशंकु इत्यादिक आनयन रहैत अछि । प्राचीन कालमे एकर परिभाषा मात्र सि□ान्त गणितक रूपमे मानल जाइत छल । आदिकालमे अंकगणितेक द्वारा अहर्गणमान साधि कए ग्रहक आनयन करब एहि शास्त्रक प्रधान प्रतिपाद्य विषय छल । पूर्वकालमे एकर ई परिभाषा यथावत अवस्थित रहल । उत्तरमध्य कालमे[2] ई अनेक बिंदुकेँ पकड़लक आ युगक प्रारम्भसँ वासनात्मक होइत व्यक्तगणितकेँ अपनबैत रहल । तेँ एहि कालमे गणितक सि□ान्त, तन्त्र एवं करण तीन भेद भेल ।

जतय सृष्ट्यादिसँ दृष्ट दिन पर्यन्त अहर्गण बनाय ग्रहकेँ सि□ कयल जाय ओतय 'सि□ान्त', जतय युगादिसँ इष्टदिन पर्यन्त अहर्गण बनाय ग्रहगणित कयल जाय ओतय 'तन्त्र' एवं जतय कल्पित दृष्टवर्षक युग मानिकए ओहि युगक भीतरहि कोनो अभीष्ट दिनक अहर्गण आनिकय ग्रहानयन कयल जाय तऽ ओकरा करण कहल जाइछ । उत्तरमध्य कालक अंतमे गणित ज्योषितक परिभाषा विश्वस्त होयबाक बदलामे संकुचिते भए गेल कारण जे एहि युगमे क्रियात्मक ग्रहगणितकेँ छोड़ि बसनात्मक (उपपत्ति विषयक) ग्रहगणितेक आश्रय लेल गेल जाहिसँ वास्तविक ग्रहगणितक विकास किछु अवरु□ सन भए गेल । यद्यपि कारण ग्रंथक सारणी तैयार कयल गेल छल, किन्तु पश्चात् आकाश निरीक्षण आ व्यक्तक्रियात्मक

ग्रहगणितक अभावमे सारणीमे संशोधन नहि भए सकल । एहि तरहेँ गणित ज्योतिषक परिभाषा दोलायमान रहल, उत्थान–पतनक बीच पेंडुलम बनल रहल ।

(iii) संहिता : एहिमे भूशोधन, दिक्‌शोधन, शल्यो□ार, मेलापक, आयाद्यानयन, गृहोपकरण, इष्टिकाद्वार, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, जलाशय–निर्माण, मांगलिक कार्यक मुहूर्त्त, उल्कापात, जलवृष्टि, ग्रहक उदयअस्तक फलाफल, ग्रहचारक फल एवं ग्रहण–फल आदि बातक निरूपण विस्तारपूर्वक कयल जाइछ । मध्य युगमे संहिताक परिभाषा होरा, गणित आ शकुनक मिश्रित रूपमे मानल गेल अछि । नवम शताब्दीमे क्रियाकाण्ड सेहो एकर परिभाषाक अन्तर्गत आबि गेल । संहिताशास्त्रक उद्‌भव आदिकालमे भेल आ एकर परिभाषाक क्षेत्र उत्तरोत्तर बढ़ैत गेल । किछु जैन धर्मावलम्बी लोकनि आयुर्वेदक चर्चा सेहो संहिताक अन्तर्गत रखलनि । एकर पूर्ण विकास बारहम सँ तेरहम शताब्दीमे भेल जाहिमे जीवनसँ संब□ सभ उपयोगी लौकिक विषय एकर अन्तर्गत राखल गेल । निष्कर्षतः जतय सामान्य रूपसँ शुभाशुभ फलज्ञान संबंधी गप्प कहल गेल अछि ओकरा संहिता कहल जाइछ ।[3]

(iv) प्रश्नशास्त्र : प्रश्नशास्त्र एहन शास्त्र थिक जाहिमे प्रश्नकर्त्ताकेँ तत्काल उत्तर भेटि जाइत छनि । दैवज्ञ प्रश्नकालिक समयानुसार लग्नस्थिर कय प्रश्न कुण्डलीक निर्माण करैत छथि । तदनुसार चर लग्नमे प्रश्न भेलासँ नष्ट वस्तुक लाभ, सुख, गृह, धन आदिक हेतु हानिकारक तहिना शत्रुक आक्रमण संबंधी प्रश्न कयला पर शीध्र आक्रमणक सम्भावना बनि जाइत अछि । कल्याणक वृ□, कलहक शान्ति आदि शुभदायक फलक प्राप्ति नहि होइछ । रोगवृ□ तथा यात्रामे हानि होइछ । बन्धनसँ मुक्ति संबंधी प्रश्न भेने मुक्तिक सम्भावना नहि । द्रष्टव्य थिक–

लग्ने चरे च हृतलाभसुखाः पदार्थ-
नाशो गदक्षय-गमागम-बन्धमोक्षाः ।
प्रष्टुर्भवन्ति परचक्रमुपैति शीघ्रं
कल्याणवृ□िकलहोपशमाश्च न स्युः ॥[4]

एहिमे प्रश्नकर्त्ता द्वारा उच्चरित अक्षरक आधार पर सेहो फलादेश होइछ । पाँचम आ छठम शताब्दीमे मात्र पृच्छकक उच्चरित अक्षरक आधारहिटा पर फलादेश करब प्रश्नशास्त्रक अन्तर्गत अबैत छल; किन्तु आगाँ चलिकए एहिमे तीन सि□ान्तक प्रवेश भेल—प्रश्नाक्षर–सि□ान्त, प्रश्नलग्न–सि□ान्त एवं स्वरविज्ञान–सि□ान्त । दिगम्बर जैन ग्रन्थक रचना सभ दक्षिण भारतमे भेने प्रायः सभ प्रश्नग्रन्थ प्रश्नाक्षर सि□ान्तकेँ लएकेँ निर्मित भेल । अन्वेषण कयला पर स्पष्टतः प्रतीत होइछ जे केवलज्ञानप्रश्नचूड़ामणि, चन्द्रोन्मीलन–प्रश्न, आयज्ञानतिलक, अर्हच्चूडामणि आदि ग्रंथक आधार पर आधुनिक कालमे केरल प्रश्नशास्त्रक रचना भेल अछि ।

प्रख्यात ज्योतिषी वराहमिहिरक पुत्र पृथु यशाक समयसँ प्रश्न लग्नबला सि□ान्तक प्रचार भारतमे जोरसोरसँ भेल । नवम, दशम आ एगारहम शताब्दीमे एहि सि□ान्तकेँ विकसित होयबा ले' पूर्ण अवसर भेटलैक जाहि कारणे स्वतन्त्र रचना सेहो एहि विषय पर लिखल गेल । एहि शास्त्रक परिभाषामे उत्तरमध्यकाल धरि अनेक संशोधन आ परिव□न होइत रहल अछि । चर्चा, चेष्टा आ हाव–भाव आदिक द्वारा मनोगत भावकेँ वैज्ञानिक दृष्टिएँ विश्लेषण करब एहि शास्त्रक अन्तर्गत अबैत अछि ।

(v) शकुन : शकुनक अपर नाम निमित्तशास्त्र सेहो थिक । पूर्वमध्यकाल धरि ई पृथक् स्थान नहि प्राप्त कयने छल । एकरा संहितेक अन्तर्गत परिगणित कयल जाइत छल । दशम, एगारहम आ बारहम शताब्दीमे एहि विषय पर स्वतन्त्र विचार होमय लागल जाहिसँ ई पृथक् शास्त्रक रूपमे प्रतिष्ठित भेल । वि० सं० 1089 मे *आचार्य दुर्गदेव* अरिष्ट विषयकेँ सेहो शकुनमे मिलाए देने छलाह । पश्चात् एहि शास्त्रक परिभाषा आओरो अधिक विकसित भेल आ एकर विषय सीमामे प्रत्येक कार्यक पूर्वमे होमयवला शुभाशुभक ज्ञान प्राप्त करब सेहो परिगणित होमए लागल । वसन्तराजशकुन, अद्‌भुतसागर सन शकुन ग्रंथक निर्माण एही परिभाषाकेँ दृष्टिमे राखि कए कयल गेल होयत ।

उत्पत्ति :

ज्योतिष शास्त्र अत्यन्त प्राचीन एवं प्रामाणिक शास्त्र थिक जकर व्युत्पत्ति एहि प्रकारेँ कयल गेल अछि– **'ज्योतिषां सूर्यादिग्रहाणां बोधकं शास्त्रम्'** अर्थात् सूर्यादि ग्रह एवं कालक बोध करबएबला शास्त्रकेँ ज्योतिष शास्त्र कहल जाइत छैक । एहिमे प्रधानतः ग्रह, नक्षत्र, धूमकेतु आदि ज्योतिर्मय पदार्थक स्वरूप, संचार, परिभ्रमणकाल, ग्रहण आ स्थिति प्रभृति समस्त घटनाक निरूपण एवं ग्रह, नक्षत्रक गति, स्थिति आ संचारानुसार शुभाशुभ फलक कथन कयल जाइत अछि ।

किछु विद्वानक मत छनि जे आकाशमे विद्यमान ज्योतिर्मय विविध विषयक विद्याकेँ ज्योतिर्विद्या कहल जाइत अछि, जाहि शास्त्रमे एहि विद्याक सांगोपाङ्ग वर्णन रहैत अछि ओ ज्योतिष थिक । उक्त दुनू प्रकारक लक्षणमे मात्र एतबे भेद अछि जे पहिलमे गणित आ फलित दुनू प्रकारक विद्वानक समन्वय कयल गेल अछि आ दोसरमे मात्र खगोले ज्ञान पर दृष्टि राखल गेल अछि ।

एकर उद्‌भव आ विकास कहिया भेल ताहि प्रसंग विद्वान् लोकनि कोनो स्पष्ट संकेत नहि दैत छथि । हँ, एतबा अवश्य जे एकर सि□ान्तमे समयक अन्तरालसँ संशोधन, परिवर्त्तन आ परिव□न होइत रहल अछि । विद्वान् लोकनिकेँ एहि शास्त्रक उद्‌भव कालक पता लगाएब असम्भव जकाँ बुझि पड़ैत छनि । ओ लोकनि एकरा मानव शक्तिसँ बहिर्गत

7. तुला - र रि रु रे रो त ति तु ते
8. वृश्चिक - तो न नि नु ने नो य यि यु
9. धनु - ये यो भ भि भु ध फ ढ भे
10. मकर- भो ज जि खि खु खे खो ग गि
11. कुम्भ - गु गे गो स सी सु से सो द
12. मीन - दि दु थ झ □ा दे दो च चि

राशीश- मेष तथा वृश्चिक राशिक स्वामी मंगल थिकाह, वृष आ तुलाक शुक्र, कन्या आ मिथुनक बुध, कर्कक चन्द्र, सिंहक- रवि, मीन आ धनुक वृहस्पति, मकर आ कुम्भक शनि तथा कन्याक राहु आ मिथुनक केतु थिकाह । किछु आवश्यक परिभाषा[71]

60 प्रतिपल	□ 1 विपल	60	विपल	□	1 पल
60 पल	□ 1 घटी वा दण्ड	24	मिनट	□	1 दण्ड
2½ पल	□ 1 मिनट	2½	विपल	□	1 सेकेण्ड
2½ घटी/दण्ड	□ 1 घण्टा	60	घटी	□	1 अहोरात्रि
60 प्रति विकला	□ 1 विकला	60	विकला	□	1 कला
60 कला	□ 1 अंश	30	अंश	□	1 राशि
12 राशि	□ 1 भगण	8	यव	□	1 अंगुल
24 अंगुल	□ 1 हाथ	4	हाथ	□	1 दण्ड वा बाँस
2000 बाँस	□ 1 कोश				

अ□प्रहरा- एक अहोरात्रमे आठ प्रहर होइत अछि, अर्थात् 60 दण्डमे आठ प्रहर । 60 दण्डमे 24 घंटा होइत अछि आ 1 घंटामे 2.5 दण्ड । तदनुसार 24 घंटाकेँ आठसँ भाग देलासँ 3घंटाक एक प्रहर होइत अछि आ डेढ़ घंटाक अ□प्रहरा । एकरा लोकभाषामे 'अधपहरा' कहल जाइत अछि । सामान्यतया अनपढ़ो लोकक मुँहसँ निकलैत छैक जे अधपहरा छुटलैक ? मुदा अधपहरा तँ छुटयबला नहि, सतत रहिते छैक । प्रश्नकर्त्ताक अभिप्राय रहैत छनि ओहि अधपहरासँ जे अशुभ आ त्याज्य मानल जाइत अछि, जाहिमे लोक कोनहुँ शुभ कार्य, एतेक धरि जे नितान्त आवश्यक कार्य छोड़ि, यात्रा सेहो नहि करैत अछि ।

एहि अ□प्रहराकेँ दू भागमे बाँटल गेल अछि- 1. दग्धयाम आ 2. रविसूनुवेला ।

1. दग्धयाम :

दग्धयाम दिन आ राति दुनूमे समाने होइत छैक । एकरा ज्ञात करबाक हेतु हम वराहमिहिर कृत 'प□चस्वरा'क एकटा सूत्रक उल्लेख करैत छी-

वारस्त्रिघ्नोऽष्टभिस्तष्टः सैकः स्यादर्धयामकः ।

भाषाक प्रचारक संग-संग अंग्रेजी, आधुनिक भूगोल आ गणित विषयक पठन-पाठनक प्रक्रिया सेहो प्रचलित भेल । 1857 ई०क पश्चात् आधुनिक नवीन आविष्कृत विज्ञानक प्रभाव भारतक ऊपर विशेष रूपसँ पड़ल । परिणामतः अंग्रेजी भाषाक जानकार संस्कृतक विद्वान् एहि भाषाक नवीन गणित ग्रन्थक अनुवाद संस्कृतमे कए ज्योतिषक महत्त्वकेँ अर्वाचीन काल धरिक ज्योतिष विषयक सामग्रीकेँ विभाजित कए ओकर अध्ययन कएलासँ एकर वास्तविक विकासक क्रमब□ ज्ञान होइत छैक ।

विस्तार :

उपर्युक्त वर्गीकरणक आधार पर स्पष्ट अछि जे अंधकार कालमे लोककेँ लिपि नहि छलैक । ओ अपन कार्य चलबए जोकर भाषा जे संकेतात्मक छलैक, केर प्रयोग करैत छल । भारतक अपन विशेषता छलैक आध्यात्मिक ज्ञान आ एकर सम्पादन योगक्रिया द्वारा प्राचीन कालहिसँ होइत रहल । एहि सि□ान्तक अनुसार महाकुण्डलिनी नामक शक्ति समस्त सृष्टिमे व्याप्त अछि आ व्यक्तिमे यैह शक्ति कुण्डलिनीक रूपमे विद्यमान रहैत छैक । एकर विश्लेषण एहि तरहेँ अछि जे पीठमे स्थित मेरुदण्ड सोझे जतए जा कए पायु और उपस्थिक मध्यमे मिलैत अछि ओतए त्रिकोण चक्रमे स्वयम्भूं लिंग स्थित अछि । एहि चक्रकेँ अग्निचक्र सेहो कहल जाइत छैक । एहि स्वयम्भू लिंग केँ 3½ वलयमे लपेटल सर्प जकाँ कुण्डलिनी अवस्थित अछि जाहिमे अनन्तर मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत विशु□ारव्य आ आज्ञा ई खटचक्र क्रमशः ऊपरमे अवस्थित अछि । एहि चक्रकेँ भेदन करबाक बाद मस्तकमे शून्य चक्र अछि जतए जीवात्माकेँ पहुँचा देब योगीक परम लक्ष्य होइत अछि । एतय सहस्रार चक्र होइत छैक । प्राणवायुकेँ वहन करएबला मेरुदण्डसँ संबंध इडा, पिंगला आ सुषुम्ना- ई तीन नाड़ी होइत अछि जाहिमे इडा आ पिंगलाकेँ क्रमशः सूर्य आ चन्द्र सेहो कहल जाइत अछि । सुषुम्नाक भीतर बज्रा, चित्रिणी आ ब्रह्मा ई तीन नाड़ी कुण्डलिनी शक्तिक वास्तविक मार्ग थिक । साधक नाना प्रकारक साधना द्वारा कुण्डलिनी शक्तिकेँ उद्बु□ कए स्फोट नाद करैत अछि । एहि नादसँ सूर्य, चन्द्र आ अग्नि रूप प्रकाश होइत अछि । एहि तरहेँ योगी लोकनि व्यक्तिक अन्दर रहएबला कुण्डलिनी आ महाकुण्डलिनीमे मिलानक प्रयत्न करैत छथि ।

पूर्वहि कहि चुकल छी जे ओहि युगक ज्योतिष विषयक साहित्य उपलब्ध नहि अछि किन्तु ओहि समयक मुनष्यकेँ दिन, राति, पक्ष, मास, अयन आ वर्ष आदि विषयक पूर्ण ज्ञान छलैक ।

मनुष्य सतत अनुसंधानरत रहल अछि आ यैह जिज्ञासा ओकरा परम लक्ष्य तक पहुँचएमे मदति करैत छैक । छन्दोज्ञ उपनिषदमे एक गोट कथाक चर्चा अछि जाहिमे कहल गेल अछि जे अरुणक पुत्र श्वेतकेतु पा□चालक परिषदमे गेलाह आ ओतय क्षत्रिय राजा प्रवण जैवालि हुनकासँ जीवनक उत्क्रान्ति, परलोक-गति आ जन्मान्तरक संबंधमे पाँच गोट

प्रश्न कएलनि, किन्तु श्वेतकेतु ओहिमे सँ कोनहुटा उत्तर नहि दए सकलाह । तत्पश्चात् श्वेतकेतु अपना पिताक समीप अएलाह आ जैवालिक द्वारा पूछल गेल प्रश्नक उत्तर हुनकासँ बुझए चाहलनि किन्तु ओहो निरुत्तरे रहलाह । तदनन्तर दुनू जैवालिक गेलाह आ हुनकेसँ प्रश्नक उत्तर पुछलनि– **स ह कृच्छी बभूव । तं ह चिरं बस इत्याज्ञापया चकार । तं होवाच यथा मा त्वं गौतमाब्दो यथेयं न प्राक् त्वत्तः पुरा विद्या ब्राह्मणानि गच्छति ।**

ई प्रार्थना सुनिकए राजा चितिन्त भेलाह आ ओ षिसँ किछु समय ठहरबा ले' कहलनि आ प्रश्नक उत्तर देब आरम्भ कएलनि–

हे गौतम ! अपने हमरासँ जे विद्या प्राप्त करए चाहैत छी से आइ सँ पूर्व कोनो ब्राह्मणकेँ नहि प्राप्त भेल छलैक ।

बृहदारण्यक उपनिषदक निम्नलिखित मंत्रहुसँ एकर समर्थन होइत अछि–

इयम् विद्या इतः पूर्वं न कश्मिंश्चित् ब्राह्मणे उवास तान् त्वहं तुभ्यं वक्ष्यामि ।[36]

अतः एहि युगक ज्योतिष विषयक साहित्यक अभावहुमे एतबा तऽ स्वीकार करहि पड़त जे ओहि समयमे ज्योतिष विकसित अवस्थामे छल । भारतीय षि लोकनि दिव्य ज्ञान शक्ति द्वारा आकाशमण्डलक समस्त तत्त्वकेँ देखलनि, बुझलनि आ गुनलनि । जेना–जेना अभिव्य जना शक्ति लोकक बढ़लैक तेना–तेना ज्योतिष तत्त्वक विकास होइत गेल ।

उदयकालमे जे ज्योतिष सि ान्त साहित्यक रूप लेलक से अंधकार कालमे मौखिक रूपमे छल । किछु विद्वानक मत छनि जे उदयकालक पूर्वमे आर्य लोकनि भारतमे उत्तरी ध्रुवसँ अएलाह आ एतय बसि गेलाह । पश्चात् ओ लोकनि वेद, वेदांग आदि साहित्यक रचना कएलनि । ओहि समयक उत्तरी ध्रुव सम्भवतः वैह थिक जे आइ बिहार आ उड़ीसाक सीमा अछि ।

एहि समयमे सूर्य चन्द्रमाक अतिरिक्त भौमादि पाँच ग्रह सेहो ज्योतिष शास्त्रक विषय बनि गेल छल । अंग साहित्यमे नवग्रहक स्पष्ट उल्लेख सेहो ईस्वीसँ सहस्रो वर्ष पूर्वहि होमय लागल छल । ईस्वीसँ 500 वर्ष पूर्व रचल गेल प्राचीन जैन आगममे ज्योतिषीक हेतु 'जोईसंगविउ' शब्दक प्रयोग भेल अछि जकरा भाष्यकार लोकनि अर्थ लगओलनि –ग्रह, नक्षत्र, प्रकीर्ण आ ताराक विभिन्न विषयक ज्ञान तथा ग्रहक सम्यक् स्थितिक ज्ञान प्राप्त करब ।

ग्वेदमे वर्षकेँ 12 चन्द्रमासमे विभक्त कयल गेल अछि आ प्रत्येक तेसर वर्षक समन्वय करबाक हेतु एक अधिक मास—मलमासक गणना कएल जाय लागल । ग्वेदमे वर्षक 12 मास, 360 दिन आ 120 रात्रि–दिन – 360 रात्रि 360 दिनक वर्णन करैत कहल गेल अछि–

6. वणिज, 7. विष्टि, 8. शकुनि, 9. चतुष्टपद, 10. नाग एवं 11. किस्तुघ्न । एहिमेसँ पूर्वक 7 करण चर संज्ञक एवं अंतिम स्थिर संज्ञक थिक ।

करणक स्वामी थिकाह क्रमशः – 1. इन्द्र, 2. ब्रह्मा, 3. सूर्य, 4. सूर्य, 5. पृथ्वी, 6. लक्ष्मी, 7. यम, 8. कलियुग, 9. रुद्र, 10 सर्प एवं 11. वायु ।[69]

वार :

वारक सामान्य अर्थ होइछ दिन । ज्योतिषमे दिनक आरम्भ रविसँ मानल जाइत अछि । तदनुसार रवि, सोम, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र आ शनि– ई सातोटा दिन थिक ।

बृहस्पति, चन्द्र, बुध आ शुक्र – एहि चारूकेँ सौम्यसंज्ञक तथा मंगल, रवि आ शनिकेँ क्रूरसंज्ञक कहल जाइत अछि । सौम्यसंज्ञक दिनमे लोक सामान्यतया शुभ कार्य करैत अछि । पुनः रविकेँ स्थिर, सोमकेँ–चर, मंगलकेँ–उग्र, बुधकेँ– सम, बृहस्पतिकेँ लघु, शुक्रकेँ मृदु आ शनिकेँ तीक्ष्ण संज्ञक कहल जाइछ । शल्य क्रियाक हेतु शनि, विद्यारम्भक हेतु गुरु आ व्यापारक हेतु बुधक दिन शुभ मानल जाइत अछि ।[70]

राशि :

आकाशमे स्थित भचक्रक 30 अंश अथवा 108 भाग होइत अछि । समस्त भचक्रकेँ 12 राशिमे बाँटल गेल अछि, जकर नाम थिक क्रमशः –

1. मेष, 2.वृष, 3. मिथुन, 4. कर्क, 5. सिंह, 6 कन्या, 7. तुला, 8. वृश्चिक, 9. धनु, 10. मकर, 11.कुम्भ, 12.मीन ।

ज्योतिष शास्त्रमे अक्षरक अनुसार राशिक ज्ञान करबाक परम्परा अछि । एक राशिक अन्तर्गत नओ गोट अक्षर अबैत अछि, अथवा दू गोट सम्पूर्ण नक्षत्र आ तेसर नक्षत्रक चरण । यथा– अश्विनी, भरणी ओ कृत्तिकाक एक चरणसँ मेष राशि होइत अछि । उपर्युक्त बारहो राशिक स्वभावमे भिन्नता पाओल जाइत अछि । ठीक तहिना ओहि राशिमे उत्पन्न भेल मनुष्योक स्वाभावमे अन्तर दृष्टिगोचर होइछ ।

एतय अक्षरक उल्लेख कयल जाइत अछि जाहिसँ राशिक ज्ञान होइत छैक–

1. **मेष- चु चे चो ल लि लु ले जो अ**
2. **वृष - इ उ ए ओ व वि वु वे वो**
3. **मिथुन - क कि कु घ ङ छ के को ह**
4. **कर्क - हि हु हे हो ड डि डु डे डो**
5. **सिंह - म मि मु मे मो ट टि टु टे**
6. **कन्या - टो प पि पु ष ण ढ पे पो**

अमृतयोग आ मृत्युयोगक एतय खूब चर्चा होइत छैक । मुहूर्त चिन्तामणिमे किछु निन्द्ययोगक चर्चा कयल गेल अछि, तदनुसार प□चमीकेँ रवि आ हस्त नक्षत्र, सप्तमीकेँ मंगल आ अश्विनी नक्षत्र, षष्ठीकेँ सोम आ मृगशिरा नक्षत्र, अष्टमीकेँ बुध आ अनुराधा नक्षत्र, दशमीकेँ शुक्र आ रेवती नक्षत्र, नवमीकेँ गुरु आ पुष्य नक्षत्र, एकादशीकेँ शनि आ रोहिणी नक्षत्र पड़ने निन्द्ययोग कहबैत अछि जे शुभकार्यमे वर्जित अछि ।[67]

वर्जयेत्सर्वकार्येषु हस्तार्कं प□चमी तिथौ ।
भौमाश्विनीं, च सप्तम्यां, षष्ठ्यां चन्द्रैन्दवं तथा ॥
बुधानुराधामष्टम्यां दशम्यां भृगुरेवतीम् ।
नवम्यां गुरुपुष्यं चैकादश्यां शनिरोहिणीम् ॥

सूर्य आ चन्द्रमाक स्पष्ट स्थानकेँ जोड़ि कए तथा कला बना कए ओकरा 800 सँ भाग देला पर गत योगक संख्या निकलैत अछि । शेषसँ ई जानल जाइत अछि जे वर्त्तमान योगक कतेक कला बीति चुकल अछि । शेषकेँ 800मे सँ घटओला पर वर्त्तमान योगक गम्य कला अबैत अछि । एहि गत आ गम्य कलाकेँ 60 सँ गुणा कए सूर्य आ चन्द्रमाक स्पष्ट दैनिक गतिक योगसँ भाग देला पर वर्त्तमान योगक गत आ गम्य घटिका अबैत अछि । तात्पर्य जे जखन अश्विनी नक्षत्रक आरम्भसँ सूर्य आ चन्द्रमा दुनू मिलिकए 800 कला आगाँ चलि चुकैत छथि तऽ एक योग बीतैत अछि आ 1600 कला आगाँ चललासँ दू । एहि तरहेँ जखन दुनू 12 राशि– 21600 कला अश्विनीसँ आगाँ चल जाइत छथि तऽ 27 योग बीतै अछि ।

27 योगक निम्नलिखित नाम अछि–

1. विष्कम्भ, 2. प्रीति, 3. आयुष्मान, 4. सौभाग्य, 5. शोभन, 6. अतिगण्ड, 7. सुकर्मा, 8. धृति, 9. शूल, 10. गण्ड, 11. वृ□, 12. ध्रुव, 13. व्याघात, 12. हर्षण, 15. वज्र, 16. सि□, 17. व्यतीपात, 18. वयीयान, 19. परिध, 20 शिव, 21. सि□ 22. साध्य, 23. शुभ, 24. शुक्ल, 25. व्रह्म, 26. ऐन्द्र, 27. वैधृत्ति ।[68]

योगक स्वामी क्रमशः द्रष्टव्य थिक– 1. यम, 2. विष्णु, 3. चन्द्रमा, 4. ब्रह्मा, 5. बृहस्पति, 6. इन्द्र, 7. जल, 8. सर्प, 9. अग्नि, 10. सूर्य, 11. भूमि, 12. वायु, 13 भग, 14. वरुण, 15. गणेश, 16. रुद्र, 17. कुबेर, 18. विश्वकर्मा, 19. मित्र, 20. कार्तिकेय, 21. सावित्री, 22. लक्ष्मी, 23. पार्वती, 24. अश्विनी कुमार, 25. पितर, 26. दिति ।

करण :

तिथिक अ□भागकेँ करण कहल जाइत अछि । एक तिथिमे दू करण होइछ । एकर संख्या 11 अछि, जे थिक क्रमशः 1.बव, 2. बालव, 3.कौलव, 4. तैतिल, 5. गर,

द्वादश प्रधयश्चक्रमेकं त्रीणि नभ्यानि क उ तच्चिकेत् ।
तस्मिन्त्साकं त्रिशता न शंकवोऽर्पिताः षष्टिर्न चलायलासः ।[37]

तैत्तिरीय संहितामे 12 मासक नाम–मधु, माधव, शुक्र, शुचि, नभस्, नमस्य, इष, ऊर्ज, सहस, सहस्य, तपस् एवं तपस्य कहल गेल अछि ।[38]

तैत्तिरीय संहितामे वसन्त आ वर्षा □तुक सेहो चर्चा अछि ।[39]

सूर्यक उत्तरायण दक्षिणायणक चर्चा सर्वप्रथम शतपथ ब्राह्मणमे दृष्टिगोचर होइछ–

वसन्तो ग्रीष्मो वर्षाः । ते देवा □तवः शद□मन्तः शिशिरस्ते पितरो... स(सूर्यः) यत्रोदगावर्तते । देवेषु तर्हि भवति... यत्र दक्षिणा वर्तते पितृषु तर्हि भवति ॥[40]

तैत्तिरीय संहिताक 'रतस्मादादित्यः षण्मासो दक्षिणेनैति षडुत्तरेण' मन्त्रसँ सूर्यक छओ मासक उत्तरायण आ छओ मासक दक्षिणायण सि□ होइत अछि । आदिकालमे निरयन वर्षक विचार सेहो होमए लागल छल । एकर व्युत्पत्ति देखल जाय–

□तुभिर्हि संवत्सरः शक्नोति स्थातुम्[41]

उदयकालमे मनुष्यक ध्यान ग्रहक कक्षा दिस सेहो चल गेल छलैक । ग्रहकक्षाक स्पष्ट उल्लेख तऽ वैदिक साहित्यमे नहि अछि, किन्तु तैत्तिरीय ब्राह्मणक कतोक मन्त्रसँ स्पष्ट अछि जे ग्रहकक्षाक संबंधमे हुनका लोकनिक ज्ञान अवश्य प्रस्फुटित भए गेल छलनि । निम्नांकित पंक्तिक अवलोकन कएल जाय–

यथाग्निः पृथिव्या समनमदेवं मह्यं भद्रा, सन्नतयः सन्नमन्तु वायवे समनमदन्तरिक्षाय समनमद् यथा वायुरन्तरिक्षेण सूर्याय समनमद् दिवा समनमद् यथा सूर्यो दिवा चन्द्रमसे समनमन्नक्षेत्रभ्यः समनमद् यथा चन्द्रमा नक्षत्रैर्वरुणाय समनमत् ।

अर्थात् सूर्य आकाशक, चन्द्रमा नक्षत्र मण्डलक, वायु अन्तरिक्षक परिक्रमा करैत छथि आ अग्निदेव पृथ्वी पर निवास करैत छथि । स्पष्ट अछि जे सूर्य, चन्द्र आ नक्षत्र क्रमशः ऊपर–ऊपर कक्षावला छथि ।

एहि समयक विद्वान् लोकनिकेँ नक्षत्रक सेहो पूर्ण ज्ञान छलनि । ई लोकनि अपन पर्यवेक्षण द्वारा अश्विनी, भरणी इत्यादि नक्षत्रक विषयमे ज्ञान प्राप्त कए लेने छलाह । □ग्वेदमे वर्त्तमान प्रणालीक अनुसार नक्षत्रक चर्चा अछि–

वाजनावती सूर्यस्य योषा चित्रा मघा राय ईशे वसूनां[42]

उपर्युक्त मन्त्रमे मात्र चित्रा आ माघक चर्चा अछि । यजुर्वेदमे 27 नक्षत्रकेँ गन्धर्व कहल गेल छैक । अथर्ववेदमे 28 नक्षत्रक वर्णन एहि तरहेँ अछि–

चित्राणि साकं दिवि रोचनानि सरीसृपाणि भुवने जवानि ।
अष्टाविंशं सुमतिमिच्छमानो अहानि गीर्भिः सर्पयामि नाकम् ॥
सुहवं मे कृत्तिका रोहिणी चास्तु भद्रं मृगशिरः शमार्द्रा ।
पुनर्वस्तु सूनृता चारु पुष्यो भानुराश्लेषा अयनं मघा मे ॥
पुष्यं पूर्वाफाल्गुन्यो चात्र हस्तचित्रा शिवा स्वातिः सुखोमे ।
अनुराधो विशाखे सुहनानुराधा ज्येष्ठा सुनक्षत्रमरिष्टं मूलम् ॥
अन्नं पूर्वा रासन्तां मे आषाढा ऊर्ज ये द्युत्तर आ वहन्तु ।
अभिजिन्मे रासतां पुण्यवेम श्रवणः श्रविष्ठा कुर्वतां सुपुष्टिम् ॥
आ मे महच्छतमिषग्वरीय आमे द्वयः प्रोष्ठपदा सुशर्म ।
आ रेवती चाश्वयुजै भगं मे आ मे रयिं भरण्य आ वहन्तु ॥[43]

एहि समयक साहित्य पर दृष्टिपात कयने स्पष्ट प्रतीत होइत अछि जे हुनका लोकनिकेँ नक्षत्रक विषयमे नीक ज्ञान छलनि । हुनका लोकनिक विचारेँ हस्त नक्षत्रक पाँच तारा हाथक आकृतिक अछि, जेना हाथमे पाँचटा आङुर अछि तहिना हस्तक पाँचोटा तारा । तैत्तिरीय ब्राह्मणमे नक्षत्रक आकृति प्रजापतिक रूपमे मानल गेल अछि–

यो वै नक्षत्रियं प्रजापतिं वेद । उभयोरेनं लोकयोर्विदुः ।
हस्त एवास्य हस्तः । चित्रा शिरः । निष्ट्या हृदयं । ऊरू
विशाखे । प्रतिष्ठानुराधाः । एष वै नक्षत्रियः प्रजापतिः ।[44]

अर्थात् नक्षत्र रूपी प्रजापतिक चित्रा सिर, हस्त हाथ, निष्ट्या–स्वाति हृदय, विशाखा ज्येष्ठा एवं अनुराधा पाद थिक ।

उदयकालक आरम्भमे ग्रहक पर्याप्त ज्ञान लोककेँ नहि छलैक । मात्र सूर्य चन्द्रक वर्णन भेटैत अछि आ सेहो देवताक रूपमे । आइ जाहि नवग्रहक चर्चा–अर्चा होइत अछि– सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु आ केतुक से एहि कालक अंतमे प्रश्नव्याकरणमे वर्णित अछि ।

ओना तऽ ज्योतिषमे सभ किछु प्रमाणिके छैक मुदा ग्रहण लगने लोककेँ, सामान्यों जनकेँ, एकर प्रामाणिकता पर विशेष विश्वास होइत छैक । उदयकालमे □ग्वेद संहिताक पाँचम मण्डलान्तर्गत 40म सूत्रमे सूर्यग्रहण आ चन्द्रग्रहणक वर्णन अछि । एहिमे ग्रहणक उपद्रव–शान्तिक हेतु इन्द्रादि देवतासँ प्रार्थना सेहो कयल गेल अछि । ग्रहण लगबाक कारण राहु आ केतुकेँ सएह मानल गेल अछि ।

वेदमे दिन रातिक समानताक द्योतक 'विषुव'क कतहु चर्च नहि अछि मुदा तैत्तिरीय ब्राह्मण आ ऐतरेय ब्राह्मण मे एकर स्पष्ट उल्लेख अछि–

यथा वै पुरुष एवं विषुवांस्तस्य यथा दक्षिणोर्ध एवं पूर्वार्धो विषुवन्तो यथोत्तरोर्धो एवमुत्तरोर्धो विषुवन्तस्तस्मादुत्तरे इत्याचक्षते प्रवाहुक्सतः शिर एवं विषुवान् ।[45]

ग्रह :

ज्योतिषशास्त्रमे ग्रह शब्द पर्याप्त प्रचलित अछि । ग्रहक फेरी, ग्रहदशा, गोचर ग्रह, द्वादशभावगत ग्रह इत्यादि चर्चित अछि । मिथिला□चलमे नवग्रहक पूजा होइत अछि आ ज्योतिषशास्त्रमे ओहि नवग्रहकेँ एकटा क्रममे राखल गेल अछि जे क्रम थिक–

आ, चं, कु, रा, जी, श, बु, के, शु अर्थात् आ सँ आदित्य (सूर्य), चं सँ चन्द्रमा (सोम), कु सँ कुज (मंगल), रा सँ राहु, जी सँ जीव (वृहस्पति), श सँ शनि, बु सँ बुध, के सँ केतु, शु सँ शुक्र ।

जातकक जन्मपत्री बनएबाक समयमे ग्रहक अत्यधिक महत्त्व देल जाइत अछि । जे ग्रह जाहि राशिक स्वामी होइत अछि ओ राशि ओहि ग्रहक गृह कहबैत अछि । एहि तरहेँ मेष आ वृश्चिक राशिक स्वामी मंगल, वृष आ तुलाक स्वामी शुक्र, मिथुन आ कन्याक स्वामी बुध, कर्कक स्वामी चन्द्रमा, धनु आ मीनक स्वामी वृहस्पति, सिंहक स्वामी सूर्य, मकर आ कुंभक स्वामी शनि छथि ।

मनुष्यक जीवनमे ई ग्रह सभ महादशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशा, सूक्ष्मदशाक रूपमे अपन प्रभाव देखबैत अछि । महादशा अष्टोत्तरीय तथा विंशोत्तरीय होइत अछि । मिथिला□चलमे अष्टोत्तरीय महादशाक विचार नहि होइत अछि ।

एतय विद्वान् लोकनि विंशोत्तरीय महादशाक आधार पर फलाफलक गणना करैत छथि । एहि महादशामे मानव जीवनक आयुक अधिकतम सीमा 120 वर्ष मानल गेल अछि आ तदनुसार सभ ग्रहक ओहिमे भोगक काल निर्धारित कयल गेल अछि । मुहूर्तचिन्तामणिक निम्नलिखित श्लोक ग्रहक भोगक कालक निरूपण करैत अछि–

आयुः षडंशो भृगुजस्य वर्षं तद् विंशतेरंशविहीनशुक्रः ।
शनिर्भवेत्तानि विहीनसौरिः तमोपत□नितमो बुधः स्यात् ॥
तेनोनितज्ञो गुरुवर्षभागं भृगोर्दलं चन्द्रमसः प्रमाणम् ।
राहुस्तृतीयांशमितो रविः स्यात् ज्ञचन्द्रयोरन्तरभौमकेतू ॥

एहि तरहेँ एक सय बीस वर्षकेँ एहि तरहेँ विभाजित कयल गेल अछि जे– शुक्र– 20 वर्ष, शनि–19 वर्ष, राहु – 18 वर्ष, बुध– 17 वर्ष, गुरु–16 वर्ष, चन्द्र –10 वर्ष, भौम– 7 वर्ष, केतु 7 वर्ष एवं रवि 6 वर्ष होइत छथि । एहि महादशामे अन्तर्दशा निकालबाक हेतु ''दशा दशाहता कार्या दशभिर्भागमाहरेत्'' सूत्रक सहायता लेल जाइत अछि ।

योग :

मिथिला□चलमे लोक कोनहु शुभ कार्य करबामे योग देखैत अछि । सि□योग,

10. **अधोमुखसंज्ञक :** मूल, अश्लेषा, विशाषा, कृत्तिका, पूर्वफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़, पूर्वभाद्र, भरणी आ मघा अधोमुखसंज्ञक कहबैत अछि । एहि नक्षत्रमे जलाशय आ नेऑंओ लेब शुभ मानल जाइत अछि–

मूलाहिमिश्रोग्रमधोमुखं भवेदूर्ध्वास्यामार्द्रेज्यहरित्रयं ध्रुवम् ।
तिर्यङ्मुखं मैत्रकरानिलादितिर्जेष्ठाश्विभानीदृशकृत्यमेषु सत् ।।[62]

11. **उर्घ्वमुखसंज्ञक :** आर्द्रा, पुष्य, श्रवणा, धनष्ठिा आ शतभिषाकेँ ऊर्ध्वमुख संज्ञक कहल जाइत अछि ।[63]

12. **तीर्यमुखसंज्ञक :** अनुराधा हस्त, स्वाति, पुनर्वसु, ज्येष्ठा आ अश्विनी तीर्यमुखसंज्ञक कहबैत अछि।[64]

13. **दण्डसंज्ञक :** रविकेँ भरणी, सोमकेँ चित्रा, मंगलकेँ उत्तराषाढ़, बुधकेँ धनिष्ठा, वृहस्पतिकेँ उत्तरफाल्गुनी, शुक्रकेँ ज्येष्ठा आ शनिकेँ रेवती नक्षत्र पड़ने दण्डसंज्ञक कहबैछ । एहि नक्षत्रमे कोनो शुभ कार्य वर्जित अछि ।[65]

14. **मासशून्यसंज्ञक :** चैत्रमे रोहिणी आ अश्विनी, वैशाषमे चित्रा आ श्वाति, ज्येष्ठमे उत्तराषाढ़ आ पुष्य, आषाढ़मे पूर्वफाल्गुनी आ धनिष्ठा, साओनमे उत्तराषाढ़ आ श्रवणा, भादवमे शतभिषा आ रेवती, आश्विनमे पूर्वभाद्र, कार्तिकमे कृत्तिका आ मघा, अगहनमे चित्रा आ विशाषा, पूषमे आर्द्रा, अश्विनी आ हस्त, माघमे श्रवणा आ मूल तथा फागुनमे ज्येष्ठा आ भरणी नक्षत्र पड़ने मासशून्य नक्षत्र कहबैत अछि ।[66]

नक्षत्रक चरण : एक नक्षत्रकेँ चारि गोट चरण होइत अछि । एहि नक्षत्रक चरणक आवश्यकता, नवजात शिशुक नामकरणक अवसर पर होइत छैक अथवा कोनो व्यक्तिक नामक आद्यक्षरसँ ओकर नक्षत्र तथा राशिक ज्ञान प्राप्त कए लेल जाइत अछि । एतय क्रमशः वर्णक अनुसार नक्षत्रकेँ दर्शाओल जा रहल अछि–

चु चे चो ल – अश्विनी, लि लु ले लो – भरणी, अ इ उ ए –कृत्तिका, ओ ब वि बु– रोहिणी, वे वो क कि–मृगशिरा, कु घ ङ छ– आर्द्रा, के को ह हि– पुनर्वसु, हु हे हो ड– पुष्य, डि डु डे डो – आश्लेषा, म मि मु मे –मघा, मो ट टि टु–पूर्वफल्गुनी, टे टो प पि–उत्तरफल्गुनी, पु ष ण ठ–हस्त, पे पो र रि– चित्रा, रु रे रो त– स्वाति, ति तु ते तो –विशाषा, न नि नु ने– अनुराधा, नो य यि यु–ज्येष्ठा, ये यो भ भि– मूल, भु ध फ ढ– पूर्वाषाढ़, भे भो ज जि– उत्तराषाढ़, खि खु खे खो– श्रवणा, ग गि गु गे –धनिष्ठा, गो स सि सु– शतभिषा से सो द दि–पूर्वभाद्र, दु थ झ □ा–उत्तरभाद्र, दे दो च चि– रेवती ।

एहि मन्त्रमे विषुवक उपमा देल गेल अछि । जेना पुरुषक दक्षिणांग आ वामांग होइत अछि तहिना विषुवान संवत्सरक मस्तक थिक आ ओकर आगू-पाछू छओ-छओ मासक दक्षिणांग वा वामांग अछि ।

उदयकालक पश्चात् आदिकालमे ज्योतिष संबंधी धारणाक पर्याप्त विकास भेल । ई० पू० 100 सँ 200 ई०क साहित्यसँ स्पष्ट अछि जे आदिकालमे ज्योतिषक ज्ञान मात्र ग्रह–नक्षत्र विषये तक सीमित नहि छल अपितु राजनीतिक आ सामाजिक विषय सेहो एहि शास्त्रक अंग बनि गेल जे वेदांग ज्योतिषक रूपमे विकसित भेल । वेदांग ज्येतिषमे □ग्वेद, यजुर्वेद आ अथर्ववेद – ई तीनटा ग्रन्थ अबैत छल । □ग्वेदक संग्रहकर्ता लगध □षि छलाह जाहिमे 36 कारिका अछि । यजुर्वेद ज्योतिषमे तऽ 49 कारिका अछि किन्तु एहिमेसँ 36 कारिका □ग्वेद ज्योतिषक थिक । अथर्व ज्योतिषमे 162 श्लोक अछि । ई फलित ज्योतिष हेतु विशेष महत्त्वपूर्ण अछि ।

एहि युगक ज्योतिषशास्त्रक ज्ञानकेँ व्यवहारोपयोगी होएबाक संगहि आत्मकल्याणकारी सेहो कहल गेल अछि ।

आचार्य गर्गक कथानानुसार –

ज्योतिश्चक्रे तु लोकस्य सर्वस्योक्तं शुभाशुभम् ।
ज्योतिर्ज्ञानं तु यो वेद स याति परमां गतिम् ।।

अर्थात् ज्योतिश्चक्र सम्पूर्ण लोकक शुभाशुभकेँ व्यक्त करैत अछि । अतः जे ज्योतिषशास्त्रक ज्ञाता छथि ओ परम कल्याणकेँ प्राप्त करैत अछि । ई० पू० 100 सँ 300क बीच प्रमुख 18 गोट ज्योतिषक आचार्य भेलाह । हुनकालोकनिक नाम थिक क्रमशः

सूर्यः पितामहो व्यासो वशिष्ठोत्रिः पराशरः ।
कश्यपो नारदो गर्गो मरीचिर्मनुरंगिराः ।।
लोमशः पौलिशश्चैव च्यवनोयवनो भृगुः ।
शौनकोऽष्टादशाश्चैते ज्योतिःशास्त्रप्रवर्तकाः:।। – काश्यप

पुनश्च–

विश्वसृड्नारदो व्यासो वशिष्ठोत्रिः पराशरः ।
लोमशो यवनः सूर्यश्च्यवनः काश्यपो भृगुः ।।
पुलस्त्यो मनुराचार्यः पौलिशः शौनकोङ्गिराः ।
गर्गो मरीचिरित्येते ज्ञेयाः ज्योतिःप्रवर्तकाः ।। –पराशर

अर्थात् कश्यपक अनुसार सूर्य, पितामह, व्यास, वशिष्ठ, अत्रि, पराशर, कश्यप, नारद, गर्ग,

मरीचि, मनु, अंगिरा, लोमस, पुलिश, च्यवन, यवन, भृगु तथा शौनक– ई अठारहो ज्योतिष शास्त्रक प्रवर्तक छथि । पराशर □षि एहि अठारहक संग पुलस्त्य नामक एकटा आओरो आचार्यकेँ जोड़लनि आ तेँ हुनक अनुसारेँ ई संख्या 19 भेल । तहिना नारद सूर्यकेँ छोड़ि शेष सत्रहेटाकेँ एहि शास्त्रक प्रवर्त्तक मानैत छथि ।

एहि समयक सभसँ प्रधान रचना थिक □क् ज्योतिष । एहिमे सृष्टिक आरम्भ तथा अन्तक सूचना देल गेल अछि । माघ शुक्ल प्रतिपदाकेँ युगारम्भ आ पौष कृष्ण अमावाश्याकेँ युग–समाप्ति कहल गेल अछि ।

द्रष्टव्य थिक–

स्वराक्रमेते सोमार्कौ यदा साकं सवासवौ ।
स्यात्तदादियुगं माघस्तमःशुक्लोऽयनो ह्युदक् ॥

अर्थात् यदि धनिष्ठा नक्षत्रक संग सूर्य आ चन्द्रमा योगकेँ प्राप्त करैत छथि तऽ युगारम्भ होइत अछि । ई समय माघ शुक्ल प्रतिपदाकेँ पड़ैत छैक । उत्तरायण आ दक्षिणायणक चर्चा सेहो उदयकालसँ भिन्न अछि ।

□क् ज्योतिषमे एक चन्द्रमासमे 29 दिन आ एक तिथिमे 29 मुहूर्त होइत अछि । एहिमे नक्षत्रक गणना कृत्तिका आ धनिष्ठासँ मिलैत अछि ।

एहि समयक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ अछि यजुः ओ अथर्व ज्योतिष । यजुर्वेद ज्योतिष अंकज्योतिषसँ साम्य रखैत अछि आ अथर्वज्योतिषमे फलित ज्योतिषक गप्प कहल गेल अछि । एहिमे तिथि, नक्षत्र, करण, योग, तारा आ चन्द्रमाक बलाबलक सुन्दर निरूपण कएल गेल अछि–

तिथिरेकगुणा प्रोक्ता नक्षत्रम् च, चतुर्गुणम् ।
वारश्चाष्टगुणः प्रोक्तः करणं षोडशान्वितम् ॥
द्वात्रिंशद्गुणो योगस्तारा षष्टिसमन्विता ।
चन्द्रः शतगुणः प्रोक्तस्तस्माचन्द्रबलाबलम् ।
समीक्ष्य चन्द्रस्य बलाबलानि ग्रहाः प्रयच्छन्ति शुभाशुभानि ।

अर्थात् तिथिक एक गुण, नक्षत्रक चारि गुण, वारक आठ गुण, करणक सोलह गुण, योगक बत्तीस गुण, ताराक साठि गुण आ चन्द्रमाक सय गुण कहल गेल अछि ।

एहिमे जन्म नक्षत्रसँ लए कए सुन्दर ढंगसँ ओकर फलक कथन कयल गेल अछि । द्रष्टव्य थिक–

2. **मूलसंज्ञक :** अश्विनी, अश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूल आ रेवती– ई नक्षत्र सभ मूलसंज्ञक कहबैत अछि । एहि समयमे जन्म लेनिहार बच्चाकेँ लोक 27 दिनक बाद शान्ति अवश्य करबैत अछि । एहि नक्षत्रमे ज्येष्ठा आ मूल केँ गण्डान्तमूल संज्ञक तथा अश्लेषाकेँ सर्पमूल संज्ञक कहैत छैक ।

3. **ध्रुवसंज्ञक :** उत्तरफाल्गुनी, उत्तराषाढ़, उत्तरभाद्र आ रोहिणी ध्रुवसंज्ञक थिक–

उत्तरात्रयरोहिण्यो भास्करश्च ध्रुवम् स्थिरम् ।
तत्र स्थिरम् बीजगेह शान्त्या रामादिसि□ये ।[55]

4. **चरसंज्ञक :** स्वाति, पुनर्वसु, श्रवणा, धनिष्ठा आ शतभिषाकेँ चरसंज्ञक कहल जाइत अछि–

स्वात्यादित्ये श्रुतेस्त्रीणि चन्द्रश्चापि चरम् चलम् ।
तस्मिन् यनादिकारोहो वाटिकागमनादिकम् ।[56]

5. **अग्रसंज्ञक :** पूर्वाषाढ़, पूर्वभाद्र, पूर्वफाल्गुनी, मघा आ भरणी अग्रसंज्ञक नक्षत्र थिक–

पूर्वात्रयम् याम्यमघे उग्रं क्रूरं कुजस्तथा ।
तस्मिन् घाताग्निशाठ्यानि विषशस्त्रादि सि□यति ।[57]

6. **मिश्रसंज्ञक :** विशाषा आ कृत्तिका नक्षत्रकेँ मिश्रसंज्ञक कहल जाइत अछि–

विशाखाग्नेयभे सौम्यो मिश्रं साधारणं स्मृतम् ।
तत्राग्निकार्य मिश्रं च वृषोत्सर्गादि सि□यति ।[58]

7. **लघुसंज्ञक :** हस्त, अश्विनी, पुष्य आ अभिजित– एहि चारू नक्षत्रकेँ क्षिप्रसंज्ञक एवं लघुसंज्ञक कहल जाइछ–

हस्ताश्विपुष्याभिजितः क्षिप्रं लघु गुरुस्तथा ।
तस्मिन्पण्य-रतिज्ञानभूषाशिल्प-कलादिकम् ।[59]

8. **मृदुसंज्ञक :** मृगशिरा, रेवती, चित्रा आ अनुराधाकेँ मृदुसंज्ञक कहल जाइत अछि–

मृगान्त्यचित्रामित्रर्क्षं मृदु मैत्रं भृगुस्तथा ।
तत्र गीताम्बरक्रीड़ामित्रकार्य-विभूषणम् ।[60]

9. **तीक्ष्ण वा दारुणसंज्ञक :** मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा आ अश्लेषाकेँ तीक्ष्ण संज्ञक कहल जाइत अछि –

मूलेन्द्रार्द्राहिभं सौरिस्तीक्ष्णं दारुणसंज्ञकम् ।
तत्राभिचारघातोग्रभेदाः पशुदमादिकम् ।[61]

समय लागि जाइत छैक आ दूरस्थ ताराकेँ तऽ प्रायः सैकड़ो वर्ष लगैत छैक जखनकि प्रकाशक गति लगभग 300000 कि.मी. प्रति सेकेण्ड अछि । एहि तरहेँ आकाशमण्डलक दूरीकेँ नक्षत्रहिसँ नापल जा सकैत अछि ।

ज्योतिषशास्त्री लोकनि आकाशमण्डलकेँ 27 भागमे विभक्त कएलनि अछि जाहि सत्ताइसोक पृथक्–पृथक् नामकरण कएल गेल अछि । वैह थिक नक्षत्र । सूक्ष्मताकेँ दृष्टिमे रखैत प्रत्येक नक्षत्रक चारि चरण कएल गेल अछि, जकर परिचय आगू देल जाएत ।

एतय 27 नक्षत्र नामक उल्लेख कएल जाइत अछि–

1. अश्विनी 2. भरणी 3. कृत्तिका 4. रोहिणी 5. मृगशिरा 6. आर्द्रा 7. पुनर्वसु 8. पुष्य 9. अश्लेषा 10. मघा 11. पूर्वफाल्गुनी 12. उत्तरफाल्गुनी 13. हस्त, 14. चित्रा, 15. स्वाति 16. विशाषा 17. अनुराधा 18. ज्येष्ठा 19. मूल 20. पूर्वाषाढ़ 21. उत्तराषाढ़ 22. श्रवणा 23. धनिष्ठा 24. शतभिषा 25. पूर्वभाद्र 26. उत्तरभाद्र एवं 27. रेवती ।

एतदतिरिक्त ज्योतिष शास्त्रज्ञ लोकनि अभिजितकेँ सेहो अठ्ठाइसम नक्षत्र मानि लैत छथि । हुनकालोकनिक विचारेँ उत्तराषाढ़क अंतिम 15 दण्ड आ श्रवणाक प्रारम्भक चारि दण्ड अर्थात् 19 दण्डक अभिजित नक्षत्र होइत अछि । जे सभ कार्यमे शुभ कहल गेल अछि ।

नक्षत्रेश :

प्रत्येक नक्षत्रक ईश अर्थात् स्वामी सेहो ज्योतिषशास्त्रज्ञ लोकनि ज्ञात कए लेलनि । तदनुसार– अश्विनी नक्षत्रक अश्विनीकुमार, भरणीक काल, कृत्तिकाक अग्नि, रोहिणीक ब्रह्मा, मृगशिराक चन्द्रमा, आर्द्राक रुद्र, पुनर्वसुक अदिति, पुष्यक वृहस्पति, अश्लेषाक सर्प, मघाक पितर, पूर्वफाल्गुनीक भग, उत्तरफाल्गुनीक अर्जमा, हस्तक सूर्य, चित्राक विश्वकर्मा, स्वातिक पवन, विशाषाक शुक्राग्नि, अनुराधाक मित्र, ज्येष्ठाक इन्द्र, मूलक नि□ति, पूर्वाषाढ़क जल, उत्तराषाढ़क विश्वेदेव, श्रवणाक विष्णु, धनिष्ठाक वसु, शतभिषाक वरुण, पूर्वभाद्रक अजैकवाद, उत्तरभाद्रक अहिर्बुध्न्य, रेवतीक पूषा आ अभिजितक ब्रह्मा । एहि नक्षत्रक फलादेश स्वभावक अनुरूपहि कएल जएबाक चाही ।

1. **पंचकसंज्ञक :** धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वभाद्र, उत्तरभाद्र आ रेवती, ई पाँचो नक्षत्र पंचदोषक अंतर्गत अबैत अछि । यैह पाँचो नक्षत्रमे 'भदबा' मानल जाइत छैक आ लोक शुभ कार्य करबासँ परहेज करैत अछि । ई भदबा तेहन ने प्रख्यात भऽ गेल अछि जे मिथिलांचल मे गप्प–गप्प मे एकर प्रयोग होइत छैक । एतए लोक अभिधा छोड़ि लक्षणो–व्य□जनामे गप्प करैत अछि । कोनहु बाधा करएबला लोककेँ आबितहि जँ प्रकट नहिओँ तऽ हुनक मोन कहि दैत छनि जे भदबा आबि गेलाह ।

जन्मसंपद्विपत्क्षेम्यः प्रत्वरः साधकस्तथा ।
नैधनो मित्रवर्गश्च परमो मैत्र एव च ॥
दशमं जन्मनक्षत्रात्कर्मनक्षत्रमुच्यते ।
एकोनविंशतिं चैव गर्भाधानकमुच्यते ॥
द्वितीयमेकादशं विंशमेष संपत्करो गणः ।
तृतीयमेकविंशं तु द्वादशं तु विपत्करम् ॥
क्षेम्यं चतुर्थद्वाविंशं यथा यच्च त्रयोदशम् ।
प्रत्वरं प□चमं विद्यात् त्रयोविंशं चतुर्दशम् ॥
साधकंतु चतुर्विंशं पष्ठं प□चदशं च यत् ।
नैधनं प□चविंशं तु षोडशं सप्तमं तथा ॥
मैत्रे सप्तदशं विद्यात् षड्विंशमिति चाष्टमम् ।
सप्तविंशं परं मैत्रं नवमष्टादशं च यत् ॥[46]

अर्थात् तीन–तीन नक्षत्रक एक–एक वर्ग स्थापित कएकेँ फलादेश कएल गेल अछि–

1. जन्म 2. संपत्कर 3. विपत्कर 4. क्षेमकर 5. प्रत्वर 6. साधक 7. निधन 8. मित्र 9. अतिमित्र 10. कर्म 11. संपत्कर 12. विपत्कर 13. क्षेमकर 14. प्रत्वर 15. साधक 16. निधन 17. मित्र 18. परममित्र 19. आधान 20. संपत्कर 21. विपत्कर 22. क्षेमकर 23. प्रत्वर 24. साधक 25. निधन 26. मित्र 27. परममित्र

अर्थात् नक्षत्रक वर्गीकरण, जकरा आइ तारा कहल जाइत अछि, प्रायः यथावत अछि ।

वेदांग ज्योतिषक प्रभावित आ कौलिक ग्रन्थ थिक सूर्य प्रज्ञप्ति । ई प्राकृत भाषामे लिखल गेल अछि । एहि ग्रंथमे प्रधान रूपसँ सूर्यक गमन आयु तथा परिवार संख्याक निरूपण कएल गेल अछि । सूर्य संबंधी विशेष जानकारी एहिमे उपलब्ध अछि । एही तरहेँ चन्द्र प्रज्ञप्ति चन्द्रमाक विषयमे जानकारी दैत अछि । ई सूर्य प्रज्ञप्तिसँ मिलैत–जुलैत अछि तथा सूर्य संबंधी सेहो सि□ांतक प्रतिपादन करैत अछि । ज्योतिषक एकटा मौलिक ग्रंथ ज्योतिष करण्डक अछि जाहिमे नक्षत्र–लग्नक प्रतिपादन कएल गेल अछि । ई संभवतः 300 सँ 400 ई० पूर्वक ग्रंथ थिक ।

वराहमिहिर कृत पंचसि□ान्तक संग्रह सेहो एहि समयक महत्त्वपूर्ण देन थिक जकर अन्तर्गत अबैत अछि– पितामह सि□ान्त, वशिष्ट सि□ान्त, रोमक सि□ान्त, पौलिश सि□ान्त आ सूर्य सि□ान्त ।

□षिपुत्र सेहो एहि समयक महान् अचार्य छथि । ई जैन धार्मानुयायी छथि । ई आचार्य गर्गक पुत्र छलाह जे ज्योतिषशास्त्रक धुरंधर विद्वान् मानल जाइत छथि । हिनका वराहमिहिरसँ पूर्वक आचार्य मानल जाइत अछि ।

ज्योतिषशास्त्रक क्रमब इतिहास आर्यभट्ट प्रथमक समयसँ भेटैत अछि । ई पाँचम-छठम शताब्दीक आचार्य थिकाह । ई सर्वप्रथम सूर्य आ ताराक स्थिर होएबाक गप्प कहलनि आ पृथ्वीक घुमबाक कारण दिन राति होयब सेहो बुझौलनि । आर्यभट्ट एक, दू तीन इत्यादि संख्याक द्योतक क, ख, ग इत्यादि कल्पित कएलनि । एहि समयक ज्योतिष शास्त्रक एकटा प्रकाण्ड विद्वान् कालकाचार्य सेहो अबैत छथि । हिनक पश्चात् द्वितीय आर्यभट्टक नाम लेल जाइत अछि । हिनक ग्रन्थक नाम थिक महाआर्यभट्टीय जाहिमे 18 अध्याय आ 625 आर्या उपगीति अछि । हिनक पश्चात् लल्लाचार्य अबैत छथि। हिनक गुरु छलथिन प्रथम आर्यभट्ट । ई गणित, जातक आ संहिता तीनूमे पूर्ण प्रवीण छलाह ।

पूर्व मध्यकाल, जे 501 ई० सँ 1000 ई० तक मानल जाइत अछि, ज्योतिष शास्त्रक हेतु अत्यन्त महत्त्वक सि भेल । एहि समयमे वराहमिहिर सन धुरंधर ज्योतिर्विद् उत्पन्न भेलाह जे एहि विज्ञानकेँ क्रमब कएलनि आ एहिमे नव विषयक समावेश सेहो कएलनि । एहि समयमे अंकगणितक अनेक सिान्तक समावेश सेहो भेल ।[47] ओ सिान्त सभ थिक-

1. अभिन्नगुण 2. भागहार 3. वर्ग 4. वर्गमूल 5. धन 6. धनमूल 7. भिन्न समच्छेद 8. भागजाति 9. प्रभागजाति 10. भागानुबंध 11. भागमातृजाति 12. त्रैराशिक 13. पंचराशिक 14. सप्तराशिक 15. बवराशिक 16. भाण्डप्रतिभाण्ड 17. मिश्रकव्यवहार 18. सुवर्णगणित 19. प्रक्षेपकगणित 20. समक्रय-विक्रय गणित 21. श्रेणीव्यवहार 22. क्षेत्रव्यवहार 23.छायाव्यवहार 24. खानशानुबंध 25.स्वानशापवाह 26. इष्टकर्म 27. द्विष्टकर्म 28.चितिधन 29. घनादिघन 30. एकपत्रीकरण 31. वर्गप्रकृति इत्यादि

तहिना रेखागतिणक सेहो अनेक सिान्तक प्रतिपादन भेल । एहि समयमे रेखागणितक जाहि सिान्तक प्रतिपादन भेल से निम्नलिखित अछि[48]-

1. समकोण त्रिभुजमे कर्णक वर्ग दूनू भुजाक वर्गक जोड़क बराबरि होइत अछि ।
2. देल गेल वर्गक योग अथवा अन्तरक समान वर्ग बनायब ।
3. आयतकेँ वर्ग अथवा वर्गकेँ आयतमे बदलब ।
4. वर्ण द्वारा राशिक वास्तविक वर्गमूल निकालब ।
5. वृत्तकेँ वर्ग आ वर्गकेँ वृत्तमे बदलब ।
6. संकु आ वर्तुल केर घनफल निकालब ।
7. विषमकोण चतुर्भुजक कर्णाननयक विधि आ ओकर दूनू वर्णक ज्ञानसँ भुजसाधन करब ।

4. **मास शून्य तिथि :** तिथिक एकटा प्रभेद अछि मास शून्य तिथि । चैत्रमे दूनू पक्षक अष्टमी-नवमी, वैशाखमे दूनू पक्षक द्वादशी, ज्येष्ठमे कृष्णपक्षक चतुर्दशी आ शुक्लपक्षक त्रयोदशी, आषाढ़मे कृष्णपक्षक षष्ठी आ शुक्लपक्षक सप्तमी, साओनमे दूनू पक्षक द्वितीया आ तृतीया, भादवमे दूनू पक्षक पड़ीब आ द्वितीया, आश्विनमे दूनू पक्षक दशमी आ एकादशी, कार्तिकमे कृष्णपक्षक पचमी आ शुक्लपक्षक चतुर्दशी, अगहनमे दूनू पक्षक सप्तमी आ अष्टमी, पूसमे दूनू पक्षक चतुर्थी आ पंचमी, माघमे कृष्णपक्षक पचमी आ शुक्लपक्षक षष्ठी, फागुनमे कृष्णपक्षक चतुर्थी आ शुक्लपक्षक तृतीया मास शून्य तिथिसँ जानल जाइत अछि । ई अशुभ तिथि थिक । एहि तिथिमे मिथिलाचलक लोक कोनहुँ शुभ कार्य करबासँ परहेज रखैत छथि ।
5. **सिा तिथि :** दिन आ तिथिक योगसँ सि तिथि होइत अछि यथा मंगलकेँ 3-8-13, बुधकेँ 2-7-12, वृहस्पतिकेँ 5-10-15, शुक्रकेँ 1-6-11 आ शनिकेँ 4-9-14 तिथि सिा तिथि कहबैत अछि । एहि तिथिमे शुभ कार्यक आरम्भ कयने शुभ होइछ ।
6. **दग्ध तिथि :** बारहो मासमे भिन्न-भिन्न तिथि दग्ध तिथि कहबैछ । एहि संदर्भमे निम्नांकित पंक्तिक अवलोकन कयल जाय-

द्वितीया च धनुर्मीने चतुर्थी वृष-कुम्भयोः ।
मेष-कर्कटयोः षष्ठी कन्या-मिथुनगाष्टमी ॥
दशमी वृश्चिकके सिंहे द्वादशी मकरे तुले ।
एतास्तु तिथियो दग्धाः सर्वकर्मणि वर्जिताः ॥[54]

अर्थात् जाहि मासक मेष धनु आ मीनमे सूर्य रहथि तऽ— द्वितीया, वृष आ कुम्भमे सूर्य रहथि तऽ— चौठ, मेष आ कर्कमे सूर्य रहथि तऽ— षष्ठी, कन्या आ मिथुनमे सूर्य रहथि तऽ— अष्टमी, वृश्चिक आ सिंहमे सूर्य रहथि तऽ— दशमी आ मकर तथा तुलामे सूर्य रहथि तऽ— 12 तिथि दग्ध तिथि कहबैत अछि ।

नक्षत्र :

अनेक तारागणक समूह नक्षत्र कहबैत अछि । नभमंडलमे असंख्य तारागण दृष्टिगोचर होइत अछि, जहिसँ अनगिनत आकृति बनैत अछि- अश्व, हस्त सर्प इत्यादि जकरा नक्षत्र कहल जाइत छैक । जाहि तरहेँ पृथ्वीक दूरीकेँ कीलोमीटरमे नापल जाइत अछि तहिना आकाशमंडलक दूरी, नक्षत्रसभक दूरी, प्रकाश वर्षमे आँकल जाइत अछि । वैज्ञानिक लोकनिक आकलनक अनुसार चन्द्रमाक प्रकाशकेँ पृथ्वीपर अएबामे लगभग 1. मिनटक समय लगैत छैक तऽ सूर्यक प्रकाश प्रायः 8 मिनटमे पहुँचैत अछि । तहिना सभसँ लगक तारा (पृथ्वीसँ) 'अल्फा सेंचुरी' केर प्रकाशकेँ पृथ्वीपर पहुँचबामे लगभग 5 वर्षक

तिथि :

सामान्य लोककेँ गणित ज्योतिषसँ मतलब नहि रहैत छैक । ओकरा फल दिस ध्यान लागल रहैत छैक । फलित ज्योतिषक ज्ञानक हेतु तिथि, नक्षत्र, योग, करण आ वार केर संबंधमे आवश्यक ज्ञान राखब अनिवार्य छैक । एहि पाँच तत्त्व सँ पचांग बनैत अछि । अतः पंचांगक सामान्यो ज्ञान रखनिहार जिज्ञासु लोकनिकेँ एहि पाँचो तत्त्वक परिचय प्राप्त करब आवश्यक छनि ।

एहि प□चतत्त्वक प्रथम तत्त्व थिक— तिथि । चन्द्रमाक एक कलाकेँ तिथि कहल जाइत छैक । एकर चन्द्र आ सूर्य अंतरांश परसँ मान निकालल जाइत छैक । सूर्य आ चन्द्रमाक भ्रमणमे प्रतिदिन बारह अंशक अन्तर होइछ छैक जकरा अन्तरांशक मध्यम मान कहल जाइत छैक । अमावास्याक पश्चात् प्रतिपदासँ लए पूर्णिमा तकक तिथि शुक्लपक्षक अंतर्गत अबैत अछि आ तहिना पूर्णिमाक बाद प्रतिपदासँ लए अमावास्या तकक तिथिकेँ कृष्णपक्ष कहल जाइत छैक । ज्योतिषशास्त्रमे तिथिक गणना शुक्लपक्षक पड़ीबसँ कएल जाइत अछि ।

1. **तिथीश :** सभ तिथिक स्वामी भिन्न-भिन्न छथि जनिका तिथीश कहल जाइत छनि । यथा- पड़ीबक-अग्निदेव, द्वितीयाक-ब्रह्मा, तृतीयाक-गौरी, चतुर्थीक-गणेश, प□चमीक- नाग, षष्ठीक-कार्तिकेय, सप्तमीक-सूर्य, अष्टमीक-शिव, नवमीक-दुर्गा, दशमीक-यमराज, एकादशीक-विश्वेदेव, द्वादशीक-विष्णु, त्रयोदशीक-कामदेव, चतुर्दशीक-शिव आ पूर्णिमाक वा अमावास्याक क्रमशः चन्द्रमा आ पितर छथि । द्रष्टव्य थिक-

   तिथीशा वह्नि-कौ गौरी गणेशोऽहिर्गुहो रविः ।
   शिवो दुर्गान्तको विश्वे हरिः कामः शिवः शशी ॥[52]

2. **अमावास्या :** अमावास्याक तीन प्रभेद अछि सिनीवाली, दर्श आ कुहू । अहोरात्रि रहएवला अमावास्याकेँ सिनीवाली कहल जाइत अछि । चतुर्दशीसँ बि□केँ दर्श आ पड़ीवसँ युक्त कुहू कहबैत अछि । एहि तिथिमे सूर्य आ चन्द्रक मेल होइत अछि-[53] **अमावस्या त्वमावस्या दृष्ट सूर्येन्दु संगमः ।**

3. **तिथिक संज्ञा :** तिथिक प□चधा विभाजन कएल गेल अछि नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता आ पूर्णा । पड़ीब, षष्ठी, एकादशी नन्दा तिथि कहबैछ, द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी-भद्रा, तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी-जया, चौठ, नवमी, चतुर्दशी-रिक्ता तथा प□चमी, दशमी आ पूर्णिमा वा अमावस्या पूर्णा तिथि कहबैछ । संगहि चौठ, षष्ठी, अष्टमी, नवमी, द्वादशी आ चतुर्दशी तिथिकेँ पक्षरन्द्रसंज्ञक कहल जाइत अछि ।

8. त्रिभुज, विषमकोण, चतुर्भुज आ वृत्तकेर व्यास निकालब ।
9. सूचीव्यास, वलयव्यास आ वृत्तान्तर्गत वृत्तक व्यास निकालब ।
10. वृत्त परिधि, वृत्त सूची आ ओकर घनफल निकालब ।

पूर्व-मध्य कालमे फलित ज्योतिषक संहिता आ जातक अंगक साहित्य अधिक विकसित भेल ।

राशि, होरा, द्रेष्काण, नवांश, द्वादशांश, त्रिसांश, परिग्रह स्थान, कालबल, चेष्टाबल, ग्रहकरंग, स्वभाव, धातु, द्रव्य, जाति, चेष्टा, आयुर्दाय, दशा, अंतर्दशा, अष्टकावर्ग, राजयोग, प्रिग्रहादियोग, मूहूर्त विज्ञान, अंगविज्ञान, स्वप्नविज्ञान, शकुन एवं प्रश्नविज्ञान आदि फलितक अंगक समावेश होरा शास्त्रमे होइत छल । संहितामे सूर्यादि ग्रहक चालन, हुनक स्वभाव, विकार, प्रमाणवर्ण, किरण, ज्योति, संस्थान, उदय, अस्त, मार्ग, पृथकमार्ग, वक्र, अनवक्र, नक्षत्र विभाग, आकुंभक सभ देशमे फल, अगस्त्य गति, सप्तर्षिक गति, नक्षत्र व्यूह, ग्रह-शृंगाटक, ग्रह यु□, ग्रह समागम, परिवेश, परिध, वायु, उल्का, दिग्दाह, भूकम्प, गन्धर्वनगर, इन्द्रधनुष, वास्तुविद्या, अंगविद्या, वायसविद्या, अंतर्चक्र, मृगचक्र, अश्वचक्र, प्रसादलक्षण, प्रतिभालक्षण, प्रतिभाप्रतिष्ठा, घृतलक्षण, कम्बललक्षण, खड्गलक्षण, पट्टलक्षण, कुक्कुटलक्षण, कुर्मलक्षण, गोललक्षण, अजालक्षण, अरूलक्षण, स्त्री-पुरुषलक्षण एवं साधारण, असाधारण सभ प्रकारक शुभाशुभक विवेचन एहिमे अछि ।[49] 500ईक लगभग मे भारतीय ज्योतिषक सम्पर्क ग्रीस, अरब आ फारस देश सभसँ भेल । वराहमिहिरक यवनक प्रति उक्ति द्रष्टव्य थिक-

म्लेच्छा हि यवनास्तेषु सम्यक् शास्त्रमिदं स्थितम् ।
□षिवत्तेपि पूज्यन्ते किं पुनर्दैवविद् द्विजः ॥

अर्थात् म्लेच्छ कदाचारी यवनक मध्य ज्योतिषशास्त्रक ठीक प्रकार अछि तेँ ओहो सभ □षितुल्य पूजनीय छथि; यदि एहि शास्त्रक जननिहार द्विज होथि तऽ सोनमे सुगन्ध ।

एहिसँ स्पष्ट अछि जे वराहमिहिरसँ पूर्व ज्योतिषशास्त्र पर यवनक पूर्ण प्रभाव छल । 771 ई० मे भारतक एकटा टोली बगदाद गेल छल आ ओहिमेसँ एकटा विद्वान् 'ब्रह्मस्फुट सि□ान्त'क व्याख्यान कएने छलाह । अरबमे एहि ग्रन्थक अनुवाद 'अस सिन्द हिन्द' नामसँ भेल । भारतक सम्पर्क ग्रीससँ सेहो भेल छल । जाहिमे ज्योतिष शास्त्रक विषयक पर्याप्त आदान-प्रदान भेल रहय । भारतीय ज्योतिषमे आक्षांश, देशान्तर, चर संस्कार आ उदयास्तक सूक्ष्म विवेचन मुसलिम आ ग्रीक सभ्यताक संपर्कसँ विशेष रूपसँ भेल । सातम आठम शताब्दीक मध्यमे 'चन्द्रोन्मीलन' नामक प्रश्नग्रन्थक पर्याप्त प्रचलन भेल । उद्योतन नामक ज्योतिर्विद् नर-नारीक भविष्यक कथन करैत छथि :

णिच्चं जो रोगभागी णखई-सयमे पूइओ चक्खुलोलो,
धम्मत्थे उज्जमन्तो सहियण-बलियो ऊरुजङ्घो कयण्णू ।
सूरो जो चाण्डकम्मे पुणरवि मउओ बल्लहो कामिणीणं,
जेठ्ठो सो भाउयाणं जल-णिचय-महा-मीरुओ मेस-जाओ ॥[50]

अर्थात् मेष राशिमे उत्पन्न भेल व्यक्ति रोगी राजा आ स्वजनसँ पूजित, चंचलनेत्र, धर्म आ अर्थक प्राप्तिक हेतु उद्योगशील, मित्रसँ विमुख, स्थूल जांघ वला, कृतज्ञ, सूरवीर, प्रचण्ड कर्म करएवला, अल्प धनवान, स्त्रीक प्रिय, भाइमे जेठ आ जल-समूह, नदी, समुद्र आदिसँ डेरायल रहनिहार होइत अछि ।

एहि समयमे फलित ज्योतिष पर्याप्त विकास करए लागल । एहि समयक प्रमुख आचार्य छथि- वराहमिहिर, कल्याणवर्मा, श्रीपति, भट्टबोसरि, प्रभृति ।

100 ई० सँ 1600 ई० धरि उत्तर-मध्य काल कहल जाइत अछि । एहि समयमे मौलिक ग्रन्थक अतिरिक्त आलोचनात्मक ग्रन्थक पर्याप्त विकास भेल । एहि समयमे गोलगणितक प्रचलन भए गेल छल किन्तु पारंपरिक ज्योतिषी लोकनिकेँ एहिसँ परिचय-पात कम छलनि । एहि समयमे पृथ्वीकेँ स्थिर आ सूर्यकेँ गतिशील कहल गेल । एहि प्रसंग भाष्कराचार्यक कथन अछि जे जेना अग्निमे उष्णता, जलमे शीतलता, चन्द्रमे मृदुता स्वाभाविक रूपसँ अछि, ताहि तरहेँ पृथ्वीमे स्वभावतः स्थिरता अछि ।

एहि समयक प्रमुख विद्वान् लोकनि छथि- भाष्कराचार्य दुर्गदेव, उदयप्रभदेव, मल्लिसेन, राजादित्य, वल्लालसेन, पद्मप्रभसूरि, नरचन्द्र उपाध्याय, अट्ठकवि वा अर्हदास, महेन्द्रसूरि, मकरन्द, केशव, गणेश, दुंढ़िराज, नीलकंठ, रामदैवज्ञ, मल्लारि, नारायण प्रभृति ।

उपर्युक्त ज्योतिर्विदमेसँ किछु बहुत यशस्वी भेलाह जनिकर नाम आइओ ज्योतिषसँ रुचि रखनिहार सामान्यो पाठक जनैत छथि- जेना वराहमिहिर । हिनक प□चस्वरा बहुत लोकप्रिय पोथी अछि । मकरन्दक ख्याति सेहो कम नहि । ई सूर्य सि□ान्तक अनुसार तिथ्यादि साधन रूप सारिणी अपन नामसँ (मकरन्द) शक संवत् 1400 मे तैयार कएलनि । ई ओहि सि□ान्तक आदिएमे लिखने छथि-

श्रीसूर्यसि□ान्तमत्तेन सम्यक् विश्वोपकाराय गुरूपदेशात् ।
तिथ्यादिपत्रम् वितनोति काश्याम् आनन्दकन्दो मकरन्दनामा ॥

नीलकण्ठक नाम सेहो काफी प्रचलित अछि । हिनक लिखल 'ताजिक नीलकण्ठी' फलित ज्योतिषक एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ थिक ।

वर्तमान कालमे मुसलमानक संस्कृतिक संग-संग पाश्चात्य संस्कृतिक प्रभाव सेहो ज्योतिषशास्त्र पर पूर्णरूप सँ पड़ल । वस्तुतः भाष्कराचार्यक बाद मुसलमानक राज्यक कारण हिन्दू धर्म, संपत्ति, साहित्य आ ज्योतिष आदि विषयक उन्नति पर कुठाराघात होइत रहल, जाहिसँ एकर विकास अवरु□ रहल ।

आधुनिक कालमे शकुन, प्रश्न, मुहूर्त, जन्मपत्र तथा वर्षपत्रक साहित्यक पूर्ण वृ□ भेल । कमलाकर भट्ट महोदाय सूर्य सि□ान्तक प्रचार करबाक हेतु 'सि□ान्त तत्त्व विवेक' नामक गणित ज्योतिषक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ लिखलनि । एहि समयमे अंग्रेजी सभ्यताक सेहो पूर्ण प्रभाव ज्योतिषशास्त्र पर पड़ल । परिणामतः अंग्रेजी भाषाक ज्ञाता लोकनि, जे संस्कृतक विद्वान् सेहो छलाह, तेँ अंग्रेजीसँ संस्कृतमे अनुवाद कए ज्योतिषक महत्त्व बढ़ओलनि । एहि समयक प्रमुख ज्योतिर्विद् लोकनि छथि- मुनीश्वर, दिवाकर, कमलाकर भट्ट, नित्यानन्द, महिमोदय मेघविजयगणि, उभयकुशल, लब्धिचन्द्रगणि, बाधजीमुनि, यशस्वतसागर, जगन्नाथसम्राट, बाबूदेवशास्त्री, नीलाम्बर झा, सामन्त चन्द्रशेखर, सुधाकर द्विवेदी प्रभृति ।

एहि समयमे आओरो अनेक ज्योतिर्विद् लोकनि भेलाह यथा- रंगनाथ, शंकरदैवज्ञ, शिवलाल पाठक, परमानन्द पाठक, लक्ष्मीपति, बबुआ ज्योतिषी, मथुरानाथ शुक्ल, परमसुखोपाध्याय, बालकृष्ण ज्योतिषी, कृष्णदेव, शिवदैवज्ञ, दुर्गाशंकर पाठक, गोविन्दाचारी, जयराम ज्योतिषी, सेवाराम शर्मा, लज्जाशंकर शर्मा, नंदलाल शर्मा, देवकृष्ण शर्मा, गोविन्ददेव शास्त्री, कंतक, दुर्गाप्रसाद द्विवेदी, रामयत्न ओझा, मानसार, विनयकुशल, हीराकलश, मेघराज, सूरचन्द्र, जय-विजय, जयरत्न, जिनपाल, जिनदत्तसूरि, श्यमाचरण ओझा, हृषिकेश उपाध्याय इत्यादि ।[51]

वर्तमान कालमे जाहि ढंगेँ ज्योतिषशास्त्रक विकास पूर्वमे भेल, तकर अपेक्षा शिथिलता दृष्टिगोचर होइछ । हमरा जनैत एकर मुख्य कारण अछि जे व्यावसायिक ढंगक उपयोग कएनिहार पंडित लोकनि एहि विद्याकेँ गुप्त रखबाक चेष्टा कएलनि, जे एकर क्षय होएबाक कारण थिक-

व्ययतो वृ□मायाति, क्षयमायाति संचयात् ।

संगहि, देशमे ने तऽ पैघ-पैघ बेधशाला छैक आ ने ओहन ज्ञानी □षि-मुनि लोकनि । आइ विद्वान् लोकनि एकरा अर्थकरी विद्या बुझि अपनहि धरि सीमित रखबाक चेष्टा करैत छथि जे चिन्ताक विषय थिक । एकरा विज्ञानसँ जोड़बाक आ एकर प्रचार-प्रसारमे दत्तचित्त भए लगबाक आवश्यकता छैक । तखनहिटा ई शास्त्र अन्य शास्त्रक संग विकासक परम लक्ष्यकेँ प्राप्त कए सकत ।

एतबेटा नहि देवरक द्वारा ओकर उत्पत्ति भेल छैक सहो गन्ध हुनका लागि जाइत छैन्ह ।

ग्रहराजे स्थिते लग्नं चतुर्थे सिंहिकासुतः ।
स्वदेवरात् सुतोत्पत्तिर्जाता तस्या न संशयः ॥

हौ, ई सभ लंठइ नहि तऽ आओर की थिक ? और एहन-एहन पाखण्डीकेँ एहि देशमे उपाधि की देल जाइत छैन्ह- ज्योति विद्यार्णव ।[15]

प्रो० झा ज्योतिषीकेँ टीपि टीपि कए खट्टर ककाक संग भिड़ंत करबैत छथि जाहिसँ गूढ़सँ गूढ़ ज्योतिषक रहस्यक उद्‌घाटन होइत अछि । एकर आगाँक क्रम देखल जाय-

लेखक- **खट्टर कका, अहाँ जे सभ वचन कहिलऐक अछि से सभ कि वास्तवमे ज्योतिषक ग्रन्थमे लिखल छैक ?**

खट्टर कका बजलाह- **नहि तऽ कि हम अपना दिससँ गढ़ि कऽ कहलिऔह अछि ? ज्योतिषक आचार्य त एहि ठाम बैसले छथुन्ह । पूछि लहुन जे ई सभ श्लोक ग्रंथमे छैन्ह कि नहि । सेहो ग्रंथ केहन त 'पराशर होराशास्त्र' !**

ज्योतिषी- **हँ, वचन, तऽ अवश्ये ग्रन्थमे छैक । पर□च ओकर सत्यता पर अहाँकेँ विश्वास किऐक नहि होइत अछि ?**

जातक विचारकेँ अहाँ मिथ्या बुझैत छिऐक ?

खट्टर- **मिथ्ये नहि लंठपनी । तेहन-तेहन अश्लील गारि ओहिमे भरल छैक जेहन आइ-काल्हि बरियातीमे नहि होइ छैक ।**

मुसाइ झा- **अपने दृष्टान्त दऽ सकै छी ?**

खट्टर- **तखन सूनू-**

धनेशे सप्तमे वैद्यः परजायाभिगामिकः ।
जाया तस्य भवेद्वेश्या माताऽपि व्यभिचारिणी ॥

की, डहकनमे एहिसँ बेसी गारि होइत छैक ?

हुनका निरुत्तर देखि खट्टर कका बजलाह- एतबहिमे चुप्प भऽ गेलैँह । देखू सहोदरा बहिन दऽ की कहैत छैक-

सहोदरासंगममाहुरन्ये दारेश्वरे क्रूरयुते सुखस्थे ।
पापेक्षिते पापसमानमेव क्रूरादिषष्ठ्यंशसमन्विते वा ॥

अर्थात् वार (दिन) केँ 3 सँ गुणा कय आठसँ भाग दी आ पुनः 1 जोड़ी तऽ दग्धयाम होयत । उदाहरणार्थ सोमक दिनकेँ देखल जाय । ध्यातव्य थिक जे ज्योतिषमे रविकेँ 1 मानि कए गणना होइत अछि । तेँ रवि एक आ सोम 2 संख्या भेल । पुनः सूत्रानुसार 2केँ 3 सँ गुणा कय 6 आ पुनः 1 जोड़ि 7 बना लेब । तेँ सोमक दिन आ राति दुनू समयमे सातम अ□प्रहरा होयत जे दग्धयाम थिक । तहिना वृहस्पति दिनकेँ देखल जाय । वृहस्पतिक संख्या 5 भेल जकरा 3 सँ गुणा कयलासँ 15 आ आठसँ भाग देने सात, पुनः 1 जोड़ने आठ भेल । तेँ वृहस्पतिकेँ दिन आ राति दूनू समयमे आठम अ□प्रहरा दग्धयाम भेल ।

2. रविसूनुवेला :

रविसूनु अर्थात् सूर्यक पुत्र शनि । ओ कोन वेलामे कोन दिन उपस्थित रहताह एहि हेतु निम्नांकित पंक्तिक अवलोकन कयल जाय –

दिवाषट्कक्रमेणैव रात्रौ प□चक्रमेण तु ।
वारेशाद□यामानां पतयः कीर्तिता बुधैः ॥

□□□

यस्मिन् विभागे रविसूनुबेला
सर्वेषु कार्येष्वपि निन्दिता सा ।

तात्पर्य जे जाहि दिनक रविसूनु वेला ज्ञात करबाक हो ताहि दिन दिनमे 6-6 केर क्रममे आ रातिमे पाँच-पाँच केर क्रममे गणना करय पड़त जे शनि कोन वेलामे अबैत छथि । पुनः उदाहरणार्थ सोम दिन आ बृहस्पति दिनकेँ हमरा लोकनि देखी । सोमक दिन सोम-मंगल-बुध-गुरु-शुक्र-शनि । एतय प्रथम 6 केर आवृत्तिमे शनि आबि गेल । तेँ जतयसँ आरम्भ कयल (सोम) से 1 आ जतय अंत भेल से 2 । तेँ सोम दिन दोसर अ□प्रहरा रविसूनुवेला भेल । पुनः रातिमे पाँचक क्रममे देखल जाय—सोम-मंगल-बुध-बृहस्पति-शुक्र; शुक्र-शनि-रवि-सोम-मंगल; मंगल-बुध-बृहस्पति-शुक्र-शनि । एतय शनि चारिम स्थानमे अयलाह । तेँ सोमक रातिमे चारिम अ□प्रहरा रविसूनुवेला भेल । तहिना बृहस्पतिक दिनमे 6 केर क्रममे-बृहस्पति-शुक्र-शनि-रवि-सोम-मंगल, मंगल-बुध-बृहस्पति-शुक्र-शनि-रवि, रवि-सोम-मंगल-बुध-बृहस्पति-शुक्र, शुक्र-शनि-रवि-सोम-मंगल-बुध, बुध-बृहस्पति-शुक्र-शनि-रवि-सोम, सोम-मंगल-बुध-बृहस्पति-शुक्र-शनि । अर्थात् बृहस्पतिक दिनमे 7म अ□प्रहरा रविसूनुवेला भेल । तहिना रातिमे पाँच-पाँच केर क्रममे गणना कएलासँ-बृहस्पति-शुक्र-शनि-रवि-सोम; सोम-मंगल-बुध-बृहस्पति-शुक्र; शुक्र-शनि-रवि-सोम-मंगल; मंगल-बुध-बृहस्पति-शुक्र-शनि; तदनुसार बृहस्पतिक रातिमे पाँचम अ□प्रहरा रविसूनुवेला थिक ।[72]

एहि अ□प्रहराकेँ श्लोकक रूपमे स्मरण करब बेसी सुगम अछि-

दिनक अ□प्रहरा–

रवौ वर्ज्या चतुष्प□च सोमे सप्तद्वयं तथा ।
कुजे षष्ठद्वयं चैव बुधे बाण-तृतीयकम् ॥
गुरौ सप्ताष्टकं ज्ञेयं त्रिचत्वारि च भार्गवे ।
शनावाद्यन्त-षष्ठं च वर्ज्या□प्रहरा बुधैः ॥[73]

रातिक अ□प्रहरा–

रवौ रसाब्धी हिमगौ हयाब्धी
द्वयं महीजे विधुजे शरागौ ।
गुरौ शराष्टौ[74] **भृगुजे तृतीयं**
शनौ रसाद्यंतमिति क्षपायाम् ॥[75]

एहि अ□प्रहराकेँ निम्नलिखित सारणीसँ स्पष्टतः बुझल जा सकैछ–

		दिन		राति
रवि	–	**4,5**	–	**4,6**
सोम	–	**7,2**	–	**4,7**
मंगल	–	**6,2**	–	**2**
बुध	–	**5,3**	–	**5,7**
गुरु	–	**7,8**	–	**5,8**
शुक्र	–	**3,4**	–	**3**
शनि	–	**1,6,8**	–	**1,6,8**

एहि अ□प्रहराक समयमे लोक कोनो प्रकारक शुभ कार्य नहि करैत अछि ।

मानव जीवन पर प्रभाव–

मानव जीवनमे ज्योतिषक अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान अछि । दैनन्दिन व्यवहारक अत्यन्त उपयोगी दिन तिथि सप्ताह, पक्ष, मास, अयन, □तु, वर्ष, पावनि–तिहारक ज्ञान इत्यादि एही शास्त्र द्वारा होइत छैक । चन्द्रग्रहण, सूर्यग्रहण इत्यादिक ज्ञानक सेहो माध्यम ज्योतिषे थिक ।

यदि मनुष्यकेँ उपर्युक्त तथ्य सभक ज्ञान नहि होइक तऽ धार्मिक उत्सव, सामाजिक त्योहार, महापुरुषक जन्मदिन इत्यादिक ने तऽ ठीक–ठीक समयक ज्ञान भए सकत आ ने समय पर पूजा–पाठसँ लए पितरक कृत्य धरि सम्पन्न भए सकत । पढ़ल लिखल लोकक तऽ गप्पे कोन जे मिथिला□चलक किंवा समस्त पृथ्वीक सामान्यो लोक

ज्यो०– **परन्तु मुहूर्त्तचिन्तामणि...**

खट्टर– **मुहूर्त्तचिन्तामणि नहि, धूर्त्तचिन्तामणि ।**

ज्यो०– **तखन ग्रह नक्षत्रक जे एतबा विचार कएल गेल अछि जे जाल थीक ?**

खट्टर– **जाल नहि, महाजाल । जाहिमे बड़का सँ बड़का महाजन फँसता । नक्षत्रक अढ़मे ज्योतिषी अपन नक्षत्र बनबैत छथि ।**

ज्योतिषी– **तखन भृगु पराशर आदि जे एतबा रासे लिखि गेलाह अछि जे सभटा फूसि थिक ?**

खट्टर– **यैह नाम बेचि कऽ तऽ अहाँ सभ हजारो वर्षसँ ई ठकविद्या चला रहल छी । जे अपना मनमे आबय श्लोक गढ़ि कऽ जोड़ि दिऔक और ठोकि दिऔन्ह पराशरक माथ पर । और हमहूँ भृगुसंहिता, पराशर होराशास्त्र देखने छी । तेहन-तेहन वचन ओहिमे भरल छैक जो यजमानकेँ जानि बूझि कऽ बूड़ि बनाओल गेल होइक ।**

ज्यो०– **अपने प्रमाण दऽ सकैत छी ?**

खट्टर– **एक नहि अनेको ।**[14]

तावत भाङ तैयार छल । खट्टर कका पूरा लोटा एकहि साँसमे पीबि गेलाह आ ओ एहि स्वरमे बाजय लगलाह–

चुचेचोला ओ गोलाध्यायमे लटकल धूर्त्तराज सभ केहन ढोंग रचने छथि !

उपपदे बुधकेतुभ्यां योगसंबंधके द्विज ।
स्थूलांगी गृहिणी तस्य जायते नात्र संशयः ॥

यजमानक पत्नी मोटाइलि होइथिन्ह सेहो ज्योतिषी कुण्डली देखि कऽ बुझि जाइत छथिन्ह । एतबे नहि, यजमानिनीक स्तन केहन छैन्ह सेहो पर्यन्त पतड़ासँ ज्ञान भए जाइत छैन्ह ।

कठिनोर्ध्वकुजाचार्ये श्रेष्ठस्थूलोत्तमस्तना ।

यजमानक टीपनि देखलासँ हुनका पता लागि जाइ छैन्ह जे यजमानक स्त्री अनकासँ फसल छथिन्ह ।

जामित्रे मन्दभौमस्थे तदीशे मंदभूमिजे ।
वेश्या वा जारिणी वापि तस्य भार्या न संशयः ॥

नेनाक टीपनि देखिकऽ ओ जानि जाइत छथिन्ह जे ओ बापक जनमल नहि थीक ।

भग्नपादर्क्षसंयोगाद् द्वितीया द्वादशी यदि ।
सप्तमी चार्कमंदारे जायते जारयो ध्रुवम् ॥

अछि तकरहु संकेत करबैत छथि । एतय प्रस्तुत अछि खट्टर कका आ ज्योतिषीजीक विवादक अंश जे बच्चाक जन्मपत्रीक प्रसंग कहल गेल अछि–

दीनानाथ– **औ ज्योतिषीजी, हमरा आङनमे ऐखन नेन्नाक जन्म भेलैन्ह अछि। तेँ अहाँक घर गेल छलहुँ । दौड़ले आबि रहल छी ।**

खट्टरकका विहुँसैत कहलथिन्ह– **तखन एहि खातिर आब तोरा अपस्याँत हैबाक कोन काज ? तोहर जे काज छलौह से पहिनहि सम्पन्न भऽ चुकलौह ।**

दीनानाथ– **केहन लग्न कर्म छैक से देखथिन्ह ।**

खट्टर– **हाय रे कर्म ! यैह बुि तऽ हमरालोकनिकेँ चौपट कऽ देलक । हौ, कर्म करत अपना बुिसँ । एहिमे मुसाइ झा की देखथिन्ह ?**[12]

एहि तरहेँ शंका ससमाधान होइत रहल । **मुसाइ झा समय पुछलथिन । पतरा देखलनि आ छिलमिला उठलाह । मुहसँ निकलनि- अरे बाप ! सुनितहि खट्टरकका पुछलथिन्ह- की ज्योतिषीजी ? की भेल ? विढ़नी तऽ ने काटि लेलक ?**

ज्योतिषीजी माथ पर हाथ दए बजलाह– **नहि महाराज ! बिढ़नी कटैत तऽ कोन बात छैक ! ई तऽ भारी अनर्थ भेलैक ।**

दीनानाथ थरथर कपैत पुछलथिन्ह- झटपट कहू, की ज्योतिषीजी !

ज्यो० – **कहू की कपार ? सर्वनास भऽ गेल । मूल नक्षत्रक प्रथम चरणमे जन्म भेलैक अछि - गंडयोगमे, से अहीँ पर जाकऽ बिसाएत ।**

दीनानाथ पुक्की पारि कानय लगलाह ।

ज्यो०– **एकर दुइयेटा उपाय छैक । या तऽ नेनाकेँ कतहु फेकि दी अथवा बारह वर्ष धरि ओकर मुह नहि देखी ।**

□ □ □

दीनानाथ– **किछु शान्तिक उपाय ?**

ज्यो०– **से सभ तऽ एखनसँ करहि पड़त ।**

दद्यात् घेनुं सुवर्ण च ग्रहांश्चापि प्रपूजयेत् । गोदान, स्वर्णदान, नवग्रह पूजा....।[13]

खट्टर कका चुपचाप सभटा सुनैत छलाह । आब हुनका नहि रहल गेलन्हि। ओ भङघोटनाकेँ पटकैत बाजि उठलाह— जे केओ ई सभ लिखने अछि से पाखण्डी थीक ।

एहि बातकेँ बुझैत अछि जे कोन मास आ नक्षत्रमे वर्षा होयतैक आ तदनुसार ओ बीज वपन करैत अछि, अन्यथा ओकर सभटा परिश्रम व्यर्थ भए जयतैक ।

मानव जीवनक पल–पल पर ज्योतिषक प्रभाव पड़ैत छैक । ज्योतिष शास्त्रक अन्य नाम ज्योतिःशास्त्र सेहो थिक, जकर अर्थ होइछ प्रकाश देबएबला अथवा प्रकाशक संबंधमे बुझबयबला । अर्थात् जाहि शास्त्रक माध्यमे संसारक मर्म, जीवन–मरणक रहस्य आ जीवनक सुख–दुःखक संबंधमे पूर्ण प्रकाश भेटए सैह थिक— ज्योतिषशास्त्र ।

जातकक जन्म समयमे जाहि–जाहि रश्मिवला ग्रहक प्रधानता होइत अछि, तेहने ओकर स्वभाव बनि जाइत छैक । निम्नांकित उक्तिकेँ देखल जाय–

एते ग्रहा बलिष्ठाः प्रसूतिकाले नृणां स्वमूर्तिसमयम् ।
ऊचुर्देहं नियतं बहवश्च समागता मिश्रम् ।।[76]

अर्थात् संसारक प्रत्येक वस्तु आन्दिदित अवस्थामे रहैत अछि आ सभ पर ग्रहक प्रभाव पड़ैत छैक ।

वर्णव्यवस्था जकर अन्तर्गत चारूटा वर्ण– ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आ शूद्र अबैत अछि एकरहु उत्पत्ति ग्रहक संबंधसँ होइत अछि । भारतीय ज्योतिर्विद् लोकनिक कथन छनि जे मनुष्य जाहि नक्षत्र–ग्रह वातावरणक तत्त्व प्रभाव विशेषमे उत्पन्न एवं पोषित होइत अछि, ओहिमे ओही तत्त्वक विशेषता रहैत छैक । ग्रहक स्थितिक विलक्षणताक क्रममे अन्य तत्त्वक न्यूनाधिक प्रभाव होइछ अछि । देशकृत ग्रहक संस्कार एहि गप्पक द्योतक थिक जे स्थानविशेषक वातावरणमे उत्पन्न एवं पुष्ट होमएबला प्राणी ओहि स्थान पर पड़यवला ग्रहरश्मिकेँ अपन खास विशेषताक कारण अन्य स्थान पर ओहि क्षण जन्म ग्रहण कयनिहार बच्चाक अपेक्षा भिन्न स्वभाव, भिन्न आकृति इत्यादि देखबामे अबैछ । ग्रह रश्मिक प्रभाव मात्र मानवे पर नहि, अपितु अन्य स्थलज एवं उद्भिज आदि पर सेहो अवश्य पड़ैत छैक । ज्योतिषशास्त्रमे मुहूर्तक अत्यधिक महत्त्व अछि । ओकर रहस्य एहन गम्भीर अछि जे गगनगामी ग्रह नक्षत्रक अमृत, विष तथा अन्य उभयगुण युक्त रश्मिक प्रभाव सतत समान नहि रहैत अछि । गतिक विलक्षणताक कारण कोनहुँ क्षणमे एहन नक्षत्र अथवा वातावरण रहैत अछि जे अपन गुण आ तत्त्वक विशेषताक कारण कोनो विशेष कार्यक सिि‌क हेतु उपयुक्त होइत अछि ।

ग्रहक अनिष्ट प्रभावकेँ दूर करबाक हेतु जे रत्न धारण करबाक परिपाटी ज्योतिषशास्त्र विहित अछि तकरा कोनो तरहेँ निरर्थक नहि कहल जा सकैत अछि । एकरो पछाँ वैज्ञानिक तर्क अछि । ई सर्वविदित अछि जे सौरमण्डलीय वातावरणक प्रभाव पाथरक रंग–रूप, आकार–प्रकार तथा पृथ्वी, जल, अग्नि तत्त्वमेसँ कोनहुँ तत्त्वक प्रधानता पर पड़ैत छैक । सब गुणयुक्त रश्मिक ग्रहसँ पुष्ट आ संचालित व्यक्तिकेँ यदि ओहने रश्मिक

वातवारणमे उत्पन्न रत्न धारण कराओल जाए तऽ ओ विशेष प्रभावकारी होइत छैक। प्रतिकूल प्रभावक मनुष्यकेँ विपरीत स्वभावोत्पन्न रत्न धारण करओने विपरीत फल दैत छैक। कहबाक तात्पर्य जे ग्रहक जाहि तत्त्वक प्रभावसँ जे ग्रह विशेष प्रभावित अछि, ओकर प्रयोग ओहि ग्रहक तत्त्वक अभावमे मनुष्य पर कएने विशेष लाभप्रद होइछ। उदाहरणार्थ क्षीणचन्द्रक समयमे जन्म लेनिहार बच्चा जकरामे चन्द्रमाक अमृत रश्मिक शक्ति उपलब्ध नहि होइत छैक, तकरा ज्योतिषी लोकनि मोती पहिरबाक हेतु कहैत छथि, जे विशेष लाभप्रद छैक। एहिसँ शारीरिक आ मानसिक दूनू तरहक विकास समुचित रूपसँ होइत अछि। ग्रह रश्मिक प्रभाव संसारक समस्त पदार्थ पर पड़ैत अछि, एहिमे कतहु संदेह नहि।

ग्रह ककरो सुख-दुःख नहि दैत छैक अपितु ओ भविष्यमे अएनिहार सुख-दुःखक सूचक थिक। पूर्वमे कहल गेल अछि जे ग्रहरश्मिक प्रभावक अनुसारहि मनुष्य पर कोनहुँ प्रकारक रत्नक प्रयोग होएबाक चाही। यथा अग्निक स्वभाव दहन करब अछि, किन्तु यदि चन्द्रकान्त मणि हाथमे लए लेल जाए तऽ ओ अग्नि दहन क्रिया करबामे सक्षम नहि होइछ। चन्द्रकान्त मणिक प्रभावसँ ओकर दाहक क्षमता क्षीण भए जाइत अछि। भारतीय दर्शन तँ अध्यात्म शास्त्रक आधार पर सि□ करैत अछि जे पूर्व जन्मार्जित संस्कारक आधारे पर मनुष्यकेँ जीवनमे सुख-दुःख, उन्नति-अवनति, जीवन-मरण, करुणा-व्यथा, दया-क्रोध इत्यादिक भोग करए पड़ैत छैक।

ज्योतिषशास्त्रक सभसँ पैघ उपयोग अछि जे मनुष्य अपन भावी दुःख-सुखक अनुमान समयसँ पूर्वहि कए लैत अछि जाहि आधार पर आगत दुःखकेँ सुखमे परिवर्तित करबाक प्रयास कए सकए।

भाग्य आ पुरुषार्थ दुनूमे अन्योन्याश्रय संबंध अछि। कतहु-कतहु पुरुषार्थ भाग्यकेँ पछाड़ि दैत छैक तऽ कतहु-कतहु पुरुषार्थ भाग्यसँ पराजित भए जाइत अछि। मनुष्यक विश्वास छैक जे पुरुषार्थवान व्यक्ति विधाताक लेखकेँ बदलि सकैत अछि, अपन भाग्यकेँ चमका सकैत अछि। एहि प्रसंग डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्रीक कथन समीचीन बुझि पड़ैत अछि-

मेरी तो दृढ़ धारणा है कि जहाँ पुरुषार्थ प्रबल होता है, वहाँ अदृष्ट को टाला जा सकता है अथवा न्यून रूपमें किया जा सकता है। कहीं-कहीं पुरुषार्थ अदृष्टको पुष्ट करने वाला भी होता है। लेकिन जहाँ अदृष्ट अत्यन्त प्रबल होता है और पुरुषार्थ न्यून रूपमे किया जाता है, वहाँ अदृष्ट की अपेक्षा पुरुषार्थ हीन पड़ जाने के कारण अदृष्ट जन्य फलाफल अवश्य भोगने पड़ते हैं।[77]

ग्रहक गतिक कारण ओकर विष आ अमृत रश्मिक सूचना भेटैत छैक।

ख०- कोना लागि जैतन्हि ? बाटमे कि कतहु खुट्टी गाड़ल छैक ?

ज्यो०- अहाँ तऽ नास्तिक जकाँ बजैत छी 'शनौ सोमे त्यजेत् पूर्वाम्...'

ख०- किएक त्यजेत् ? यदि सरिपोँ त्यजेत् तऽ ओहि दिन सकरी सँ निर्मलीबाली गाड़ी किएक चलेत ? मंगल दिन दरभंगासँ जयनगरक ट्रेन किएक फुजेत ?

ज्यो०- जे दिक्शूलमे चलैत अछि से अनुचित करैत अछि। दिग्बलमे चलक चाही।

ख०- अहाँक बात तऽ सोरहो आना मानि लितहुँ जौँ दिग्बलमे चलने कतहु रुपैयाक तमघैल बाटमे भेटि जाइत। परन्तु हम तऽ सभ दिन सभ दिस जाइत छी। ने दिक्शूल मे कहियो शूल गड़ल अछि, ने दिग्बलमे फूल झड़ल अछि।

ज्यो०- तखन अहाँ लेखे दिक्शूल किछु नहि ?

ख०- ओ केवल अहाँक दृक्शूल अर्थात् आँखिक दोष थिक।

ज्यो०- तखन अहाँ लेखे वारदोष किछु नहि ? जँ कनि□ाँ काल्हि यात्रा करतीह तऽ हुनका वार-दोष नहि लगतैन्ह ?

ख०- रोइयोँ भरि दोष नहि लगतैन्ह।

ज्यो०- जखन शास्त्रे उठा दी तखन कोनो बाते नहि।

ख०- सैह काल तऽ हमरा सभक काल भऽ गेल। आइ मासान्त, काल्हि संक्रान्ति, परसू भदवा। एकटा टाट बान्हक हो तऽ नौ दिन पतड़ा देखैत बैसल रहू। की संसारक आओर कोनो देश भदवा मानैत अछि ? भद्रा महारानीमे वास्तविक सामर्थ्य छैन्ह तऽ ओकरा सभकेँ किएक छोड़ैत छथिन ? पृथ्वी पर और -और जातिकेँ दिक्शूल किएक नहि लगैत छैक ? यूरोप अमेरिका बलाकेँ अधपहरा किएक ने धरैत छैक ? 'सभसँ बुड़िबक दीनानाथ' हमरे लोकनि छी ?[11]

ई तऽ भेल यात्राक प्रसंग। ज्योतिषीकेँ समाजमे पर्याप्त प्रतिष्ठा रहैत छैक किन्तु एतय देखलहुँ जे कोन तरहेँ खट्टर ककाक समक्ष ज्योतिषी परास्त सन बुझाइत छलाह। मुदा श्रोताकेँ रस भेटैत छैक संगहि ओहि रसमे ईहो बुझबा मे अबैत छैक जे यात्रामे कोन-कोन विचारणीय तथ्य थिक।

तहिना बच्चाक जन्मक समय लोक टिपैत अछि आ ज्योतिषी लग ओकर टीपनि बनयबा ले' दौड़ैत अछि। ओकर भविष्यक बात बुझबा ले' व्याकुल रहैत अछि। आब एतय देखल जाओ जे खट्टर कका कोन तरहेँ अपन कठविवादक माध्यमे श्रोताक मनोरंजन तऽ करितहि छथि संगहि जन्मकुण्डलीमे कोन-कोन दोष आ की सभ गुण रहैत

खo– **एहि मासमे तीसटा दिन हेतैन्ह। जहिया सुविधा हेतैन्ह आबि जैथिन्ह ।**[10]

उपर्युक्त कथोपकथनसँ स्पष्टत: प्रतीति होइत अछि जे खट्टर कका नास्तिक छथि आ धर्मशास्त्र ज्योतिषकेँ नहि मानैत छथि । मुदा से नहि । प्रो० झा ई विवाद नीरस विषयकेँ सरस आ सहज अथ च आकर्षक बनाय श्रोता तक पहुँचबैत छथि । आब अगिला विवाद पर ध्यान देलासँ स्पष्ट भए जाएत जे यात्रामे काल, मास, दिन, भदवा, दिक्शूल इत्यादि सभ पर विचार कएल जाइत अछि । द्रष्टव्य थिक–

ज्यो०– **परंच काल जे एखन पूव छथिन्ह ?**

खo– **औ मुसाइ झा ! हमरा जुनि ठकू । काल कि अहाँक चितकवरी घोड़ी छथि जे एखन पुबरिया हत्तामे चरय गेल छथि ? काल कोन-कोन ठाम नहि रहैत छथि से तऽ कहू ।**

ज्यो०– **अहाँ तऽ शास्त्र मानितहि नहि छी । एखन सूर्य दक्षिणायन छथि ।**

खo– **जाड़कालामे तऽ सूर्य दक्षिणायन रहबे करैत छथि । गर्मीमे अपने उत्तरायन भऽ जैताह । एहिमे हिनकर दुनू गोटाक कोन अपराध छैन्ह जे विदागरी रोकबा रहल छिऐन्ह ?**

ज्यो०– **हम की करियौन्ह ? एखन तीन मास दिन नहि बनैत छैन्ह ।**

खo– **से किएक ?**

ज्यो०– **देखू, पूसमे तऽ विदागरी हो नहि ।**

खo– **किएक नहि हो ?**

ज्ये०– **पूस प्रशस्त नहि ।**

खo– **पूस मास कोन दोष कैने अछि ?**

ज्यो०– **आब अहाँसँ के झगड़ा करौ ? माघ-फागुनमे सम्मुख काल पड़ि जाइत छथिन्ह । चैतमे चन्द्रमा वाम भऽ जैथिन्ह ।**

खo– **हिनकर विधाते वाम छथिन्ह जे अपन दिन अहाँक हाथमे देने छथि । नहि तऽ फागुन मास कतहु कालक विचार होइह ? चैतक चन्द्रमा कतहु वाम होथि ?**

ज्यो०– **तकरा उपरान्त भदवे पड़ि जाइत छैन्हि ।**

खo– **भारी भदवा तऽ छिऐन्ह अहाँ । हमरा कहथि तऽ कल्हुके दिन बना दिऐन्ह ।**

ज्यो०– **काल्हि तऽ दिक्शूले लागि जैतन्हि ।**

ज्योतिर्विदकेँ एहि सूचनाक सदुपयोग करैत ग्रहक फलाफलमे परिवर्तन करबाक प्रयास करबाक चाहियनि ।

ज्योतिषशास्त्रमे प्रधान ग्रह सूर्य आ चन्द्रकेँ मानल गेल अछि । सूर्यकेँ पुरुष आ चन्द्रकेँ स्त्री अर्थात् पुरुष आ प्रकृतिक रूपमे एहि दूनू ग्रहकेँ मानल गेल अछि । पाँच तत्त्वक रूपमे भौम, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनिकेँ मानल गेल अछि । एहि प्रकृति, पुरुष आ तत्त्वक संबंधसँ संपूर्ण ज्योतिषचक्र भ्रमण करैत अछि ।

यद्यपि चन्द्रमाकेँ आकारान्त रहबाक कारणे स्त्री रूपमे परिकल्पित करब हास्यास्पद बुझाइत अछि । वस्तुत: चन्द्रमा पुरुष थिकाह आ हिनक पत्नीक नाम रोहिणी थिकनि । यैह कारण थिक जे चौठचन्द्रमे चन्द्रमाक पूजा– ''रोहिणी सहित चतुर्थी चन्द्राय नम:'' कहिकेँ होइत अछि । एतबे नहि, चन्द्रमाकेँ पुरुष साबित करबाक हेतु हम एतए एकटा प्रसि□ श्लोककेँ उ□ृत करैत छी जाहिमे एकटा सखी रोहिणीसँ कहैत छथि– ''हे रोहिणि ! अहाँ रात्रिकर अर्थात् चन्द्रमाक भार्या थिकहुँ । अहाँक पति व्यभिचारी छथि तेँ अहाँ हुनका वर्जन करियनु । द्रव्टव्य थिक–

हे रोहिणि ! त्वमसि रात्रिकरस्य भार्या
एनं निवारय पतिं सखि दुर्विनीतम् ।
जालान्तरेण मम वासगृहं प्रविश्य
श्रोणीतटं स्पृशति किं कुलधर्म एष: ॥

मानव जीवनमे ज्योतिषशास्त्रक ततेक ने बेसी उपयोग छैक जे एकर बिना एक-एक डेग राखब कठिन भए जएतैक । एतए किछु उदाहरण प्रस्तुत अछि; यथा– जहाजक कप्तानकेँ ज्योतिषक बिना कोनो दोसर सहारा नहि । ओ लोकनि ज्योतिषे शास्त्रक माध्यमे समुद्रमे जहाजक स्थितिक पता लगबैत छथि । प्राचीन समयमे घड़ीक अभावमे, सूर्य, चन्द्र आदि नक्षत्रक पिंडकेँ देखिए कए समयक पता लगबैत छलाह । ज्योतिष ज्ञानक अभावमे लम्बा दूरीक समुद्री यात्रा करब सुरक्षित नहि । एही शास्त्रक माध्यमे विभिन्न देश आ रेगिस्तानमे सेहो रास्ता निकालल जा सकैछ तथा अक्षांश आ देशांतरक द्वारा ओहि स्थानक स्थिति आ दिशा आदिक निर्णय लेल जा सकैछ ।

कोनहुँ नव कार्यक अन्वेषण करबाक हेतु ज्योतिषक ज्ञान आवश्यक अछि । वैज्ञानिक लोकनि सेहो ज्योतिषीक मदति लए अपन अनुसंधान कार्यकेँ गति दैत छथिन । कोनो उच्चतम पहाड़क ऊँचाइ आ समुद्रक गहराइ तक ज्योतिष शास्त्रक द्वारा निरूपित कएल जाइत अछि । एतबा अवश्य जे ओहि हेतु रेखागणितक मदतिक प्रयोजन होइत अछि, जकरा ज्योतिषक अंग मानल गेल अछि । प्राचीन ज्योतिषी लोकनि रेखागणितक सि□ान्तक प्रतिपादन कएने छथि । भूगर्भसँ प्राप्त विभिन्न वस्तुक काल निर्धारण सेहो ज्योतिषशास्त्रक माध्यमे सरलतापूर्वक कएल जाइछ ।

सामान्यतया मनुष्य एहि शास्त्रक सम्यक् अध्ययनसँ अनेक प्रकारक रोगसँ बचि सकैत अछि कारण जे अधिकांश ब्याधि सूर्य आ चन्द्रमाक कुप्रभावसँ उत्पन्न होइत अछि; यथा- फाइलेरिया रोग चन्द्रमाक कुप्रभावक कारणहि एकादशी आ अमावास्याकेँ बढ़ैत छैक। ज्योतिषी लोकनिक कथन अछि जे जेना चन्द्रमाक प्रभावसँ समुद्रमे ज्वारभाटा उत्पन्न होइत छैक तहिना मनुष्यक रक्तक प्रवाह पर सेहो ओकर प्रभाव पड़ैत छैक जाहिसँ मनुष्य रोगी बनि जाइत अछि । अतः मनुष्यकेँ ओहि कुप्रभावकेँ दूर करबाक हेतु प्रतिकार कएलासँ लाभ होइत छैक । एहि शास्त्रक सभसँ पैघ महत्त्व अछि जे जेना अन्हार घरमे एकटा दीप जरने सम्पूर्ण घरकेँ आलोकित कए दैत छैक, तहिना एहि शास्त्रक माध्यमे आँखिक परोक्षक भविष्यक संकेत लोककेँ भेटि जाइत छैक ।

एहि भविष्यक गणनाक हेतु ज्योतिषी लोकनि ओहि क्षणक अत्यधिक महत्त्व दैत छथि जाहि मूल्यवान क्षणमे कोनो व्यक्ति जन्म ग्रहण करैत अछि । मनुष्य जाहि दिन जन्म ग्रहण करैत अछि ओ तिथि, दिन, नक्षत्र, योग, करण इत्यादिक प्रभाव तऽ मनुष्य पर पड़िते अछि संगहि सभसँ बेसी प्रभाव पड़ैत अछि ओहि समयमे गोचर ग्रह सभक जे ओहि जातकक लग्नसँ कतेक दूरीपर छथि, केहन संबंध रखैत छथि आ केहन दृष्टिसँ देखैत छथि । एहि हेतु ज्योतिर्विद् लोकनि प□चाङ्गक समयक अनुसार मानक ओ स्थानीय समयक अनुसार इष्टकाल ज्ञात करैत छथि आ एही आधार पर लग्न स्थिर कए गणना करैत छथि ।

इष्टकाल - बच्चाक जन्म जाहि समयमे होइत छैक ओहि समयकेँ सूर्योदयक समयसँ नापल जाइत अछि जे कतेक दण्ड आ पल व्यतीत भेल । जन्म समय तक जतेक दण्ड आ पल व्यतीत होइत अछि सैह थिक इष्टकाल । इष्टकाल बनएबाक हेतु कोन शहरमे बच्चाक जन्म भेल अछि तकरो महत्त्वपूर्ण स्थान छैक कारण जे सामान्यतः लोक घड़ीक समयसँ जन्मक समय अंकित करैत अछि जे सोनहाट देशान्तर पर बनाओल गेल अछि । तेँ स्थानीय समय बनएबाक हेतु ओहिमे देशान्तर आ वेलान्तर संस्कार कएल जाइत छैक । प्रत्येक प□चाङ्गमे मानकसँ स्थानीय समय बनएबाक हेतु देशान्तर आ वेलान्तर सारिणी देल गेल अछि जाहि आधार पर सुगमतापूर्वक स्थानीय समय बनि जाइत छैक । मानकसँ स्थानीय समय बनएबाक हेतु एहि बातकेँ ध्यान राखए पड़त जे मानक समय समस्त भारतवर्षमे एक होइत अछि । यदि नओ बजेक समाचार दिल्लीसँ प्रसारित होइत अछि तऽ भारतवर्षक कोन-कोन मे सभक घड़ीमे नओ बजैत छैक । किन्तु यदि गुवाहाटीमे 5:15 बजेमे सूर्योदय होइत अछि तऽ द्वारकामे 7:00 बजेक लगभगमे सूयोदय होयत । तहिना दुनू स्थानमे अस्तक समयमे ओही क्रममे अन्तर देखबामे अबैत अछि । एहिसँ स्पष्ट होइत अछि जे दू तरहक समय एक संग चलैत अछि- एकटा मानक जे सम्पूर्ण देशमे एक अछि आ दोसर स्थानीय जे स्थान-परिवर्तनसँ बदलैत अछि । ई मानक समय सभ देशक भिन्न-भिन्न छैक आ जेना-जेना पश्चिम जाएब सूयोदय आ सूर्यास्त विलम्बसँ होयत ।

अर्वाचीन कालक गद्य पर ज्योतिषक प्रभाव देखायब उपयुक्त बुझैत छी । मध्यकाल तऽ मुख्यतः नाटकक युग रहल आ पद्य तऽ सभ समयमे लिखले गेल अछि । हमरालोकनि मैथिली गद्य साहित्य पर दृष्टिपात करैत छी तऽ सामान्यहु गद्यकारक रचनामे ज्योतिष तत्त्वक प्रचुरता भेटैत अछि, मुदा हम किछु एहने साहित्यकारक कृतिक उदाहरण प्रस्तुत करए चाहैत छी जनिक कृतिक रसपान मैथिलिएक विद्वान् नहि अपितु समस्त भारतवर्षक विद्वान् लोकनि कयलनि आ आह्लादित भेलाह । एहि क्रममे हम नाम लैत छी मैथिलीक हास्य-व्यंग्य सम्राट प्रो० हरिमोहन झाक । प्रो० झा अपन 'खट्टर ककाक तरंग'मे परम्परावादिता, पाण्डित्य, ज्योतिष, न्याय, दर्शन, धर्मशास्त्र इत्यादिक गम्भीर तत्त्वक उद्घाटन करैत लक्षणा आ व्यंजनाक माध्यमे समाज पर जे चोट करैत छथि से लोकक मानस पटलकेँ उद्वेलित कए दैत अछि । हिनक काव्यमे ज्योतिष तत्त्वक प्रधानता तऽ अछिये अपितु ओ एकटा खट्टरकका सन पात्रक ओटमे हास्य-व्यंग्यक माध्यमे ज्योतिष तत्त्वक गम्भीरतासँ खेल-खेलमे लोककेँ परिचय कराए दैत छथि, ई भिन्न गप्प जे ज्योतिषक गुणग्राही बनि नहि तऽ ओकर छिद्रान्वेषीये बनि ।

खट्टरककाक तरंगक 'ज्योतिष' शीर्षक मे प्रो० झा एकटा ज्योतिषीकेँ परास्त करबा ले' खट्टरककाकेँ उतारि देने छथि आ खट्टर एक-एक गप्पकेँ चीरैत ओकर अर्थक अनर्थ लगबैत पाठकक मनोरंजन सेहो करैत छथि आ संगहि ज्योतिषक गम्भीरतासँ सेहो परिचय करबैत छथि । एकटा सामान्य यात्राक दिन तकबामे कोन-कोन वस्तुक विचार कयल जाइत अछि से पं. मुसाइ झा खट्टर ककाक वाद-विवादसँ स्पष्टरूपेण परिलक्षित भए जाएत । म्निलिखित अंश द्रष्टव्य थिक-

खट्टर कका पुछलथिन- **की औ मुसाइ झा की होइत छैक ?**

मुसाइ- **दिन ताकि रहल छी ।**

खट्टर कका- **एकर की अर्थ ? दिन तऽ एखन छैहे । चारू कात सूर्यक प्रकाश पसरल छैन्ह । से अहाँ केँ नहि सुझैत अछि की ?**

ज्यो०- **से नहि । हिनका आङन सँ एखन नैहर छथिन्ह । ओ कहिया औथिन्ह सैह..।**

ख०- **जहिया मन होयतैन्हि तहिया आबि जयथिन्ह । ओहि खातिर अहाँ किएक व्यग्र भए रहल छी ?**

ज्यो०- **परन्तु औथिन तऽ नीके दिन मे ?**

खट्टर- **हँ, जाहि दिन बदरी-विकाल नहि रहतैक ताहि दिन आबि जयथिन्ह । मेघाछन्नं हि दुर्दिनम् । से दुर्दिनमे तऽ एकोटा दिन नहि हैतैन्ह ।**

प्रतियामित्रे पाप-ग्रहादि दोषवर्जित चान्द केबल ताराकेँ अनुकूल-गुरु शुक्रकेँ केन्द्रे-सुत--हिबुकादि योगे समन्वित सर्व्वगुणसम्पूर्ण लग्न भउ ।[5]

ज्योतिषमे ग्रहक बहुत बेसी महत्त्व अछि । ग्रहक मानव जीवन पर पूर्ण प्रभाव पड़ैत अछि, नीक आ बेजाय दुनू । मिथिलामे परम्परा अछि जे कोनो शुभ कार्य होअए—उपनयन, विवाह, मुण्डन, कर्णवेध, नामकरण एतेक धरि जे सत्यनारायण पूजोमे नवग्रहकेँ प्रसन्न करबाक हेतु हुनक पूजा कयल जाइत अछि– **ओं साधिदैवत् सप्रत्यधि दैवत् विनायकादि प□चक सहित नवग्रहेम्यो नमः ।** कविशखेराचार्य सेहो अपन पोथी मे वर्णनक क्रममे नवग्रहक वर्णन कयने छथि । ईहो ओही नवग्रहक नामोल्लेख कयलनि अछि जकर चर्चा पूर्वक ज्योतिर्विद् लोकनि कयने छथि । हिनक नवग्रहक नाम थिक–

आदित्य-चन्द्र-मङ्गल-बुध-बृहस्पति-शुक्र-शनि-राहु-केतु एवं नवग्रह ।[6]

ज्योतिर्विद् लोकनिक मान्यता अछि जे चारू दिशा आ चारू कोण (ईशान, अग्नि, वायव्य, नै□त्य) मे आठटा दिग्गज (हाथी) अछि जे पृथ्वीक संतुलन बनओने अछि । अमरकोषमे कहल गेल अछि ओहि हाथीक नाम–

ऐरावतः पुण्डरीको वामनः कुमुदो□जनः ।
शुभ्रदन्तः सार्वभौमः सुप्रतीकश्च दिग्गजाः ॥[7]

कविशेखराचार्य सेहो उपर्युक्त हाथीक नाम एहिना कहैत छथि । हुनकहि शब्दमे द्रष्टव्य थिक–

यथाष्टदिग्गजवर्णना ॥ ऐरावत-पुण्डरीक-वामन-कुमुद
अंजन-सुप्रतीक-सार्वभौम-पुष्पदन्त- एवमष्टदिग्गजाङ्गणः ॥[8]

पुनः आठो दिशाक आठ गोट दिक्पाल स्वामी छथि एहन ज्योतिर्विद् लोकनिक मान्यता छनि । वर्णरत्नाकरमे सेहो आठो दिक्पालक वर्णन यथावत् अबैत अछि । अवलोकनीय थिक–

अथाष्टदिक्पाल वर्णना ॥ इन्द्र-अग्नि-यम नि□ति- वरुण-मरुत-कुबेर- ईशान एवमष्टदिक्पाल ॥[9]

उपर्युक्त उदाहरण सभक अवलोकन एहि तथ्यकेँ सि□ कए दैत अछि जे मैथिलीक आद्य उपलब्ध गद्य ग्रन्थहुमे कोन रूपेँ ज्योतिष तत्त्व भरल पड़ल अछि । एहिना सभ समयक गद्य साहित्यमे ज्योतिष तत्त्व पर्याप्त रूपसँ दृष्टि–गोचर होइत अछि किन्तु एक–एक कए सभ गद्यकारक कृतिसँ ज्योतिष तत्त्वक संचयन कए एतय उल्लेख करब ने सम्भव अछि आ ने संगते । यदि एहन कएल जाय तऽ मैथिली गद्यकाव्यमे मात्र ज्योतिष विषय पर एक स्वतन्त्र शोधप्रबंध तैयार भए जाएत । अतः हम प्राचीन कालसँ सोझे

पूर्वकालमे ज्योतिषी लोकनिकेँ स्थानीय आ मानक समयक विशेष विवेचना करबाक अवसर कम होइत छलनि कारण जे यातायात एतेक विकसित नहि छल । लोक दू, चारि, दस कोसक बच्चा मात्रक जन्मपत्री बनबैत छल, किन्तु आइ अमेरिका आ इंग्लैंडमे जन्म लेनिहार बच्चाक जन्मपत्री सेहो बनाओल जाइत अछि ।

मानक समयसँ स्थानीय समय ज्ञात करबाक हेतु प्रथमतः देशान्तर संस्कार करए पड़ैत छैक जे कोनहुँ प□चाङ्गमे + अथवा – मे रहैत अछि । मानक समय भारतवर्षमे $82^0 30''$ रेखांश (तुलांश) केर अछि । एहिसँ अधिक 1 अंश अन्तरमे चारि मिनटक हिसाबसँ मानक समयमे धन अथवा □ण संस्कार होइत अछि । एकर अतिरिक्त वेलान्तर सारिणी सेहो पंचांगमे रहैत अछि जे भारतमे प्रत्येक दिन □ण अथवा धनक रूपमे रहैत अछि, तकरहु संस्कार करब आवश्यक । एहि तरहेँ स्थनीय समय तैयार भए जाइत अछि ।

लग्न ज्ञात करबाक विधि– जन्मकुण्डलीमे लग्नक महत्त्व सभसँ बेसी अछि । यदि लग्नकेँ एक घर आगू वा पाछू कए दिऔक तऽ सभटा परिणाम उलटि जायत कारण जे ओतहि सँ सभ भावक गणना होइत अछि । लग्न ज्ञात करबाक हेतु सर्वप्रथम उपर्युक्त विधिसँ स्थानीय समय बनबए पड़ैत छैक कारण जे पंचांगमे स्थानीय समयक अनुसार सूर्योदय आ सूर्यास्त अंकित रहैत छैक । पुनः सूर्योदयसँ जन्म–समय धरिक अवधिकेँ प्रथमतः घण्टा–मिनटमे ज्ञात कए ओकरा 2.5 सँ गुणा कए दण्ड–पलमे मान ज्ञात कएल जाइत अछि । वैह थिक इष्टकाल आ जन्मपत्रीमे लिखल जाइत अछि श्री सूर्योदयाद्गतेष्टघट्यः ...। पुनः, पंचाङ्गसँ स्पष्टसूर्यक राशि अंश देखि लग्न सारणीसँ ओहि राशिक ओहि अंशक मानकेँ अंकित कएल जाइत अछि । पुनः इष्टकालमे ओहि मानकेँ जोड़ि लग्नसारिणीमे वैह मान ताकल जाइत अछि । अविकल वैह मान भेटव संभव नहि, तेँ ओहिसँ लगक मान देखि ऊपर अंकित अंश आ वाम भाग अंकित राशिकेँ अंकित कएल जाइत अछि । वाम भागमे जे राशि भेटैत अछि, वैह लग्न भेल आ ऊपर अंकित अंश तक लग्नक भोग भए चुकल रहैत अछि । सामान्यतया 24 घण्टामे बारहोटा लग्न बीति जाइत अछि आ तेँ स्थूलरूपेँ लग्नक एकटा अंश बितबामे चारि मिनटक समय लगैत छैक ।

भयात्–भभोग– 'भ'क अर्थ होइत अछि नक्षत्र आ 'यात'क अर्थ बीतब । अर्थात् जातकक जन्म–समय तक जन्मनक्षत्र कतेक बीतल । तहिना सम्पूर्ण नक्षत्रक मानकेँ भभोग कहल जाइत अछि । मभोगक मान अधिकतम 67 तक होइत अछि ।

यदि इष्टकालसँ जन्मनक्षत्रक घटीपल कम रहए तऽ जन्मनक्षत्र गत आ आगामी नक्षत्र जन्मनक्षत्र कहबैत अछि । यदि नक्षत्रक घटीपल इष्टकालक घटीपलसँ अधिक होअए तऽ जन्मनक्षत्रक पूर्वक नक्षत्र गत आ वर्तमान नक्षत्र जन्मनक्षत्र कहबैत अछि । गत नक्षत्रक घटी पलकेँ 60 सँ घटाकए जे शेष आबए तकरा दू स्थान पर रखबाक चाही–एक स्थानपर इष्टकाल जोड़ि देने भयात् आ दोसर स्थान पर जन्मनक्षत्र जोड़ि देने भभोग

होइत अछि ।[78] पूर्वमे कहि चुकल छी जे भभोगक मान 67 घटी तक रहैत अछि आ ओहिसँ अधिक भेने ओहिमे 60 सँ भाग देल जाइत अछि । भयात् सर्वदा भभोगसँ कम होयत ।

महादशा : महादशा अष्टोत्तरीय आ विंशोत्तरीय होइत अछि । अष्टोत्तरीयमे मनुष्यक आयु 108 वर्ष मानल गेल अछि आ विंशोत्तरीयमे 120 वर्ष ।

मिथिला□चलमे विंशोत्तरीय महादशाक आधार पर गणना कएल जाइत अछि । ई जन्मनक्षत्रक आधार पर ज्ञात कएल जाइत अछि । एहि हेतु नवोटा ग्रह— आ चं कु रा जी श बु के शु केँ क्रमशः कृत्तिका नक्षत्रसँ क्रममे लिखि जन्मसमयक महादशाक ज्ञान कराओल जाइत अछि । एतय जन्मनक्षत्र द्वारा विंशोत्तरीय महादशा बोधक चक्र प्रस्तुत अछि–

जन्मनक्षत्र द्वारा विंशोत्तरीय दशाबोधक चक्र

सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	ग्रह
6	10	7	18	16	19	17	7	20	दशावर्ष
कृ.	रो.	मृ.	आ.	पुन.	पुष्य	आ.	म.	पु.फा.	
उ.फा.	ह.	चि.	श्वा	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	
उ.षा.	श्र.	ध.	श.	पू.भा.	उ.भा.	रे.	अ.	भ.	

उपर्युक्त सारिणीक आधार पर केओ व्यक्ति अपन जन्मनक्षत्रक आधार पर जन्मकालिक महादशा ज्ञात कए लेताह । पुनः भयात् भभोगकेँ पलमे आनि भयात्केँ दशावर्षसँ गुणा कए पलात्मक भभोगसँ भाग दए महादशाक भुक्त वर्ष–मास–दिन निकालि लेल जाइत अछि आ ओहि भुक्त समयकेँ दशावर्षसँ घटाय भोग्य ज्ञात करबाक थिक ।

प्रत्येक महादशाक अन्तर्गत ओकर अंतर्दशा ज्ञात कएल जाइत अछि जाहि हेतु सूत्र अछि–

दशा दशाहता कार्या दशभिर्भागमाहरेत् ॥

अर्थात् कोनो महादशाक अन्तर्दशा निकालबाक हेतु दशावर्षकेँ दशावर्षसँ गुणा कए, दससँ भाग दए अंतर्दशाक वर्ष–मास–दिन निकलैत अछि । उदाहरणार्थ चन्द्र महादशाक दशावर्ष अछि 10 वर्षक । पुनः सूत्रानुसार अर्थात् चन्द्रमाक महादशामे चन्द्रमाक अन्तर्दशा 0 वर्ष 10 महिना 0 दिन रहत । एहि तरहेँ सभटा अन्तर्दशा निकालल जाइत अछि । पुनः अन्तर्दशामे प्रत्यन्तर्दशा आ ओहिमे सूक्ष्मादशाक गणना सेहो होइत अछि ।

'चन्द्रग्रहण' इत्यादि, एतदतिरिक्त–बृहस्पतिक शेष, छीक । चन्द्रग्रहण (उपन्यास) नीलमक ओंठी (कथा) प्रभृति । एहि शोध ग्रन्थमे समस्त गद्य साहित्यकेँ समेटब ने संभवे अछि आ ने उपयुक्ते । अतः एतय हम उपयोगिता तथा एकर कलेवरकेँ ध्यानमे रखैत सभ कालखंडक किछु पोथीसँ उदाहरण प्रस्तुत करय चाहैत छी ।

सर्वप्रथम वर्णरत्नाकर पर दृष्टिनिक्षेप करए चाहैत छी जाहिमे वर्णनक विशदता छैक[2] । एहिमे ज्योतिष तत्त्वक जे समावेश अछि ताहिसँ कविशेखराचार्यक ज्योतिष ज्ञानक संकेत भैटेत अछि संगहि ओहि समयमे ज्योतिषक कतेक विकास भेल छल सेहो बुझबामे अबैत अछि ।

ज्योतिष शास्त्रमे नवग्रहक विशेष महत्त्व अछि । ज्योतिषी लोकनि बच्चाक जन्म समयक अनुसार लग्न निकालि ओकरा विहित राशिमे स्थापित करैत छथि आ पुनः पंचांग देखि सभ ग्रहकेँ उपयुक्त स्थान पर रखैत छथि । लग्नक अनुसारेँ ग्रह सभ अनुकूल तथा प्रतिकूल भावमे रहैत अछि । प्रतिकूल ग्रहक शान्तिक हेतु लोक जप करबैत अछि अथवा ग्रहक प्रसन्नार्थ पाथर धारण करैत अछि, जे रत्न अथवा उपरत्न कहबैत अछि । एतय कविशेखराचार्य वर्णरत्नाकरक चतुर्थ कल्लोलमे जाहि रत्न सभक वर्णन कयलनि अछि से पूर्णरूपेण ज्योतिष तत्त्व थिक आ लोक सि□हस्त ज्योतिषीसँ परामर्श लए एकरा धारण करैत अछि, यद्यपि ज्योतिरीश्वर एतय रत्न सभक वर्णन आभरणक रूपमे करैत छथि । वस्तुतः रत्नसँ यदि चिकित्सा होइत अछि तऽ ओ सौन्दर्यबोधक तत्त्व सेहो थिक । हिनका द्वारा वर्णित रत्न सभक नाम अवलोकनीय थिक–

गोमेद, गरुडोद्गार, मरकत, मुकुता, मांसखण्ड, पद्मराग, हीर, रेणुज, मारासेस, सौगन्धिक, चन्द्रकान्त, सूर्यकान्त, प्रवाल, राजावर्त्त, कषाय, इन्द्रनील, अष्टदश जाति रत्न, तेँ संयुक्त अलंकार देषु ।[3]

वर्णरत्नाकरमे ज्योतिष ग्रन्थक संग प्रसि□ ज्योतिर्विदक नामोल्लेख सेहो कयल गेल अछि । द्रव्यष्ट थिक–

मानस-खण्डखाद्य-भास्वती-तिथिचक्र-सोमशेखर-विद्याधरी-विलास प्रभृति अनेक करणग्रन्थक व्युत्पन्न । राजमार्त्तण्ड-हलायुध-वराहमिहिर-श्रीपतिसंहिता-नन्दसंहिता-देवलसंहिता-चन्द्रसंहिता- ये अनेक फलग्रंथ व्युत्पन्न ।[4]

एतबे नहि कविशेखराचार्य ज्योतिषमे प्रयुक्त होमएवला तिथि, नक्षत्र, योग, राशि, दण्ड, पल, कला, विकला आदिक चर्चा कए अपन ज्योतिष विषयक पाण्डित्यकेँ प्रदर्शित कयने छथि । हुनकहि शब्दमे देखल जाय–

पन्द्रह तिथि-सत्ताइस नक्षत्र-सत्ताइस योग-सात वारगन- बारह राशि- एकैस अनुगति- आठ पहर-बत्तीस घटी-बारह मूहुर्त-दण्ड-पल-कला-विकला-तेँ गुणना□ो

द्वितीय अध्याय

मैथिली गद्य-साहित्यमे ज्योतिष

गद्य साहित्यक रीढ़ थिक । पद्यक अपेक्षा गद्य लिखब कठिन छैक । गम्भीर गद्य लिखबाक हेतु शास्त्रक गम्भीर अध्ययन, अभिव्यक्तिक सामर्थ्य, विलक्षण भाषा शैली, प्रभावोत्पादक प्रस्तुतीकरण आदिक आवश्यकता होइत छैक । पद्यमे छन्दक झंकार आ अलंकारक चमत्कार बिनु गम्भीरो अर्थक आकर्षणक केन्द्र भए सकैछ किन्तु गद्यमे एहन बात नहि । ओहीमे असली आ नकलीक जाँच होइत छैक । कोन वस्तुतः रत्न थिक आ कोन नकली पाथर । तेँ कहल गेल छैक– 'गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति' ।

मैथिली साहित्यमे प्रौढ़ गद्यकारक अभाव नहि । सामान्यतया जतय कोनो अन्य साहित्यक प्रारम्भ पद्यकाव्यसँ भेल ओतय मैथिली साहित्यक प्रारम्भ प्रौढ़ गद्य ग्रन्थ 'वर्णरत्नाकर'सँ स्पष्टतः परिलक्षित होइत अछि । ओहिसँ पूर्वक डाक घाघ वचन आ किछु सि□ साहित्य अछि । मिथिला□चलमे जे गद्यकार लोकनि भेलाह से संस्कृतक प्रकाण्ड विद्वान् रहथि आ तेँ हुनका लोकनिक काव्यमे ज्योतिष तत्त्वक प्रधानता रहनि । वर्णरत्नाकरसँ लए आधुनिक कालक गद्यकाव्यमे ज्योतिष तत्त्व भेटैत अछि । एतय लोककेँ ज्योतिषमे ततेक ने विश्वास छैक जे दैनन्दिन कार्यमे, सामन्यो खेती–गृहस्थीमे, यात्रामे, केस–मोकदमामे, अक्षरारम्भमे, एतेक धरि जे आब तऽ लोक दर्दसँ कुहरैत रहैत अछि आ ज्योतिषीसँ शल्य चिकित्साक मुहूर्त्त गुनबैत अछि आ तखन शल्य चिकित्सकसँ समयक निर्धारण करैत अछि ।

मैथिलीक अत्यन्त प्रतिष्ठित प्राचीन आ प्रौढ़तम ग्रंथ कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वरक 'वर्णरत्नाकर'मे जकर प्रौढ़ताकेँ देखि स्पष्टतः प्रतीत होइत अछि जे एहिसँ पूर्व अनेक ग्रन्थ कतोक घरक कोठी तरमे पड़ल सड़ि गेल होयत, अनेक प्रकारक वर्णनक विशदता छैक जाहिमे ज्योतिष तत्त्वक सेहो प्रचुरता अछि । मैथिली साहित्यमे गद्यकाव्यक अभाव नहि । कमोवेश अधिकांश लेखकक रचनामे ज्योतिष तत्त्व भेटत किन्तु कतहु कतहु तऽ देखैत छी जे ज्योतिषे पर सम्पूर्ण रचना केन्द्रित भए जाइत अछि; यथा प्रो० हरिमोहन झाक 'ज्योतिष'[1]

एहि तरहेँ हमसभ देखैत छी जे ज्योतिषी लोकनि साकांछ भए जातकक जन्मसमयक अनुसार ओकर लग्नकुण्डली बनबैत छथि आ तदनुसार ग्रहक शुभाशुभत्वकेँ देखि, बलाबलकेँ परेखि, शत्रु–मित्रक विचार करैत, दृष्टि पर ध्यान दैत; उच्च–नीच परखैत, अंश पर विमर्श करैत, युतिसंबंधकेँ देखैत, क्रूरता–सौम्यताकेँ बुझैत, शुभाशुभत्व फलक संकेत दैत छथि । अशुभक आशंकाक भान होइतहि ओकर अशुभत्वकेँ समाप्त करबाक हेतु अनेक प्रकारक रत्नक उपचार, मन्त्रक उपचार, पूजापाठ, यज्ञ–अनुष्ठान, दान–पुण्य, वस्त्रोपचार इत्यादिसँ अशुभत्वकेँ नष्ट करैत छथि । एहि तरहेँ हम सभ देखैत छी जे ज्योतिषशास्त्र मानव जीवनपर प्रचुर प्रभाव देखबैत अछि ।

संदर्भ :

1. ई० पू० 500 सँ 500 ई० धरि।
2. ई० 1001ई0 सँ 1600 धरि ।
3. प्रश्न वैष्णव : पं० श्री उमाकान्तझा; प्राक्कथन ।
4. तत्रैव, पृ० 3
5. भारतीय ज्योतिष : डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री, पृ०–42
6. तत्रैव, पृ० 21–22
7. हण्टर इण्डियन गजेटियर–इण्डिया; पृ०–218
8. भातरीय ज्योतिष : डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री, पृ० 21–22
9. हण्टर इण्यिन गजेटियर–इण्यि; पृ०–218
10. ज्योषित रत्नाकर, प्रथम भाग, भूमिका ।
11. □क्सं, 1,164,11
12. क्या भारतीय ज्योतिष ग्रीससे आया है : साप्ताहिक संसार, 5 जुलाई 1945
13. Maxmullar : Objections Vol XIII, Lecture IV, PP. 126-127
14. भारतीय ज्योतिष : डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री; पृ० 23
15. Maxmullar ; Objections, P-30
16. भारतीय ज्योतिष : डा० नेमिचन्द्र शास्त्री, पृ. 24
17. Origion or Researches in to Antiquity of Vedas, pp.1-9,17-38
18. वेदाङ्ग ज्योतिष की भूमिका : डॉ० श्याम शास्त्री, पृ.1–26
19. अलवरूनीज इण्डिया, जिल्द–1, पृ० 174–177
20. इण्डिया इन दी मुगल इम्पायर, पृ० 360–366
21. ट्रावेल्स इन दी मुगल इम्पायर, पृ०– 329
22. टरवीनियर्स ट्रेवल इन इण्डिया, पृ० 433

23. इनसाइक्लोपीडिया ऑफ ब्रिटेनिका, जिल्द-17, पृ० 626
24. Theogony of the Hindus, P-37
25. टॉड : राजस्थान, भूमिका, पृ० 5-11
26. Lectures on India, p -100-111
27. Theogony of Hindus, p-37
28. Ancient and Mediaeval India, Vol -1,p-114.
29. भारतीय सम्यता और उसका विश्वव्यापी प्रभाव, पृ० 117
30. Lctures on India, Page 109-111
31. Mills India , Vol -II P. 151
32. Ancient and Mediaeval India, Vol-1, P. -374
33. भारतीय ज्योतिष : डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री
34. प□चसि□ान्त की भूमिका, P LIII- LV
35. भारतीय ज्योतिष-डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री, पृ० 42
36. वृहदारण्यक उपनिषद्, 6-2-8
37. □ग्वेद, 1-164-48
38. तैत्तिरीय संहिता, 1-4-14
39. तत्रैव, 4-4-11
40. शतपथ ब्रह्मण, 2-1-3
41. तैत्तिरीय संहिता, 7-5-23
42. □ग्वेद संहिता; 7-7-5
43. अथर्ववेद संहिता, 19-7
44. तैत्तिरीय ब्राह्मण; 1-5-2
45. ऐतरेय ब्राह्मण, 18-22
46. अथर्व ज्योतिष, 103-108
47. भारतीय ज्योतिष, डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री, पृ० 89
48. तत्रैव ।
49. भारतीय ज्योतिष, नेमिचन्द्र शास्त्री, पृ० 90-91
50. उद्योतन; कुवलय माला; पृ० 19
51. भारतीय ज्योतिष; डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री; पृ०116
52. अमरकोष्ठा
53. तत्रैव ।
54. ज्योतिष शिशुबोध
55. मुहूर्तचिन्तामणि; श्लोक 2
56. तत्रैव, श्लोक 3
57. तत्रैव, श्लोक 4
58. तत्रैव, श्लोक 5
59. तत्रैव, श्लोक 6
60. तत्रैव, श्लोक 7
61. तत्रैव, श्लोक 8
62. तत्रैव, श्लोक 9
63. भारतीय ज्योतिष; डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री; पृ० 121
64. तत्रैव
65. तत्रैव
66. तत्रैव
67. मुहूर्त्तचिन्तामणि पृ०-15
68. भारतीय ज्योतिष : डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री पृ० 122-123
69. तत्रैव, पृ. 23
70. तत्रैव ।
71. तत्रैव, पृ० 127
72. विश्वविद्यालय पंचांग 77-78 एवं-मिथिला मिहिर ।
73. ज्योतिष शिशुबोध
74. शराष्टौक बदला कतहु-कतहु रसाष्टौ छपल छैक जे भ्रम उत्पन्न करैछ ।
75. तत्रैव
76. भारतीय ज्योतिष : डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री, पृ० 35
77. तत्रैव, पृ० 37
78. जन्मपत्री रचना; डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली; पृ० 87

l

लोक एहिमे विश्वास करैत अछि । यात्रा समय शुभ आ अशुभक विचार करैत छथि । एहि रामायणमे सेहो एकर प्रभाव देखबामे अबैत अछि । रावणकेँ, मन्दोदरीकेँ सतत अशुभ आ अपशकुन होइत छलनि जकर एहि रामायणमे वर्णन अछि । सीताकेँ, रामकेँ शुभ संकेत भेटैत छलनि । एतय परशुरामक आगमनक समयमे शुभाशुभक वर्णन द्रष्टव्य थिक–

मिथिलापुरसँ योजन तीन ।
पहुँचलाह उत्साह नवीन ।।
कयल वशिष्ठक नृपति प्रणाम ।
घोर निमित्त देखि तहि ठाम ।।
असकुन गुनि मन चिन्ता आब ।
कहु गुरु शान्ति अनिष्ट प्रभाव ।।
अछि किछु भयक योग तत्काल ।
अचिरहि हो सुख हे महिपाल ।।
हरिण अनेक प्रदक्षिण जाय ।
एहिसँ संकट विकट मेटाय ।।
एहि विचारमे उठल वसात ।
सहित मूल तरु रहल न पात ।।
धूरा उड़ ककरहु नहि सूझ ।
उत्पातक गति के जन बूझ ।।[3]

एहि तरहेँ कतोक स्थल उक्त रामायणमे उल्लेखनीय अछि किन्तु विस्तारक भयसँ हम संक्षेपहिमे आगाँ बढ़य चाहैत छी ।

संस्कृत साहित्यक महाकाव्यक परम्पराक अनुसार कविशेखर बदरीनाथ झा 'एकावली–परिणय' महाकाव्यक रचना कयलनि जाहिमे अनेक स्थल पर ज्योतिष तत्त्व भेटत । एहि महाकाव्यमे प्रभावकारी ढंगसँ ज्योतिषक सार तत्त्वकेँ मातृभाषाक माध्यमे जन–जन तक पहुँचाओल गेल अछि जे अत्यन्त स्वाभाविक अछि । पुत्रक अभावमे की सभ होइत अछि से हिनकहि शब्दमे द्रष्टव्य थिक–

पूजा न देव, पितरो न पानि,
नहि अतिथि अपुत्रक अन्न, जानि ।
स्वीकार करथि, नहि होय स्वर्ग ।।
उत्साह-रहित रह प्रजा-वर्ग ।।[4]

ज्योतिषीकेँ लोक त्रिकालदर्शी कहैत छैक । देवता तँ त्रिकालदर्शी छथिये । राजा तुर्वसु इन्द्र सन त्रिकालदर्शी लग पहुँचि हुनकासँ कोन तरहक निवदेन करैत छथि आ इन्द्र कोना भविष्यक गप्प कहैत छथि से देखल जाय–

औ एहन हँसी मसखरी तँ आब सारो-बहनोइमे नहि होइत छैक ।

हम कहलियैन्ह (लेखक) – **खट्टर कका ज्योतिषमे एहनो-एहनो बात सभ हेतैक से हमरा नहि अंदाज छल ।**

खट्टर कका बजलाह– **तोँ ज्योतिष पढ़लह कहिया ? वृहज्जातक, पराशर आदि देखह तखन पता लगतौह ।**

आब मुसाइ झाकेँ नहि रहि भेलैन्ह । बजलाह- ई सभ फूसि थिक तकर प्रमाण ?

खट्टर कका शास्त्रार्थक मुद्रामे उत्तर देलथिन्ह- प्रमाण स्वयं हमहीँ । हमरा टीपनिमे राजयोग लिखैत अछि ।

वाहनेशस्तथा माने मानेशो वाहने स्थितः ।
लग्नधर्माधिपाभ्यां तु दुष्टः चेदिह राज्यभाक् ।।

परन्तु राज भेटबाक कोन कथा जे टाट लेबक हेतु एकटा राज पर्यन्त नहि भेटैत अछि ।

मुसाइ झा पुछलथिन्ह– **तखन अहाँकेँ टीपनिमे विश्वास नहि अछि !**

खट्टर कका कहलथिन– **मड़ुओ भरि नहि । अहाँ जे लाल मोसि लऽ कऽ लंझारचक्र बनबै छी से सरासर जाली दस्तावेज थिक ! चाहे राजयोग लिखियौक वा जार योग, दुनू फर्जी थिक !**

ज्योतिषीजी पुछलथिन्ह– **से कोना ?**

खट्टरकका कहलथिन्ह– **राजयोगक असत्यता त प्रत्यक्षे देखा देलहुँ । आ व्यभिचार पतरा देखिकऽ नहि होइत छैक । और ओहिसँ जे गर्भ होइत छैक सेहो कोनो लग्नक हिसाब जोड़ि कऽ पेटसँ नहि बहराइत छैक । तखन ज्योतिषी अनकर कोन कथा जे अपनो सन्तानक जारयोग नहि पकड़ि सकैत छथि ।**

मुसाइ झा एहि चोटसँ तलमला उठलाह । बजलाह- ज्योतिषक सभटा वचन सत्य और प्रामाणिक थिक । शास्त्रकार लोकनि स्पष्टवादी छलाह ।

खट्टर– **तखन अहाँकेँ अपन जन्मकुण्डलीक फल पर पूर्ण विश्वास अछि ?**

ज्यो०– **अवश्य ।**

खट्टर– **वेश, तऽ अपन जन्मकुण्डली कनेक हमरा देखऽ दियऽ ।**

ज्योतिषीजी किछु धखाइत अपन जन्मकुण्डली वस्तासँ बाहर कऽ खट्टर ककाक हाथमे देलथिन्ह । खट्टर कका कुण्डली देखिकऽ कहलथिन्ह- की औ ज्योतिषी । हम फल कहू ? अहाँ पड़ाएब तऽ नहि ?

ज्यो०- **पड़ाएब किऐक ?**

खट्टर- **वेश त सुनू । पराशर होराशास्त्रक वचन छैक-**

भौमांशकगते शुक्रे भौमक्षेत्रगतेपि च ।
भौमयुक्ते च दृष्टे च भगचुम्बनभाग् भवेत् ॥

ई वचन छैक कि नहि ? आब अपन शुक्रक स्थान देखू । ई योग अहाँमे लगैत अछि कि नहि ? आब यदि अहाँ कही तऽ हम भाषा-टीका कय सभकेँ अर्थ बुझा दिऐक ।

ई सुनैत मुसाइ झा अपन पोथी पत्रा समेटि विदा भऽ गेलाह ।[16]

कतेक रोचक ढंगसँ प्रो० हरिमोहन झा ज्योतिषक गूढ़ रहस्य सभक उद्घाटन कयने छथि जे निर्विवाद रूपेँ सामान्य सँ सामान्य पाठक मनोरंजन करैत ओहि गूढ़ तत्त्वसभसँ अवगत होइत अछि । जे कहियो ज्योतिष ग्रंथक रूपमे डाक वचनेटा बुझैत छलाह से एहि ग्रन्थकेँ पढ़ि ज्योतिषक अनेक सुप्रसि□ ग्रंथ- मानसागरी, शिशुबोध, वृहत् पराशर होराशास्त्र, ताजिक नीलकंठी, मुहूर्त्त चिन्तामणि इत्यादिक मर्मकेँ बुझए लगैत छथि ।

ई तऽ छल हिनक ज्योतिष शीर्षकक अन्तर्गत ज्योतिष तत्त्व । मुदा प्रो० झाक निबन्ध, कथा ओ उपन्यासमे यत्र-तत्र-सर्वत्र ज्योतिष तत्त्वक सुगंध भेटत । एही खट्टरककाक तरंगक 'चन्द्रग्रहण'पर दृष्टिपात कएल जाय । एतहु प्रो० झाक संग खट्टर ककाक वार्ताक किछु अंश देखि ज्योतिष तत्त्वक मर्मकेँ बुझि सकैत छी । अवलोकनीय थिक-

खट्टर- **देखह एखन धरि पंचांगमे स्त्रीगणक केश बन्हबाक मुहूर्त्त छपि रहल अछि ।**

हम- **खट्टरकका, हमरा विश्वास नहि होइ अछि ।**

खट्टरकका सीरम तरसँ 'मिथिलादेशीय पंचांगम्' बहार कैलन्हि । बजलाह- तखन देखि लैह । प्रारम्भहिमे स्त्रीणां केशबंधनमुहूर्त्तः । अश्विनी, आर्द्रा, पुष्य, पुनर्वसु, नक्षत्रेषु । हम पुछैत छियहु जे भरणी, कृतिका, रोहिणी, मृगशिरा नक्षत्रेषु किऐक नहि ? यदि कोनो स्त्री रोहिणी नक्षत्रमे खोपा बान्हि लेतीह तऽ एहिमे पंडितक की बिगड़ि जैतन्हि ? जखन ओ अपन टीक पतड़ा देखि कऽ नहि बन्है छथि तऽ स्त्रीगण किऐक पतड़ा देखि कऽ अपन केश बन्हतीह ?

हम- **खट्टर कका, हमरा नहि जानल छल जे इहो सभ बात पतड़ामे लिखल रहैत छैक ।**

खट्टरकका बजलाह- **पण्डित लोकनि और लिखताहे की ? चूल्हि कहिया गाड़ल जाय, नववधू कोन दिन भानसमे जाथि, प्रसूती कोन तिथिमे नह कटाबथि, कोन**

चतुर्थ अध्याय

मैथिली महाकाव्यमे ज्योतिष

मैथिली महाकाव्यक मध्य सभसँ बेसी चर्चित अछि कवीश्वरक मिथिलाभाषा रामायण । ई अपन विभिन्न छन्द, नानाविध लोकोक्ति, विलक्षण अभिव्यंजना आ कोमल कमनीयताक कारणेँ प्रसि□ अछि । चन्दा झा संस्कृतक पंडित छलाह तेँ हिनक रामायणमे विलक्षण रूपेँ ज्योतिषक प्रभाव देखबामे अबैत अछि । श्री रामजन्मक अवसर पर पक्ष, तिथि, नक्षत्रक संगहि ग्रहस्थ उच्चस्थ आ दिनकरक मेष राशिमे रहबाक सेहो स्पष्ट चित्रण कयलनि अछि । हुनकहि शब्दमे निम्नलिखित पंक्तिक अवलोकन अप्रासंगिक नहि होयत-

शुक्ल पक्ष नवमी शुभ कर्क उदित हित ।
मध्य दिवस नक्षत्र पुनर्वसु अभिजित ॥
प□चग्रह उच्चस्थ मेषमे दिनकर ।
सृष्टि त्रिगुण उपपत्ति शक्ति कर जनिकर ॥[1]

मनुष्यकेँ जन्मसँ मृत्यु पर्यन्त अनेक संस्कार होइत छैक जकर विधान ज्योतिष शास्त्रमे अछि आ जोतखीयेक अनुसार लोककेँ चलए पड़ैत छैक । एतय राम, लक्ष्मण, चारू भाइक कोन तरहेँ नामकरण संस्कार होइत अछि से देखल जाय-

रमित होए मुनि-मन जहि ठाम ।
तनिकर नाम धएल मुनि राम ॥
कारक भरण भरत तेँ नाम ।
लक्षण युत लक्ष्मण गुण-धाम ॥
करता गय शत्रुक संहार ।
नाम धयल शत्रुघ्न उदार ॥
रामक सह लक्ष्मण रह सतत ।
शत्रुघ्नो भरतक संग निरत ॥[2]

मिथिलाभाषा रामायणमे ठाम-ठाम शकुन-अपशकुनक वर्णन अछि । मिथिला□चलक

विद्यापतिक संस्कृत ग्रन्थमे तऽ विशेषकए ज्योतिष तत्त्व भेटैत अछि । एतय विक्रम संवतक प्रधानता देखल जाय–

भाद्रशुक्ल चतुर्दश्यां शुक्रवारान्वितायां एवं मास-पक्षतिथिक्रमानुक्रमेणाभिलिख्यमाने यत्रांकेनापि संवत्

ल० स० 299 भाद्र शुदि 14 शुक्रे... ।[14]

पुनश्च–

अमुक ग्रामे ल० स० 299 चैत्र वदि 14 गुरौ अमुक ग्रामे...।[15]

एतदतिरिक्त विद्यापतिये एहन कवि छलाह जे शृंगार, भक्तिक अतिरिक्त जन्मसँ मृत्यु पर्यन्त सभ संस्कारक गीत लिखने छलाह जे मिथिला□चलक ललना लोकनि अत्यन्त श्र□ापूर्वक गबैत छथि । ई संस्कारक गीत सभ ज्योतिष शास्त्रक अनुरूपहि रचल गेल अछि; यथा मुण्डनक गीत, उपनयनक गीत, परिछनक गीत, विवाहक गीत, महुअकक गीत, गोसाओनिक गीत, चतुर्थीक गीत प्रभृति ।

एहि तरहेँ विद्यापति आ हुनक परम्पराक कविगणक गीत सभमे ज्योतिषक समावेश देखबामे अबैत अछि जे हुनका लोकनिकेँ ज्योतिर्विद्यामे पटु सि□ करबाक हेतु पर्याप्त अछि ।

संदर्भ :

1. A Golden Book of Tagore: R. M. Panikar
2. विद्यापति पदावली; बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् भाग–1, पृ० 8
3. तत्रैव, पृ० 19
4. तत्रैव, पृ० 36
5. तत्रैव, पृ० 47
6. वर्षकृत्य (प्रथमभाग): रामचन्द्र झा, पृ०–55
7. विद्यापति पदावली: बिहार रा० भा० प०, प्रथम भाग, पृ०104
8. तत्रैव, पृ० 198
9. वि० प०; भाग– 2 पृ० 109
10. तत्रैव, पृ० 137
11. तत्रैव, पृ० 426, 427
12. प्राचीन गीत : पृ० 34
13. तत्रैव, पृ० 35
14. लिखनावली : विद्यापति; सं.डॉ० इन्द्रकान्त झा, पृ० 31
15. तत्रैव, पृ० 33

l

लग्नमे स्नान करथि, कोन समय लहठी पहिरथि, कखन स्तनपान कराबथि । और कोनो देशक कालेंडरमे एहन-एहन बात भेटतौह ?

हम– **खट्टर कका, ई सभ कि वास्तवमे लिखल छैक ? खट्टरकका पतड़ा हमरा हाथमे दैत बजलाह—तखन तोँ अपने आँखिसँ देखि लैह । केहन बड़का अच्छरमे देल छैक । चूल्हिका-स्थापनम् । नववध्वाः पाकारम्भः । प्रसूतीनां नखच्छेदनम् । सूती स्नानम् । स्त्रीणां लाक्षाभरणधारणम् । शिशोः स्तनपानम् । ... सभक मुहूर्त्त देल छैक । और अपना देशक बड़का बड़का पंडित एकर अनुमोदनकर्त्ता छथि । देखह, केहन केहन लब्धप्रतिष्ठ घौतपरीक्षोत्तीर्णक नाम एहि पर छपल छैन्ह ।**[17]

केहन ज्योतिष भरल अछि । शीर्षक किछु रहय मुदा पंडित, विद्वान् लोकनिकेँ डेग–डेग पर ज्योतिषक घटना भेटैत छनि । ज्योतिषक विना कोनो कार्य सम्भव नहि । मिथिलामे मूर्ख सँ विद्वान धरि, नरसँ नारी धरि– सभकेँ सभ ज्योतिष पर पूर्ण विश्वास करैत छथि, एकर अनुसरण करैत छथि । कतेक सूक्ष्म विचार कयल जाइत अछि से व्यंग्येक माध्यमे, खट्टर ककाक उक्तिसँ द्रष्टव्य थिक–

खट्टर– **हौ, एहि देशक पण्डित तेहन पुरखाह रहितथि तँ कनितहुँ किऐक ? परन्तु ई लोकनि तऽ 'स्त्रीणां अङ्गस्फुरणफलम्' मे अपन पण्डित्य खर्च करैत छथि । स्त्रीक जांघ फरकैन्ह त स्वामीक दुलार भेटतैन्ह, डाँड़क समीप फरकैन्ह तऽ नीचसँ प्रेम होइन्ह, नाभि फरकैन्ह त पतिक नाश होइन्ह, स्तन फरकैन्ह त विजय होइन्ह ।**

पंडित हिनका लोकनिक अंग-अंग जकड़ि लेने छथिन्ह । तेहन पंचांग बना कय ऊपरसँ धऽ देने छथिनह जे समाजकेँ अर्धांग मारि देने अछि ।[18]

उपर्युक्त वार्त्तालाप ज्योतिषक कतोक सूक्ष्म विचार पर दृक्पात कयलक अछि । हँ, वाद–विवाद तऽ नीके थिक । पक्ष–विपक्षमे भाषण भेनहि कोनो विषयक महत्त्व बढ़ैत छैक ।

आब अतिवृष्टि–अनावृष्टि पर चर्चा देखल जाय–

हम– **परन्तु पंचांगमे महत्वोक बात तऽ रहैत छैक । यथा वृष्टियोग, वर्षफल।**

खट्टरकका मुसकुराइत बजलाह– **तखन एही वर्षक फल देखह । एहि बेर 'पराभव' नाम सम्वत्सर लिखैत छथि, जकर फल–**

पीडिताश्च प्रजाः भयभीताः पराभव ।

अर्थात् प्रजा पीड़ित रहथि, सभ केओ भयभीत रहथि ।

हम– **तखन तऽ वर्ष फल बड्ड अधलाह छैक ।**

खट्टर- **थम्हह । वर्षेश बृहस्पति छथि, तिनकर फल-**

विप्रा यज्ञरता भवन्ति तपसा शस्यैः क्षितिर्व्यापिता
राजा मन्त्रियुतो गजैश्च महिषैर्देशः समृ□ालयः ।
रोगं घ्नन्ति सुवृष्टयः प्रतिदिनं क्रूरा विनश्यन्ति वै
चौरव्याघ्रभुजंगमाश्च बहुधा नश्यन्ति जीवेब्दपे ॥

भावार्थ ई जे अन्न-पानि गाय-महिषसँ देश समृ□शाली रहय, खूब वृष्टि होय, रोगचोर ओ हिंसक जन्तुक नाश हो, राजा-ब्राह्मण अपना कर्ममे संलग्न रहथि ।

हम- **तखन तऽ वर्षफल बड्ड बढ़ियाँ भेल । प्रजाकेँ कोनो बातक कष्ट नहि रहतैक ।**

खट्टर- **थम्हह । एहि बेर 'संवाहक' नामक सूर्य छथि । तिनकर फल-**

आदित्ये बहुशक्तिनाशनपरा लोका ज्वरव्याकुलाः ।
मेघानां जलहानिरेव महती शस्यस्य नाशो ध्रुवम् ॥

अर्थात् एहि वर्ष धनक नाश हैत, लोक ज्वरसँ पीड़ित रहत, मेघ नहि बरसत और अन्न नहि होएत ।

हम- **आहि रौ बाप ! ई तऽ सभटा अधलाहे भेल । रौदी ओ अकालसँ लोक तवाह भऽ जायत ।**

खट्टर- **थम्हह । एहि बेर 'संवर्तक' नाम मेघ छथि, तिनकर फल-**

संवर्त्तके महावृष्टिः शस्यवृ□करी शुभा ।
जलपूर्णा मही नित्यं जलदैर्वेष्टितं नभः ॥

अर्थात् एहि वर्ष अत्यन्त वृष्टि हैत, खूब अन्न उपजत, पृथ्वी जलमय भऽ जैतीह और आकाशमे सभ दिन मेघ लगले रहल ।

हम- **खट्टर कका, ई त ततेक रंगक बात लिखल छैक जे बु□ए नहि काज करैत अछि ।**

खट्टर- **यैह तऽ तारीफ छैक । ई जाल तेहन कौशलसँ बूनल छैक जे केओ पकड़िए नहि सकैत अछि । देशमे अतिवृष्टि भेल तँ 'संवर्त्तक' नाम मेघक फल थिक । अनावृष्टि भेल तँ 'संवाहक' नाम सूर्यक फल थिक । देशमे कतहु अतिवृष्टि कतहु अनावृष्टि भेल तँ 'हम दूनू तरहक फल लिखने छलहुँ' । हौ, हिनका लोकनि सँ पार पाएब कठिन ।**[19]

अतिवृष्टि-अनावृष्टि पर बहुत वाद-विवाद सुनलहुँ । आब किछु शास्त्रीय रहस्यपूर्ण गप्प पूजा-पाठक चर्चा पर विवाद द्रष्टव्य थिक-

माध्यमे पुरजनकेँ हकार सेहो देबाक व्यवस्था कयने छथि । द्रष्टव्य थिक-

अभिनव पल्लव बइसक देल ।
धवल कमल फुल पुरहर भेल ॥
करु मकरन्द मन्दाकिनि पानि ।
अरुण अशोग दीप दिहु आनि ॥
माइ हे आज दिवस पुनमन्त ।
करिअ चुमाओन राए वसन्त ॥
सपुन कलानिधि दधि भल भेल ।
भमि भमि भमर हकारइ देल ॥
केसु कुसुम सींदुर सम भास ।
केतकि धूलि विधुरलहु परवास ॥[11]

मिथिलाक परम्परानुसार विवाहसँ चतुर्थीक बीचमे महुअक होइत छैक । बड़ कनियाँ केँ संग बैसाय खीर वा चूड़ा-दही एक दोसराकेँ खोआएबाक परम्परा छैक । ई सभ प्रक्रिया कोहवर घरमे होइत छैक । विद्यापति शिव-पार्वतीकेँ कोन तरहेँ महुअक करबैत छथि से देखल जाय-

करय चलल महुअक हर हे कोबर घर,
माइ हे, खीर खाड़ नहि खाथि कि भाँग भकोसल,
सासु जे महुअक राखल से सेराओल,
माइ हे, सरहोजि मुह मघ ठार कि जोग जनाओल ।
सासु सरहोजि बैसलि घेरि छबि हेरि हेरि,
माइ हे, सुखसँ कर परिहास कि हरसँ बेरि बेरि ।[12]

चतुर्थीकेँ विवाहक अंग मानल जाइत अछि । विवाहक चारिम दिन चतुर्थी होइत छैक जाहिमे सिंदूरदान सेहो होइत छैक । ई मैथिल ब्राह्मणमे सेहो दू प्रकारक होइछ- छन्दोगमे चारिम दिन उदयोपरान्त आ वाजसनेयीमे पाँचम दिन उदयसँ पूर्व । एतय महादेवक चतुर्थीक वर्णन अवलोकनीय थिक-

आज चतुर्थी कर हर, भेल भिनसर,
माइ हे, विधिक सेज उठाय निपाबिय कोबर ।
पालो युवति बैसाओल, हर नहबाओल,
माइ हे वर कन्या समतूल कि कङ्कन फोलाओल ।
गौरिक फोलल पसाहनि, हर शूलपानि,
माइ हे, आँगुर धयल सुकुमारि चलल हर कोबर ।
धार भरल अछि सिंदुर, भरि कंगुर,
माइ हे, ब्रह्मा आगि पजारि शङ्कर घृत ढारल ।[13]

छथि, मधुपर्क रहैत अछि, पाणिग्रहण होइत अछि, उज्जर अरिपन पड़ैत छैक, गीत गाओल जाइत अछि, पुरहर राखल जाइत अछि, ओहि पर आम्रकलश राखल जाइत अछि । विद्यापतिक निम्नलिखित गीत कतेक सुन्दर वैवाहिक चित्र उपस्थापित कएलक अछि–

सुरभि निकु□ज वेदि भलि भेलि
जनमगेँठि दुहु मानस मेलि ।
कामदेव करु कनेआदान
विधि मधुपरक अधर मधुपान ॥
भल भेल राधे भेल निरबाह
पानिगहन विधि (भेल) विवाह ।
उजर ऐपन मुकुताहार
नयने निवेदल बन्दनेवार ॥
पीन पयोधर पुरहर भेल
करसँ झापन नव पल्लव देल ।[9]

पुनः कविकोकिल वसन्त □तुक विवाहक व्याजेँ कोन तरहेँ लौकिक विवाहक चित्रण कयलनि अछि से अवलोकनीय थिक–

लता तरुअर मण्डप दीअ
निरमल ससधर भिति धवलीय ।
पौंअनाल ऐपन भल भेल
रात परीहन पल्लव देल ॥
गावह माइ हे मङ्गल आए
वसन्त बिआह वने पाए जाए
मधुकर रमणी मङ्गल गाव
दुजवर कोकिल मन्त्र पढ़ाव ॥
करु मकरन्द हथोदक नीर
विधु वरियाती धीर समीर ।
कनए केआ सुति तोरन तूल
लावा विथरल बेलिक फूल ॥
केसु कुसुम करु सिंदुर दान
जौतुक पाओल मानिनि मान ।[10]

मिथिलामे कोनो शुभ कार्य– विवाह, उपनयन, मुण्डन, राज्याभिषेक इत्यादिक अवसर पर चुमाओनक प्रथा छैक जाहिमे पुरहर, दीप, अक्षत आदिक प्रयोजन होइत छैक । एतय कविकोकिल वसन्तकेँ राजाक रूपमे प्रतिष्ठित कए चुमाओन कराए रहल छथि जाहिमे चुमाओनक सभ उपादान प्रकृति सँ प्राप्त कए लैत छथि संगहि भ्रमरक झंकारक

हम– **परन्तु पंचांगमे कतेक बात एहनो तऽ छैक जे देखि कय आन देशक विद्वान चकित रहि जाथि ।**

खट्टरकका व्यंग्यपूर्वक बजलाह– **हँ; जेना पृथ्वी कोन समय सयन करैत छथि, कोन समय जागल रहैत छथि । अग्नि कोन दिन आकाशमे रहैत छथि, कोन दिन पाताल लोक । कोन साल दुर्गाजी हाथी पर चढ़ि कऽ अबैत छथि, कोन साल महफामे सवार भऽकऽ । शिवजी कहिया बसहा पर रहैत छथि, कहिया गौरीक संग विहार करैत छथि ।**

हम– **शिवजी कहिया विहार करैत छथि सेहो पतड़ा बला जानि जाइत छथिन्ह ?**

खट्टर– **केवल जानिए नहि जाइत छथिन्ह, ओहि समय पूजो करबैत छथिन्ह । देखह, श्रावण कृष्ण चतुर्दशीमे पंचांगकार लिखैत छथि– कामविद्यो हरः पूज्यः ।**

हम– **खट्टर कका अहाँ त तेहन तेहन बात देखा दैत छी जे हमरा किछु जवाबे नहि फुरैत अछि ।**

खट्टर– **जवाब की फुरतौह ? एहि देशक पंडित ज्योतिषी प्रणम्य देवता थिकाह । एकटा दूरवीन अविष्कार करताह से त हेतैन्ह नहि, घरमे बैसल बैसल 'सम्मुखे चार्थ लाभश्च वामे चन्द्रे धनक्षयः' करैत रहताह । एही द्वारे जहाँ रूस, अमेरिका चन्द्रलोक पर पहुँचबाक तैयारी कऽ रहल अछि, तहाँ हमरा लोकनि एखन धरि हाथमे केरा लए 'चतुर्थी चन्द्राय नमः' कय रहल छी ।**[20]

आब जाहि शीर्षक (चन्द्रग्रहण) सँ एतेक उ□ाहरण प्रस्तुत कयल गेल अछि ताहि पर सेहो दृष्टिपात कयल जाय । चन्द्रग्रहण आ सूर्यग्रहणक एकटा एहन फर्मूला ज्योतिषी लोकनिकेँ हाथ लगलनि जे ओ लोकनिक पूर्वहि घोषणा करैत छथि आ ठीक घोषणाक अनुरूप ग्रहण लगैत अछि । यैह लोककेँ विश्वास दियबैत छनि जे पंडितक सभटा बात एहिना अक्षरशः प्रतिफलित होयत । चन्द्रग्रहणक माध्यमे खट्टर कका चन्द्रग्रहण आ सूर्यग्रहण संबंधी कतोक रहस्यक उद्घाटन करैत छथि । एहि वार्त्तालापक आनन्द लैत ज्योतिष तत्त्वकेँ देखल जाय –

हम कहलियैन्ह– **खट्टर कका, ग्रहण स्नान नहि करबैक ?**

खट्टरकका बजलाह– **हौ, ई पूस मास ! पाला पड़ैत ! ताहिमे आधा राति कऽ हम नहाउ गऽ ? से कि हमरा कुकुर कटने अछि ?**

हम कहलियनि– **देखियौक त स्नानक हेतु केहन भेड़िया धसान मचल छैक ?**

खट्टरकका सिहरैत बजलाह– **हे नारायण ! ई सनसन बसात ! ई कनकन पानि ! कनेक छूबी त आङुर बर्फ बनि जाय ! ताहिमे ई सहस्रो नर-नारी भरि छाती पानिमे ठाढ़ छथि । कतेको बु□मान एकटंगा देने छथि । बच्चा सभ ठिठुरि रहल अछि । मर्द**

सभ सर्द भऽ रहल छथि । कोमलांगी सभ कठुआ रहल छथि । पुरबैयाक लहरा शीतल नूआ केँ चीरि कय युवतीक छाती छेदि रहल छैन्ह । वृ□ागण थर-थर काँपि रहल छथि। तथापि पुण्यक लोभे सभ केओ ठेलमठेला करैत आगाँ बढ़ल जा रहल छथि । हाय रे 'धर्म प्राण'देश !

हम कहलियेन्ह– **खट्टरकका, अहाँ नहिए नहएबैक ?**

खट्टर कका बजलाह– **हौ, चन्द्रमा पर पृथ्वीक छाया पड़ल छैन्ह । किछु कालमे अपनहि हटि जैतैन्हि । ताहि खतिर हम किएक पानिमे डूबू । सौंसे गामक संग हमहूँ बताह भऽ जाउ ?**

हम कहलियैन्ह– **खट्टरकका, ओम्हर बोच बाबूकेँ देखिऔन्ह । कोना मुँह झपने जप कऽ रहल छथि । हुनका एहि बेरि ग्रहण देखबाक नहि लिखैत छैन्ह । तेँ ऊपर नहि तकैत छथि ।**

खट्टर– **तकताह त की हेतैन्ह ?**

हम– **मृत्यु ।**

खट्टर– **मृत्यु त एक दिन हेबे करतैन्ह । ओ कि मुँह झँपने मानतैन्ह ?**

हम– **राशिक विचारेँ मृत्यु फल लिखैत छैन्ह ।**

खट्टर कका बजलाह– **हौ, हम त नेने सँ सभटा ग्रहण देखैत ऐलहुँ अछि । ओहि में कतेको मृत्युयोग पार कऽ चुकल हैब । कहियो 'ओं सों सोमाय नमः' नहि जपलहुँ । परन्तु राशिक फल कहाँ घटित भेल ? यदि सरिपहुँ एना होइतैह त अफगानिस्तान, बलूचिस्तान, तुर्किस्तान, इंगलिस्तान- सभ एखन धरि कब्रिस्तान बनि गेल रहैत । केवल आर्यावर्त्त मे बोच बाबू सन सन बु□निधान पृथ्वीक शोभा बढ़बैत रहितथि ।...परन्तु एहि देशक दिग्गज लोकनिकेँ के बुझाबौ ?**

हम– **खट्टर कका, तखन एतेक रासे जे ग्रहणक फल लिखल छैक से कपोल-कल्पिते छैक ?**

खट्टर– **तोँ अपने विचारि कऽ देखह । राशिक अनुसार तोरा काकी केँ एहि बेर की फल बहराइत छैन्ह ? स्त्रीनाश ! फल बनाबऽबला केँ एतबो ध्यान नहि रहलैन्ह जे ई फल स्त्री, बालक ओ ब्रह्मचारी मे कोना घटित हैतैन्ह ? हौ, बारह टा राशि मे आठ टाक फल जानि बूझि कऽ अनिष्टे राखल गेल छैक । कोनो मे व्यथा, कोनो मे चिन्ता, कोनो मे घात, कोनो मे माननाश ! से जौँ नहि रहितैक त लोक काबू मे कोना अबितैन्ह ? बूझऽ त ई ग्रहण चन्द्रमा कैँ नहि लगैत छैन्ह । हमरा सभ केँ लगैत अछि।**

हम– **से कोना ?**

सिंहप्रसेनमवमधीत् सिंहो जाम्बवता हतः ।
सुकुमारकमारोदीः तवह्येषः स्यमन्तकः ॥
दधिशंख तुषाराभं क्षीरोदार्णव संभवम् ।
नमामि शशिनं भक्त्या शंभोर्मुकुटभूषणम् ।।[6]

(एहि मन्त्रसँ चौठचन्द्रमे फल लए चन्द्रमाकेँ प्रणाम करी)

कहल जाइत अछि जे भाद्र शुक्ल चौठक चन्द्रमाकेँ कलंकी मानल जाइत छनि तेँ हुनक बिनु फलसँ दर्शन नहि करी । कविकोकिल सेहो चौठक चन्द्रमा पर प्रकाश देलनि अछि–

कोपे कुगुति सबे समदि पठाबथि
दूती कहि से गेली ।
तैं असित तिथि सामर परव ससि
तइसनि दशा मोरि भेली ॥
की हमे साँझक एकसरि तारा
भादव चौठिक चन्दा ।
अइसन कए पिआ जे मोर सुख मानल
मोपति जीवन मन्दा ।।[7]

ज्योतिर्विद् लोकनि एहि गप्पकेँ प्रमाणित कए चुकल छथि जे राहु चन्द्रमाकेँ ग्रास तखनहिँ करताह जखन ओ पूर्णताकेँ प्राप्त करैत छथि । तात्पर्य ई जे पड़ीवसँ चतुर्दशी धरिक चन्द्रकेँ राहु ग्रास नहि करताह, मात्र पूर्ण चन्द्रकेँ । एहि बातक प्रामाणिकता विद्यापतिक निम्नलिखित पंक्तिसँ स्पष्ट होइत अछि–

जल दए जलद जीव मोर राख
देल सहस अदस(2) हो लाष ॥
जषने क(ला) निधि निज तनु पाव
तहि षने राहु पिआसल आब ॥
ओहओ देअ तनु से कर पान
तैअओ सराहिअ न होअ मलान ॥
वैभव गेला रहत विवेक
तैसन पुरुष लाख मह एक ।।[8]

एहि तरहेँ विद्यापतिक गीतमे यत्र-तत्र सूर्य, चन्द्र, राहु, केतु, तिथि, नक्षत्रक चर्चा भेटैत अछि । मुदा कखनहुँकेँ तऽ कविकोकिल अपन पूर्ण ज्योतिष ज्ञानक परिचय पाठककेँ दए दैत छथि । विवाह कराएब ज्योतखीयेक कार्य थिक । विवाह प□तिक अनुसार ज्योतिर्विद् लोकनि वेदी बनबैत छथि, जन्मगाँठ बन्हैत छथि, कन्यादानकर्त्ता रहैत

चान्दन चन्द कुन्द ततु ताबए
ताबन मोतिम हार ।
सिरिसि कुसुम सेज ओछाओल
तहू न आवए नीन्द ॥
आकुल चिकुर चीर न समर
सुमर देव गोविन्द ॥[3]

ज्योतिर्विद् लोकनि एक मासमे दू पक्ष मानलनि– कृष्णपक्ष आ शुक्लपक्ष (15 दिन+15 दिन) एहि 15 दिनकेँ पड़ीव, द्वितीया... प□चदशी नाम देलनि । प□चदशी अमावास्या एवं पूर्णिमाकेँ कहल जाइत छैक । एतय विद्यापति नायिकाक अभिसारमे पूर्णिमा बाधक छैक से कहैत प□चदशीक प्रयोग कतेक सटीक कयलनि अछि से द्रष्टव्य थिक–

चन्दा दुरजन गमन विरोधक
उगल गगन भरि वैरि मोरा ॥
कुहु भरमे पथ पद आरोपल
आए तुलाएल प□चदशी ।
हरि अभिसार मार उदवेजक
कओने निवारक कुगत ससी ॥[4]

ज्योतिषी लोकनि एक वर्षमे 12 मास आ 1 मासमे 30 दिन बनओलनि । पुन: 1 दिनकेँ अहोरात्रि मानलनि जाहिमे आठ प्रहर होइत छैक । संगहि 1 अधोरात्रिमे 60 दण्ड आ एक दण्डमे 60 पलक परिकल्पना कयलनि । विद्यापतिक निम्नलिखित गीतमे दण्ड, दिवस, मास आ वर्षक उल्लेख अछि–

साजनि की कहब तोर गेआन
पानी पाए सीकर भेल कान्ह ॥
बहिर ओइआ नहि कहिअ समाद
होएतौ हे सुमुखि पेम परमाद ॥
ज□ाो तन्हिके जीवने तोह काज
गुरुजन परिजन परिहर लाज ॥
दण्ड दिवस दिवसहि हो मास
मास पाव ग□ो वर्षक पास ॥[5]

ज्योतिष शास्त्रक एकटा महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ थिक वर्षकृत्य जकर विद्यापतियो रचना कयने छथि । एहिमे सालोभरिक पूजा-पाठ, मन्त्र-तन्त्र, विविध विधान वर्णित अछि । किंवदन्ती छैक जे भादव मासक चौठी चानकेँ मन्त्रोच्चारणक संग केरा लएकेँ देखी । एहि हेतु वर्षकृत्यमे निम्नलिखित मन्त्र देल गेल अछि–

खट्टर– **प्रथम त ई जे ग्रहण होइतहि हमरा लोकनि केँ अशौच लागि जाइत अछि । जेना जन्माशौच, मरणाशौच, तहिना ग्रहणाशौच । एक पहर पहिनहि सँ भानस भात बंद ! तदुपरान्त सभटा घैल-पातिल बाहर फेंकू । तीन तीन बेर स्नान करू । जनउ बदलू । और जौँ अनिष्ट फल हो त शान्ति कराउ, जप करू, ब्राह्मण कैँ दान-दक्षिणा दिऔन्ह । हौ, ई सभटा बूझह त लेबक हेतु बनलैक अछि । एहि देश मे 'ग्रहण' क अर्थे होइत छैक लेनाइ ।**

हम कहलिऐन्ह– **खट्टर कका, ई त बेस कटगर कहल ।**

एतबहि मे डोम सभ हल्ला उठौलक– **ग्रहणदान ! ग्रहणदान !**

खट्टर कका बजलाह– **देखल, राहुक भाइ-बन्धु कोना अपन कर उगाहक हेतु छोड़ि रहल छथि । जखन रिशवत भेटि जैतैन्ह तखन सिफारिश कऽ कऽ चन्द्रमा कैँ छोड़बा देथिन्ह । ता चन्द्रमा राहुक दाँत पर पड़ल किकियाइत रहथु । तैँ देखैत छह ने ? कतेक रुपैया अठन्नी बरसि रहल अछि ? हाय रे हमरा सभक बु□ !**

हम– **खट्टर कका, तखन अहाँक की विचार जे ई सभटा व्यर्थ थीक ?**

खट्टर कका– **व्यर्थ त थीके । आइ सम्पूर्ण देश मे धमगज्जर मचैत हैत ।**

सिमरिया मे, दशाश्वमेध मे, त्रिवेणी संगम मे– लाखक लाख नरमुंडक समुद्र लहराइत हैत । ओहि मे कतेक बच्चा हेराएत, कतेक बूढ़ी पिचा कऽ मरतीह, कतेक युवती मर्दित होइतीह, तकर ठेकान नहि । और ई सभटा धर्मक नाम पर हैत । एहन धरमधकेल और कोनो देश मे भेटतौह ? जहाँ यूरोप-अमेरिका कैँ एको पाइ खर्च नहि हेतैक, तहाँ हमरा देश मे आइ करोड़ो रुपया भुरकुस भऽ जाइत । हमरा लोकनि केवल छाया क पाछाँ दौड़य जनैत छी । यदि एतबा टका ठोस पृथ्वी मे लगबितहुँ त आन देश सँ अन्न नहि माङ्य पड़ैत । परन्तु की कहै छह ? एहि देश मे त सभ बात विचित्रे छैक । पेट मे अन्न नहि रहौक, डाँड़ मे दम्म नहि रहौक, तथापि सभ केओ स्वर्ग जैबाक हेतु फाँड़ कसने ।

हम कहलिऐन्ह– **खट्टर कका, एहन धर्मान्धताक कारण कुंभस्नान मे कतेक गोटाक प्राण गेलैन्ह ।**

खट्टर– **हौ, मूर्खताक कुंभ भरि गेने एहिना होइत छैक ।**

हम– **खट्टर कका, एहि देश मे एतेक मूर्खता कोना पसरलैक ?**

खट्टर– **बेसी अगुताइ त ने छौह? तखन बैसि जाह । एहि देशक मूर्खताक प्रधान कारण थिकाह पंडित लोकनि ।**

हम– **खट्टर कका, अहाँ त आश्चर्ये बजैत छी । पंडित कतहु मूर्खताक कारण होथि ?**

खट्टर- **हम सत्ये कहैत छिऔह । पंडित लोकनि कें संयोगवश एकटा विद्या हाथ लागि गेलैन्ह- ग्रहणक ज्ञान । आइ-काल्हि तऽ विज्ञानक साधारणो विद्यार्थी गणित द्वारा एबता जानि जाइत अछि । परन्तु ताहि दिन ई वस्तु अलौकिक चमत्कार कऽ कऽ बुझना गेल । फलस्वरूप पंडित लोकनि ग्रहणक नाम पर ग्रहण करय लगलाह । सूर्य-चन्द्रमा सोना-चानी बनि गेलथिन्ह । ई विद्या बूझह त हुनका हेतु कामधेनु सि भऽ गेलैन्ह । दूनू हाथें दूहय लगलाह । लोक कें हुनका पर अखंड विश्वास जमि गेलैक । जखन आकाशक हाल ई पहिनहि बूझि जाइ छथि तखन पृथ्वीक हाल किऐक ने बुझताह ? पंडितो सभ तेहन सन क्रम बनौलन्हि जे 'हम सभटा भविष्य जनै छी । तों खर्च करह । हम गणना कय सभ बात कहि देबौह । बस, चन्द्रग्रहणक संग-संग पाणिग्रहणोक हाल कहय लागि गेलथिन्ह । साधारण जनता त मूर्ख छले । पंडित लोकनि और निपट्ट बना देलथिन्ह । सभ बात मे ग्रहक फेर लगा देलथिन्ह ।**

हम- **से किऐक, खट्टर कका ?**

खट्टर- **लेबक हेतु । सेहो केहन चमत्कार-पूर्वक ! चन्द्रमा ओ शुक्र क नाम पर उज्जर रंगक पदार्थ- जेना उज्जर चाउर, उज्जर वस्त्र, उज्जर बड़द, चानी, मोती, दही, कपूर । शनि केतु क नाम पर कारी रंगक पदार्थ - जेना कारी तिल, कारी उड़ीद, कारी कंबल, कारी छागर, कारी मणि । सूर्य ओ मंगल क नाम पर लाल वस्तु जेना- सोना, गहूम, मसुरी, गुड़, केसर, सोन, लाल वस्त्र, लाल गाय, लाल मणि । हौ, हमरा त ई सभ कविता जकाँ बूझि पड़ैत अछि ।**

हम- **परन्तु जजमान लोकनि कें त ई कविता बड्ड महग पड़ल हैतैन्ह ।**

खट्टर- **ताहि मे कोन संदेह ? ओना त केओ अपन मोने एक सितुआ घी नहि दितैन्ह । चन्द्रमाक नाम पर घृतक घैले समर्पण करय लगलैन्ह । देखह, घृत लेबक हेतु केहन सुन्दर श्लोक बनाओल छैक-**

घृतकुंभोपरि निहितं शंखं नवनीतपूरितं दद्यात् ।
नाड्यादिदोषशान्त्यै द्विजाय दोषाकरग्रहणे ।

अर्थात् चन्द्र ग्रहण मे घृतक घैल पर शंख मे माखन भरि कऽ ब्राह्मण कैं दान करय त नाड़ी शान्ति होइछ । पंडित लोकनि तेना कऽ यजमानक नाड़ी अपना मुट्ठी मे कैलन्हि जे यजमान भरि जन्म अनाड़ी बनल रहि गेलाह ।

हम- **खट्टर कका, ...**
.... कदा मोक्षः भविष्यति ॥[21]

हम- **खट्टर कका, चन्द्रमाक नाम लेले त चन्द्रग्रहण मन पड़ि गेल । आइ चूड़ामणि योग थिकैक ।**

स्थल पर संकलित भेल जे हुनक पदावलीक नामसँ विख्यात अछि । विद्यापति संस्कृत साहित्यक प्रकाण्ड विद्वान् छलाह जे हुनक विभिन्न कृतिक अवलोकनसँ स्पष्ट अछि । पूर्वहु चर्चा कए चुकल छी जे प्राचीन समयमे जे संस्कृतक विद्वान् रहैत छलाह हुनका ज्योतिष शास्त्रक परिष्कृत ज्ञान रहैत छलनि । विद्यापतियोक संग यैह गप्प छल आ तें हिनक आ हिनक परवर्ती कविक रचनामे ज्योतिष तत्त्व पर्याप्त भेटैत अछि ।

विद्यापति तथा हुनक अनुसरणकर्त्ता कविलोकनिक काव्यमे नवग्रहमेसँ तीनिटा ग्रह रवि, चन्द्र, राहुक प्रयोग यत्रतत्र भेटैत अछि । ई भिन्न गप्प जे कविकोकिल चन्द्रक प्रयोग नायिकाक मुखमण्डलक उपमानक रूपमे ओकर सौन्दर्य निखारबाक हेतु कयलनि अछि । किन्तु एतबा अवश्य जे ओ एहि तथ्यसँ पूर्णरूपेण अवगत छलाह जे राहु चन्द्रक ग्रास करैत छथि आ तें यदा-कदा राहुसँ चन्द्रकें डेरायल सन मानैत छथि । निम्नांकित पंक्तिक अवलोकन एहि तथ्यक पुष्टि करैत अछि-

अविरल नयन गलए जलधार
नव जलविंदु सहए के पार ॥
कुच दुहु उपर आननहि हेरू
चान्द राहु डरें चढ़ल सुमेरू ॥
कि कहब सुन्दरि ताहेरि कहिनी
कहिअ न पारिअ देखलि जहिनी ॥
अनल अनिल बम मलअज बीख
जे छल सीतल से भेल तीख ॥[2]

दिन, तिथि, मास, तु, वर्ष- ई सभटा ज्योतिष शास्त्रक विषय थिक । विद्यापतिक शृंगार वर्णनमे अधिकांशतः वसन्त वर्णन भेटत ओ चाहे तुराजक रूपमे कहथि, मधुयामिनी कहथि अथवा माधव । तुक चर्चा हुनक काव्यमे प्रचुर मात्रामे भेटत । मोती रत्न थिक जे प्रायः शीतलता प्रदान कयनिहार होइछ । नयिका लोकनि ओहू समयमे कामज्वरकें शान्त करबाक हेतु मोतीक हार धारण करैत छलीह । निम्नांकित पंक्तिक अवलोकन कयल जाय-

विरहिन जन मरन कारन तउ
वेकत भउ तुराज ॥
सुन्दरि अबहु तेजिअ रोस
तु वर कामिनि इ मधुयामिनि
अपद न दिअ दोस ॥
कमल चाहि कलेवर कोमल
वेदन सहए न पार ॥

तृतीय अध्याय

विद्यापति एवं हुनक परम्परागत काव्यमे ज्योतिष

मिथिला, मैथिल आ मैथिलीक नामक स्मरण करितहि विद्यापतिक अमूर्त्त रूप मानस पटल पर आबि जाइत अछि। वस्तुतः पद्यकाव्यक रीढ़ विद्यापतिये थिकाह। यद्यपि हिनकासँ पूर्वहु मैथिलीमे पद्यकाव्यक रचना भेल किन्तु कविकोकिलक रचना ततेक ने लोकप्रिय भेल जे अन्यान्य पूर्ववर्त्ती आ परवर्ती कविक रचना सभ दिनक तारा जकाँ विलीन भए गेल। हिनक प्रसि□ मात्र मिथिलेमे नहि अपितु समस्त भारतवर्षमे पसरल आ तेँ हिनका मिथिला□चलक छोट सीमामे नहि बन्हि राष्ट्रकविक कोटिमे तुलसी आ मीराक पंक्तिमे बैसाओल गेल–

After all Vidyapati, Kavir, Tulsidas, Meerabai and Nanak have become the poets not merely of Maithili, Hindi or Punjabi but of India.[1]

विद्यापति संस्कृत, अबहट्ठ तथा मैथिलीमे पर्याप्त रचना कयलनि जकर विवेचन करब हमर उद्देश्य नहि। हम एतय एतबहि धरि कहए चाहैत छी जे ई अन्य ग्रंथक अतिरिक्त वर्षकृत्यक रचना सेहो कयलनि जाहिमे सालभरिक पूजा–पाठ करबाक विधि आ मन्त्र रहैत अछि। ई सभ बात ज्योतिषेसँ संब□ अछि। मुदा हम खाली हुनक मैथिली काव्यमे ज्योतिष तत्त्व देखबए चाहैत छी। हिनक काव्यक एहन परम्परा चलल जे बूझब कठिन भए जाइत अछि जे विद्यापितक रचना थिक वा कोनो अन्य कविक। हिनक एकटा परम्परा चलि गेल जकर अन्तर्गत गोविन्ददास, विष्णुपुरी, नन्दीपति, उमापति प्रभृति अबैत छथि। हिनका लोकनिक रचना विद्यापतिक रचनाक समक्ष अत्यल्प अछि। अतः एतय हम विद्यापतिएक रचनामे ज्योतिष संबंधी शब्दावली, भाव, ग्रह, नक्षत्र, रत्न इत्यादिक विवेचन प्रस्तुत करए चाहैत छी जाहिमे हुनक परम्पराक किछु अन्यो कवि सम्मिलित भए सकैत छथि।

कविकोकिलक गीत तऽ छओ सय वर्ष धरि लोकक कंठमे रहल आ पुनः अनेक

खट्टर कका विहुँसैत बजलाह– **हँ। आइ कते गोटे यजमान क घर चूड़ा ढाहताह। गोटेक केँ मणिओ हाथ लागि जाइन्ह त आश्चर्य नहि। तखन चूड़ामणि योग मे कोन संदेह ? हौ, एहन एहन योग बनाबयबला चतुर–चूड़ामणि छलाह।**

हम– **खट्टर कका, आइ कतेक गोटा मंत्रो लेताह।**

खट्टर– **हँ गुरु कान मे एक बेर 'ह्रीं' कहि देथिन्ह और चेला सँ भरि जन्म हीङ चुअबैत रहथिन्ह। 'ह्री'क अर्थ छै लज्जा, परन्तु 'ह्रीं' कहबा काल हुनका कनेको लज्जा नहि होइ छैन्ह जे परतारि रहल छिऐक। हौ, चेला मुड़बाक एहन सुगम तरीका कोनो देशबला बहार कैने छथि ?**

हम– **खट्टर कका, हम त एतीकाल गप्पे मे बाझल रहि गेलहुँ। आब जाय दिय। कम सँ कम उग्रासो त नहा ली।**

खट्टर कका बजलाह– **हँ, हँ, अवश्य। एक डूब हमरो साँती लगौने अबहिऽ।**

हमरा उठैत देखि खट्टर कका पुनः मुसकुराइत बजलाह– चन्द्रमा क सर्वग्रास भेल छलैन्ह से त छुटलैन्ह। परन्तु एहि भारत भूमिक जे सर्वग्रास भेल छैन्ह ताहि सँ उ□ार होइन्ह तखन ने ! ई मूर्खतारूपी राहु कहिया हमरा लोकनिक पिंड छोड़ताह से के कहि सकैत अछि ? हम त ओही उग्रासक बाट ताकि रहल छी।

ई कहि खट्टर कका श्लोक पढ़य लगलाह–

भारतं चन्द्रवत् ग्रस्तं मौर्ख्यरूपेण राहुणा।
न जाने केन यत्नेन कदा मोक्षः भविष्यति॥

एहि तरहेँ हम सभ देखैत छी जे प्रो० हरिमोहन झाक 'ज्योतिष' आ 'चन्द्रग्रहण' शीर्षक ज्योतिषे तत्त्वक विवेचनसँ भरल पड़ल अछि। एतदतिरिक्त हिनक खट्टरककाक तरंगक अन्यान्यो रचनामे कमोवेश ज्योतिष तत्त्वक समावेश भेल अछि; यथा– शास्त्रक वचन, पंडितक गप्प, गीताक मर्म, मोक्षक विचार, धर्मक तत्त्व, पुराणक चासनी, वेदक भेद इत्यादिमे। किन्तु सभक उदाहरण देब एतय सम्भव नहि अछि।

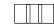
मैथिली गद्यकार एकटा हरिमोहने झा टा नहि छथि जनिका काव्यमे ज्योतिष तत्त्व भरल अछि, एहन एहन कतोक हरिमोहन छथि जे ज्योतिषक वर्णन कय मनमोहन बनि जाइत छथि। हमर उद्देश्य गद्यकाव्य मात्र तक सीमित नहि अछि तेँ अति विस्तारमे नहि गेल जा सकैछ। किछु उदाहरण दए प्रमाणित करए चाहैत छी जे कोन रूपेँ ज्योतिष मैथिली काव्यमे आत्मसात भेल अछि।

एहि क्रममे हम लब्धप्रतिष्ठ कथाकार ओ समालोचक प्रो० उमानाथ झाक कथा 'नीलमक औँठी' दिस अपनेक ध्यान आकृष्ट करए चाहैत छी। ज्योतिषमे थोड़बो रुचि

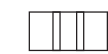
रखनिहारकेँ ई परिचय नहि देमए पड़त जे नीलम एक बहुमूल्य रत्न थिक जे शनिग्रहक प्रसन्नार्थ लोक धारण करैत अछि । चाहे साढ़ेसाती चलय अथवा शनिक कुपित दृष्टि पड़य, चाहे शनि प्रतिकूल भावमे बैसल होथि अथवा हुनक महादशा अन्तर्दशा चलैत हो, चाहे ओ सूर्यक उपस्थितिसँ दग्ध होइत होथि अथवा अंशक दृष्टिएँ शैशवा–मृतकावस्थामे होथि, चाहे वक्री भए राशि लग्न पर दृष्टि होनि अथवा नीच राशीस्थ होथि– ज्योतिषी अवश्ये कहताह जे 'नीलमक औंठी' धारण करू ।

ग्रह–नक्षत्र पर लोककेँ विश्वास कही वा अंधविश्वास, एकर आगाँ सभ अपनाकेँ असमर्थ–असहाय बुझैत अछि । हजार लाखमे गोटेके खट्टर कका सन भेटत । ओहो तावते धरि यावत काल धरि ग्रहक चपेटमे नहि आयल रहत । सभ ग्रहक प्रसन्नार्थ यथासाध्य लोक रत्न धारण करैत अछि । एतय प्रस्तुत अछि प्रो० उमानाथ झाक कथा **नीलमक औँठी**क किछु अंश जे ज्योतिष शास्त्रक अंश थिक । निम्नलिखित अंशक अवलोकन कयल जाय–

मन्नू बाबू दशमीमे कामरु लएकेँ वैद्यनाथधाम गेल रहथि । ओतए हुनका एकटा जोतखी कहलकनि जे अहाँकेँ शनि लागल अछि आ अगहनमे मारकेस अछि । अहाँ ग्रहक शान्ति करू आ नीलम जड़ल औँठी पहिरू । मुदा देखब नकली नीलम नहि किनब ।



तीन चारि मास ओ औँठी हमरा लग रहए । ओतबा दिन हमरा अपन धन्धामे घाटा लगैत गेल । हमरा एकटा संगी कहलन्हि जे औँठिएक दुआरे तोरा घाटा लगै छह । एकरा हटाबह, किएक तँ नीलम जकरा नहि धारैत छै ओकर जान सेहो लए लैत छै । एक दिन एकटा गहिकी नीलमक औँठीक खोज करैत अहीँ जकाँ हमरा ओहिठाम पहुँचल । ओकर बापकेँ कोनो असाध्य रोग भए गेल रहै आ जोतखी संगमे नीलम राखए कहने रहै । ओही गहिकीक हाथे हम पचास रुपैआमे औँठी बेचि देल ।



अन्तमे साढ़े चारि सए रुपैआमे सौदा पटल । सेठजी अपन तिजौरीसँ एकटा कन्तोर बहार कएलन्हि, आ कु□जी सहित कन्तोर मन्नू बाबूकेँ देलन्हि । मन्नू बाबू जतबा काल कन्तोर खोलने छलाह ततबा काल सेठजी तिजौरी बन्द करबाक लाथेँ हुनका दिस पीठ घुमओने रहलाह ।[22]

जतेक ग्रहक पाथर छैक सभक प्रभावक अनुभव लोक करैत अछि, किन्तु सभसँ जल्दी आ तीव्रतर प्रभाव 'नीलम'क होइत छैक । कहल जाइत छैक जे ई पाथर रंककेँ राजा आ राजाकेँ रंक बना दैत अछि । स्वर्गीय हरिवंश राय बच्चन सेहो अपन आत्मकथामे नीलमक महत्त्व पर प्रकाश देने छथि । मैथिलीमे अनेक निबन्धकार, जनिक आधार संस्कृत रहल छनि, अपन निबन्ध, कथा वा उपन्यासमे ज्योतिष तत्त्वकेँ समेटने छथि । एहिमे प्रमुख्य निबन्धकार छथि– कुमार गंगानन्द सिंह, म० म० मुरलीधर झा, प्रो० रमानाथ झा, का□चीनाथ झा 'किरण', सुरेन्द्र झा 'सुमन' प्रभृति । सभक काव्यसँ उ□रण प्रस्तुत करब एतय ने सम्भवे अछि आ ने उपयुक्ते । हम तऽ मात्र नमूनाक रूपमे किछु गद्यक उल्लेख करैत ई सि□ करबाक प्रयास कयलहुँ अछि जे कोन तरहेँ मैथिलीक गद्यकाव्यमे ज्योतिष तत्त्व समेटल अछि जकरा ध्यानपूर्वक यदि मन्थन कएल जाय तऽ ज्योतिषक अनेक रहस्यक उद्‌घाटन होयत ।

संदर्भ :

1. खट्टर ककाक तरंग : प्रो० हरिमोहिन झा, पृ० 51
2. तत्रैव, पृ० 102
3. वर्णरत्नाकर : ज्योतिरीश्वर, पृ० 21
4. तत्रैव, पृ० 23
5. तत्रैव,
6. तत्रैव, पृ०–58
7. अमरकोष :
8. वर्णरत्नाकर : ज्योतिरीश्वर, पृ० 59
9. तत्रैव, पृ० 60
10. खट्टर ककाक तरंग : प्रो० हरिमोहन झा, पृ० 51
11. तत्रैव, पृ० 51–53
12. तत्रैव, पृ० 53
13. तत्रैव, पृ० 53–54
14. तत्रैव, पृ० 54
15. तत्रैव, पृ० 54–55
16. तत्रैव, पृ० 55–57
17. तत्रैव, पृ० 105–106
18. तत्रैव, पृ० 105–107
19. तत्रैव, पृ० 107–108
20. तत्रैव
21. तत्रैव
22. किमधिकम्: प्रो० उमानाथ झा, पृ० 22–24

l

होअए लागल राजयात्रा हेतु आयोजन विपुल ।
अश्व, गज, सेना, सवारी, रथ, रथी सज्जित अतुल ॥
सदल बल राजा युधिष्ठिर हस्तिनापुर जाइ लै ।
स्वस्ति वाचन भेल, चलला पाँच पाण्डव संग भै ॥
पतित उल्का भेल नभमे, श्वान कटलक बाटकेँ ।
कारकौआ करै का का, उठल बिड़रो आगु मे ॥
सगुन बिगड़ल, भेल असगुन, किन्तु ककरा ज्ञान से ।
हाथ धऽ भावी कराबय होइछ पूर्व न भान से ॥[6]

मिथिलामे परम्परा अछि जे विवाहक स्थिरता कोनो प्रतिष्ठित व्यक्तिक मध्यस्थतामे कएल जाइत अछि संगहि जोतखीसँ शुभ दिन गुनबाओल जाइत अछि । एहि क्रममे ब्रजमोहन ठाकुरक 'सावित्री-चरित्र' खडकाव्यक अवलोकन कएल जाए-

नारद आज्ञा शिरोधार्य कए
कन्यादानक काज ।
वैवाहिक सामग्री सकलो
जोड़िआओल महराज ॥
ब्राह्मण, वृ□, पुरोहित, □त्विज,
कन्या संग प्रस्थान ।
शुभदिन देखि अश्वपति कएलनि
द्युमत्सेन शुभ स्थान ॥[7]

मनुष्यक जन्मसँ मृत्यु पर्यन्त अनेक संस्कार होइत अछि, जाहिमे उपनयन एकटा प्रमुख संस्कार थिक । ई ब्राह्मण, क्षत्रिय आ वैश्यमे विभिन्न आयु वर्गमे शुभ होइत अछि । लोक गणक सँ गुरुशु□ देखाए शुभ मुहूर्त देखबाए उपनयनकेँ स्थिर करैत छथि । पारखी-प्रसून खण्डकाव्यमे जनार्दन झा 'पारखी' उपनयनक हेतु शुभ समयक सूचना दैत छथि । हुनकहि शब्दमे देखल जाए-

चैत सुदी एकादशी तथा द्वादशी जान ।
रवि शशि वासर क्रमहिसँ जाग जनउ शुभमान ॥
नव पौत्रक संस्कार प्रति देलहुँ आज हकार ।
आबि सुजग सफला करी श्रीमन् महिमोदार ॥[8]

ज्योतिखी लोकनि अंग फरकबा पर विचार सेहो कएने छथि । सामान्य तथा पुरुषक वाम अंग फरकब आ स्त्रीक दहिन अंग फरकब अशुभ सूचक थिक । एहि क्रममे हम रमापति चौधरीक धृतराष्ट्र- विलापक चर्चा करए चाहैत छी जे अंग फरबाक परिणाम देखओलनि अछि-

हम छी अपुत्र तेँ लोभ भेल,
शिशु छल असहाय उठाए लेल ।
अपनेकेँ नाथ ! त्रिकाल सूझ,
के दोसर एहन विषय बूझ ॥
किछु ध्यान लीन भए तखन शक्र,
अवलोकि सकल वृत्तान्त-चक्र ।
आश्चर्य-चकित लोचन यथार्थ,
कहलन्हि गन्धर्व-निवारणार्थ ॥
सुनु चम्पक ! शिशुक रहस्य बात,
तुर्वसु नृप-विपति-तमी-प्रभात ।
करबाक हेतु ई सिरजि काल,
राखल वनमे श्रीपति कृपाल ॥
ओ जाए रहल छथि ततए भूप,
शिशु राखि आउ झट अहाँ चूप ।
नहि तँ जानू निश्चय अनर्थ,
साहसक कठिन फल-भोग व्यर्थ ॥
से सुनितहि उपजल हृदय-कम्प,
तेँ विकल बाल लए चलल चम्प !
राखल ओही थल त्वरित जाए,
भय योगहिँ लोलुपता पड़ाए ॥[5]

ज्योतिषमे शकुन अपशकुनक विचार अछि । कोनो शुभ कार्य वा यात्रामे शुकन भेने वा देखने शुभ फल तथा अपशकुन सँ अशुभ फल होइत छैक । एतय राजा तुर्वसु केँ पुत्र प्राप्तिसँ पूर्व अनेक प्रकारक शकुन होइत छनि । अवलोकनीय थिक-

भुज, जाँघ, नयन, पुनि-पुनि अवाम,
राजाक फड़कि कह सफल काम ।
बाटहिँ भेटल घट भरल वारि ।
पाकल फलसँ तरु नमल-डारि ॥
जागल दावानल दहिन भाग,
रिपु वंशहिँ जनि निज तेज लाग ।
अनुकूल वायु, खग-मृग-प्रचार ।
मग भेल सगुन सभ बारबार ॥[6]

पुनश्च-

पूर्ण-कलश दधि मीन द्विज,
गणिका निरखि नरेश ।

वनिता-सुत-अनुचर-सहित,
कएलन्हि भवन प्रवेश ॥[7]

ज्योतिषी लोकनि बच्चाक जन्मक पश्चात् यजमानकेँ नवग्रहक पूजा करबैत छथि, एहि हेतु हुनका कर्मदक्षिणा, भूयसी भेटैत छनि, नाना प्रकारक पूजा–पाठ होइत अछि, अनेक तरहक टोना–टापर सेहो दाइ–माइ लोकनि करैत छथि आ एगारहम दिन नामकरणक विधान अछि जाहिमे बच्चाक जिह्वा पर ओकर नक्षत्रक चरणक अनुसार नाम लिखल जाइत छैक (दूबि लए मधुसँ) । एहि सभक वर्णन कविशेखरजी अत्यन्त कुशलतापूर्वक कयने छथि ।

द्रष्टव्य थिक–

कर्म कुशल यजमान पाबि, सामग्री विपुल तुरन्त ।
पुरहित देल कराए भूपकेँ, पूर्णाहुति पर्यन्त ॥[8]

लए सोड़ह उपचार नवग्रह, विष्णु-महेश गणेश ।
पूजल मन्त्र उचारि भक्तिसँ, मङ्गलकाम नरेश ॥

हरि निदेश गुनि दहिन कानमे, नृप सुनाए अभिराम ।
शिशुक जीहमे मधुसँ लिखलन्हि, 'एकवीर' ई नाम ॥

कर्म-दक्षिणा देल भूयसी, ऐश्वर्यक अनुसार ।
विप्रवृन्दकेँ षटरस भोजन, भेटल अति सत्कार ॥[9]

दुस्सह-दीठि-दोष हरबा लए, माता देव मनाए ।
राइ जमाइनि देल बघनहा, हैंठा सुत पहिराए ॥[10]

कर्णवेध सेहो एकटा संस्कार थिकैक । कविशेखरजी एकवीरक कर्णवेधक वर्णन करैत ई स्पष्टत: बुझाए दैत छथि जे ई तेसर वर्षमे उपयुक्त होइत छैक । चूड़ाकरणमे की सभ होइत छैक ताहि प्रसंग हिनक कथन अछि जे एहिमे कुलगुरु जूटिका बन्हैत छथि, मातृकापूजा प्रात:काल होइत छैक, हवन, जूटिकाच्छेदन, वेदपाठ, आँचरमे पुरैनिक पात पर केश लेल जाइत छैक प्रभृति । हिनकहि शब्दमे अवलोकन उपयुक्त होयत–

तेसर वर्ष वयस तनयक लखि, सुसमय भूप विचारि ।
चूड़ाकरण - कर्णवेधोत्सव, घरमे देल पसारि ॥

ब्राह्मण गणकाँ न्योति अनाओल, बान्धव जनहुँ हँकरि ।
धरणीपति सम्पत्ति सुगति ओ, दान भोग अवधारि ॥

कुलगुरु वृत भए साँझहिँ देलन्हि, शिशुक जूटिका बान्हि ।
जननी देवी पूजा कएलन्हि, बड़ी-भात पुनि रान्हि ॥

ग्रहक शान्ति दैवीक उपद्रव हेतु ।
क्यौ कह, सैन्य सुसज्जित रक्षा सेतु ।
पुर बिच आगम-निर्गम पर प्रतिबन्ध ।
अहनिश सजग सुरक्षा दलक प्रबन्ध ।

जोतखी लोकनि वैदिक विधिसँ वर–वधूक विवाह करबैत छथि । दामोदर लाल दास गान्धर्व विवाहक चर्चा कएलन्हि अछि जाहिमे ने दिन तकएबाक काज आ ने कोनो जोतखी–पंडितक । एहिमे वर कन्या सएह जोतखी–पण्डित, वर–वरियाती भए जाइत अछि । कविहिक शब्दमे निम्नलिखित पद्यांशक अवलोकन कएल जाए–

आठ वैवाहिक प्रथामे एक अछि गान्धर्व ।
धर्मशास्त्र-पुराण धरिमे अछि प्रशंसित सर्व ॥
अस्तु, धरि प्रिय पाणि-पल्लव प्रेयसिक महिपाल ।
कयल गान्धर्वक प्रथासँ प्रणय वेश रसाल ॥

नयन, आनन, मन दुहुक मुसुका उठल अभिलाष ।
विरहिणी विरही दुहुक पुरि गेल प्रणयक आश ॥
चतुर सखि प्रिय-वादिनी केर मानि नव संकेत ।
दम्पतिक शुभ मिलन-मन्दिर भेल कु□ज निकेत ॥[3]

कर्ण–कंसवध खण्डकाव्यमे स्व० अच्युतानन्द दत्त देखबैत छथि जे देवकीक आठम कन्या कोन तरहेँ आकाशमे उड़ि भविष्यवाणी कएलन्हि । कोनो जोतखीक भविष्यवाणी एहन सुन्दर भए सकैत छनि ? द्रष्टव्य थिक–

उड़ल नभ यदा जन्मिते बालिका ।
कयल अशुभवाणी मते कालिका ॥
ब्रजक गति तही काल सौँ त्राशदा ।
शिशुक बल करय कार्य भारी सदा ॥[4]

पुन: कर्ण पर्वक समाप्ति पर तिथि लिखैत छथि जकरा 'अंकस्य वामा गति:' सँ पढ़ल जाए–

द्वीप सिंधु रस क्षोणि, संवत मार्ग सिताष्टमी ।
शनि दिन मे जय होनि, कर्ण पर्व्व ई अंत भेल ॥[5]

खण्डकाव्यक अध्ययनक क्रममे हम लोकपति सिंहक द्रोहाग्नि पर दृष्टिपात करए लगैत छी तऽ देखैत छी जे यात्रा पहरमे कतेक प्रकारक अशकुनक वर्णन कएलनि अछि । द्रष्टव्य थिक–

पंचम अध्याय

मैथिली खण्डकाव्यमे ज्योतिष

वस्तुतः खण्डकाव्यक निर्माता सेहो महाकविये होइत छथि । खण्डकाव्यमे सेहो महाकाव्ये जकाँ कथावस्तु रहैत छैक, अन्तर एबतेक छैक जे महाकाव्य जतय वृहत् रूपमे कोनो नायकक सम्पूर्ण जीवनक इतिवृत्ति कहैत अछि ओतय खण्डकाव्य मात्र नायकक जीवनक कोनो खास अवधिक चित्रण करैत अछि । महाकाव्यमे जतय सर्गक संख्या आठसँ कम नहि रहैत अछि ओतय खण्डकाव्यमे सर्गक संख्या आठसँ कम रहैत अछि। एहि क्रममे हम सर्वप्रथम नाम लेब आचार्य सुमनजीक, जे अपन उत्तरा खण्डकाव्यमे अनेक स्थल पर भविष्यक संकेत देलनि अछि ।

नओ गोट ग्रहक वर्णन ज्योतिषमे अछि आ नओ ग्रहक प्रसन्नार्थ नओ प्रकारक रत्न सेहो अछि । सुमनजी सेहो नवरत्नक चर्चा कएने छथि । क्रूर ग्रह यदि एक संग भए जाए तऽ कोनो प्रकारक अनर्थ भए सकैत अछि । सुमनजी सेहो क्रूर ग्रह योगक वर्णन करैत चिन्तित छथि । द्रष्टव्य थिक–

यदि ककरहु कुदृष्टि पर हुनि दुर्दैव ।
संहारक हित उद्यत रहथि सदैव ।
बुझि पड़इछ किछु तहिना सन दुर्योग ।
आबि तुलायल एतय क्रूर ग्रह योग ॥

जखन लोकक अपन शक्ति काज नहि करैत छैक तऽ दैवज्ञसँ टीपनि देखबैत अछि आ दैव पर भरोस करैत अछि । एतय सुमनजी सेहो अनाथक सहायक दैवकेँ कहैत छथि, संगहि ग्रहक शान्तिक आवश्यकता पर बल दैत छथि । अवलोकनीय थिक–

नगर जनपदक बीच व्याप्त आतंक ।
कीचक-वध- दुर्घटना पसरि प्रसंग ॥
कोनो यक्ष पक्षक अछि पड़ल कुदृष्टि ।
सावधान रहबाक प्रयोजन इष्ट ॥

नित्यकृत्य सभ सम्पादित कए, प्रात आबि आचार्य ।
कएलन्हि सकल मातृका पूजा-प्रभृति अपेक्षित कार्य ॥

आङनमध्य हवन विधिवत ओ, कएल जूटिकाछेद ।
मुण्डन करक निदेश शिशुक पुनि, देल विप्र पढ़ि वेद ॥[11]

तहिना एकवीरक उपनयनक जे वर्णन कएल गेल अछि से कोनो सामान्यो व्यक्तिकेँ ओकर प्रक्रियासँ परिचय कराए देत । उपनयनमे कोन–कोन वैदकी सामग्रीक आवश्यकता होइत छैक, मड़बा पर कोना की होइत छैक ताहि सभक वर्णन कविशेखरजी कयने छथि । निम्नलिखित पंक्तिक अवलोकन कयल जाय–

धोती-डॉड़ाडोरि-पवित्री-जनउ-फलादि कुमार ।
अपनहि लए आचार्यक कयलन्हि, वरण कुलक अनुसार ॥
गृहक मध्य पूर्वाङ्ग-कृत्य सभ, कए गुरु बड़ुआ अङ्ग ।
माँड़ब चढ़ि आरम्भ देल कए, शुभ उपनयन प्रसङ्ग ॥
सम्मार्जन-उपलेप-प्रभृति कए, संशोधन वेदीक ।
अग्निस्थापन गुरुवर कएलन्हि काँसपात्र लए नीक ॥
कछटा, ज्याक मेखला, वेलक-दण्ड ललाट-प्रणाम ।
पाबि अजिन उपवीत भूपसन, भासित अनल समान ॥[12]

मिथिलामे तन्त्र आ मन्त्रकेर प्रबल प्रताप देखल जाइत अछि । लोककेँ तन्त्र–मन्त्र पर पूर्ण आस्था छैक आ एकर सि□क हेतु तपश्चर्या सेहो करैत अछि । सभ समय अयला पर गुरुसँ दीक्षा लैत अछि । कहल जाइत अछि जे इष्टक जप बिना कोनहुँ पूजा–पाठ सार्थक नहि । एतेक धरि जे मनुष्यकेँ देहत्याग कयला पर मोक्ष सेहो नहि भेटैत छैक । एतय कविशेखरजी मन्त्रक प्रभाव सुन्दर ढंगसँ देखओलनि अछि । एकावलीक अपरहणक पश्चात् मन्त्रीसुता यशोमति कनैत–विलखैत छथि । जखन हुनका एकवीरसँ भेट होइत छनि तऽ हुनका सभ कथा सुनाय एकटा सि□–मन्त्र दैत छथि जकर प्रभावेँ ओ पातालक दानव कालकेतु पर विजय प्राप्त कए एकावलीकेँ मुक्त करओताह । देखल जाए यशोमति आ एकवीरक वार्त्ताक किछु अंश–

मन्त्र शिवाक महोत्तम हमरा आब ।
सुकर दनुजपुर-पैसब जकर प्रभाव ॥
ओ मनु हमरासँ लए धरणीनाथ ।
होउ पुरश्चर्या कए सि□ सनाथ ॥
सि□-सि□ जकरा कहि गाबए तन्त्र ।
से शिवाक शिव-भाषित ओ शिव-मन्त्र ॥
उचित पात्र अपने छी उपगत भेल ।
ई कहि मन्त्रिसुता मनु नृपकाँ देल ॥

लज्जाबीज प्रथम कहि गौरि उचारि ।
तखन रुद्रदयिते पुनि कहल विचारि ॥
योगेश्वरि भाखल पुनि कूर्च समेत ।
फट् शिखि जाय अन्तहि महिमानिकेत ॥
मन्त्रराज ई सोड़ह आखर सि□ ।
अन्वर्थाख्य त्रिलोकीतिलक प्रसि□ ॥
तर्पण मार्जन ब्राह्मण-भोज नृसोम ।
भेल पुरश्चरणेँ ओ सत्वर सि□ ।
उचित तीव्र-यत्नेँ की नहि झट सि□ ॥
सूझल दानव-नगरक मार्ग तुरन्त ।
बूझल मन्त्रक महिमा नृपति अनन्त ॥[13]

पुनः एकावली-एकवीरक विवाहक वर्णन करैत कविशेखरजी कन्यादानक दक्षिणा, होम, बेदी, लाबा इत्यादिक चित्रण कयलनि अछि । द्रष्टव्य थिक-

कन्यादानक भूमिदक्षिणा, पबइत नृपति विचारल ।
की प्रियाक सोड़हमा अंशक, तुलना लहए धरातल ?[14]

पुनश्च- **कालकेतु वध-हर्षित हुतवह, पहिनहिसँ छल पजरल ।**
तेँ फुकबाक परिश्रम नहि किछु, पुरोहितक शिर बजरल ॥
बाला विरहानल पहिनहि, लाजहोम छलि सिखनहि ।[15]
तेँ वेदी तर लाजहोममे, भेल विलम्ब-लवो नहि ॥[16]
मन परमाणु दुहुक मिलि मन्त्रेँ, अणुक गेल बनि जखनहि ।
अतनुतनुक रचनाक उपक्रम, जनु कएलन्हि विधि तखनहि ॥[17]

एहि तरहेँ देखैत छी जे एकावली-परिणयमे यत्र-तत्र ज्योतिषसँ संबंधित तत्त्व भरल-पड़ल अछि ।

आइ मैथिलीमे दू दर्जन सँ अधिक महाकाव्य प्रकाशित अछि आ सभमे प्रायः ज्योतिष तत्त्वक प्रचुरता अछि । हँ, एतबा अवश्य, मूलतः जे संस्कृत पंडित वर्गक द्वारा रचित यथा- कवीशेखर बदरीनाथ झा, सुमन, मधुप, तन्त्रनाथ झा आ सीताराम झा प्रभृतिक महाकाव्यमे ज्योतिष तत्त्वक बाहुल्य अछि । एतय दत्त-वती महाकाव्यक निम्नलिखित पंक्तिक अवलोकन कएल जाए-

गणित फलित नक्षत्र राशि दिन लग्न करण तिथि योग ।
ग्रह-उपग्रहक गति अनुगति ग्रहणहु ज्योतिष उपयोग ॥[18]

एबते नहि, युवराज पद पर राजतिलक करबाक की प्रक्रिया अछि, एहि हेतु कोन-कोन उपादानक आवश्यकता होइत छैक से सुमनजीक निम्नलिखित पंक्तिक

10. तत्रैव, 4-23
11. तत्रैव, 4-63-70
12. तत्रैव, 4-90-93
13. तत्रैव, 10-68-76
14. तत्रैव, 14-43
15. तत्रैव, 14-46
16. तत्रैव, 14-48
17. तत्रैव, 14-50
18. दत्त वती : सुरेन्द्र झा 'सुमन'; 219
19. तत्रैव, 3-34-41
20. तत्रैव, 4-7-11
21. तत्रैव, 4-58
22. तत्रैव, 4-66
23. तत्रैव, 7-23
24. तत्रैव, 18-68
25. तत्रैव, 18-67
26. तत्रैव, 19-17-19
27. तत्रैव, 19-34
28. तत्रैव, 19-35
29. तत्रैव, 19-41-49
30. तत्रैव, 20-21
31. मुक्तिपथ : महिनाथ झा, 6-19
32. तत्रैव, 6-64-40
33. तत्रैव, 6-44-50
34. तत्रैव, 6-53-55
35. तत्रैव, 6-60-62
36. तत्रैव, 6-67-68
37. राधाविरह : मधुप, 8-2
38. तत्रैव, 8-17-18
39. शकुन्तला : चन्द्रभानु सिंह, पृ०13
40. तत्रैव, पृ० 12

अक्षय तृतीया दू हजार उनैस सालक सोम दिन ।
ई व्यथा कएल समाप्त जगदम्बा हमर कठिनाइ बिन ॥
शंका करू क्यो जुनि, विचारु, हमर दम्पति पात्र पर ।
.... ॥

व्यथा महाकाव्यमे शकुन अपशकुन पर सेहो प्रकाश देल गेल अछि । वन यात्राक क्रममे पर्याप्त शकुन अपशकुनक चर्चा अछि ।

कविवर सीताराम झाक अम्बचरितमे सेहो ज्योतिष पर पूर्ण प्रकाश देल गेल अछि । सीताराम झा तऽ जोतखी छलाहे ।

हुनक अम्बचरितमे दिन गुनाय कोन तरहेँ मण्डप बनैत अछि से देखल जाए–

दुर्गा तिथि सँ शिव तिथि सुबु[illegible] ।
भूशोधनमे शुभ कहल वृ[illegible] ॥
दशमीमे रचि मण्डप स्तम्भ ।
विश्वक तिथिमे हो मखारम्भ ॥

अष्टमी उपर्युक्त दुर्गातिथि सँ नवमी, शिवतिथिसँ अष्टमी एवं चतुर्दशी, विश्वक तिथिसँ एकादशी होइत अछि–

तिथीशा वह्नि-कौ गौरी गणेशोऽहिर्गुहो रविः ।
शिवो दुर्गान्तको विश्वे हरिः कामः शिवः शशी ॥

आनो आन महाकाव्य जकर हम एतय चर्चा नहि कए सकलहुँ ताहूमे कमोवेश ज्योतिष तत्त्व अछिए कारण महाकाव्यक रचयिता निश्चित रूपेँ ज्योतिषमे पटु रहलाह अछि ।

संदर्भ :

1. मि० मा० रा०; चन्दा झा, पृ० 16
2. तत्रैव, पृ० -18
3. तत्रैव, पृ० 49
4. एकावली परिणय : कविशेखर बदरीनाथ झा; 1-29
5. तत्रैव, 1-63-67
6. तत्रैव, 1-68,69
7. तत्रैव, 2-68
8. तत्रैव, 4-16
9. तत्रैव, 4-18-20

अवलोकनसँ स्पष्ट होइत अछि–

पहिनहिसँ छल प्रस्तुत विधि संभार ।
पबितहिँ शुभ संकेत उपस्थित द्वार ॥
पुरहित सहित प्रथित विद्वत्समुदाय ।
सुविधि विविध सामग्री देल सजाय ॥

तीर्थक जल, पीठक मृत्तिका पवित्र ।
कुश समिधा तिल यव मधु घृत सपवित्र ॥
मणि सुवर्ण पुनि रत्न विहित अभिषेक ।
पल्लव कुसुम वनस्पति फल प्रत्येक ॥

कुल-दैवत, गृहदेवी, ग्रह, दिक्-पाल ।
पितर-देवता, ग्राम-देव, वनपाल ॥
नभ वसुन्धरा नद नग सीमापाल ।
सकल देव पूजल प्रथमहि भूपाल ॥

श्रोत [illegible]चा पढ़इत [illegible]त्विक-समुदाय ।
हवि चढ़बथि हुतवहमे होतृ-निकाय ॥
ज्वलित अग्नि यज्ञक शाला हवि गन्ध ।
करइत वातावरण पवित्र अमन्द ॥

वैदिक मन्त्र, तन्त्र आगमक वितान ।
भूमि अन्न मणि रत्न धेनु धन दान ॥
वेद पुराण स्तोत्र शतचण्डी पाठ ।
स्वस्ति वाचनक प्रक्रम जत शुभ ढाठ ॥

कर्मकाण्ड विधिसँ नैमित्तिक नित्य ।
सि[illegible] हेतु माङ्गलिक अनुष्ठित कृत्य ॥
जप-तप, पूजा-पाठ, भोज नहि अन्त ।
पातरि नोन कुमारि कुमार अनन्त ॥

वैदिक तान्त्रिक श्रोत गृह्य आधार ।
कतविध कौलिक सामाजिक व्यवहार ॥
घर-आङन मन्दिर-प्रांगणमे व्याप्त ।
वाद्य-गीत ओ नाट्य-नृत्य पर्याप्त ॥

कुङ्कुम मृगमद मलयज चंदन-पंक ।
राशि-राशि पल्लव प्रसून क्षिति-अंक ॥
सिन्दूराक्षत दूभि हरिद्रा रंग ।
लाजा उज्वल छीटल मंगल अंग ॥[19]

धर्मशास्त्रक अंग थिक कर्मकाण्ड आ कर्मकाण्डक ज्योतिषसँ अन्योन्याश्रय संबंध अछि । यदि अक्षय तृतीया दिन केओ व्रत रखतीह तऽ तृतीया कोन दिन कते दण्ड पल से निर्णय ज्योतषीये करताह । तहिना दुर्गापूजा शरद् □तुमे अश्विन शुक्ल पड़ीबकेँ प्रारम्भ होएत मुदा पड़ीब कोन दिन कोन समयमे पड़त ई निर्णय ज्योतिषक अन्तर्गत अछि संगहि अ□प्रहरा, सि□ादि योग इत्यादि विषय ज्योतिषक अन्तर्गत अबैत अछि । कोनो यज्ञ, अनुष्ठान, पूजा-पाठ बिनु ज्योतिषीसँ सम्पन्न नहि भए सकैत अछि ।

सुमनजीक दत्त-वतीमे जहिना नित्यकृत्य, शुचि-आचार वर्णित अछि तहिना दिन-तिथिक गणनाक प्रमुखता अछि । एतय द्रष्टव्य जे कोन प्रकारेँ सर्वसुखसम्पन्न युवराज अपन नित्यक्रियामे संलग्न छथि-

कय विधिवत युवराज प्रभाते स्नान ।
शुचि भय पहिरल धवल धौति परिधान ॥
आसन पर आसीन कनक उपवीत ।
उत्तरीय कौशेय कान्ह परिवीत ॥

सध्या-वन्दन, चन्दन-चर्चित भाल ।
गायत्री-जप लय रुद्राक्षक माल ॥
मुद्रा सहित सहस संख्यक जप-कृत्य ।
प्राणायामी कयल सकल विधि नित्य ॥

रविकेँ अर्घ्य चढ़ाओल, गणपति पूजि ।
देवी दुर्गा अर्चल आगम बूझि ॥
भस्म विभूषित पढ़इत रुद्राध्याय ।
कयल स्नपन शिव नियमित स्तुति समवाय ॥

पुरुष सूक्त, तुलसी दल, शंखक पानि ।
शालग्राम शिला पूजल स्मृति मानि ॥
ग्रह दिक्पति पुजि देव प्रजापति अंत ।
हविसँ हुतवहकेँ कय तृप्त अनन्त ॥

श्रुति स्मृति सूक्त पुराण सूत्र इतिहास ।
कयलन्हि स्फुट स्वर पाठ स्तोत्र कत रास ॥
दानपात्रकेँ देल धेनु सन्मानि ।
अतिथि साधुकेँ पूजल देवे मानि ॥[20]

ग्रहक प्रभाव मानव जीवन पर पड़बे करैत छैक । मात्र टीपनि देखओने ग्रहक शान्ति नहि होइत छैक । अपितु एहि हेतु पाठ, जप, दान इत्यादि करए पड़ैत छैक । सुमनजीक कथन द्रष्टव्य थिक—

आनल गेल सुरभि जल छैला ।
द्विज-समान शिशुपाल नहैला ॥
कयलनि पीत दुकूलक धारण
डराडोरि उपवीत सोहाओन ॥

मिथिलामे विध्नराज गणेशक नाम लए कोनहु कार्यक शुभारम्भ करबाक प्रथा अछि-

चलला देहि नरेश दृढ़ कय वरिआतिक संघटन ।
बजला शंख-ध्वनि संहित जय गणेश मंगल करण ॥

अपिच-

जय गणेश जय विघ्नविनाशन कहि द्विज पैर उठौलनि
यदपि देह छल एतय द्वारका पहिनहिँ ह्वदय पठौलनि ।
नीलकंठ दर्शन कय सूचित करथि सि□ अछि काज
तकर समर्थन कयल बाट पर बैसि नकुल महराज ॥

अगस्त्यायिनीमे श्री मार्कण्डेय प्रवासी देखा रहल छथि जे कोना अग्निस्थापनसँ पूर्व होम करबा ले' अग्निस्थापन कयल जाइत अछि । द्रष्टव्य थिक -

भू-पूजनक बाद आश्रम-नियमक क्रम चलल
किछुए क्षणमे हवन-कुण्ड उल्लासेँ धधकल ।
वायु-शु□िकेर हेतु धूम्र ध्वनि-जकाँ ऊर्ध्वमुख
गृहिणी लोपामुद्रा कर्मठताक स्वर बनल ॥

एहि तरहेँ हम सभ देखैत छी जे उक्त सभ महाकाव्यमे ज्योतिष तत्त्वक सेहो पर्याप्त उल्लेख अछि ।

सीताक चरित्र पर आधारित दोसर महाकाव्य अछि रमाकान्त झाक व्यथा जे अत्यन्त सरल आ सरस भाषामे मात्रिक छन्दमे विरचित अछि । एकर मुख्य छन्द थिक 'हरिगीतिका' । एहिमे महाकवि तिथि दिनक कतेक महत्त्व देलनि अछि से हुनकहि पंक्तिक अवलोकन सँ स्पष्ट होयत । ओ स्वयं कहैत छथि जे पंचमी तिथिकेँ 'व्यथा' महाकाव्यक प्रणयनक शुभारम्भ कयने छलाह आ तीन मासमे अक्षय तृतीया सोम 2019 सालकेँ एकर समापन कयलनि । अवलोकनीय थिक :

पश्चाति की सहयोग भेटल कहब संभव अछि कहाँ ।
अत्यन्त गूढ़ रहस्य अछि हमरा व्यथाक जहाँ तहाँ ।
श्री प□चमी तिथिमे स्वतः आरम्भ ग्रंथक भेल छल ।
बस तीन मासक राति-दिनमे 'व्यथा' लीखल गेल छल

सकुन सकल पावन प्रतीक सुभ आबि जनाबए
घेनु सवत्सा, वृष, तुरग, वह्नि दक्षिणावर्त-सन
गज, गजगामिनि, सिर कलश, द्विज, गणिका आ नृपतिगण

दीनानाथ पाठक 'बंधु' अपन चाणक्य-महाकाव्यक आरम्भहिमे रवि सम दीप्त, धूमकेतु, ध्रुव, भासुर, शुक्र, आदिक वर्णन कयने छथि । द्रष्टव्य थिक-

रवि सम दीप्त, अनसल सम दाहक, पवि सम कठिन कठोर
कोनो गूढ़तम भाव मग्न चिन्तासँ आत्मविभोर ।

□□

धूमकेतु सम स्वयं समुज्ज्वल द्योतित गगन अखण्ड ।
उतरि रहल अछि के ई नभसँ भासुर-प्रबल-प्रचण्ड ॥
ध्रुव रहि अचल कक्ष पर जहिना घुमबथि खेचर वृन्द ।
तहिना शक्ति प्रपूर्ण व्यक्ति ई ज्ञात होइछ निर्द्वन्द्व ॥
देवलोकसँ अपमानित ईर्ष्यावश शुक्र महान ।
दनुजलोकमे पहुँचलाह की नीतिशास्त्र-विद्वान ?

'रुक्मिणी परिणय' महाकाव्यमे बबुआजी झा 'अज्ञात' सेहो रवि, अम्बर, नक्षत्र इत्यादिक वर्णन करैत दैव पर भरोस करैत छथि । हुनकहि शब्दमे द्रष्टव्य थिक-

आदित्य उगल छथि अम्बरमे
की मोल कोनो लघु नक्षत्रक ?
विधुवंश-विभूषण की उदयक
गणना की वैद्य-नृपति-पुत्रक ?

सुत जेठ शुभाशुभ जे कहथिन
निरुपाय पिताजी से करता ।
हा दैव ! तखन असहाय जनक
उ□ार कष्टसँ के करता ?

बबुआजीझा सेहो कोनो कार्यक आरम्भमे ज्योतिषी द्वारा लग्न गुनयबाक कार्य करैत छथि जाहिसँ कार्यमे विघ्न-बाधा नहि होअए । द्रष्टव्य थिक-

गणक बजा लग्नक कए निश्चय
सभ प्रबन्ध अनुकूल तकर कय ।
धराशीश द्विजवृन्द बजौलनि
कौलिक शान्ति-विधान करौलनि ॥

पुनः पूर्णघटसँ स्नान, डोराडोरि इत्यादि धारणक चर्चा अछि-

विग्रहकेँ ग्रह-कूर मानि कय दान ।
शान्ति पाठ करबे की उचित निदान ?
शनैश्चरक संक्रमण काल विकराल ।
टीपनि टिपने की टरइछ ग्रह-जाल ॥[21]

पुनः सुमनजी तिथि, ग्रह, नक्षत्र, पक्ष पर दृष्टिपात करैत छथि-

बदलि गेल वातवारण,
भ्रम-विभ्रम छटि गेल ।
उमा अमात्यक तिथि विगत,
स्वच्छ पच्छ रुचि देल ॥
. . . . ।
प्रतिपदहि क्षितिज मूलमे ॥
कला मात्र राशि उदित ।
नखत कत छपित कूलमे ॥[22]

यात्रा करबासँ पूर्व लोक दिन तकबा लैत अछि । सुमनजी सेहो एकर उल्लेख कएलनि अछि-

गुनि धुनि दिन कत, लय विचार निपुणक पुनि अविरत ।
वय नवीन मति-गति प्रवीन तरुणक दल संहत ॥
किछु शवरक प्रदेश दिश, किछु पुनि चलल अवंती ।
किछु अवधक पुर ग्राम टोल वीथी पथवंती ॥[23]

पुनश्च –

पुनि शुभ दिनमे विदा हेतु जखने निर्णीत मुहूर्त्त
योग-वियोगक मार्मिक अवसर प्रेम नेम केर पूर्ति
वर-विदाइ यौतुक-कौतुक छल प्रेम-विभव नवनव्य
बुझि पड़ थिक सर्वस्वदक्षिणा यज्ञ योजना भव्य ।[24]

पूर्वहुमे चर्चा भए चुकल अछि जे विवाहक बाद चतुर्थी, बीचमे महुअक इत्यादिक होइत अछि । सुमनजी सेहो एकर चित्रण कएलनि अछि । अवलोकनीय थिक-

तदनु चतुर्थी मधु-रजनी महुअक दहनहि विधि तूल
कुमर-कुमरि नव नागर-नागरि वर-वधूक रुचिमूल
नोत-हकार पता-आमन्त्रण तते आम ओ खास
चलल सिलसिला भोज-भात सप्ताह, पक्ष ओ मास[25]

राज्याभिषेकक हेतु कोन-कोन उपादानक कार्य होइत छैक तकरहु चर्चा सुमनजी कएने छथि । हुनकहि शब्दमे अवलोकन कएल जाए-

श्रौत-स्मार्त आगम-निगम, लोक-वेद व्यवहार ।
अभिषेकक हित विहित विधि, राजित राजुकमार ॥
तीर्थ-तीर्थसँ पुण्य जल, वन-वनसँ फल-फूल ।
खानि-खानिसँ मनि-रतन, आनि-आनि समतूल ॥
पीठ-पीठसँ माटि शुचि, व्रज-रज, समिध अरण्य ।
धातु विविध गिरि संकलित, हाट-हाटसँ पण्य ॥[26]
कलस सपल्लव माथ धय, नव रंजित परिधान ।
सुमुखि समुख भय सुचित करु, मंगल सगुनविधान ॥[27]

कोनो शुभाशुभ कार्य हो, यज्ञ-अनुष्ठान हो, पटु आ सक्षम यजमान मात्र ज्योतिषीयेटा पर विश्वास नहि करैत छथि । ओ ज्योतिषीसँ तऽ सभटा पौरोहित्य कर्म करबिते छथि मुदा श्रोता आ द्रष्टा वा संशोधनकर्त्ताक रूपमे मीमांसक, नैबन्धिक, सूत्रविद्, नैयायिक, सांख्यगणक, दर्शनविद्, साहित्यकार, नाट्यकार, इतिहासकार, शिल्पकार इत्यादि सभकेँ आमंत्रित करैत छथि । द्रष्टव्य थिक-

कुलगुरु पण्डित पुरोहित वैदिक ज्योतिर्विज्ञ ।
□त्विक उद्‌गाता तथा होता विधिक अभिज्ञ ॥[28]

राज्याभिषेकमे आवश्यक उपादानक चर्चा सुमनजी यत्र-तत्र कएने छथि । द्रष्टव्य थिक-

घोषित अभिषेकक समय, मङ्गल शङ्खक घोल ।
कण्ठ-कण्ठसँ जयक ध्वनि, अवनि गगन उतरोल ॥
वेदध्वनि चौदिस कलित, सूक्त सूत्र स्तुति पाठ ।
रामायण भगवत्-कथा, महाभारतक ठाठ ॥
यव तिल घृतमधु अक्षतहु, दल फल-फूल अभार ।
समिध हविष अरु सोमरस, कलित यज्ञ संभार ॥
स्नान पीठ राजत रचित, खचित धातु मणि रत्न ।
स्वर्णकुम्भ गङ्गाजली, तीर्थजली रचि यत्न ॥
छत्र चमर कत विध व्यजन, राजदण्ड उद्युक्त ।
पादपीठिका पादुका, आयुध यु□ प्रयुक्त ॥
पट-परिधान विधानसँ, ग्रथित रत्न मणि भव्य ।
अलंकार अत्युक्ति मत, उपमा जकर न लभ्य ॥
शुचि भय मंगल पाठकय, कृत आह्निक आचार ।
सन्ध्यावन्दन जप हवन, पूजन विहित प्रकार ॥
कनक रचित सिंहासनक, शोभा दृश्य न अन्य ।
जनु विसुकर्मे रचित वा, भय कृत वस्तु अनन्य ॥

साम्य भावक प्रसार-सामाजिक पर्व विशद बड़का
आदान प्रदान सुभोजन केर सबठाँ सबहक 'पूआ'घर घर
छप्पन प्रकार व्यंजन पर जत तत हाथ चलए-
शुचि सुखद सोमरस भाँगक निशा मध्य झूमए ।
नटुआ नाचए आ गुणी गवैया महफिल मे गाबथि समोद !
जोगीरा केर हुल्लड़बाजी- आजुक दिन लागए गारि मिट्ठ ।

3 मधुमास सुखद-शुक्ल नवमी
रामक जनम दिन केर पओने छल गुण गरिमा ।
बैकुण्ठक पति बैकुण्ठ मास मे अवतरला ।
आ जूड़शीतल सामूहिक पावनि सुख-स्थान ।
आ अही □तुक वैशाख शुक्ल नवमीय सौम्य,
धरणी पर सत्यम् शिवम् सुन्दरम् आबि गेल सीताक चरण ।

सीताक जन्मसँ पूर्व जे यज्ञ-होम इत्यादि भेल तकरहु लेल सटीक चित्रण अछि । ज्योतिष शास्त्रक आलोकमे निम्नलिखित पंक्तिक अवलोकन कयल जाय-

1. शिविर सहस्राधिक मुनिगण केर दलबल संगहि
हरि कीर्त्तन-रस छथि बहुतो जे यज्ञक अंगहि
उषाकाल संवेद मंत्रकेर घोष प्रसारित
दर्शन आ उपनिषदादिक सि□ान्त प्रचारित
देखल वाचक ! ई सकल देखू यक्षक अंत
शिशिर अकाल भगाए जे आनल त्वरित वसन्त ।
हवन क्रिया सम्पन्नप्राय पूर्णाहुति केर क्षण
यज्ञ मण्डपक मध्य यज्ञकर्ता सभ मुनिगण
यज्ञक्रिया केर पूर्णाहुति केर वस्तु सजाओल
सचिव सकल मुनि याज्ञवल्क्यकेँ अछि सुनझाओल,
नृपति ठाढ़ छथि संगहि याज्ञवल्क्य छथि महामति ।
शंखक गेल निनाद महा वेद-ध्वनि-गूँजल
क्रमे विहित शास्त्रानुसार सब देवहि पूजल
तत्रान्तर पूर्णाहुति मंचक घोष प्रवाहित
नारिकेर केर संग नृपति देलनि पूर्णाहुति
भेल महा जयकार अति अनगिनती -बाजा प्रबल-
घंटा, घंट, मृदंग संग घन घमण्ड धहरा उठल
पूर्णाहुतिकेर बाद नृपति चलला झट तहिठाँ
सामूहिक श्रम उद्‌घाटन केर थल छल जहिठाँ
माधव सित नवमी तिथि अति शुभ दिन शुचि पाबए

शत हजार तिथि बीतय छनमे । ताहूठाँ कल्पांतर कणमे ॥
गरिमा पुंज हमर दुहु लोचन । सबा लाख रविसँ बढ़ि ओजन ॥
आँखि न देखय छितिक पहाड़ी । गिरिवर लघुतर कीटक धारी ॥
गतिमय अपन अपन परिवारे । दृग चोन्हिआयल नभकेर तारे ।
ऊपर नभ नीचो नभ देखल । पृथ्वी चाक जकाँ धूमै छल ॥[39]

पुनश्च–

दिग्मंडल-वश करइछ मानव, भरय सुदूर उड़ान ।
ब्रह्माण्डक ब्रह्माण्डो नपइछ दिशाब□ सोपान ॥
थोकाके थोका पसरल जे गोलाकार खमंडल ।
प्रपित प्रकृति तत्व गुरु सेवे सौसे तारामंडल ॥[40]

जेना वर्षकृत्यमे वर्षभरिक पूजाक विधान देल गेल रहैत अछि तहिना विधुजी सेहो अपन महाकाव्यमे वर्षोभरिक पूजा-पाठ पाबनि तिहारक वर्णन कयलनि अछि । देखल जाय–

आ आर्य करथि वर्षो भरि तर्पण नित्य सदा ।
एकोदिष्टक शुचि पिण्डदान ब्राह्मण भोजन, जितिया पूजन !
माइक आत्माकेँ शान्ति हेतु शुभ शुचि तिथि महा मातृनमवी ।
शक्तिक पूजा विजया दशमी, लक्ष्मी पूजा पूर्णिमा शरत् ।

सर्ग- 1. पृष्ठ 26

सब क्यो बाँटए भरिभरि मौनी फोँका मखान;
आ पान मधुरकेर महा भोज;
कातिक भरि नहि खर्चाक ओज,
निशि दिन पावनि- कार्तिक स्नान आ देवार्चन !
दीयावाती प्राते पखेव आ तकरा प्राते भरदुतिया
सभ करथि द्वाति पूजा बुधजन
यम द्वितीयामे चौदहो यमक संग चित्रगुप्त पूजा अर्चन ।
अक्षय नवमीमे औरा तर भोजन ब्राह्मण भोजनक बाद ।
बकपंचक व्रत, कार्तिकी पूर्णिमा मे सभ गंगातीर विदा
रीनहु लए कें अछि लवल धान आशा महान् !
तेरह मासक अछि अन्त निकट ।

2. आएल नवान्न दधि, चूड़ा, गुड़, ब्राह्मण भोजन
नव अन्नक भक्षण करथि, जखन कए लेथि हवन ।
फागुनक पूर्णिमा फगुआ छी सभसँ मिलय सप्रेम -

वेदपाठ द्विज आरभल, वन्दी विरुद बखान ।
घर-घर गीत सोहागिनी, शुभे शुभे कर गान ॥[29]

कोनहु प्रकारक पूजा-पाठक आरम्भमे अथवा कोनो शुभ कार्यारम्भमे नवग्रहक पूजा अवश्य होइत अछि । सुमनजी सेहो नवग्रहक शान्तिक चर्चा कएने छथि–

गौरि-गोसाउनि पूजि ग्राम-कुल देव मनाओल
नवग्रहक कय शान्ति स्वास्तिवाचन करबाओल
जय गणेश वामन जनार्दनहु नाम उचारल
धेनु मीन दधि कलश विप्र शुभ सगुन गनाओल[30]

एहि तरहेँ दत्त-वती महाकाव्यक कतोक स्थल देखबामे अबैत अछि जे मूलतः ज्योतिषक विषय नहियो रहने ज्योतिष पर आधारित अवश्य अछि । बिनु जोतखीयेँ कोनो कार्यक सम्पादन सम्भव नहि ।

आब हम स्व० महिनाथ झाक 'मुक्तिपथ' महाकाव्य पर ध्यान आकृष्ट करए चाहैत छी । मुक्तिपथक महाकवि सेहो संस्कृतक नीक विद्वान्, यद्यपि प्राध्यापक मैथिली विषयमे । हिनको ज्योतिष, धर्मशास्त्र इत्यादिक क्षेत्रमे केहन पटुता छनि से स्वयं अनुभव कए सकैत छी । चन्द्र कोना राहु ग्रहसँ भयभीत रहैत छथि से द्रष्टव्य थिक–

दशरथ-मुख-शशि क्लेशक कलुषेँ सद्यः बनल मयङ्के ।
निरखल भावी कुगति-राहु-ग्रह त्रासे अतिशय शङ्के ॥[31]

कविवर महिनाथ झा कोन प्रकारेँ पुत्रेष्टि यज्ञक वर्णन करैत छथि से द्रष्टव्य थिक–

अगिले दिनसँ पुत्र प्राप्ति हित यज्ञक कए आयोजन ।
□ष्य शृंगकेँ यत्न पुरस्सर बजा कएल विनियोजन ॥
से होता ब्रह्मर्षि पुरोहित दशरथ बनु यजमाने ।
सम्बत्सर, साकल्य-समर्पित -यज्ञक चलल विधाने ॥
अविरल आज्यक धार-घोरणी हुतवह तृप्ति प्रभूते ।
कृत औषधि-धृत-रत्न-भस्म-चुत मन्त्रित जड़ी बहुते ।
विविध पाक-प्रक्रिया विनिर्मित अनुपम चरुहिक भक्षण,
कुक्षिक शोधन संस्कारहिँ करु गर्भाधानक रक्षण ॥
पुंसवनो सीमन्तो-नयनहुँ तेसर छठमा मासहिँ ।
शुभ संस्कार युगल सम्पादन भावी पुत्रक आसहिँ ॥
नवमा मासक पूर्तिक संगहि तीनू रानी जनलनि ।
एक एक सुत उभय जेठ जनि, पुत्र युगल तेसर धनि ॥
सद्यः जातकर्म कए क्रमशः भूप लुटाओल सोना ।
जगजननी पद पुत्र अरपि पुनि जननी कएलनि टोना ॥[32]

बच्चाक जन्मक पश्चात् ज्योतिषी लोकनि कोना बच्चाक नामकरण करबैत छथि, नवग्रहक शान्त्यर्थ पूजा-जप करबैत छथि तकर सविस्तर वर्णन एहि महाकाव्यमे देखबामे अबैत अछि । अवलोकनीय थिक-

छठमा दिनमे साठिक पूजा, नवमा नाना-भैआ ।
गाबि गीत विधि विविध समापल नवनागरि, बुढ़िदैआ ॥
दिवस एकादश भावि सविध करु नामकरण संस्कारो ।
नवग्रहक सह गणपति विष्णुक पूजा अति विस्तारो ॥
होमादिक सब कर्मक सङ्गहिँ पूर्णाहुति दए अपनहिँ ।
त्रायुष आदि समापि दूबि लए मधुसँ लीखल यतनहिँ ।
अंशुक पीत पहिरि कए बैसलि माइक अङ्क विराजित ।
आनन-स्वर्ण-सरोजक दल सम अधर-बिम्ब पर अरिजित ॥
लखितहि ह्वदय रमल जनिकामे तनिक नाम श्री रामे ।
शील गुणक आकर सभ लक्षित शोभासिंधु ललामे ॥
लक्षण कान्ति विलक्षण लक्षित, लिखु तनिकर अभिधाने ।
लक्ष्मण नामे शक्तिधाम जे दैवी तेज निधाने ॥
तेसर भरतक नामे अभिहित राजर्षिक सम रूपे ।
शत्रुघ्नक आख्यातेँ चारिम निज सोदर अनुरूपे ॥[33]

सामान्यतया बच्चाक नामकरण एगारहम दिन(जन्मसँ) होइत छैक । एकर विधान तऽ महिनाथ झा कहि गेलाह आब अन्नप्राशन, (छठम मास), चूड़ाकरण (पहिले वर्ष) इत्यादिक विवेचन करैत छथि । द्रष्टव्य थिक-

अन्नप्राशन करक निमित्ते छठमा मासहिँ राजा ।
गुरु सङ्केतहिँ गृह सज्जित कए बजबाओल बहुबाजा ॥
घृत मधु पायस सुरस विविध-विधि स्वर्णधारमे आनल ।
अशन शिशुक लखि, किलकारी सुनि, सुख स्वर्गहुँ बढ़ि मानल ॥
ब्राह्मण याचक दीन-जनहुकेँ भोजन-दान सदक्षिण ।
कएल व्यवस्था इङ्गित मात्रहिँ जानि दैवकेँ दक्षिण ॥[34]

पहिल वर्षमे चूड़ाकरण-

चूड़ाकरणक सविध व्यवस्था सबहुक पहिले वर्षहि ।
मुनि वशिष्ठ नृप दशरथ मिलिकए कएलनि डुबइत हर्षहिँ ॥
आभ्युदयिक सह मातुक-पूजा, सविध हवन, खुर पूजन ।
वपनोपरि, कयकग्रहण, कनकहिँ अभिमन्त्रित श्रुति छेदन ॥
श्रीखण्डक अनुलेपन, नूतन वस्त्रालङ्कृति धारण ।
अद्भुत कान्ति बढ़ाओल बटुकक दमकि उठल कुन्दन सन ॥[35]

आब उपनयनमे ज्योतिषी लोकनि सर्वप्रथम गुरुशु□क विचार करैत छथि । गर्भाष्टमक उपनयन नीक कहल जाइत अछि । निम्नलिखित पद्यांशक अवलोकन कएल जाए-

गर्भाष्टम होइतहिँ गुरु-शु□क कए विचार सविशेषे ।
शुभ मुहूर्त्त तिथि मास दिवस गुनि ब्रह्मचारिकेर भेषे ॥
नगरक बाहर सरयू-पुलिबहि आश्रम मुनिक ललामे ।
चूड़ाकरणक उपनयनक पुनि वेदारम्भक कामे ॥[36]

कविचूड़ामणि मधुपक राधाविरह तऽ मैथिली महाकाव्य मध्य अपन प्रतिष्ठित स्थान बनओनहि अछि । एहि महाकाव्यमे अलंकारक झंकार आ छन्दक बन्ध ककर मनकेँ हरण नहि करैत अछि ? मधुपक कल्पनाक उड़ान अकल्पनीय अछिए-संगहि ओकर रुचिकर प्रस्तुतीकरण बुझू जे अरसिकहुक ह्वदयमे रसक संचार कए दैत अछि । उपनयन-विवाहमे वेदी, चुमाओनक सामग्री, होम-यज्ञक समिधि, शाकल्यक वर्णन सभ ठाम भेटत मुदा मधुपक वैशिष्ट्य अछि जे ओ सभटा प्रकृतिएसँ प्राप्त करैत छथि । हुनका गणक सेहो तेहन भेटि जाइत छथिन जे प्राकृतिके उपादानसँ सभटा पाबनि-तिहार सेहो मना लैत छथि ।

द्रष्टव्य थिक-

समुदित शशि मुदित कोटिक करमे कुङ्कुम भरि पूर्ण,
प्राचीनो प्राचीन वदन पर, लेपल सस्मित तूर्ण ।
छिटकल-करम-अरुणाभ-रङ्ग, सौसे वनकेँ रङि देल,
की क्यो गणक विना गणनहिँ होरिक तिथि कहि ठकि लेल ॥[37]

पुनश्च-

ठाम ठाम वेदी ललाम जै तट पर निर्मित भेल,
पुष्पित लघु-तरु वेष्टित जै पर मौक्तिक झालरि देल ।
विचलित चित मोहक अनन्य-उद्यान रम्य जै ठाम,
दधि लावा अगणित मङ्गल घट कदली थम्भक दाम ॥
दीपित-रत्न-प्रदीप, धूपसँ सुरभित दिशा समस्त,
द्राक्षा पूगी नारिकेल आदिक फल जते प्रशस्त ।
सूत्र ब□-आमक पल्लव केर तोरण ललित नितान्त,
ततइ वर्तुलाकार रास-मण्डल लखि राधाकान्त ॥[38]

'शकुन्तला' महाकाव्यक रचनाकार खगोल पर एकटा सम्पूर्ण अध्याये लिखने छथि । कुलपति कण्व ब्रह्माण्डक वर्णन करैत छथि । हम एहि अध्यायक मात्र एकटा चौपाइ एतय प्रस्तुत कए रहल छी जाहिमे पृथ्वीक चाक पर घुमबाक वर्णन अछि-

भादव भदबा सीमी वारि, केरा रोपी दीन विचारि ॥
जौँ नहि बरिसए अगहन मेघ, कटहर गाछ कें होए घेघ ।
कहथि 'डाक' जौँ होए पानि, टुटल ठारि कह गाछ कानि ॥
गूआ गोबर बाँसहि माँटि, बाँझ नारिकेरि सिक्कठि काटि ।
ओलमे कुरकुट छाँहे मान, बढ़ए फलए ई 'डाक'क गान ॥
डुमरी पीपरि पाकड़ि बढ़, असमय फूलए देख पड़ ।[35]

विविध प्रसंग :

किछु विविध प्रसंगक डाकक वचन सेहो देखल जाए जे कतेक रोचक आ सटीक बुझि पड़ैत अछि –

बाभन कुत्ता हाथि, तीनू जातिअहिँ खाथि ।
कायथ कौआ रोड़, तीनू जाति बटोर ॥
सए मे एक सहस्र मे काना, सबा लाख मे इँच्चा ताना ॥
इँच्चा ताना कहए पुकारि, हम मानल कुइरा सँ हारि ॥
खिचड़ी संग जे मछरी खाए, मुइला बहुक नैहर जाए ।
बाट चलैत जे गाबए गीत, कहए 'डाक' ई तीनू पतीत ॥
बाती ठकनहि माष तिले, कहि गेल 'डाक गुआर' ।
चैत तुए तीनि लए मोए, कहहिँ 'डाक' रौदी होए ॥
दिनमे बदरा राति मे निबदर, बह पुरबैआ हबर हबर ।
कहहि 'डाक' बिआ जनु खोअह, धानक खेतमे राहड़ि बोअह ॥[36]

प्रश्नोत्तर :

कखनहुकँ देखबामे अबैत अछि जे जोतखीकँ यजमान प्रश्न करैत रहैत छथि आ जोतखी आँखि मूनि जवाब दैत रहैत छथि । डाक ओकर सूत्रक कथन करैत छथि जे कोना ओहि प्रश्नक जवाब देल जाइत अछि, अवलोकनीय थिक–

पुछनिहार श्रोताक नामाक्षर, तिथि दिन मास नक्षत्र एक कर ।
रावणक मुहें भाग करू, शेष अंक सौँ फल उचारू ॥
सात पाँच तीनि मंगल बात, नओ एक सिर्□ हाथे हाथ ।
छओ चारि मे कार्य किल, दुइ आठ नाशे काज सकल ॥
प्रश्नकर्ताक नाम जत अक्षर, जतबा मात्र फराक कय धर ।
अक्षर दोगुन चौगुन मात्र, सब मिलाय करी एकत्र ॥
तीनि अङ्क सौँ भाग कए देख, शेष बाँचए फलक लेख ।
एके शीघ्रे दुइ फलमे देर, शून्ये नाशे 'डाक'क फेर ॥[37]

फरकल अंग यु□ ठनि गेल ।
बड़ बड़ यो□ा दुहुदिशि भेल ॥[9]

तेजनाथ झा कृत 'रामजन्म' मे रामजन्मक समयमे शुभ लग्न तथा प□चशुभ ग्रह योगक वर्णन कएल गेल अछि । द्रष्टव्य थिक –

कर्क लग्न अति मंगल दाय ।
उच्चस्थान पाँच ग्रह पाय ॥
मधु सित नवमी तिथि परधान ।
रामजन्म लेल कृपानिधान ॥[10]

एतय रामजन्मक समयमे लग्न कर्क पाँच ग्रह शुभ स्थानमे तथा वसन्त □तु (चैत) केर शुक्ल नवमी तिथि छल जे अवतारी पुरुषक हेतु विहित समय थिक ।

'श्रीरामकथा' मे उषा चौधरानी रामसीताक विवाहक अवसर पर किछु गुनक चर्चा करैत छथि । द्रष्टव्य थिक–

सगुन हेतु दही माछ देखाबए,
आबए अहीर मलाहो ।
आशीष देल बूढ़ बढ़ानुस,
वर कनि□ाँ केर खूब भला हो ।'[11]

एहि तरहेँ देखैत छी जे मैथिलीमे खण्डकाव्यक संख्या कम नहि आ किछुमे तऽ निर्विवाद कमोवेश ज्योतिषक संदर्भ समाहित अछिए ।

संदर्भ :

1. उत्तरा : सुमन, पृ० 52
2. तत्रैव, पृ० 33
3. शकुन्तला : दामोदर लालदास, पृ० 33
4. कर्ण-कंसवध : अच्युतानन्द दत्त, पृ० 25
5. तत्रैव, पृ० 21
6. द्रोहाग्नि : लोकपति सिंह, पृ० 18
7. सावित्री-चरित्र : श्री ब्रजमोहन ठाकुर, पृ०- 11
8. पारखी-प्रसून : जनार्दन झा 'पारखी', पृ०-26
9. धृतराष्ट्र विलाप : रमापति चौधरी, पृ० -7
10. रामजन्म : तेजनाथ झा, पृ० 6
11. श्रीरामकथा : उषा चौधरानी

l

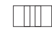
षष्ठ अध्याय

मैथिली मुक्तककाव्यमे ज्योतिष

पूर्वहुमे उल्लेख कएल गेल अछि जे मैथिलीक बहुतो साहित्यकार लोकनि मूलतः संस्कृत पंडित रहल छथि तेँ हुनका लोकनिक काव्यमे ज्योतिष तत्त्व भेटबे करत। एहि क्रममे ज्योतिरीश्वर, विद्यापतिसँ लए अर्वाचीन महाकाविक काव्यमे ज्योतिष तत्त्वक अन्वेषण कएल गेल । अर्वाचीन पंडित लोकनि मैथिलीमे मात्र महाकाव्य, खण्डकाव्येक निर्माण धरि सीमित नहि रहलाह । ओ लोकनि अनेकानेक मुक्तकक रचना कएलनि आ हुनकासँ प्रभावित भए मैथिलीक अन्यान्यो साहित्यकार सभ एहन रचना कएलन्हि जाहिमे ज्योतिषसँ संबंधित विषय-वस्तुक उल्लेख भेटैत अछि ।

जोतखी माने भविष्यवक्ता । आइयो लोक जोतखीक खोज करैत अछि भविष्य बुझबा ले' आ प्राचीनो समयमे ई परम्परा छल । पर्वतराज हिमालय सेहो पार्वतीक विवाह समयमे नारदजीसँ पार्वतीक हाथ देखओथिन आ ओ भविष्यक कथन कएलन्हि । तहिना सावित्री जखन सत्यवानकेँ वरण करब निश्चय कएलथिन तऽ पुरोहितकेँ बजाए पूजापाठ शुरू भेल मुदा नारदजी भविष्यक कथन कए सभकेँ हतोत्साहित कए देलनि । कविचूड़ामणि मधुपक बटसावित्रीक ओहि अंशक अवलोकन कएल जाए जतए भविष्य कथन कएल गेल अछि-

देवी देवक पुनि-पुनि पूजन पुरहितसँ करबौल ।
गे माई, मङ्गलमय ऐ अवसर पर मुदमानस 'मधुपो' गौल ॥



नारद मुनि ताही छन रे वीणा बजबैत ।
अबि गेला, मोदित नृप रे सब काज तजैत ।
वन्दन अभिनन्दन कय रे पूछल नत माथ ।
केहन भविष्य विवाहक रे कहि करिअ सनाथ ॥

गिरगिट खसब :

एहिना देह पर गिरगिट खसने लोक गंगाजल लए लैत अछि आ डेरा जाइत अछि जे आब की होएत, मुदा गिरगिट खसने अधलाहेटा नहि होइत अछि । एहि प्रसंग डाकक वचन देखल जाए-

पल्ली खसए जोँ सरटा चढ़ए, एहि विधि फल 'डाक' पढ़ए ।
मस्तक खसए तोँ राजाश्री होइ, भलहिँ ऐश्वर्य्य कहए सबकोइ ॥
कानहि खसने भूषन लाभ, आँखि पर खसने बन्धु मिलाप ।
नाकपर खसने सुगन्धि देआबए, मुखपर खसने मिष्टान्न खोआबए ॥
कण्ठहिँ श्री हो धाबाधाइ, बाहु पर खसने विभव बधाइ ।
बाहुमूल मे होए समृ□, हाथ दुनू पर धनक बृ□ ॥
स्तनमूल मे सुन्नर भाग, हृदय खसय तौँ सौख्य सोहाग ।
पीठपर खसय तौँ पृथ्वी प्राप्ति, पाँजरहि खसने बन्धु मिलाप्ति ॥
डाँढ़ पर खसय तौँ लाभ होय वस्त्र, गुह्यमे खसने मृत्यु अवश्य ।
जाँघपर खसने धनक हानि, गुदमारगहि रोगभय आनि ॥
ऊपर खसय तौँ वाहन आब, जानुजंघमे धन चल जाब ।
पाएर पर खसने रटना होअ, कहथि 'डाक' एहिविधि फल होअ॥
एहि पल्ली चढ़ू नरतन जाय, सरट खसए जोँ ओहि विधि आय।
फलहुक उलटा करितहुँ जानि, 'डाक' कहै छथि युक्ति बखानि ॥
रातिमे जोँ पल्ली चढ़ए, सरटक खसने 'डाक' पढ़ए ।
मरन निमित्तक होबए, नहि तोँ व्याधि अवश्य होई ॥
खसितहिँ यदि ऊपर चढ़ि जाय, खसने नीक चढ़ए ने सोहाय ।[34]

वृक्षारोपण :

डाक गाछ रोपबाक सेहो दिन कहने छथि । खास कए केराक हेतु कहने छथि जे सीमी भादव आ भदवामे नहि रोपी । 'सी' एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी, प□चदशी तथा 'मी' सँ प□चमी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी । तात्पर्य जे केरा रोपबा ले' तिथि भेल- पड़ीव, द्वितीया, तृतीया, चौठ एवं षष्ठी आ ताहूमे भदवा नहि हो तथा भादव मास । डाकक वचन द्रष्टव्य थिक-

कहय 'डाक' तोँ सुनह रावन, केरा रोपी आषाढ़ सावन ।
तीन सए साठि जे केरा रोपए, आबि निचिन्त घरहि भए सुतए ॥
केरा रोपी काटी नहि पात, केरे देतहु धोती भात ।
फागुन केरा रोपल जाय, मास मास फल बैसल खाए ॥
फागुन केरा ई चुत चैत, कातिक ओन कहि तार ।
तीनि विलत्ते तेरह हत्थे, तीनि मासे तीनि दिने ॥

की होइ राजा की होइ दीवान, कहहि 'डाक' जे परम सुजान ॥
बड़दा वनचर भरल छैल, वेश्या राजा देवता शैल ।
कहहिँ, 'डाक' यात्रा करु जानि, गेलहुँ लक्ष्मी देतहुँ आनि ॥
भरती सँ खाली भला, जोँ जल भरने जाय ।
कहहिँ 'डाक' सुनू 'भाँडरी', यात्रा अति सुखदाय ॥
कनकट बुचकट काटल केश, बाट चलैत जौं लागय ठेस ।
केओ पूछए जाएब कतए, भेलो काज विनाशय ततए ॥
खाटक खटखट पुरुषक वान, बाट बैसल जौं बूढ़ि अकान ।
तीनि कोश पर जोँ भेटए तेलि, विधवा बाह्मणी मिलए अकेलि ॥
तापर भेटए विप्र जोँ काना, ब्रह्म टेक धरि बचए न प्राना ।
नग्न भग्न गुरविणी जोई, खट फकसिआर जोँ आगाँ होई ॥
सुखे हाड़ लए श्वान जोँ चाभए, कहहि 'डाक' जे मरण देखाबए ।
फुटल घैल ओ टुटल खाट, बाट चलैत व्यास काटल बाट ॥
यात्रामे जोँ खसए पाग, ई सब ताकथि स्वर्गक बाट ॥
खेत भिखारी गाम सराउ, फेरि पलटि अपन घर आउ ।
काटल कपचल थकड़ल केश, बाट चलैत जोँ लागए ठेस ॥
बाभन मे जोँ भेटए कान, ब्रह्मलोक धरि बचए न प्रान ॥
उजड़ल बसबह जएबह कोन भाति, दिनमे पूरब पच्छिम राति ।
गोधुलि दक्षिण उत्तर ऊषा, कहए 'डाक' ई सुखमसुखा ॥[32]

छिक्का विचार :

सामान्यता लोक छिक्का सुनि सहमि जाइत अछि, यात्रा पहर रुकि जाइत अछि। शुभ कार्यमे नहि सुनी तेँ नाना प्रकारक बाजा बजैत अछि । मुदा ई छिक्का बहुत तरहेँ नीको छैक । देखल जाय डाकक कथन जे कोन दिशाक छिक्का नीक अछि कोन अधलाह–

एहि वधि पल्लीक बजबो जान, छिक्कहुँ मे कह 'डाक' बखान ॥
दक्षिण छीके धन लए छीजए, नै□त कोन सिंहासन दीजए ।
पच्छिम छीके मीठ भोजना, गेलहुँ पलटए वायब कोना ॥
उत्तर छीके मान समान, सर्व सिर्□ लए कोन ईशान ।
पूरब छिक्का मृत्यु हकार, अग्निकोन मे दुःखक भार ॥
सबकेर छिक्का कहि गेल 'डाक', अपने छीक्कहि नहि करु काज।
आकाशक छीके जे नर जाय, पलटि अन्न मन्दिर नहि खाय ॥
कार्यारम्भ मे छीके कोई, सुनकर मन्त्र विचारहु सोई ।[33]

एकेटा बच्ची ई रे मम प्राण अधार ।
किछु अविदित अपनेसँ रे नहि, कह संसार ॥
सुनि, मुनि गुनि धुनि कहलनि रे नृपकेँ तै काल ।
'मधुप' योगबलसँ जे रे जानथि सब हाल ॥
सत्यवान सब तरहेँ रे सावित्रिक योग ।
किन्तु धिया करती नहि रे चिरदिन सुख भोग ॥
वर्ष व्याहकेर पुरितहिं रे ओ तेजि शरीर ।
स्वर्ग जेता सबकेँ कय रे हे नृपति ! अधीर ॥
तेँ कर आन करक थिक रे बुझि विधिक विधान।
बोधि धिया तेजिअ ई रे जे अछि उत्थान ॥
गप सुनितहि नारद केर हे नृप बेथित महान ।
'मधुप' खसलि रानी तहँ रे भऽ झूर झमान ॥[1]

कविवर सीताराम झा जोतखीये छलाह । ओ भूकम्पक जे भविष्यवाणी कएलन्हि अछि से वस्तुतः ध्यातव्य थिक । ओ भूकम्पक जे कारण कहैत छथि से द्रष्टव्य थिक–

जखन कुगर्भक विकृत बह्नि जल वायु बढ़ै अछि ।
रविक राशि पुनि जखन पाँच ग्रह आबि चढ़ै अछि ॥
यदि वा रविशशिबिम्ब निकट पृथिवीक रहै अछि ।
भूगर्भस्थ विकार तखन बहराय चहै अछि ॥
दैव प्रभावैँ होए से, भूमि फोड़ि बाहर ततै ।
धर्म विमुख जन होए वा, नृप कुनीति रत हो जतै ॥[2]

कविवर भूकम्पक समयक चित्रण तऽ करितहि छथि संगहि ओकर लक्षणक सेहो उल्लेख कएलन्हि अछि । द्रष्टव्य थिक–

□तुपरिवर्तनसमयमे, भूकम्पक अछि लेख ।
मकर-मेष-कर्कट-तुला संक्रम निकट विशेख ॥[3]

प्रो० सुरेन्द्र झा 'समुन' सेहो ज्योतिषाचार्य नहियो रहैत जोतखी छलाह । मिथिला पंचांगक निर्माता रहबे रहथि । हुनक फुटकरो रचनामे ज्योतिषक प्रभाव भेटबे करत । देखल जाउ 'अन्तर्नाद'क ई नाद –

छथि प्रतापादित्य ग्रस्ते,
गुप्त चन्द्र कुमार अस्ते ।
विग्रही ग्रह राहु केतुक,
तिमिर चीरय जा रहल छी ॥[4]

एतय सूर्यग्रहणक संकेत अछि आ से कहल गेल अछि 'चन्द्रकुमारक अस्ते' अर्थात् सूर्यग्रहण अमावस्याकेँ होइत छैक जाहि दिन चन्द्रमा पूर्णतः अस्त रहैत छथि–

अमावस्या त्वमावस्या दृष्ट सूर्येन्दु संगमः ।

प्रतिपदाक एहि अंशकेँ देखल जाए–

हुनक रेवती प्रिया हन्त भवदा धरि बारलि एक ।
आर्द्रासँ स्वाती धरि अनुगामिनी अहाँक अनेक ॥[5]

एतय सुमनजी हलधर बलरामक हलधर किसानसँ तुलना करैत छथि जे बलरामकेँ एकटा रेवती प्रिया सेहो हन्त आ किसानकेँ आर्द्रासँ स्वाती धरि दशो नक्षत्र जे स्त्री संज्ञक थिक । ध्यातव्य थिक जे सुमनजी मात्र स्त्री संज्ञक नक्षत्रक प्रयोग कएलन्हि अछि करण जे अनुगामिनी कहैत छथि । स्वातीसँ चारि नक्षत्र (विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल) नपुंसक संज्ञक थिक आ शेष पुरुष संज्ञक ।

सुमनजी निर्जीवोकेँ सजीव बनाए दैत छथि । ओ श्मशानकेँ पटु ज्योतिर्विद् मानैत छथि । जेना कोनो पटु जोतखी यज्ञक पूर्णाहुतिक हेतु साकल्य सामग्रीक संकलन पहिनहि कए लैत छथि तहिना श्मशान सेहो यज्ञक हेतु कोन-कोन सामग्रीक संकलन कएलन्हि अछि से द्रष्टव्य–

□त्विक, अन्त्यज, दानीय, शिवा,
अछि यज्ञ अनुष्ठित रात्रि दिवा ।
कुश-तिल-समिधा स□चत विधान,
अहँ कर्मठ याज्ञिक हे श्मशान ॥[6]

प्राचीन पंडित वर्गक द्वारा जे काव्य सृजन मेल तनिक मुक्तको रचना पर ज्योतिषक प्रभाव स्वामाविके छल मुदा जे संस्कृतक पण्डित नहियो छथि हुनको लोकनि पर ज्योतिषक केहन प्रभाव अछि तकर हम किछु उदाहरण प्रस्तुत कए रहल छी । एहि क्रममे हम सर्वप्रथम नामोल्लेखक करब डॉ० भीमनाथ झाक जे भूकम्पक लक्षण अपन पण्डित्यपूर्ण भाषामे देने छथि से कतेक सटीक अछि–

फाड़ै छल झुण्ड-झुण्ड कार कौआ कान, कत्ता दिन सँ !
छल कनैत बेर-बेर गाम भरिक श्वान, कत्ता दिन सँ;
बीहरिसँ निकलि मूस मारय छरपान, कत्ता दिन सँ !
भऽ कऽ बदरंग अरे, उगै छल चान, कत्ता दिन सँ !

भूकम्पक लक्षण कतेक यथार्थ अछि । वस्तुतः यदि अनुभव करब तऽ भूकम्पसँ पूर्व मूस बीहरिक त्याग कए दैत छैक, चन्द्रमाक रंग बदलि जाइत छनि, कारकौआ

गमन कालमे बहए बसात, विघ्न वाधा सभो नसात ।
सुन्दर शिशु युत युवती नारि, भरल कुम्भयुत हो पनिहारि ॥
अथवा क्षेमकरी मृदुभाषी, पुस्तक हाथ व्रिप गृहवासी ।
दधि कोकिल पुनि लावा ओ मीन, ई सब नहि छथि यात्रा हीन ॥
लगहरि गाय पिआबथि बाछा, विघ्न दोष सब बिसरू पाछा ।
'डाक' अग्रजनी ई देखी, शुभ यात्रा कहथि सब लेखि ॥
चलत मार्ग मे तुरग मृग, दहिन बाम से जाय ।
'डाक' मनसि चिन्ता तजी, धन यश वार्ता पाय ॥
अजा एक अरु श्वान षट्, वृषभ एक गज सात ।
तीनि धेनु प□च महिस तेँ, यात्रा शुभ न लखात ॥
प्रात बाम दिस तितीर बाजए, पहर दुई तेँ दहिन गाजए ।
वचन मानि 'डाक'क बड़ भाई, गमन करी कुशल सो जाई ॥
उलुआ कारी पक्षी श्वान, गर्दभ गीदर वापस जान ।
बामहि भय 'डाक' जोँ चलए, धन यश इच्छा तीनू मिलए ॥
मंगलक उषा बुधक प्रात, यात्रा करी, 'डाक'क बात ।
रवि गुरु मंगल उषा जानी, आन सबहिकाँ फूसि मानी ॥
मास नखत्ता ओ तिथि बार, जत दिन मासक जोड़ि करी विचार ।
जोड़ल अंक मे सातक भाग, शेष अंक फल कहथि 'डाक' ।
एक वाँचय तँ शुभ कहि दीअ, दुह बाँचय तँ लाभ लय लीअ ।
तीनि बाँचय तँ शत्रुक क्षय, चारि काज सि□ पाँच संशय ॥
छओ मे मृत्यु शून्य जो दुःख, नीको दिनक यात्रेँ नहि सुख ॥
साँपक बीअरि स्त्रीक रज, वैद्य लवण देखि यात्रा तज ।
अपन घर जोँ धहधह जर, छिक्का हो वा पाग खसि पर ॥
कारी धन जो गर्विणी कान, ई असगुन सब 'डाक' जान ॥
रवि के पान सोम के दर्पन, मंगल किछु किछु धनिया चर्वन ।
बुध के गुड़ वृहस्पति के राई, शुक्र कहए जे दही सोहाई ॥
शनि कहए मोहि अदरक भाव, सकल काजके जीति घर आब ।
ने गुनि भदवा ने दिगशूल, कहथि 'डाक' ई अमृत समतूल ॥
गामक ठकठक बाँसक वान, हाथ मुँह दए चिल्हका कान ।
ताहू सोँ जोँ भेटए मलहारी, की होई राजा की अधिकारी ॥[31]
वामे फनिपति दहिन सिआर, दही लएह जोँ कहए गोआर ।
तकरो आगाँ जोँ भेटए मलाह, देखि मीन करी परम उछाल ॥

रवि छठि चौदहि भरणी पुख्ख, पश्चिम के थीक इएह बड़ दुख्ख।
कुज दुज दशमी बुध ओ हस्ता, उत्तर गमनी मरण अवस्था ॥
कहहि 'डाक' गमन जे करी, नाशहि प्राण कोटि विधि धरी ।
रवि मूले जे पावी अंका, सोमे श्रवणा बजाबी डंका ॥

गमन काल जोँ वाम दिश, श्यामा बोलए भूप ।
गोह सूर अरु सर्प केँ, दर्शन परम अनूप ॥
पुर पइठत जोँ बाम ते, तीतर दक्षिण जाय ।
कहए 'डाक' सकुन इएह, मिलिहेँ सब मन भाय ॥

बाम भाग मे बोलए गीदर, मन बाच्छित फल पावहुँ शीघार ।
सम्मुख दहिन जोँ बोल सियार, महाअशुभ कहए 'डाकगोआर' ॥
निश रति चहुँ दिशि जोँ बोलए, अशुभक द्वार तुरन्ते खोलए ।
रोगी रीछ सुनारक दर्शन, बामहि मलान दहिन पर्शन ॥
नीलकण्ठ केर दर्शन होए, मन वा□छित फल पाबए सोए ॥

बोलए खरहाबाम दिश, मीठो बैन सुनाय ।
बल यात्र सब शुभ लखो, अन्न धन देहि मिलाय ॥
दाहिण बोलए भय करे, आगे रोगहिँ नाश ।
पीछे बोलए गमन कर, तेजहुँ मन से आश ॥

प्रात समय मृगा बाएँ सँ, दहिन जाइत जोँ दरसए ।
साँझा समय दाएँ सँ बाएँ, मन वाच्छित फल निश्चय पाए ॥
दहिआ[30] लौंग पक्षी विशेष, दाहिन दर्शन पुण्यहि लेख ॥
वांछित फल तत्क्षण सब पाबए, कहत 'डाक' इएह फल मनभावए ।
वकुल मोर दर्शन शुभकारी, 'डाक' हे सज्जन लेहु विचारी ॥
कोकिल मुर्गा सुग्गा कही, चौथे मैना सुनहुँ ऐ सही ।
बाएँ बोलए तो शुभ होई, 'डाक' कहए मनमे लेहुँ जोई ॥

गमन काल मे श्वान यदि पटपटाबय कान ।
'डाक' कहथि जे प्राण बचए सूकुर एतबे मान ॥
मानव महिष मजार द्वय श्वान युग्म ओ कीर ।
लड़त देख यदि मार्ग मे 'डाक' कहथि तोँ फीर ॥

विप्र तीनि पुनि क्षत्री चारि, शूद्र एक रस संख्यक नारि ।
'डाक' वचन मन ई सुन धारि, वैश्य दुई प्राणहुँ सौँ मारि ॥
यात्रा काल नकुल यदि देखी, गेल काजकेँ सि□ पेखी ।
गमन समय मे काक यदि बाम भाग मे देखी ।
यश कार्य सि□ि होए अगनित धान पुनि लेखी ॥

काँय-काँय करए लगैत अछि । भीमनाथ झा कोनो संस्कृतक पंडित नहि थिकाह मुदा हुनक पाण्डित्य केहन अछि से हुनक सत्यनारायण पूजा शीर्षकसँ स्पष्ट होइत अछि । कोन जोतषी एहन पूजा करौताह । नेताजी पर व्यंग्यात्मक शैलीमे सत्यनारायण पूजाक जे प्रारूप प्रदर्शित कएल गेल अछि से प्रायः हँसबैत-हँसबैत ओकर विधि-विधानक बीज रूपक प्रदर्शन अवश्य करत । हिनक सत्यनारायण पूजाक निम्नलिखित अंश अवलोकनार्थ प्रस्तुत अछि-

पूजा पर स्वयं छथि बैसल, पुरोहित छथिन नेताजी अपनहिँ,
ओ शु□-शु□ उच्चारण कराकऽ पढ़ा रहलथिन अछि-
ओम् इहागच्छ इहतिष्ठ एतानि पाद्यादीनि
'सेन्ट' स्नानीयम् सपत्नीक मंत्रिप्रवराय नमः ।
एतानि 'बहुमूल्य' नानाविधानि वस्त्राणि
सपत्नीक मन्त्रिप्रवराय नमः ।
एष 'अम्लान' पुष्पा□जलिः सपत्नीक मंत्रिप्रवराय नमः ।
एतानि 'स्वर्ण' माल्यानि सपत्नीक मन्त्रिप्रवराय नमः ।
इदं 'ह्विस्की पेयम्' सपत्नीक मंत्रिप्रवराय नमः ।
ओम् नानाविध 'अमलेट-कटलेटादि' सपत्नीक मंत्रिप्रवराय नमः ।
इदं त्रिलक्ष 'कैशं' सपत्नीक मंत्रिप्रवराय नमः ॥
मुदा होम तँ बाँकिए रहि गेलै,
से हेतैक गऽ निशाँभाग रातिमे-
खूब धूमधामसँ, गणिकाक मचलैत आङ
लचकैत कटि, कनखैत कङ्गना
झनकैत नूपुर मादक सुरतान तथा सुरापानक बीच
लहलह करैत, लहास उठैत, कामाग्नि-मोहाग्नि-लोभाग्निक
धधरामे एक्के बेर पड़तैक समटि कऽ सभटा शाकल्य-
ओम् ठीकेदाराय स्वाहा । इदं ठीकेदाराय ।
आ प्रात भेने
हवनकुण्ड लग छीटल-छाटल अक्षत-तिल-यवादिकेँ
छिड़िया देल जेतै इलाकाक लोक सभक कल्याणार्थ ।[7]

ई सत्यनारायणक पूजा नेताजी सभक दुश्चरित्रता आ अहंकारक सूचक थिक मुदा एहिमे पूजाक विधि-विधानक बीजरूप अवश्य भेटैत अछि । एतबे नहि, नमःकेर योग मे कतहु चतुर्थी छोड़ि षष्ठी विभक्तिक प्रयोग नहि भेल अछि ।

ज्योतिषी लोकनि कहताह जे आठ वर्षक बालिका गौरी थिकीह, नओ वर्षक रोहिणी, दस वर्षक कन्यका, तदुपरान्त ओ रजस्वला भए जाइत छथि । एगारह वर्ष पुरितहि जे पिता कन्यादान नहि करैत छथि से मासे मास अपन पुत्रीक रज आ शोणित पिनिहार थिकाह-

अष्टवर्षा भवेद् गौरी नव वर्षा तु रोहिणी ।
दशमे कन्यका प्रोक्ता तत ऊर्ध्वं, रजस्वला ।।
प्राप्ते एकादशे वर्षे कन्यां यो न प्रयच्छति ।
मासि-मासि रजस्तस्याः पिता पिबति शोणितम् ।।

मंत्रेश्वर झाक रचनामे सेहो 'अष्टवर्षा' केर संकेत भेटैत अछि । द्रष्टव्य थिक-

छौँड़ा छौँड़ी, अष्टवर्षा भवेद् गौरी कतऽ
पाबी आब । तकलासँ भेटि जाथि कदाचित
अष्टादश वर्षा गौरी ।[8]

डॉ. नीता झा अपन पोथी **सामाजिक असन्तोष ओ मैथिली साहित्य**क परिशिष्टमे रविनाथ कविक अकाली कविताक किछु अंश उ□त कएने छथि जाहिमे नक्षत्र सभक वर्णन अत्यन्त मनोरंजक अछि । निम्नलिखित पंक्तिक अवलोकन कएल जाए-

रोहिणि आदि थिक बरसात । जेहि अएला तेहि गेला ।।
मिरगिसिरा मन पुरल मनोरथ । दै झीसी किछु गेला ।।
अरदारा आडम्बर भारी । गरजत है चहु ओर ।।
पुक्ख रुक्ख राखल धरती केर । भेल बरखा के ओर ।।

एहि तरहेँ कतेको अर्वाचीन कवि आ लेखक व्यंग्यात्मको शैलीमे, उपहासो-परिहासमे ज्योतिषसँ संब□ तथ्यक समावेश अपन काव्यमे कएने छथि । आवश्यकता अछि गहन अध्ययन अवलोकन कए एहि तथ्य सभकेँ एकत्र करबाक जे दुष्कर कार्य अछि । मैथिली साहित्य आब अथाह सागरक रूपमे अपन काया विस्तार कए रहल अछि । एहिमे जतेक जे डुबकी लगाएबामे सक्षम होएताह से ततेक रत्नक चयन कए सकताह ।

संदर्भ :

1. वट-सावित्री : कविचूड़ामणि 'मधुप', पृ० 7.9
2. भूकम्प वर्णन : सीताराम झा; पृ० 2
3. तत्रैव ।
4. अन्तर्नाद : सुमन, पृ० 39
5. सुमन साहित्य सौरभ; स० 'अमर', भीमनाथ झा, पृ० 22
6. तत्रैव, पृ० 23
7. नाम तँ थिक वैह : डॉ० भीमनाथ झा, पृ० 106
8. समकालीन मैथिली कविता : सं० भीमनाथ झा, मोहन भारद्वाज, पृ० 97

l

वनमँझार जे होय अनेक, निटपने रोपिअ करी सविवेक ।।
सदन समीप विटप वट होय, धन ताके तस्कर नित खोय ।

सोई तरु पुनि नगर मझार, ताहि सुखद कह 'डाक' गोआर।।
घर समीप सीमर दुख मूल, तेतरि नाशए धन केर मूल ।

पुत्र नाश भीख मँगाबए, सपनो कहि ओ सुख ने देखाबए ।।
सिरिम अशोक कदम्ब सुखदाई, हरदी अदरख परम सोहाई ।
हड़ीह आओर आमल की दोऊ, शश्य वृ□ ताके घर होऊ ।।
आगाँ केदली पाछाँ पान, वनिता बैसथि माँझ दलान ।
पुरुष सूतथि पीड़ा पाड़ि, एकसर की कर भुल्ली बिलाड़ि ।।[27]

केश कटबाक दिन -

मंगल केओ आरे पारे, केश कटाबी कहि गेल गोआरे ।
शनि मंगल के आरे पारे, केश कटाबी कहि गेल गोआरे ।।
केश कटाबी बापे पूत्ते, नहि कटाबी बापे पूत्ते ।।
जहिखन भेटए नाउ, तहिखन केश कटाउ ।।[28]

नव वस्त्र पहिरबाक दिन-

कपड़ा पहिरी तीनि दिन, बुध, वृहस्पति, शुक्र दिन ।।
शनि जारए रवि फाड़ए, सोमा करए सुडाह ।
मंगल मारए जीवसौं, बुध पहिरि घर जाह ।
नँगटे पहिरी भुखले खाई, जहाँ मन आबए तहाँ जाई ।।[29]

डाकक यात्रा प्रकरण अत्यन्त रोचक अथच उपयोगी अछि । एकर खण्डित रूप लोक कंठमे खूब पसरल अछि । एतय हम हिनक यात्रा प्रकरण प्रस्तुत कए रहल छी-

उजड़ल बसबह पुछबह ककरा, कोन दिन कोन मुँह करबह जतरा ।
भदबा के नहि जाति ने पाती, दक्षिण उत्तर दूपहर राती ।।
पुरब गोधुली पश्चिम उषा, कहहि 'डाक' जे सुखहिँ सुखा ।
शनि रवि मंगल आ गुरुबार, दक्षिण पवन करब संचार ।।
सोमे शुक्के बुधे बाम, एहि विधि लंका जीतल राम ।
शनि मंगल भोजन कय चलबह, गेलहु लक्ष्मी पलटिकए लयबह ।।
सोमे बुधे शुक्के उषा, छाड़ह जोतिषी लेखा-जोखा ।
जोइ स्वर चलए सोइ तद दीजय, कालहु सँ एक टक्कर लीजय ।।
पड़िबा नवमी शनि सोम श्रवणा, पुब्ब दिशा नहि करिअ गमना ।
अश्विनि प□जक वाण गुरु तेरह, ई सब जानि दक्षिण जनि हेरह ।।

डीहपर घर बनायब– डीह पर घर बनयबाक हेतु डाकक वचन द्रष्टव्य थिक–

अक्षर दोगुन चौगुन मात्रा, पूछौँ कन्ता गामक वार्ता ।
गामेँ नामेँ एक करी, तामे साते भाग धरी ।
बेरि बेरि छठबो पाबह मोरे, गेलो बित्त पलट्टे तोरे ।
एक शुन्य जौँ पाबए चारी, छाड़ह गाम कि होबए मारी ।
तीजै पाचै मान समान, कहथि 'डाक' ई गाम प्रमान ।[24]

ग्रहदशाक अनुसार गृहनिर्माण–

आइ काल्हि जन्मकुण्डली गुनाय सभ क्यो ई बुझबाक प्रयास करैत छथि जे कोन महादशा अन्तर्दशा चलि रहल अछि । एतय डाक ग्रहदशाक अनुसार गृहनिर्माणक शुभाशुभ फल पर प्रकाश दैत छथि–

रवि कर कलह धन शनिवार, मंगल मरण कहल गोआर ।
बुध मे धन बिहफे हो सिर्ि□, शुक्रहि भोजन हो बहु वृर्ि□ ।
शनि हो रोग शोक ओ हानी, कालक दशेँ मरण केँ जानी ॥[25]

अशुभ वृक्ष– घरक लगमे सिमरि, तेतरि, तार, तूति, डूमरि, वड़, जामुन, अड़िरी नहि लगाबी । ई नाश करएवला थिक । देखल जाए–

सिमरि तेतरि आ पुनि तार, तूति डूमरि अरु वट विस्तार ।
जामुन अड़िरी गाछ जोँ होए, 'डाक' नाशए पुनि सोए ।[26]

शुभ वृक्ष– घरक लग ई वृक्ष सभ लगएबाक थिक–

सदन समीप नारिअल होई, गृह बहुत धन पाबए सोई ।
घरक ईशान पूब जोँ पाबए, ताके घर बहु पुत्र बढ़ाबए ॥

पूरब दिशा आम यदि होय, धनदायक 'डाक' कहए सोय ।
बेल पनस बदरी अरु नेहू, पूरब रहबे प्रजा बड़ धेनू ॥

इएह सब वृक्ष दक्षिण जो होय, अन धन लक्ष्मी बढ़ावए सोय ॥
जामुन दाड़िम पूरब आशा, बन्धु बहुत ताके परगासा ।

घरकेँ दछिन इएह तरु जो होय, ताके बहुत मित्रकर सोय ॥
दछिन पछिम पूगी होय, ताके बहुत हर्ष सोय ।

जोँ ईशान दीश ई तरु होय, प्रजा बढ़ए बहुत सुख होए ॥
चम्पा तरु पूरब जोँ होय, अन धन लक्ष्मी बढ़ि होय ॥

तुम्बीफल अरु कर्क्कारु, कुम्हड़ भण्टा सब दिश चारु ॥
लता समीप सदनकेँ होय, कबहुने दुष्ट बढ़ाबए सोय ॥

सप्तम अध्याय

मैथिली ज्योतिषकाव्य : डाकवचन

डाकवचन :

डाकक वचन ततेक ने लोकप्रिय भेल जे मिथिलाक बच्चा–बच्चा हुनक नाम जानए लागल । ई जोतखी छलाह, पंडित नहि । सामान्यतया मिथिलामे जोतखी आ पंडित कहल जाइत छैक । पंडित धर्मशास्त्रवेत्ता भेलाह आ जोतखी गणक । ई गणना कए भविष्यक निर्देश दैत छथि । डाक मिथिलाक रत्न छलाह जे पंडितक नहि, सामान्य वर्गक भाषामे सामान्य जनकेँ दिशा निर्देश दैत छलाह । ओ स्वतः अपनाकेँ **'गोआर'**[1] कहने छथि आ से गर्वपूर्वक । आइ अनपढ़ो लोकक मुहसँ सुनबामे अबैत अछि –

केरा रोपी सोचि विचारि ।
सीमी भादो भदवा वारि ॥

डाक पंडितसँ बेसी किसानक हेतु विचार कयने छथि । डाक ततेक ने लोकप्रिय भेलाह जे विद्यापतिये जकाँ हिनको लोक (अन्य प्रान्तीय) अपनयबाक प्रयास कयलक। यू०पी०बला हिन्दीभाषी मानए लगलाह । मैथिल डाकक संबंधमे पी०इ०एन०क पत्रिका लिखैत अछि–

At the recent Nagpur Session of the All India Oriental Conference Shri Jivananda Thakur's Paper on Dak was read. It gives several new arrangements for Dak's having been a Maithili poet and quotes a number of Dak's verses form very old manuscripts in Shri Thakur's possession and in the Raj Darbhanga Library.[2]

डाक मैथिल छलाह जे हिन्दीमे घाघक रूपमे प्रख्यात छथि । हमरा डाककेँ मैथिल प्रमाणित नहि करबाक अछि कारण जे ओ कार्य पूर्वहिक विद्वान् लोकनि कए चुकल छथि । हम एतय डाक–वचन ज्योतिष ग्रन्थ थिक आ से मैथिली काव्यक माध्यमे ग्राह्य अछि, एतबे धरि विचारक कोटिमे राखब ।

मैथिलीमे डाकवचन एकटा एहन उपयोगी ज्योतिष काव्य थिक जे घर–घरमे जोतखी बनाए देलक । पंडित तऽ पंडिते जे मूर्ख सँ मूर्ख, बच्चा सँ बच्चा, वृ□ा सँ वृ□ा सबहुकेँ पंचाङ्गक सामान्यो परिचय तऽ अवश्य कराए दैत अछि । ई ततेक ने सरल भाषामे बुझओने छथि जे सामान्य जनहुक मानस पटल पर सहजहिँ अंकित भए जाइत अछि । एहि ज्योतिष काव्यक अवलोकन कएल जाए–

तिथि – जहिना बच्चा–बच्चा सप्ताहक सातो दिनक नाम बुझैत अछि तहिना पड़ीव सँ प□चदशी (अमावस्या वा पूर्णिमा) सभ बुझैत अछि । एहि तिथिकेँ पाँच भागमे विभक्त कएल गेल अछि–

1. नन्दा – पड़ीव, षष्ठी, एकादशी ।
2. भद्रा – द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी ।
3. जया – तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी ।
4. रिक्ता – चौठ, चतुर्दशी, नवमी ।
5. पूर्णा – पंचमी, दशमी, प□चदशी ।

एकरा *'डाक'* कोना काव्यात्मक ढंगसँ कहलनि अछि, से देखू–

पड़िबा, षष्ठी एकादशि नन्दा, द्वितीया सप्तमी द्वादशि भद्रा ।
तृतीया अष्टमी त्रयोदशि जया, चौठ चतुर्दशि नौमी रिक्ता ॥
प□चमी दशमी प□चदशी अमा, कहथि 'डाक' ई पूर्ण समा ॥[3]

सिद्धि□योग – कोनो विशिष्ट कार्य करबामे, यात्रामे लोक योगक विचार करैत अछि । सिद्धि□योग, अमृतयोग उत्तम थिक । मृत्युयोगमे लोक कोनो शुभ कार्य नहि करैत अछि, विशेषत: यात्रा निषि□ अछि । एतय कोन दिनमे कोन तिथि भेलासँ सिद्धि□ योग होइत अछि से डाकहिक शब्दमे सुनल जाय–

शुक्रक पड़िवा एकादशि होई, सिद्धि□ योग कह षष्ठी सबकोई ।
बुध वासर जौँ भद्रा पाबै, सि□योग तेहि जगमे गाबै ॥
जया तिथिहि जौं मङ्गल होय, सिद्धि□ योग मन मानिय सोय।
शनि दिनमे रिक्ता जौँ आबै, सिद्धि□योग गुनिजन तेहि गाबै ।
पूर्णा तिथि गुरुवार जानि, सिद्धि□योग कह 'डाक' बखानि ॥[4]

अर्थात् शुक्रकेँ नन्दा (पड़ीव, षष्ठी, एकादशी), बुधकेँ भद्रा (द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी), मंगल तथा रविकेँ जया (तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी), शनिकेँ रिक्ता (चौठ, नवमी, चतुर्दशी) तथा गुरुकेँ पूर्णा (प□चमी, दशमी, प□चदशी) तिथि पड़ने सिद्धि□योग होइत अछि ।

हेतु विषम वर्ष उपयुक्त थिक । एहिमे शुक्रक विचार महत्त्वपूर्ण होइत अछि अर्थात् सम्मुख दक्षिण शुक्र वर्जित थिक । द्रष्टव्य थिक–

विषम वर्ष घट अलि आ मेष, मिथुनक रविएँ दुरागमन देख ।
मृदु ध्रुव क्षिप्र चर ओ मूल, शुभ वासरमे करि समतूल ॥
रवि गुरु शु□ जानिकेँ कही, दक्षिण सम्मुख शुक्र छोड़ि रही ।
शुक्ल पक्षमे करिअह जानि, 'डाक' कहै छथि समय बखानि ॥[20]

बधूप्रवेश– कन्यादान, द्विरागमनक पश्चात पतिगृह बधू अबैत छथि । एकरहु समयक महत्त्व अछि । द्विरागमन दिन सामान्यतया बधू प्रवेश होइत अछि । द्विरागमन सोलह दिनक भीतर वर्षाभ्यन्तर, विषम मास आ विषम वर्षमे होइत अछि । द्रष्टव्य थिक–

करी विवाह दिन सोलह मध्ये, विषम मास ओ वर्षहि सध्ये ।
हस्त आदिकेँ तीनि नखत्ता, मघा ब्रह्म युग पुष्य धनिष्ठा ॥
श्रवणा उत्तर अनुराध, अश्विन रेवती बधू प्रवेश साध ।
गुरु शुक्र चंद शनीचर दीना, कहथि 'डाक' बधु प्रवेस नबीना ।
आठ षाट बुधबार, रित्तहुँ त्यागी कहथि गोआर ।
शुक्र सूर्य्यक दोष नहि लाग, चन्द्र तर बलहुँ के त्याग ।[21]

शुक्रान्धता– द्विरागमनमे शुक्रान्धताक विचारक प्रधानतासँ होइत अछि । एहि प्रसंग डाकक वचन ध्यातव्य थिक–

रेवतीसौँ मृगसिरा पर्यन्त, यावत दिन धरि चन्द्र उगन्त ।
तत दिन शुक्र अन्ध भय जाथि, वर द्विरागमन करौलेँ जाथि ॥
सम्मुख दक्षिण कहथि 'डाक'...,
सम्मुख शुक्र पीठ दिश बुध, ऐहना समयेँ दैत्यगुरु शु□ ।[22]

डीह गुनब– सभकेँ प्राय: अपन जीवनमे घर बनएबाक काज होइत छैक । कतोककेँ नवस्थान पर डीह बनबए पड़ैत छैक । एहिमे लोक स्थानकेँ गुणबायकेँ घर बनबैत छथि । द्रष्टव्य थिक–

करन समान नापि कए काठी, दीर्घ प्रमान नापि कए बाँटी ॥
एके हाड़ दूजे चमार, तीनेँ विप्र चौठे शूद्र ।
पाँचे यम छठेँ क्षत्री, साते योगी आठेँ धुन ॥
हाड़ी पहिराबए साड़ी, चमार लय जाय काढ़ी ।
विप्र विधिन आनीबो, शूद्र बहुत धन देबो ।
यम पड़ीबो रोगी, क्षत्री करीबो भोगी ।
योगी करए अन्न दूना, घूना करीबो सूना ।[23]

सरस्वतीक पूजा कए बच्चाकेँ खड़ी हाथमे दिऐक । द्रष्टव्य थिक-

सौम्यायन शुभ कालहिँ जानि, पाँचम वर्षमे खड़ी आनि ।
गणपति विष्णु सरस्वती मा, पूजय कर शिशु अक्षर कामा ।[17]

उपनयन- उपनयनक दिनक संबंधमे डाक कहैत छथि जे ब्राह्मणकेँ गर्भाष्टम, क्षत्रीकेँ एगारहम आ वैश्यकेँ बारहम वर्ष शुभ थिकैक । पुनः क्रमशः सोलह बाइस आ चौबीस वर्ष धरि दिन होअए । एहिमे गुरुशु□क विचार आवश्यक छैक द्रष्टव्य थिक-

गर्भाष्टम बाभनकेँ काल, एगारह वर्ष क्षत्री केर लाल ।
बारहम वर्षे वैश्य केर बाल, मनुष्य समय हेतु सबहि बेहाल ॥
सोलह बाइस चौबीस पर्यन्त, क्रम सौँ ब्रात्यसावित्रीक अन्त ।
वर्षशु□ कह 'डाक' गोआर, पाँच सौँ सातहुँ करी बिचार ॥

मकर कलस मछली अरु मेष, वृष मिथुन मे धरु व्रत भेष ।
द्वितीय तृतीय पंचमी शुभबार, दशमी एकादशी द्वादशि आर ॥

सन्ध्या गलग्रह अन्ध्या त्याग, कृष्णपक्ष ओ ग्रहणक भाग ।
गुरु दुनूके शु□ करि जानि, धर्म्मशास्त्र सँ होए बखानि ॥

आर्द्राश्लेषा जेष्ठा मूल, रोहिणि उत्तर तीनि समतूल ।
मृगचित्र रेवति अनुराधा, हस्त पुष्य अश्विनी ब्रत साधा ॥
दिति त्यागि तीनू पूर्व्वा जान, 'डाक' कहथि उपनयनक मान ।
श्रवण पुनर्ब्बसु स्वाती, कहथि 'डाक' उपनयनक पाती ॥[18]

कन्यादान - कन्यादानक हेतु रोहिणी, रेवती, मूल, स्वाती, मृगशिरा, अनुराधा, हस्त नक्षत्रकँ द्वितीया, तृतीया एकादशी इत्यादि तिथि भेने उत्तम दिन थिक । पुनः दग्ध, मासान्त, इत्यादिकेँ त्याज्य कहैत छथि ।

देखल जाओ डाकक वचन -

सम्मुख दक्षिण दोष नहि हो, कहथि 'डाक' एक युक्ति इहो ।
मामा फाबए जेठ आषाढ़, कन्या विवाही कहथि गोआर ।
रोहिणि रेवति मूल ओ स्वाती, मृग मग्घा अनुराधा हाथी ।
द्वितीय, तृतीय पासा एगारह, तिथिकेँ उत्तम जानि विचारह ॥
पन्द्रह तीस चौदह नौ चारि, त्यागि मध्यम कह शेष गोआर ।
रवि कुज शनि बासरकेँ जोड़ि, अधपहरा भद्राकेँ छोड़ि ॥

दग्धतिथि मासान्तहि त्यागि, करी विवाह शुभ शुभकेँ जागि ।
जौँ कन्या नहि रखबा योग, शु□ जानि करु विवाह सुभोग ।[19]

द्विरागमन- विवाहोपरान्त द्विरागमनक हेतु शुभ दिन देखल जाइत अछि । एहि

निन्दित योग- एकरा मृत्युयोग सेहो कहल जाइत छैक । मृत्युयोगमे लोक कोनहु शुभ कार्य नहि करैत अछि । खास कए यात्रामे तऽ विशेषतः वर्जित अछि । डाक स्पष्ट रूपेँ कहने छथि जे रवि एवं मंगलकेँ नन्दा (पड़ीब, षष्ठी, एकादशी) शुक्र एवं सोमकेँ भद्रा (द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी) बुधकेँ जया (तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी), वृहस्पतिकेँ रिक्ता (चौठ, नवमी, चतुर्दशी) तथा शनिकेँ पूर्णा (प□चमी, दशमी, प□चदशी) भेला सँ मृत्युयोग होइत अछि । द्रष्टव्य थिक-

रवि मङ्गलमे नन्दिका, भद्रामे शुक्र चन्द्र ।
बुधमे जया गुरू रिक्ता, शनि पूर्णा अति मन्द ॥[5]

दग्धतिथि - एक मासमे दूटा तिथि दग्धतिथि कहबैत अछि । एहि दग्ध तिथिमे कोनो शुभ कार्य नहि करबाक थिक । कहल जाइत अछि जे एहि तिथिमे जँ विवाह होअए तऽ नारी विधवा होएत, व्यापार शुरू होअए तऽ पूँजी समेत घाटा, कृषि कार्यारम्भ भेने कृषिक विनाश, यात्रामे मृत्यु अवश्यम्भावी, एतेक धरि जे इन्द्रहु सन पराक्रमी शिशुक यदि एहि तिथिमे जन्म होएत तऽ ओ बाँचत नहि । द्रष्टव्य थिक-

द्वितीया च धनुर्मीने चतुर्थी वृष-कुम्भयोः ।
मेष-कर्कटयोः षष्ठी कन्या-मिथुनगाष्टमी ॥
दशमी वृश्चिकके सिंहे द्वादशी मकरे तुले ।
एतास्तु तिथियोः दग्धाः शुभे कर्मणि वर्जिताः ॥[6]

ई तऽ भेल दग्धतिथि आ परिणाम देखल जाय-

विवाहे, विधवा नारी वाणिज्यं मूलनाशनम् ।
कृषिकर्म विनाशः स्यात् यात्रायां मरणं ध्रुवम् ॥
एभिर्यातो न जीवेत्तु यदि शक्रसमो भवेत् ।[7]

दग्धतिथिक संबंधमे डाकक वचन द्रष्टव्य थिक-

मेष कर्क केर षष्ठी होई, धनुषमीन द्वितीया जोई ।
वृष कुम्भ चतुर्थी जान, अष्टमि कन्या मिथुनहि मान ॥
वृश्चिक संह दशमी मान, मकर तुलामे द्वादशी गान ।
एहि विधि तिथिकेँ दग्ध कही, शुभ कारज सब छोड़ि रही ॥[8]

उपर्युक्त पद्यानुसार मेष-कर्क (वैशाख-साओन) केर षष्ठी, धनु-मीन (पूष-चैत) केर द्वितीया, वृष-कुम्भ (जेठ-फागुन) केर चौठ, मिथुन-कन्या (आषाढ़-आसिन) केर अष्टमी, वृश्चिक-सिंह (भादव-अगहन) केर दशमी तथा मकर-तुला (माघ-कातिक) केर द्वादशी तिथि भेने दग्धतिथि कहबैत अछि ।

तारा- नक्षत्र 27 गोट होइत अछि (अभिजितकँ छोड़ि) । तारा ज्ञान करबाक हेतु

जन्मनक्षत्रसँ इष्टनक्षत्र धरि गनि कए नओसँ भाग देल जाइत अछि । एहि तरहेँ एक–सँ नओ धरि तारा कहबैत अछि, जे शेष बाँचए से तारा भेल । द्रष्टव्य थिक–

जन्म नक्षत्रसँ इष्ट नक्षत्रा, गणना करि धरि देखिअ पत्रा ।
जतबा अंक एकट्ठा भेल, तकराकेँ नवसँ भजि लेल ।
शेष बाँचय से तारा जान, कहए 'डाक' नाम गुण फल मान ।[9]

तारा नाम – नओ ताराक नाम थिक– जन्म, सम्पत, विपत, क्षेम, प्रत्यरि, साधक, बध, मित्र, अतिमित्र । डाकक शब्दमे देखल जाए–

जन्म सम्पत्ति विपत्ति अरु क्षेम, प्रत्यरि साधक वध सुनु नेम ।
मित्र ओ अतिमित्र तारा नाम, 'डाक' कहथि फलके धाम ।[10]

चन्द्रमा– जन्म राशिसँ जाहि दिनक गणना करबाक हो ताहि दिनक चन्द्रमाक राशि पर्यन्त गणना कएल जाइत अछि । ई संख्या 12 धरि भए सकैत अछि । चारि, आठ, बारह चन्द्रमा अशुभ थिकाह । अन्य चन्द्रमा शुभ मानल जाइत छथि ।

डाकक वचन द्रष्टव्य थिक –

जन्म राशिसँ गणना करी, ओ ओहि नक्षत्रक चन्द्रमा धरी ।
यावत अंक आबै ई विधि, चन्द्रज्ञान जानी एहि सिधि ॥
चारि आठ बारहके त्यागि, शेष चन्द्र शुभ कहिहह लागि ।[11]

चन्द्रविचार– कोन राशिक चन्द्र कोन दिशामे रहैत छथि, ताहि प्रसंग डाकक वचन द्रष्टव्य थिक–

मेष सिंह धनु पूबे चन्दा, दक्षिण कन्या वृष मकरन्दा ।
पश्चिम कुम्भ तुला ओ मिथुना, उत्तर कर्कट वृश्चिक मीना ॥[12]

डाक मिथिलावासीक मनोभावकेँ जनैत छलाह आ तेँ ओ आवश्यक सभ तरहक लोकक दैनिक उपयोगक वस्तुक संबंधमे अपन मन्तव्य देने छथि । हम एतय किछु उपयोगी दिनक संबंधमे हुनक विचार प्रस्तुत करैत छी ।

कुत्सित योगमे जन्मक फल–

शनि रवि मंगल तीनू तेखा, श्रवण धनिष्ठा ओ अश्लेषा ।
ओहि राति जँ बालक होय, मात पिता संहारय सोय ॥
आप मरै कुल भरि संहार, राशि गुनैत बाभन के मारा ।
लग्नहिँ कुजा लग्नहि सुजा, लग्नहि होबए भानु तनुजा ।
की मर जननी की मर बाप, की ओ जातक अपनहि आप ।[13]

तात्पर्य जे यदि शनि, रवि, मंगल केँ क्रमशः श्रवणा, धनिष्ठा, अश्लेषा नक्षत्र होअए तऽ ओहि दिन जन्म लेनिहार बच्चा अपन माए–बापक संहार करत । ओ अपनहु मरत, कुलक संहार करत एतबे नहि टीपनि बनओनिहार ब्राह्मणक संहार करत । यदि लग्नमे केतु, मंगल अथवा शनि होअए तऽ ओ माए, बाप अथवा स्वयंकेँ संहार करत ।

प्रसूतीक स्नानक समय– मिथिलाक परम्परा अछि जे प्रसूतिक मासस्नान लगभग बच्चाक जन्मक मास दिनमे देखल जाइत अछि । एहि प्रसंग डाकवचन द्रष्टव्य थिक–

अनुराधा अश्विनी ध्रुवहस्ता, स्वाती, पौष्णा, नक्षत्रे शस्ता ।
कुज रवि गुरु दिन करी नहान, कहथि 'डाक' प्रसूती के जान ॥[14]

स्तनपानक दिन– बच्चाक जन्मक पश्चात् ओकरा प्रथम स्तनपानक समयक प्रसंग डाक कहैत छथि जे यदि रिक्ता तिथि (चौठ, चतुर्दशी, नौमी), मंगल दिन, विष्टी, व्यतीपात, वैधृत योग होअए तऽ बच्चाकेँ स्तनपानारम्भ नहि कराबी ।

मुण्डनक दिन–

नहि गुरुशु□ वेद प्रकार, शु□ समयके करु ने विचार ।
विषम वर्ष उत्तरायण जानि, चैत छाड़ि शुभ वासर मानि ॥
जन्ममास के दीजए त्यागि, ज्योतिष उक्त नक्षत्र लागि ।
आदि क्षौर बालकेर होय, डाक कहथि जानब सब कोय ॥[15]

मुण्डनक हेतु ने गुरुशु□क काज ने शु□ समयक प्रयोजन, चैत मास छोड़ि विषम वर्षमे शुभ दिन देखि आ जन्ममासक परित्याग कए बच्चाक प्रथम केश कटाबी ।

कर्णबेध–

जन्मक तारा न्मक चन्द, जन्म मास ओ जन्म ग्रहेन्द्र ।
दक्षिणायन छोड़ि जानी शुभवार, सूर्य्य शु□ केर करी विचार ।
अश्विनि पुष्य हस्त अरु अभिजित, मृग अनुराधा रेवती चित ।
स्वाती हस्त ओ उत्तर तीन, विषम वर्ष कनछेदक दीन ॥
शुभग्रहमे शुभ लग्न सुकाल, शु□ समय लेल 'डाक' बेहाल ॥[16]

कर्णबेधमे बेसी विचार कएल जाइछ । एहिमे शु□ समय, शुभ लग्न तथा अश्विनी, पुष्य, हस्त, अभिजित, मृगशिरा, अनुराधा, रेवती, स्वाती, हस्त ओ तीनू उत्तरा शुभ कहल गेल अछि । विषम वर्ष तऽ अछिए । जन्मक तारा, जन्मक चन्द्र, जन्ममास त्याज्य थिक । सूर्यक दक्षिणायनमे कर्णबेध नहि होअए । दिन शुभ रहब सेहो आवश्यक ।

अक्षरारम्भ मुहूर्त्त– बच्चाक अक्षरारम्भक सेहो महत्त्व अछि तेँ लोक नीक दिन गुनाए खड़ी पकड़बैत छैक । एहि प्रसङ्ग पाँचम वर्षमे शुभ दिन देखि गणेश, विष्णु,

एहि तरहेँ हम सभ देखैत छी जे ‘डाक’ ज्योतिषक कोनो अंशकेँ छोड़लन्हि नहि। ओ प्रत्येक मासक फलादेश कएने छथि जाहि सभक विस्तृत वर्णन एतए सम्भव नहि अछि। हम किछु उपयोगी आ रोचक प्रसंग मात्र एतए प्रस्तुत कएलहुँ अछि।

‘डाक’क संबंधमे कथन अछि जे ओ केहन भविष्यवेत्ता छलाह जे स्वयंकेँ पानिमे डुबि कऽ मरनिहार घोषित कएने छलाह आ तेँ पूरा माथक केश कटओने रहैत छलाह। मुदा कालक गतिकेँ के रोकि सकैछ ? एक दिन ओ पोखरिमे स्नानार्थ गेलाह आ जाठिमे टीक ओझराए गेलनि जाहिसँ हुनक मृत्यु भए गेलनि। ओहू समयमे हुनक मुहसँ सहसा निकलि गेलनि–

ई जुनि बूझी ‘डाक’ निर्बु□ी, नाशहि काल विनाशहि बु□ी ॥

जखन मर्यादा पुरुषोत्तम रामकेँ मायाक मृग विमोहित कए देलकनि तऽ आनक कथे की ?

असम्भवं हेममृगस्य जन्म
तथापि रामो लुलुभे मृगाय ।
प्रायः समापन्न-विपत्तिकाले
धियोऽपि पुंसां मलिना भवन्ति ॥

संदर्भ :

1. जिज्ञासा, अंक-2, सं० गोविन्द झा, पृ० - 25
2. तत्रैव, पृ० 35
3. तत्रैव, अंक-2 पृ० 59
4. तत्रैव
5. तत्रैव
6. ज्योतिष शिशुबोध
7. तत्रैव
8. जिज्ञासा : अंक- 2, पृ० 59
9. तत्रैव पृ०- 60
10. तत्रैव पृ०- 60
11. तत्रैव पृ०- 60
12. तत्रैव पृ०- 54
13. तत्रैव पृ०- 60
14. तत्रैव
15. तत्रैव
16. तत्रैव पृ०- 61
17. तत्रैव पृ०- 61

18. तत्रैव पृ०- 61
19. तत्रैव, पृ०-62
20. तत्रैव
21. तत्रैव
22. तत्रैव
23. तत्रैव, पृ०-63
24. तत्रैव
25. तत्रैव, पृ० -64
26. तत्रैव, पृ० -65
27. तत्रैव, पृ० -65-66
28. तत्रैव, पृ० -82
29. तत्रैव, पृ० -82
30. दहिया - दही । लौंग -लवंग ।
31. देहरीक खटखट नगरक बान्ह चिलकाक कोड़ महतारि कान ।
    ताहू सँ आगाँ भेटए तेली, एक पैर नहि आगाँ पेली ।। (पाठान्तर)
32. जिज्ञासा : अंक- 2, पृ० 83-86
33. तत्रैव, पृ० -87
34. तत्रैव, पृ० -88
35. तत्रैव, पृ० -82,83
36. तत्रैव, पृ० -83
37. तत्रैव, पृ० -82

परिशिष्ट

(क) उपसंहार

ज्योतिष आ साहित्यमे एक दिस यदि सामीप्य स्थापना करैत छी तऽ दोसर दिस पार्थक्यो पर्याप्त अछि । ज्योतिष एकटा विज्ञान थीक जाहिमे गणनाक प्रधानता छैक– चाहे फलित ज्योतिष हो वा गणित । गणितमे गणना कए उदय, अस्त, तिथि, नक्षत्र, योग, करण, दग्धतिथि, अ□प्रहरा, सि□ादि योग सभक मान देल जाइत छैक तऽ साहित्य ओकरा व्यक्त करबाक माध्यम थिक । ज्योतिषमे परिणाम देखल जाइत अछि आ साहित्यमे कल्पनाक उड़ान भरल जाइछ –

'जहाँ न जाय रवि वहाँ जाय कवि ।'

मैथिली साहित्य एक विशाल सागर थिक । एहि सागरक मन्थन कए रत्नक चयन करब एकटा दुष्कर कार्य थिक । हँ, एतबा अवश्य जे विधाक अनुसार मैथिली काव्यक विभाजन कएलासँ सभ कोटिक रचना समक्षमे आबि गेल । मैथिली साहित्यक ई सौभाग्य रहलैक अछि जे एकर निर्माता आदिकालहिसँ संस्कृतक निविष्ट विद्वान् लोकनि रहलाह अछि । तेँ एकर काव्यक उत्कृष्टता अन्यान्यो भाषाक साहित्यकार लोकनिक ध्यानाकृष्ट कएलक आ ओ लोकनि विद्यापति–ज्योतिरीश्वरसँ लए कतेको साहित्यकारकेँ अपन भाषा साहित्यमे, अपन प्रान्तमे समाहित करबाक प्रयास कएलन्हि । डाक सन जोतखी जे विशु□ मैथिलीमे प्रौढ़ ज्योतिषग्रंथ लिखिकऽ राखि देने छलाह तनिको पड़ोसी राज्यक लोक अपनामे पचएबाक पूर्ण प्रयास कएलन्हि । मिथिलावासी लोकनि पहिने उदारतापूर्ण दृष्टि रखने कान मे तूर तेल देने सुतल रहलाह किन्तु पश्चात् सजगता देखाए हुनका लोकनिक मैथिलत्व प्रमाणित कएलन्हि । नहि जानि आओरो कतेक मैथिल डाक होएताह जे घाघ बनि अन्य प्रान्तक अमर विभूति बनल होएताह ।

ज्योतिष एकटा एहन विषय थिक जे उपयोगी तऽ अछिए संगहि रुचिकरो ततबे । मनुष्यक जीवनमे जन्मसँ मृत्यु पर्यन्त जतेक प्रकारक संस्कार होइत छैक सभमे

प्रथमतः दिन गुनाओल जाइत छैक जाहि हेतु जोतखीक आवश्यकता होइत छैक । मैथिली साहित्यक कोनो विधाक यदि गप्प करैत छी तऽ ओहिमे मुण्डन, उपनयन, कर्णवेध, विवाह आदिक वर्णन भेटैत अछि । यदि यात्राक वर्णन देखैत छी तऽ यु□क हेतु यात्रा, विवाहक हेतु यात्रा, अपहरणक हेतु यात्रा, शिकारक हेतु यात्रा प्रभृति भेटैत अछि । यात्रा पहर शकुन, अपशकुन, छिक्काक विचार भिन्ने भेटैत अछि । मास, दिन, तिथि, चन्द्र, तारा इत्यादिक अनुसार दिन देखि लोक अपन यात्रा निश्चित करैत अछि । कपड़ा पहिरबासँ लए भवन निर्माण पर्यन्त लोक बिनु दिन गुनओने नहि करैत अछि । एहन स्थितिमे मैथिली काव्यक समस्त विधा पर एकर प्रभाव पड़ब स्वाभाविक । मुदा सभ विधाक एक-एकटा लेखक वा कविक कृतिक अनुशीलन करब ओहिना असम्भव अछि जेना कोनो वर्त्तनक भात सि□ अछि की नहि से देखबा ले' ओहि पात्रक एक-एकटा भातकेँ पीचि कए देखल जाए । अतः स्थूल रूपेँ अपन अनुभवक आधार पर ग्रन्थ सभक अवलोकन कए ओकर विधाक अनुसार ज्योतिषसँ संब□ विषयक उल्लेख कएल गेल अछि जे हृदयग्राही अथच उपयोगी अछि ।

मिथिला□चलक पंचांग, डायरी इत्यादिमे सेहो मैथिली काव्यक माध्यमे ज्योतिषक ज्ञान कराओल गेल अछि जे व्यावहारिक, रोचक, उपयोगी तथा हृदयग्राही अछि । एहि क्रममे हम दैनन्दिन जीवनमे उपयोगी किछु महत्त्वपूर्ण तथ्य पर ध्यान आकृष्ट करए चाहब-

राशिचक्र :

12 गोट राशि अछि जे नक्षत्रक चरणक अनुसार ज्ञात कएल जाइत अछि । से मैथिली काव्यक माध्यमे कतेक रोचक ढंगसँ दर्शाओल गेल अछि, अवलोकनीय थिक-

_मेष_- आश्विनी भरणी कृत्तिका एक पाय । मेष राशि केर एतेक उपाय ॥
वृष- कृत्तिका तीनि रोहिणी भौ वेद । दू मृगशिर लै वृष परिछेद ॥
मिथुन- दू मृगशिर आर्द्रा चौपाय । तीनि पुनर्वसु मिथुन गोसाँइ ॥
कर्क- एक पुनर्वसु पुष असरेष । भुंजहि कर्क न करू विशेष ॥
सिंह- मघा पूर्व उत्तर एक पाय । सिंह राशिकेँ एतेक उपाय ॥
कन्या- उत्तर तीनि हस्त भौ चारि । दू चित्रा लए कन्यकुमारि॥
तुला- दू चित्रा श्वाती समतूल । तीनि विशाषा तूलम तूल ॥
वृश्चिक - एक विशाषा ओ अनुराधा । सारे ज्येष्ठा वीचि विचारि ॥
धनु- मूल पूर्व उत्तर एक पाय । धनु राशि केर एतेक उपाय ॥
मकर- उत्तर तीनि श्रवणा भौ चारि । अर्धनिष्ठा मकर विचारि ॥
कुंभ- धनिष्ठा दू शतभिषा भौ चारि । तीनि पूर्व लए कुंभ विचारि ॥
मीन- एक पूर्व उत्तर भौ वेद । सारे रेवती मीन पिरच्छेद ॥[1]

4. Theogony of Hindus
5. Ancient and Medieval India
6. Mill's India
7. Poetics and Rhetoric- Aristotle
8. An Introduction to the Study of Literature- W.H. Hudson
9. History of Sanskrit Poetics- P.V. Kane
10. A Golden Book of Tagore; R.M. Panikar

पंचाङ्ग

1. विश्वविद्यालय पंचाङ्गम्
2. विद्यापति पंचाङ्ग ।

पत्र-पत्रिका

1. मिथिला मिहिर
2. Journal, L. N. M. U. 2004 (Sept)
3. जिज्ञासा
4. मैथिली; वि० वि० मै० वि०, ल० ना० मि० वि० पत्रिका- 1996, 2007, 2008

संस्कृत

1. प्रश्नवैष्णव - पं० श्री उमाकान्त झा
2. अमरकोष
3. मानसागरी - स० रामचन्द्र पाण्डेय
4. वर्षकृत्य (प्रथम, द्वितीय भाग)- स० रामचन्द्र झा
5. ताजिक नीलकंठी-सावित्री ठाकुर प्रकाशन, वाराणसी
6. ज्यौतिष शिशुबोध

67. अमर अर्चना – सं. मदनेश्वर मिश्र, जयमन्त मिश्र, सुरेश्वर झा
68. आनन्द मन्दाकिनी – सं. मनमोहन झा एवं अन्य
69. स्वरगंधा– राजकमल
70. मन्त्रपुत्र – मायानन्द मिश्र
71. मैथिली बालसाहित्य– दमन कुमार झा
72. पृथा– डॉ० नीता झा
73. भुवन भारती– भुवनेश्वर सिंह 'भुवन'
74. यन्त्रणाक क्षणमे– उपेन्द्र दोषी
75. कविता राजकमलक – सं० मोहन भारद्वाज
76. विश्वामित्र– गौरीकान्त चौधरी 'कान्त'
77. मिथिला कृत्य–मीमांसा – पं वासुदेव झा

हिन्दी

1. कालपंचांगविवेक – सीताराम झा
2. हिन्दू ज्योतिष – बी० एस० प्रसाद
3. जन्मकुण्डली विचार– राजेन्द्र झा
4. ज्योतिष रत्नाकर – देवकी नन्दन सिंह
5. भारतीय ज्योतिष – डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री
6. जन्मपत्री रचना– डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली
7. भारतीय प्रतीक विद्या– डॉ० जनार्दन मिश्र
8. रामचरितमानस में अलंकार योजना–डॉ० वचनदेव कुमार

English:

1. Objections- Vol X111
2. Origin or Researches into Antiquity of Vedas
3. Lectures on India

चन्द्र दिक्ज्ञान–

मेष सिंह धुन पूवे चन्दा। दक्षिण कन्या वृष मकरन्दा॥
पश्चिम कुंभ तुला ओ मिथुना। उत्तर कर्कट वृश्चिक मीना।

अर्थात् मेष सिंह आ धनु राशिक चन्द्रमा पूर्व दिशामे रहैत छथि। कन्या, वृष आओर मकरक दक्षिणमे, कुंभ, तुला तथा मिथुनक पश्चिममे एवं कर्क, वृश्चिक आ मीनक चन्द्र उत्तर दिशामे रहैत छथि।

चन्द्रवर्ण ज्ञान :

अलौ भेषसिंहोऽरुणो यु□कारी वृषे कर्कटे तौलिके श्वेत सि□ः। धनुर्मीन युग्मेषु पीतोऽयं लक्ष्मीर्मकरकुंभकन्याशशीश्याम मृत्युः। अर्थात् वृश्चिक, मेष आ सिंहक चन्द्रमा लाल रंगक होइत छथि जे यु□कारक थिकाह, वृष, कर्क तथा तुलाक चन्द्रमाक रंग उज्जर होइत छनि जे सि□कारक थिकाह, धनु, मीन तथा मिथुनक चन्द्रमाक रंग पीयर होइत छनि जे धनदायक थिकाह तथा मकर, कुंभ, आ कन्याक चन्द्रमाक रंग कारी होइत छनि जे मृत्युकारक थिकाह।

यात्रामे चन्द्रविचार :

दक्षिणे सम्मुखे लाभस्त्यजेत्पश्चिमवामयोः।

अपिच– **सम्मुखे चार्थलाभाय दक्षिणे सुखसम्पदा**
पृष्ठे च शोकसन्तापौ वामे चन्द्रे धनक्षयः।

अर्थात् सम्मुख चन्द्र अर्थलाभ दैत छथि, दहिन चन्द्र सुख–सम्पत्ति देनिहार थिकाह, पाछूक चन्द्रमा शोक–सन्ताप देनिहार तथा वाम चन्द्रकेँ अपव्यय करओनिहार कहल गेल अछि।

दिन–नक्षत्र योगसँ मृत्युयोग–

दिन तिथिक योगसँ मृत्युयोग पर विचार पूर्वहि भए चुकल अछि, जे यात्रा तथा शुभ कार्यमे वर्जित अछि। एतए दिन नक्षत्र योगसँ मृत्युयोगक चर्चा कए रहल छी–

त्यज रविमनुराधे वैश्यदेवं च सोमे,
शतभिषमपि भौमे चन्द्रज□चाश्विनीषु।
मृगशिरशि सुरेज्यं सर्पदेव□च शुक्रे,
रविसुतमपि हस्ते मृत्युयोगा भवन्ति॥[4]

अर्थात् –रविकेँ अनुराधा, सोमकेँ उत्तराषाढ़, मंगलकेँ शतमिषा, बुधकेँ अश्विनी,

वृहस्पतिकेँ मृगशिरा, शुक्रकेँ आश्लेषा तथा शनिकेँ हस्त नक्षत्र पड़लासँ मृत्युयोग होइत अछि । एहिमे शुभकार्य एवं यात्रा वर्जित अछि ।

योगिनी विचार :

प्रतिपत्सु नवम्यांच पूर्वश्यां दिशि योगिनी ।
अग्निकोणे तृतीयायामेकादश्या च सा स्मृता ॥
त्रयोदश्या च प च्म्यां दक्षिणस्यां च योगिनी ।
द्वादश्या च चतुर्दश्यां नै त्यां दिशि योगिनी ॥
चतुर्दश्यां च षष्ठ्या च पश्चिमायां च योगिनी ।
पूर्णिमाया च सप्तम्यां वायुकोणे च पार्वती ॥
दशम्या च द्वितीयायामुत्तरस्यां शिवा भवेत् ।
ईशानकोणे चाष्टम्यां तथा दर्शे च योगिनी ॥
योगिनी सुखदा वामे पृष्ठे वा छितदायिनी ।
दक्षिणे धनहन्त्री च सम्मुखे मरणप्रदा ॥[5]

अर्थात् पड़ीब तथा नवमीक योगिनी पूर्वमे, तृतीया तथा एकादशीक अग्निकोणमे, त्रयोदशी आ प चमीक दक्षिणमे, द्वादशी आ चौठक नै त्य कोणमे, चतुर्दशी आ षष्ठीक पश्चिम दिशामे, पूर्णिमा तथा सप्तमीक वायुकोणमे, दशमी आ द्वितीयाक उत्तर दिशामे, अष्टमी तथा अमावास्याक ईशान कोणमे रहैत छथि । योगिनीक वाम भागमे रहने यात्रामे सुख, पीठ दिशि रहने अभीष्ट सि , दहिन रहने धननाश तथा सम्मुख रहने मृत्यु होइत अछि ।

तारा ज्ञान :

चन्द्रमासँ कनियो कम महत्त्वक तारा नहि । विवाह, उपनयन अदि शुभ कार्यमे चन्द्रमा तथा ताराक अनुकूलता देखब अनिवार्य होइत अछि । जन्मनक्षत्रसँ अभीष्ट नक्षत्र धरि गणना कए नओ सँ भाग देल जाइत अछि । एक सँ नओ धरि शेष रहैत अछि जे तारा थिक क्रमशः जन्म, सम्पत, विपत, प्रत्यरि, साधक, वध, मित्र, अतिमित्र ।

एहिमे सम्पत, क्षेम, साधक, मित्र, अतिमित्र, अपन नामानुकूल शुभ फल देनिहार थिक तथा शेष अशुभ । अशुभ तारामे लोक शुभ कार्य नहि करैत अछि । प चम तारा प्रत्यरि प्रथम आवृत्तिक धन देनिहार, द्वितीय आवृत्तिक शुभ कएनिहार तथा तेसर आवृत्तिक मृत्यु देनिहार थिकाह । एहि संबंधमे ज्योतिष शिशुबोधक कथन द्रष्टव्य थिक-

जन्मभाद् गणयेदादौ दिनधिष्ण्यावधि क्रमात् ।
नवभिश्च हरेद् भागं शेषं तारा विनिर्दिशेत् ॥
जन्म सम्पद् विपत् क्षेम प्रत्यरिः साधको वधः ।
तथा मित्रातिमित्रे च नवताराः स्वजन्मभात् ॥

43. अगस्त्यायिनी - मार्कण्डेय प्रवासी
44. रुक्मिणी-परिणय- बबुआजी झा 'अज्ञात'
45. चाणक्य- दीनानाथ पाठक 'बंधु'
46. व्यथा- रमाकान्त झा
47. एकावली-परिणय- कविशेखर बदरीनाथ झा
48. कृष्ण-चरित- तन्त्रनाथ झा
49. कीचक-वध- तन्त्रनाथ झा
50. शकुन्तला -चन्द्रभानु सिंह
51. भूकम्प काव्य- सं. मुरलीधर झा
52. शकुन्तला - दामोदर लाल दास
53. त्रिशूली -मथुरानन्द चौधरी 'माधुर'
54. बरजोरी- निशिकान्त मिश्र
55. श्री रामकथा- उषा चौधरानी
56. रामजन्म -तेजनाथ झा
57. मुक्ति-संग्राम - बैजू मिश्र
58. हरबाहक बेटी - फजलुर रहमान हासमी
59. पारखी प्रसून - जनार्दन झा 'पारखी'
60. सावित्री-चरित्र - ब्रजमोहन ठाकुर
61. द्रोहाग्नि - लोकपति सिंह
62. दर्पण - दयानन्द झा
63. कविता कुसुमा जलि -जयमन्त मिश्र
64. सलहेस चलीसा -बुचरू पासवान
65. सहस्रबाहु- अग्निपुष्प
66. एतदर्थ - मार्कण्डेय प्रवासी

19. नवमल्लिका– दामोदर लाल दास

20. प्रतिपदा– सुरेन्द्र झा 'सुमन'

21. दत्त-वती– सुरेन्द्र झा 'सुमन'

22. सुमन साहित्य सौरभ– चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', भीमनाथ झा

23. उत्तरा– सुरेन्द्र झा 'सुमन'

24. खट्टर ककाक तरंग– हरिमोहन झा

25. चर्चरी – हरिमोहन झा

26. प्रणम्य देवता – हरिमोहन झा

27. किमधिकम् – उमानाथ झा

28. रेखाचित्र – उमानाथ झा

29. बाजि उठल मुरली– उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'

30. रावण-वध – जीवनाथ झा

31. माटिक दीप – आरसी प्रसाद सिंह

32. चित्रा – वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'

33. पतन – उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'

34. □तुप्रिया –चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

35. योग-दिग्दर्शन– अमृतधारी सिंह

36. मुक्तिपथ – महिनाथ झा

37. अनेरे– हंसराज

38. ध्वस्त होइत शान्तिस्तूप– कीर्त्तिनारायण मिश्र

39. दोहा 302 – उदयचन्द्र झा 'विनोद'

40. वीणा– भीमनाथ झा

41. नाम तँ थिक वैह– भीमनाथ झा

42. सीतायन– वैद्यनाथ मल्लिक 'विधु'

द्विचतु:षडष्टनव-गतास्तारा: शुभप्रदा: ।
धनदा सुखदा चैव मृत्युदा चैव प□चमी ।।[6]

अनिवार्य रहने अधलाहो तारामे लोक काज करैत अछि किन्तु ओकर शान्त्यर्थ किछु दान करए पड़ैत छैक । एहि हेतु प्रत्यरिक लेल नोन, जन्मक हेतु शाक, विपत् केर हेतु गुड़, तथा निधन ताराक हेतु तिल आ का□चनक दान कहल गेल अछि । यद्यपि निधन तारामे लोक काज नहियेँटा करैत अछि । द्रष्टव्य थिक–

प्रत्यरौ लवणम् दद्यात् शाकम् दद्यात् त्रिजन्मसु ।
गुडं विपत्तितारायाम् सुवर्णम् निधिने तिलम् ।।[6]

दिक्शूल :

सर्वसाधारणो लोक दिग्बल आ दिक्शूलक विचार कए यात्रा करैत अछि । जँ दिक्शूल केओ नहिओँ बुझैत छथि, सि□ादियोग नहिओँ जनैत छथि तऽ दिग्बल देखि यात्रा कए लैत छथि–

नहि किछु जानी तऽ दिग्बल धऽ तानी ।

शनि तथा सोमकेँ पूर्व दिशा जएबामे दिग्विरोध, बुध तथा बृहस्पतिकेँ दक्षिण दिशा जएबामे, शुक्र तथा रविकेँ पश्चिम दिशा जएबामे तथा बुध आ मंगलकेँ उत्तर दिशा जएबामे दिग्विरोध होइत अछि । वाम कातक कोणकेँ वाम दिशा बुझबाक थिक । निम्नांकित श्लोकक अनुशीलन कएल जाइछ–

शनौ चन्द्रे त्यजेत्पूर्वां दक्षिणां च गुरौबुधे।
सूर्ये शुक्रे पश्चिमायां बुधे भौमे तथोत्तराम् ।।[8]

काल विचार :

कालक विचार सतत नहि होइत अछि । ई विशेषत: द्विरागमन, द्वितीय यात्रा, राजयात्रा, नवोढ़ा यात्रा, नवजात शिशुक संग यात्रा, गर्भिणीक यात्रा इत्यादिमे विचारणीय होइत अछि । काल अगहन पूष माघमे पूर्व दिशामे रहैत छथि, फागुन चैत वैशाषमे दक्षिण दिशामे, ज्येष्ठ आषाढ़ साओनमे पश्चिम दिशामे तथा भादव आश्विन कार्तिकमे उत्तर दिशामे रहैत छथि । यात्राक समय देखबाक थिक जे एहन दिशामे यात्रा होअए जे काल सम्मुख आ दहिन नहि पड़थि । द्रष्टव्य थिक–

मार्गे पौषे तथा माघे पूर्वस्यां राहुसंस्थिति: ।
फाल्गुने च तथा चैत्रे वैशाखे दक्षिणे भवेत् ।।
ज्येष्ठ मासि तथाषाढ़े श्रावणेपि च पश्चिमे ।
भाद्रे तथाश्विने मासि कार्तिके चोत्तरे भवेत् ।।[9]

अपिच–

गर्भिणी च प्रसूता च नवोढ़ा भूपतिस्तथा ।
पदमेकं न गच्छेत्तु राहोः सम्मुख-दक्षिणे ॥

पुनश्च–

द्विरागमगता कन्या पितृवेश्मनि आगता ।
पदमेकं न गच्छेत्तु राहोः सम्मुखदक्षिणे ॥

शिववास :

महादेवक पूजाक हेतु शिववास प्रशस्त अछि । शिववास ज्ञात करबाक हेतु तिथिकेँ दू सँ गुणा कए पाँच जोड़ि सात सँ भाग देल जाइत अछि 1 सँ 7 धरि शेष बचैत अछि । एकमे शिव कैलास पर रहैत छथि, दू मे गौरीक निकट, तीनमे बसहा पर, चारिमे सभामे, पाँचमे भोजनपर, छओ मे क्रीड़ा तथा सातमे श्मशानमे । एहिमे प्रथम सुख देनिहार, द्वितीय सुख-सम्पत्ति देनिहार, तीन अभीष्ट सिर्□ कएनिहार, चारि सन्ताप देनिहार, पाँच कष्ट देनिहार, छओ कष्ट देनिहार तथा सात मृत्यु देनिहार थिक । कृष्णपक्षक पड़ीबमे गणना करबाक समय शुक्लपक्षक 15 तिथि जोड़ल जाइत अछि । उदाहरणार्थ कृष्णपक्षक द्वितीयाकेँ यदि शिववास ज्ञात करए चाहब तऽ 15+2□17x2+5□39/7□ चारि शेष अर्थात् शिवजी सभामे रहैत छथि जे सन्तापदायिनी भेल । एहि हेतु निम्नलिखित पंक्ति ध्यातव्य थिक–

तिथि□च द्विगुणीकृत्य बाणैः संयोजयेत् ततः ।
सप्तभिस्तु हरेद् भागं शिववासं समुद्दिशेत् ॥
एकेन वासः कैलाशे द्वितीये गौरिसन्निधौ ।
तृतीये वृषभारूढ़ः सभायां च चतुर्थके ॥
प□चके भोजने चैव क्रीड़ायां षण्मिते तथा ।
श्मशाने सप्तमे चैव शिववासः समुच्यते ॥

पुनश्च–

कैलाशे लभते सौख्यं गौर्या□च सुखसम्पदौ ।
वृषभेभीष्ट सिर्□ःस्यात् सभा सन्तापदायिनी ॥
भोजने च भवेत्पीड़ा क्रीड़ायां कष्टमेव च ।
श्मशाने मरणं चैव शिववासफलम् लभेत् ॥

साढ़ेसाती शनि :

जन्मराशि तथा जन्मराशिसँ बारहम आ द्वितीय स्थानमे शनिक स्थितिकेँ

(ख) अधीत ग्रन्थ-सूची

मैथिली

1. वर्णरत्नाकर – ज्योतिरीश्वर
2. विद्यपति पदावली; भाग 1,2,3– राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना
3. मिथिलाभाषा रामायण– कवीश्वर चन्दा झा
4. रमेश्वरचरित मिथिला रामायण – लाल दास
5. अम्बचरित – सीताराम झा
6. लोकलक्षण – सीताराम झा
7. रत्नसंग्रह – सीताराम झा
8. भूकम्पवर्णन– सीताराम झा
9. सुभद्रा–हरण – रघुनन्दन दास
10. राधा–विरह – कविचूड़ामणि काशीकान्त मिश्र 'मधुप'
11. बटसावित्री– कविचूड़ामणि काशीकान्त मिश्र 'मधुप'
12. झांकार – कविचूड़ामणि काशीकान्त मिश्र 'मधुप'
13. माला – सरसकवि ईशनाथ झा
14. मैथिली पद्यसंग्रह– स० रमानाथ झा
15. प्राचीन गीत – स्व० रमानाथ झा
16. मैथिली साहित्य संग्रह – स० रमानाथ झा
17. कृष्णजन्म – मनबोध
18. किरण कवितावली– का□चीनाथ झा 'किरण'

संदर्भ :

1. ज्योतिष शिशुबोध; पृ० 5-6
2. तत्रैव
3. तत्रैव; पृ० 9
4. तत्रैव; पृ० 11
5. तत्रैव
6. तत्रैव पृ० 16
7. तत्रैव पृ० 17
8. तत्रैव पृ० 23
9. तत्रैव पृ० 30
10. विद्यापति प□चाङ्ग; ग्रन्थालय प्रकाशन, 1978; पृ०36
11. तत्रैव पृ० 47
12. तत्रैव पृ० 48
13. तत्रैव पृ० 35 (विश्वविद्यालय प□चाङ्गम्; पृ० 5)
14. तत्रैव

l

साढ़ेसाती शनि कहल जाइत छैक। साढ़ेसाती शनिक नामेसँ लोक घबड़ा जाइत अछि-

जनिका ऊपर शनिक दृष्टि हो से जन सुख नहि पाबथि

मुदा साढ़ेसाती शनि सभकेँ सतत अधलाहे टा नहि करैत छैक । शनि एक घरमे 2½ वर्ष रहैत छथि आ तेँ तीनि टा घर टपबामे हुनका 7½ वर्षक समय लगैत छनि । साढ़े सात वर्षक माने 90 मास । नब्बे मासमे आरंभसँ 7 मास मस्तकमे (सर्वांश हानि) नेत्रमे 9 मास (हानि), मुहमे 8 मास (लाभ), कंठमे 6 मास (भूषणादि लाभ), हृदयमे 10 मास (यन्त्रादि लाभ), उदरमे 11 मास (अन्नादि लाभ), नाभिमे 4 मास (उदर कष्ट), गुह्य स्थानमे 5 मास (हानि), जानुमे 14 मास (व्यय), जांघमे 11 मास (सौख्य), पएरमे 5 मास (मार्गकष्ट)[10] ।

स्वप्न विचार :

लोक नाना प्रकारक स्वप्न देखैत अछि, डेराइत अछि, प्रसन्न होइत अछि । किंवदन्ती छैक जे शुभ स्वप्न देखि अपनासँ श्रेष्ठकेँ कहिऐक जे फलदायक होइछ तथा अशुभ स्वप्न देखि अपनासँ छोटकेँ कहिऐक जे फलदायक नहि होइक । एतय किछु प्रमुख स्वप्नक विचार प्रस्तुत कएल जाइत अछि ।

स्वप्न	**फल**
आकाशमे उड़ब	यात्रा
आकाशसँ खसब	हानि
अग्नि देखब	वर्षा
आगि उठायब	धन खर्च
आम खायब	सन्तान वृ□
बिहाड़ि देखब	क्लेशित यात्रा
गाछ चढ़ब	प्रतिष्ठा
फड़ल गाछ देखब	मनोकामना सि□
मुर्दा देखब	धन लाभ
लड़ाइ देखब	रोग कष्ट
पोखरिमे स्नान	प्रतिष्ठा
देबालपरसँ खसब	अवनति
नदीमे नहायब	चिन्तामुक्ति
नदी पार करब	कार्य सि□

नदीमे खसब	कष्ट
पानिमे डूबब	शुभ कार्य
उपवन देखब	खुशी
कुकूर काटब	शत्रुक सामना
खेत देखब	विद्या वृ□
गाय देखब	व्याकुलता[11]

सामान्यतया उज्जर वस्तु देखब (भात, तूर, अस्थि छोड़ि) शुभ थिक तथा कारी वस्तु देखब (हाथी, ब्राह्मण, गायकेँ छोड़ि) अशुभ थिक ।

अंगपर गिरगिट खसबाक फल :

स्थान	फल	स्थान	फल
शिर	राज्यलाभ	भौँह मध्य	राज्य सम्मान
नासाग्र	व्याधि पीड़ा	वाम कान	बहुलाभ
वाम भुजा	राजभीत	वक्षस्थल	दुर्भाग्य
दूहू जांघ मध्य	शुभागम	दुहू हाथ	वस्त्रलाभ
कटिभाग	वाहन लाभ	वाम मणिबन्ध	कीर्तिनाश
गुल्फ	धनलाभ	दक्षिण पयर	गमन
अधरोष्ठ	धनैश्वर्य लाभ	केशान्त	अतिकष्ट
पृष्ठदेश	बु□नाश	उत्तरोष्ठ	धननाश
मुह	मिष्टान्न भोजन	आँखि	बन्धन
मस्तक	बन्धुदर्शन	पेट	भूषणलाभ
दक्षिणकान	आयुवृ□	कान्ह	विजय
कण्ठ	शत्रुनाश	हृदय	धनलाभ
दुहू जांघ पर	शुभ	वाम पएर	बन्धु विनाश
दहिन मणिबन्ध	मनस्ताप	दक्षिण भुजा	नृपतुल्यता
नाभि	बहुधन प्राप्ति	पादान्त	स्त्रीनाश[12]

नोट– पुरुषक दहिन भाग, स्त्रीक वाम भाग खसब शुभ थिक ।

नवग्रहक शान्त्यर्थ मन्त्र (तान्त्रिक) :

नवग्रह	मंत्र	जप संख्या	रत्न
रवि	ॐ ह्रीं सूर्याय नमः (ॐ धृणिः सूर्य आदित्य)	7000	माणिक
चन्द्रमा	ॐ ऐँ स्त्रीं क्लीं सोमाय नमः (ॐ सों सोमाय नमः)	11000	मोती
मंगल	ॐ हूँ श्रीमंगलाय नमः (ॐ अं अंगारकाय नमः)	10000	मुङ्गा
बुध	ॐ ऐँ स्त्रीं श्रीबुधाय नमः (ॐ बुं बुधाय नमः)	8000	पन्ना
बृहस्पति	ॐ ऐँ क्लीं बृहस्पतये नमः (ॐ बृं बृहस्पतये नमः)	19000	पुखराज
शुक्र	ॐ ह्रीं श्रीशुक्राय नमः (ॐ शुं शुक्राय नमः)	10000	हीरा
शनि	ॐ ऐँ ह्रीं श्रीशनैश्चराय नमः (ॐ शं शनैश्चराय नमः)	23000	नीलम
राहु	ॐ ऐँ ह्रीं राहवे नमः (ॐ रां राहवे नमः)	18000	गोमेद
केतु	ॐ ह्रीं केतवे नमः (ॐ कें केतवे नमः)	7000	लहसुनिया[13]

गण्डमूल नक्षत्र :

रेवती नक्षत्रक समाप्तिक दू दण्ड, अश्विनी नक्षत्रक आठ दण्ड, आ अश्लेषा मघाक अन्तिम दू दण्ड, ज्येष्ठाक अन्तिम दू दण्ड, मूलक आदिक दू दण्डमे यदि बच्चाक जन्म हो तऽ बच्चाकेँ मूल गण्ड योगमे जन्म मानल जाइत अछि, जे अशुभ थिक । ज्येष्ठाक पहिल चरणमे बच्चाक जन्म भेलासँ बड़का भाइक नाश, दोसर चरणमे छोट भाइक नाश तथा तेसर चरणमे जन्म भेने माय-बापक नाश निश्चित अछि ।[14]

मैथिली काव्यक अनेक विधाक अवलोकन-अनुशीलन करैत अनेक प्रकारक ग्रहदशाक, ग्रहयोगक तथा ज्योतिषक कतोक रहस्यक वर्णन देखबामे आएल, किन्तु साहित्यिक विधाक विविधताक कारण कतोक तथ्यकेँ प्रकाशित करब समय सापेक्ष आ स्थानाभावक कारण सम्भव नहि भए सकल । एतबा अवश्य जे प्राचीन पण्डितसँ लए अर्वाचीन कविलोकनिक काव्यमे शास्त्रीय अनुभूतिक दिग्दर्शन भेल, ज्योतिषक कतोक गुत्थी सोझराइत भेटल आ ओकर फलाफल देखबामे आयल । एखनहु आवश्यकता अछि मैथिली काव्यक पृथक्-पृथक् विधा पर ज्योतिष संबंधी तत्त्वक अन्वेषण करबाक, जाहिसँ अधिकसँ अधिक ज्योतिषक अंश प्रकाशमे आबि सकय ।

ज्योतिष विषयमे हमर उत्साह बढ़ैत गेल । पोथी सभ पढ़ैत रहलहुँ स्वान्तः सुखाय । भविष्य बुझबाक जिज्ञासा ककरा नहि होइत छैक ?

हमहुँ ग्रह-नक्षत्रक संबंधमे जिज्ञासु बनलहुँ, पोथी उनटाएब शुरू कएलहुँ । पठन-पाठनसँ जुड़ल रहबाक कारणेँ मैथिली काव्यक अध्ययन करबाक अवसर होइत रहल आ हमरा ओहिमे ज्योतिषक सन्दर्भ भेटैत रहल । पढ़ि कए आह्लादित होइत रहलहुँ। यैह हमर प्रेरक तत्त्व भेल ज्योतिषसँ सम्ब□ विषयपर शोध-कार्य करबाक ।



डा० रमण झा

l **जन्म-** 14 अगस्त 1957 ई०
हटाढ़-रुपौली, मधुबनी (बिहार)

l **शिक्षा-** बी०ए० प्रतिष्ठा (मैथिली)-1976, प्रथम वर्गमे प्रथम, ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभङ्गा ।
एम०ए० (मैथिली)-1978, प्रथम वर्गमे द्वितीय, ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभङ्गा ।
पी-एच०डी०-1986, आधुनिक मैथिली काव्यमे अलङ्कार-विधान, ल०ना०मिथिला विश्वविद्यालय, दरभङ्गा ।
डी०लिट्० -2009, मैथिली काव्य पर ज्यौतिषक प्रभाव, ल०ना०मिथिला विश्वविद्यालय, दरभङ्गा ।

l **वृत्ति-** 2 नवम्बर '82 सँ 5 फरवरी '96 धरि रास नारायण महाविद्यालय, पण्डौलमे व्याख्याता एवं उपाचार्य; 6 फरवरी '96 सँ विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, ल० ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभङ्गामे उपाचार्य ।

l **रचना-**
पश्चात्ताप (कथा-संग्रह) - 1995
काव्य-वाटिका (कविता-संग्रह) - 1999
अलङ्कार-भास्कर (पूर्व-खण्ड) - 2002
अलङ्कार-भास्कर (अलङ्कार शास्त्र) - 2003
भिन्न-अभिन्न (समीक्षा) - 2008
मैथिली काव्यमे ज्योतिष (समीक्षा) - 2009

l **संग सम्पादन-** मैथिली (विश्वविद्यालय मैथिली विभागक शोध-पत्रिका) - 1996

l **सम्पादन-** मैथिली (विश्वविद्यालय मैथिली विभागक शोध -पत्रिका) - 2007, 2008

मैथिली काव्यमे ज्योतिष

डॉ० रमण झा

मैथिली काव्यमे ज्योतिष

डॉ० रमण झा

मैथिली काव्यमे ज्योतिष

डॉ० रमण झा